लोहना रोडसँ लास वेगस

कीर्तिनाथ झा

लोहना रोडसँ लास वेगस

लोहना रोडसँ लास वेगस

कीर्तिनाथ झा

लोहना रोडसँ लास वेगस

कीर्तिनाथ झा

मो. : 9443655640

Email : kirtinath.jha@gmail.com

ISBN 978-93-5406-772-3

© कीर्तिनाथ झा

पहिल संस्करण : 2020

मूल्य : भारत मे रुपया 500

विदेश : $ 5.0

आवरण : अमिय झा

प्रकाशक :

कीर्तिनाथ झा

प्रोफेसर, नेत्र-चिकित्सा विभाग

महात्मा गाँधी मेडिकल कालेज एंड रिसर्च इंस्टिच्युट

पाण्डिचेरी-607 402

वितरक :

किसुन संकल्प लोक

किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131

E-mail : kedarkanan3@gmail.com

मो. : 9471062706, 7004917511

मुद्रक : आर.के. ऑफसेट प्रोसेस, नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

पुस्तक प्राप्ति स्थान :
- किसुन कुटीर, गुदरी बाजार, सुपौल-852131 (बिहार)
- शेखर प्रकाशन, भुवनेश्वर प्लाजा, प्रथम तल
  न्यू मार्केट, पटना-800001

LOHNA ROAD SN LAS VEGAS

A Travelogue in Maithili

by Kirti Nath Jha

Rs. 500/-

भूमिका

अपन प्राणक आहुतिओ द' कय लक्ष्य-पूर्ति सेना-सेवाक शर्त आ सैनिकक शपथ दुनू थिकैक। एकर अतिरिक्त सेनाक वातावरण आ अपन मनोबलसँ युवावस्थामे अनेक ठाम जयबामे उत्साह आ साहसिक कार्य करबामे गौरव-बोध होइत छैक। तें, सेनाक सेवाक अध्याय हमर जीवनक उत्सव-जकाँ छल। ओहि उत्सवक अध्यायमे जतय गेलहुँ, आ जे किछु आकर्षित कयलक, देखलहुँ। बहुतो ठाम अपरिचित भोजन आ नव व्यंजन चिखलहुँ। एहि सबमे सँ बंजर भूमि, विरल वायु, आ हाड़ हिलबैबला जाड़क पर्यन्त लद्दाख़क पर्वतमाला, विशाल नदी, आ अवर्णनीय झील सबहक जलक स्पर्श अद्‌भुत अनुभव छल। अपन प्रवृत्तिसँ वरण कयल यायावर जिनगीक इएह अनुभव एहि यात्रा-वृतांतक प्रेरणा सिद्ध भेल। अस्तु, एहि यात्रा-वृत्तांतक आरम्भ लद्दाख़क अनुभवेसँ शुरू भेल। पछाति, सेनासँ ऐच्छिक सेवा-निवृत्ति लेल। किन्तु, यायावरी-प्रवृत्ति ओहिना अछि। सेना अवकाशक पछाति एकटा लम्बा अवधि पोखरा, नेपालमे बिताओल। ओही अवधिमे अमेरिका जयबाक मौका सेहो लागल। पुनः 2014 मे हमरालोकनि योरपक यात्रा कयल। फेर थाईलैंड गेलहुँ। 2018 पुनः अमेरिका गेलहुँ। ई सब यात्रा अपना-अपना स्वरूपें नव अनुभव तँ छले, यात्राक बाद बैसिकय यात्रा-वृत्तांत लिखब हमरा यात्राकें दोहरायब सन प्रतीत होइत छल। तें, रोगीक चिकित्सा आ अध्यापनसँ जखन समय भेटल किछु-किछु लिखैत गेलहुँ। हम मानैत छी, यात्रा वृत्तांत स्थूल स्थान, वस्तु आ वास्तुक अतिरिक्त लेखकक दृष्टिक परिणाम थिक। तें, भिन्न-भिन्न व्यक्ति एके स्थानक वर्णन भिन्न-भिन्न रूपें करैत छथि। हमरो वृत्तांतमे अहाँकें हमर दृष्टि वा दृष्टि-दोष भेटय तँ से स्वाभाविको आ उचितो।

इन्टरनेटकेर युगमे मनुक्खक मनक स्थिरता (attention-span) थोड़ भेलैए। तथापि, लोक पोथी पढ़िते अछि। फलतः, लद्दाख़क वृत्तांतक 'मिथिला दर्शन'मे प्रकाशित अंशपर जखन पाठकक सकारात्मक आ उत्साहवर्धक प्रतिक्रिया आबय लागल तँ हमर उत्साह बढ़ल। किन्तु, हमर यात्रा वृत्तांतक अधिकांश अंश एखनो

अप्रकाशिते अछि। तें, अप्रकाशित वृत्तांतकें हम निरंतर अपन 'ब्लॉग' 'कीर्तिनाथक आत्मालाप' (http:// kirtinath.blogspot.com) पर प्रकाशित करैत गेलहुँ। परिचित आ अपरिचित पाठक लोकनिकें हमर ब्लॉग सेहो नीक लगलनि। अस्तु, एहि वृत्तांतकें पुस्तकाकार प्रकाशित करबाक विचार भेल। ई पोथी तकरे परिणाम थिक। एहि हेतु हम प्रोफेसर भीमनाथ झा, योगेन्द्र पाठक वियोगी, आ रबीन्द्र नारायण मिश्रक संग आन अनेको परिचित, अपरिचित पाठकलोकनिक आभारी छी जे यदा-कदा हमरा फोन कयलनि आ हमर उत्साह बढओलनि, तें, हिनका सबहक प्रति शुभकामना आ आभार व्यक्त करै छी। संगहि, प्रोत्साहन आ प्रकाशनमे सहयोगक हेतु श्री केदार काननक प्रति सेहो आभारी छी। हमर पत्नी श्रीमती रूपम झा तँ एहि यात्राक निरंतर संगिनीए छथि। संगहि हमर कन्या डा. सुष्मिता झा, जमाय डाक्टर सिद्धार्थ श्रीवास्तव, पुत्र अमिय झा, पुत्रवधू श्रीमती अदिति मिश्र सेहो समय-समयपर हमर प्रेरक आ सहायक सिद्ध भेलीह। हमर दौहित्र तन्मय आ पौत्र अग्निव तँ ऊर्जाक अक्षय भंडार थिकाह। वस्तुतः, हमरा लोकनिक दुनू अमेरिका यात्राक पाछूक प्रेरणा इएह दुनू बटुक थिकाह। अस्तु हिनका सबकें अशेष आशीष। आशा अछि एकठाम संकलित एहि यात्रा वृत्तांतक ओहिना स्वागत हयत जेना छिटफुट लेख आ ब्लॉग केर भेल छल।

कीर्तिनाथ झा

पांडिचेरी
फरवरी 2020

अनुक्रम

लद्दाख़-यात्रा

लेहमे पहिल बेर 9
अविस्मरणीय शौर्यक भूमि चुशूलमे 22
पेंगोंग-सो झीलक बाट पर 34
जिस पथ जावें वीर अनेक 40
सियाचिन बेस कैंप 44
डिस्किट, परतापुर, थोइस आ तुर्तुक 48
लेहसँ कारगिल : बटालिक बाटे 55
लेह-फोतुला-कारगिल 62
कारगिल आ द्रास 68
जान्सकार : दुधिया नदी, सोन-सन रौद आ लामालोकनिक रहस्यमय भूमि 73

तमिलनाडु

पुमपूहार, तरंगमवाड़ी, वेलंकन्नी, वेदारण्यम-रामारपादम एवं कोडियक्करै (Point Calimere) 94

पंजाब

अमृतसर, अटारी आ वागा 103

मध्यप्रदेश

हिंदुस्तान का दिल देखो-1 108
हिंदुस्तान का दिल देखो-2 120

उत्तराखंड

पाताल भुवनेश्वर : जतय लोक कदाचिते पहुँचैत अछि 128

योरप

रोम आ कैथोलिक लोकनिक परम पावन तीर्थ-वैटिकन सिटी 131
लीनिंग टावरक शहर, पीसा 148

फ्लोरेंस 150
वेनिस 156
इन्सब्रुक आ स्वारोव्स्की क्रिस्टल म्यूजियम 162
स्विट्जरलैंडमे तीन दिन 168
साफहाउसेन शहर, राइन जल-प्रपात आ टिटिसी 178
राइन नदीमे नौका विहार 181
ब्रसेल्स 184
हे'एग आ मदूरोडैम 187
वोलेंदाम आ अपन गाम 193
पेरिस 195
लंदन 201
लंदनमे दोसर दिन 205
एडिनबरा, स्कॉटलैंड 209
एडिनबरामे तेसर दिन 215
बोस्टन, विलियम शेक्सपियरक शहर आ सर आइजक न्यूटनक हवेली 219

अमेरिका

मनोरथक पाँखि पर उड़इत : अमेरिकाक पहिल यात्रा 225
अमेरिकाक सिंहद्वार-न्यूयॉर्क सिटी 243
वाशिंगटन डी सी 250
लास वेगस (Las Vegas) 257
क्लीवलैंड डायरी 266

थाईलैंड

राजा राम, बुद्ध आ गरुड़ केर देश थाईलैंडमे 282
थाईलैंडक राजधानी बैंकाक 289

नेपाल

लेते आ मार्फा गाओं, मुक्तिनाथ (मुस्ताङ् जिला, नेपाल) 294
त्रिशूली नदीमे राफ्टिंग (नौकायन) 300

उपसंहार

लोहना रोडसँ लास वेगस 305

लद्दाख़-यात्रा

लेहमे पहिल बेर

'लामाक भूमिमे गामा जुनि बनी' से बहुत दिनसँ सुनल छल। किन्तु, जखन बंगलोरसँ सोझे लेहकेर पोस्टिंग ऑर्डर आयल छल तखन धरि एहि कहावत केर असली अर्थ बूझब बांकीए छल। लेह पहुँचलापर हवाई अड्डापर ले. कर्नल विधान चन्द्र त्रिवेदी, दरभंगा मेडिकल कालेजक 1974 बैचकेर हमर जूनियर, ठाढ़ छलाह। हुनक मुसुकाइत छवि आश्वस्त कयलक आ हम स्वभावतः धफड़ि कय विदा भेलहुँ, तँ, कर्नल त्रिवेदी सावधान करैत कहलनि, 'सर, धीरे-धीरे चलू'। माने, तेज चलब तँ श्वास ने फूलय लागय, फेफड़ा ने बम बाजि जाय! तखन मोन पड़ल एहि कहावतक अर्थ। एतबा तँ बूझल छल, समुद्रतलसँ 10500 फुट केर ऊँचाइपर लेहमे गाछ-वृक्षे टा क नहि, ऑक्सीजनकेर कमी सेहो छैक। तें, सावधानी नहि रखलहु तँ हाई-अल्टिच्युड पल्मोनरी इडिमा (फेफड़ाक सूजन) आ हाई-अल्टिच्युड सेरेब्रल इडिमा (मस्तिष्कक सूजन) सँ अचानक प्राण जा सकैत अछि। ई समस्या स्वस्थ सैनिक आ सैलानी दुनूकें समान रूपें प्रभावित करैछ। इहो बूझल छल, जे हाई-अल्टिच्युड एरियामे स्वस्थहु केर रक्त-चाप (Blood pressure) बढ़ि सकैछ, श्वासमे कष्ट भ' सकैछ। ऊपरसँ खूब जाड़। कनेक भय नहि छल से कोना कहब। मुदा, स्वस्थ शरीर आ जोशमे लोक बहुत किछु बिसरि जाइछ। मुदा, कर्नल त्रिवेदीकेर चेतावनीक पछाति असावधानी असम्भव छल। अस्तु, ऑफिसर-मेसक आवासमे आबि आर्मी acclimatization manual क निर्देशानुसार '6-days' acclimatization schedule' आरम्भ केलहुँ। अर्थात्, दू दिन बेड-रेस्ट (बिछाओन पर आराम), तेसर आ चारिम दिन समतल भूमिपर किछु-किछु दूरक टहलान, आ पांचम आ छठम दिनमे आओर दूर आ ऊँचाइ दिस चलबाक रूटीनक। ई भेल लेहमे अयनिहार सैनिक लोकनिक पहिलुक छौ दिनुक निर्धारित दिनचर्या अर्थात् acclimatization। माने, मनुष्यक ओ शारीरिक प्रक्रिया जाहिसँ परिवर्तित जलवायु, ऊंचाइ आ तापमानक

नव परिस्थितिमे शरीर-क्रिया (बॉडी-फिजियोलॉजी) अपनाकें तेना ढारैत अछि जाहि सँ व्यक्ति अपन क्षमताक अनुसार सब किछु सामान्य रूपें करब आरम्भ क' सकैत अछि। थिकैक तँ ई शरीरकें कोनो हानिसँ बचयबाक विधि। किन्तु, नव स्थान, अन्तर्राष्ट्रीय पर्यटन स्थल, आ हमरा-सन यायावर मोन। हताशा तँ भेल एहि हाउस-अरेस्ट आ नजरबंदीसँ। अस्तु, पहिल दिन परिश्रान्त रही, कहुना बीतल। किन्तु, दोसर दिन भोरहिसँ वायुक कम दबावक प्रभाव देखबामे आबय लागल। बाथरूममे राखल शेविंग क्रीम आ टूथ पेस्टक ट्यूबक मुनना खोलितहि क्रीम आ पेस्ट अनायास बाहर बहय लगलैक। पछाति, हाथ-मुँह धोलाक बाद टेबुलपर राखल हल्दीरामक नमकीन भुजियाक पोली-पैक पर नजरि गेल तँ हँसी लागि गेल। भीतर बंद वायुक प्रसारसँ भुजियाक पैकेट गोल-मटोल भ' गेल छलैक। ई सब छल वायुमंडलमे हवाक कम दबावक प्रत्यक्ष प्रमाण। तथापि, यदि वायुमंडलक कम दबाव, शुष्क वायु, आ शीतल मरुभूमिक गप्प जँ छोड़ि दी, तँ, लेहमे आकर्षण कमी नहि छैक। लद्दाख़क विशेषज्ञ, प्रसिद्ध लेखिका, जेनेट रिजवी, लेहकें पहाड़ी एशिया (high Asia) क चौबटिया कहैत छथि। चौबटिया तँ वएह भेल जतय चारि दिसुक बाट आबि कय मिलैत हो। वा, बाट चारि दिस फूटइत हो। लेहमे पूब दिस तिब्बत-चांगथांग-मनालीक बाट, पश्चिममे कारगिल आ कश्मीर-बाल्टिस्तान, उत्तरमे नुब्रा वैली-काराकोरम-चीन केर सिंक्यांग प्रान्त आ दक्षिण दिस जान्सकार आ हिमाचलक बाट तँ छैहे। तखन, जतय चारि दिसक मनुक्ख, हवा-पानि, माल-असबाब, कला संस्कृति आ मनुक्खक शोणितक संगम होइत होइक ओ स्थान कोना ने अद्‌भुत हेतैक! आ, तें, लेह अछि अद्‌भुत। कोना? सएह तँ एहि लेख केर विषय थिक। तें, दम धरू।

हम जहिया लेह पहुँचल रही तखन अगस्तक मास रहैक। दिनक तापमान प्रायः 11 डिग्री सेंटीग्रेड छल हेतैक, रातिमे प्रायः 1-2 डिग्री सेंटीग्रेड। लेह केर हिसाबें गरमीए जकाँ भेलैक मुदा, दिल्लीक हिसाबें भयंकर जाड़! तें, जाड़सँ नोकसानक भय नहि छल से कोना कहब। तें, पहिल राति सुतबा काल अपना लग जतेक ऊनी कपड़ा छल पहिरि, ऊपरसँ दू गोट तुराइ ओढ़ि लेल। मुँह झाँपि सुतबाक हिस्सक छले, सएह केलहुँ। कपड़ाक ओतेक परत, तुराइक ओतेक भार आ झाँपल मुँहसँ देहमे तेहन ने खौंत फेकलक, जे संदेह होमय लागल जे प्रायः पहिले राति लेह अपन झटका देलक। राति कहुना बीतल। भोरहि अस्पताल गेलहुँ। ECG कराओल। फेफड़ाक जांच-lung function test-भेल। सब ठीक। आश्वस्त भेलहुँ। माता-पिताक देल पचास साल पुरान मॉडलक शरीर पर विश्वास दृढ़ भेल। भेल, शरीरक मॉडल ठीके

चलि रहल अछि। मुदा, एतबा अवश्य अनुभव भेल जे जाड़सँ बेसी कपड़ा आ जरुरतसँ बेसी भय दुनू घातक! दोसर दिन होइत-होइत हाउस-अरेस्टसँ मोन अकछा गेल। बेर खसिते कोठली सँ बहरा करीब एक किलोमीटर दूर मिलिटरी जनरल अस्पताल दिस एसगरे विदा भ' गेलहुँ। चारू कात नजरि घुमाओल, कनेक लेह तँ देखी; लेह अयबाले लोक कतेक टाका खर्च करैत अछि। मुदा, उपत्यकाक हरियर झमटगर गाछ सबहक कारण मिलिटरी एरियासँ एखन लेह बाजार देखब सम्भव नहि; पतझड़क बाद पूरा इलाका नग्न भ' जाइछ। मुदा, ताहिमे एखन देरी छलैक। तें, दृष्टि-पथक ई बाधा हमरा नीक नहि लागल। 1983 मे लेह इलाकामे हमर पोस्टिंग केर संभावना छल। किन्तु, एतय एलहुँ आइ, लगभग बीस बर्षक बाद। मुदा, लगैछ लेह बाजारक भ्रमण लेल हमरा आओर दू दिनक प्रतीक्षा करहि पड़त। तथापि, आस-पास नजरि घुमौलासँ आरीक धार-सन, बंजर पर्वत शिखर, सर्वत्र फहराइत रंग-बिरंगी बौद्ध पताका, बालुसँ पाटल भूमि, आ दूर दक्षिणमे हिमाच्छादित पर्वतमाला देखबामे आयल। आइ एतबहिसँ संतोष कयल।

अनिवार्य आराम (Compulsory acclamatization schedule) क 6 दिन पूर्ण भेला पर पहिल दिन गाड़ीसँ लेह बाजार होइत सिन्धुक दर्शन लेल विदा भेलहुँ। शहरसँ पूब दक्षिण करीब 5 कि.मी. पर, बाटमे जतय देखू, पग-पग पर छिड़ियायल बौद्ध स्मारक (छोर्तेन), मंदिर (गोम्पा)। एकर सबहक परिचय पछाति देब। तें, एखन सोझे सिन्धु चरणतल। एतय लेहसँ मनाली आ चांगथांग दिस जाइत हाईवे केर दक्षिण समतल भूमिमे, पूबसँ पश्चिम दिस बहैत सिन्धु नदीक पाट चौड़ा भ' जाइछ। वाजपेयी सरकार अपन शासनकालमे एतय नदीक कछेरपर पक्का घाट बनबा सिन्धु दर्शन उत्सवक आयोजन केने छल। तहियासँ एहि स्थानकें सिन्धु दर्शन कहल जाइछ। हमरालोकनि गाड़ी रोकि एतहि घाट पर एलहुँ। सिन्धुक पवित्र शीतल जल कें स्पर्श कयल; आब विशाल नदी सबमे सेहो पवित्र जल भेटब असंभव! अनन्त कालसँ कल-कल बहैत हरियर कचोर सिन्धु, अपन अमृतमय आसवसँ एहि प्रदेशकें तँ सिंचैत छथिए, एकर आगू नीचा सुदूर अरब सागरधरि कछेरे-कछेर बसल जनसमूहक जीवन-रेखा सेहो छथि। प्रसारमे संकीर्ण, कतहु उत्थर, कतहु गहींर, प्रकृतिए चपल-चंचल, आ नयनाभिराम सिन्धुकेर पवित्र शीतल जलकें स्पर्श करैत भेल, जेना जीवन सफल भ' गेल। सरिपहुँ, राष्ट्र-गानमे भले सिन्धुक चर्चा हो, सिन्धुक स्पर्शक अवसर विशिष्ट थिक! तें, लेह अयलापर ऑफिसर मेससँ बाहर हमर पहिल पड़ाव सिन्धुएक तट थिक। अतः, दू पांती सिन्धुक प्रशस्तिमे :

दूर-सुदूर गगन कें छूने
दृढ़ता सँ पृथ्वीकें धेने
हिमगिरिकेर मायावी उर सँ
कविक मनक कविता-सन मधुमय
तरल-विरल कमनीय धार लय
सिन्धु अहाँ छी हार कंठ केर
भारत भूमिक नाम,
दर्शन भेल, सफल भेल जीवन
शत-शत नम्र प्रणाम।

लेहक पर्यटन स्थल सब

लेह लद्दाख़क गप्प सैनिक लोकनिसँ करबनि तँ बहुतो गेल हेताह, सुनल तँ बहुतोकें हेतनि। मुदा, जनसाधारणमे केओ लेह गेल होथि से अभावृत्तिए भेटताह। दूरी, दुर्गम बाट, प्रतिकूल वातावरण, खर्च, आ प्राथमिकता। ताहिपर गंगोत्री-यमुनोत्तरी, बद्रीनाथ, केदारनाथ-सन कोनो तीर्थ जँ लद्दाख़मे रहितैक तँ लोक तीर्थाटन लेल लद्दाख़ जेबो करैत। मुदा, लद्दाख़मे ओ सब किछु नहि। ततबे नहि, सिन्धु जँ गंगा-जकाँ पापोद्धारिणी होइतथि तँ लोक सिन्धुमे डूबो लगबैले लद्दाख़ धरि जाइत, मरबाकाल गंगाजल, आ 'आब-ए-जमजम' जकाँ सिन्धुक जल सेहो मनुक्खक जीह पर देल जइतैक। मुदा, तकरो परम्परा नहि छैक। ई सर्वविदित अछि जे भारतक उत्तरी आ उत्तर-पूर्वी सीमा प्रदेशकें छोड़ि आन सब ठाम अपन देशमे बौद्ध-धर्म विलुप्ते अछि। अस्तु, लद्दाख़मे गामे-गाम छिड़ियायल अनेको प्रसिद्ध बौद्ध पूजा-स्थलक बावजूद देशक समतल भूमिसँ केओ बौद्ध, तीर्थाटनक दृष्टिएँ लद्दाख़ जाइत होथि से हमरा देखल-सुनल नहि अछि। सारांश ई जे भारतक वृहत्तर जनमानसमे लद्दाख़ भारतकेर एक टा सुदूर भू-भाग धरि थिक, जकर केवल रक्षा हेबाक चाही। ततबे। किन्तु, लद्दाख़ केहन अछि तकर जिज्ञासा कतेक लोककें हेतैक। तें, एहि लेखमे आइ लद्दाख़क मुख्यालय लेह आ आसपासक किछु मुख्य-मुख्य स्थलक गप्प करी। सत्यतः, जँ गूगल (बाबा) सँ परिचय हो तँ बहुतो स्थानक चर्चा विकिपीडियामे भेटि जायत। मुदा, विकिपीडिया आ आँखिक देखलमे अन्तर तँ छैहे। तें, हम परिचित स्थान सबहक संग किछु एहन स्थान सबहक चर्चा करब जकर चर्चा पर्यटनक सूची वा विकिपीडियामे नहि भेटत, किन्तु, स्थान रोचक छैक।

लेह लद्दाख़क मुख्यालय थिक। एक युगमे एतय स्थानीय राजा रहथि। तें,

राज-प्रासाद, पूजास्थल, बाजार आ सेवक लोकनिक बस्ती सबटा हयब उचितो आ आवश्यको। किन्तु, कबीर कहैत छथिनः

चांदो मरिहैं सूरजो मरिहैं मरिहैं धरनि अकासा
चौदह भुवन चौधरी मरिहैं का की करिहैं आसा

अस्तु, आब ने लेहमे राजा छथि आ ने हुनकर प्रजा। आब लद्दाख केंद्र शासित प्रदेश थिक बांकी सब नागरिक थिकाह। किन्तु, राजप्रासाद तँ छैहे। आ लेह पहुँचब तँ कतहु रही, सबसँ ऊँच पहाड़पर नौमंजिला लेह-पैलेस देखबे करबै। पैलेसकेर भीतर बौद्ध पूजा-स्थल (गुम्बा) सेहो छैक। लेहके पराक्रमी राजा सिंगे नामग्यालकेर माता इस्लाम धर्मक अनुयायी छलथिन। अस्तु, पैलेसक लगहि, बाजारक एक छोर पर पैघ मस्जिद सेहो देखबैक। किन्तु, मस्जिद पर्यटनक हेतु प्रायः महत्वपूर्ण नहि। अस्तु, आब पर्यटन स्थल सबहक गप्प करी।

लेह केर शान्तिस्तूप

शान्तिस्तूप विश्व भरिमे बौद्ध आस्थाक प्रतीक थिक। सारनाथ हो वा साँची, काठमांडू, पोखरा, कुशीनगर, अनुराधापुर (श्रीलंका), थाईलैंड, वा चीन, स्तूप सबतरि देखबैक। परम्परासँ स्तूप सब बौद्ध अवशेष, भिक्षु लोकनि समाधि वा विशिष्ट भूमि पर बनाओल जाइछ। सारनाथक स्तूप महात्मा बुद्धकेर पहिल उपदेशक स्थल थिक। साँचीक स्तूप बुद्धकेर अवशेषक समाधि थिक। तहिना भारतीय सहयोग आ एकटा जापानी भिक्षुक प्रयासें बनल लेह केर शान्ति स्तूप बौद्ध स्मारके टा नहि एतुका ध्रुव-तारा थिक। ई स्तूप लेहमे सब ठामसँ देखबामे आओत। आ लेह उपत्यकाक सम्पूर्ण इलाकाक विहंगम दृश्यक मजा लेबय चाहैत छी, तँ शान्ति-स्तूपक अंगनैमे ठाढ़ होउ आ चारू दिस नजरि घुमाउ। शीतल वायुक स्पर्श, निर्मल नील आकाश, नीचाक उपत्यका, बाजारक दृश्य, हिमाच्छादित पर्वतमाला, आकाश आ दूर दक्षिणमे सिन्धु नदीक पाट अनेरे मोनकें मोहि लेत। जेना कहलहुँ, स्तूप सब बौद्ध अवशेष, भिक्षु लोकनिक समाधि, वा विशिष्ट भूमि पर बनाओल जाइछ। किन्तु, जँ भूत-प्रेतकें नियंत्रित करबाले कतहु स्तूप बनल होइ तँ से केवल लेहेमे भेटत! तिस्सुरु स्तूप एकटा एहने स्थल थिक।

तिस्सुरु स्तूप

जँ, पर्यटनकेर प्रामाणिक स्रोत, लोनली प्लेनेट (lonely planet) कें मानी, तँ, लद्दाख़क सबसँ पैघ आ कच्चा इंटा आ माटिक बनल तेसुरु स्तूपक निर्माण

भूत-प्रेतहिकें नियंत्रित करबाले भेल रहैक। जनश्रुति छैक, एहि स्तूपसँ पहिने, एहि ठाम पीयर रंगक एकटा विशाल पाथर-पिण्डमे प्रेतक निवास छलैक। लोकक कहब छैक, राजमहल केर ठीक पछुऐतमे स्थित एहि पाथर पिण्डकें देखिते तत्कालीन रानी अस्वस्थ भ' गेल रहथि। अस्तु, एहि स्तूपक निर्माण भेल आ ओहि पाथर-पिण्डकें एहि स्तूपमे नुका एकरा लोकक नजरिसँ अ'ढ़ कयल गेल। सहजहि, जतय भूत प्रेतक डेरा हेतैक लोक ओतय किएक सटय जायत। अस्तु, लद्दाख़क सबसँ पैघ स्तूप, ढहैत-ढनमनाइत भूमिसात हेबाक परिस्थितमे पहुँचि गेल छल। किछु वर्ष पूर्व स्थानीय लोक सबहक सहयोगें एकर जीर्णोद्धार भेलैक आ तिस्सुरु स्तूप बचि गेल।

जोरावर किला

जोरावर सिंह कहलुरिया, जम्मूक तत्कालीन राजा गुलाब सिंहक 'वजीर' आ सेनापति छलाह, जे 1834 ई. मे किश्तवार इलाकासँ चलि लद्दाख़पर एकाधिक बेर आक्रमण केने रहथि। अपन अंतिम लद्दाख़ी अभियानक क्रममे ओ लेहमे एहि किलाक निर्माण केने छलाह, जे जोरावर फोर्टक नामसँ जानल जाइछ। ई किला लेह सैनिक जनरल अस्पतालक लगहि अछि। सत्यतः, सदातनिसँ ई किला लद्दाख़ी लोकनिक हेतु पराजयक प्रतीक छल। तें, लद्दाख़ी लोकनि एकरा पर्यटन स्थल मानथि तकर आशा करब असम्भव। दस वर्ष पूर्वधरि लद्दाख़ी लोकनि सएह कहने रहथि। किन्तु, हालमे लद्दाख़ी मूलक, भारतीय सेनाक एकटा भूतपूर्व सैनिक अफसरसँ गप्प भेल। ओ कहलनि, 'असलमे, जोरावर सिंहक आक्रमण लद्दाख़ लेल वरदान छल। अन्यथा, लद्दाख़ आइ तिब्बत आ चीनक हिस्सा होइत! एहि किलामे भगवतीक मंदिर आ पेय जलक स्रोत छैक। आब पर्यटनक सीजनमे लेह ऑटोनोमस हिल डेवलपमेंट काउन्सिल जोरावर फोर्टमे साँझुक पहर नियमतः लाइट एंड साउंड कार्यक्रमक आयोजन करैछ।

गुरुद्वारा श्रीपत्थरसाहेब आ दातूनसाहेब

अवतारी पुरुष लोकनिक जीवन हमरा सतत प्रेरित करैत अछि। बुद्ध-महावीरसँ ल' कय गुरु नानक देव आ आदिशंकर केर जिनगीमे एकटा समानता छनि; ई सब गोटे यायावर छलाह। तें दूरी, जलवायु आ शारीरिक कष्ट हुनकालोकनि हेतु कोनो बाधा साबित नहि भेलनि। दक्षिणसँ उत्तर, पश्चिमसँ पूब, शंकराचार्य कतय-कतय नहि गेलाह। गुरु नानक देवक यात्राक इतिहास सेहो आश्चर्यजनक छनि। मानल जाइछ, गुरु नानकदेव लद्दाख़ सेहो आयल छलाह। यद्यपि एकर ऐतिहासिक प्रमाण

ताकब कठिन। भक्तलोकनिक धारणा छनि, गुरु नानकदेवक लद्दाख़ यात्राक समय हुनक एकटा चमत्कारिक कृत्य ओतुका पीड़ित नागरिक सबहक हेतु वरदान साबित भेल छलैक। गुरुद्वारा पत्थर साहेब तकरे प्रमाण थिक।

गुरुद्वारा श्रीपत्थरसाहेब : लेह-कारगिल मार्गपर लेहसँ करीब 25 किलोमीटर पश्चिम, मुख्य मार्गक एक कात, गुरुद्वारा श्री पत्थर साहेब एकटा प्रमुख धार्मिक स्थल थिक। भक्त लोकनिक अनुसार गुरु नानकदेव केर लद्दाख़ यात्राक युगमे बाटक कातक एकटा ऊँचका टीलापर एकटा दुष्ट दानव रहैत छल। ओ दुष्ट ऊपरसँ पाथर ओंघड़बैत छल। एहि उपद्रवसँ अबैत-जाइत यात्री आ ओतुका समाज सब आतंकित छल। एक दिन यात्राक बीच गुरु नानकदेव ओतहि, बाटक कातमे ध्यानस्थ छलाह। दानव हिनको साधारण मनुक्ख बूझि हिनको संग दुष्टतासँ बाज नहि आयल आ पहाड़परसँ एकटा पैघ पाथर गुरुक दिस ओंघड़ौलक। गुरु ध्यानस्थ छलाह। किन्तु, अपन योग-बलसँ दुष्ट राक्षसक योजना हुनका बुझबामे भांगठ नहि भेलनि। फलतः, पाथरक जे भाग ध्यानस्थ गुरुक पीठसँ भिड़ल ओ पिघलिकय स्वतः मोम भ' कय बिला गेल। गुरुक स्पर्शसँ अंशतः पघिलल ओ पाथर आइ गुरुद्वारा श्री पत्थर साहेबक मुख्य स्मारक थिक। किछु स्थानीय लोकक कहब छनि 50 वर्ष एतय किछु नहि रहैक। किन्तु, आस्था आस्था थिकैक। महात्मा लोकनिक चमत्कारक खीसापर भक्तलोकनिकें सहजहि विश्वास भ' जाइत छनि आ श्रोता सहजहि चकित भ' जाइछ। एहि गुरुद्वाराक दिन-प्रतिदिनक देख-रेखक भार लेह स्थित मिलिटरी यूनिटसब बेरा-बेरी अपना ऊपर लैत अछि आ सैनिकलोकनि मनोयोगसँ यात्री सबहक सेवा करैत छथि। लद्दाख़क हाड़ हिलबैबला जाड़ होइक वा गर्मीक दिन, गुरुद्वारा श्रीपत्थरसाहेबक परिसरमे चौबीसो घंटा, जाइत-अबैत यात्री-फौजी-पर्यटक क्षणभरि लेल अवश्य सुस्ताइत छथि, मत्था टेकैत छथि, गरम-गरम चाह पिबैत छथि, आ लंगरमे गुरुक प्रसाद पबैत छथि। मोन राखी, गरम चाहसँ स्वागतक मोल तखने नीक-जकाँ बुझबैक जखन लद्दाख़-सन शीत प्रदेशमे यात्रा करब। एहि गुरुद्वारामे वर्ष भरि समय-समयपर धार्मिक अनुष्ठान होइते रहैछ। घरसँ दूर आ सेना-सन चुनौतीपूर्ण व्यवसाय लेल ईश्वरक ओङठन बड़ कारगर होइछ। अतः 'जो बोले सो निहाल, सत श्री अकाल।'

दातून साहेब : लेह बाजारमे सड़कसँ उत्तर मस्जिदक कतबहिमे एकटा गलीमे एकटा विशाल, सुखायल, मिसवाकक निष्प्राण गाछ देखबैक। बाबा बैद्यनाथ मिश्र

'यात्री-नागार्जुन'क बाबा बटेसरनाथ-जकाँ हिनकहु जड़िसँ एकटा वंशज फेर पनुगी लेलक आ जवान भ' गेल। एहि बुढ़ा जरद्गव आ जवान वृक्षकें सिख भक्तलोकनि दातून साहेब कहैत छथिन। सुनैत छी, आब एहि स्थानसँ कनेक उपर एकटा भव्य गुरुद्वारा दातून साहेबक निर्माण भेल अछि। मुदा, स्थानीय लद्दाख़ीलोकनि एहि वृक्षक ऐतिहासिकतासँ सहमत नहि। मुदा, वृक्ष भले ऐतिहासिक हो वा नहि, भक्तलोकनि एतय आबि गुरुक स्मरण तँ करैत छथि। एखनुक युगमे विश्वकें गुरु नानक-सन समन्वयकारी संतक अत्यंत आवश्यकता छैक।

सत्यतः, ईश्वरक स्मरण लेल केवल मन चाही। किन्तु, मन चंचल होइछ, तें मनुक्ख प्रतीक ताकि लैछ। कतहु गाछ, कतहु मूर्ति, कतहु नदी-समुद्र वा केवल ध्वनिक, इएह प्रतीकसब ईश्वरक रूप ल' लैछ। आ क्रमशः स्थान, गुरुद्वारा श्री पत्थरसाहेब, दातूनसाहेब, रीठासाहेब, रिवालसर झील वा रमबाबाक मन्दिर बनि जाइछ। किन्तु, प्रतीककेर सन्दर्भ अयलैक तँ स्वामी विवेकानन्दक जीवन यात्राक चर्चाक बिना ई प्रसंग पूर्ण नहि हयत।

ई प्रसंग विवेकानंदक जीवनीमे भेटत। प्रसंग किछु एना छैक। स्वामीजी भारत-यात्राक क्रममे प्रायः राजस्थानक कोनो रजवाड़ामे पहुँचल छलाह। संयोगसँ ओतुका दीवान स्वामीजीकें अपना ओतय निमंत्रित केलखिन। दीवान मुसलमान रहथि। संयोगसँ ओहि दिन दीवानक संग मूर्ति पूजा पर चर्चा शुरू भ' गेलैक आ दीवान साहेब स्वामीजीकें मूर्ति पूजापर प्रश्न पूछय लगलखिन। स्वामीजी कहलखिन, मूर्ति प्रतीक थिकैक जाहिसँ हिन्दू अपन इष्टक समीप पहुँचि जाइत छथि। दीवान कहलथिन, किन्तु, प्रतीकमे देवता तँ नहि होइत छथिन। स्वामीजीक तेजस्विता आ प्रत्युत्पन्नमतित्व तँ जग विख्यात अछि। हुनका की फुरलनि ओ अपन स्थान परसँ उठलाह आ देवालपर टांगल ओतुका राजाक पेंटिंग उतारि दीवान सोझाँ राखि कहलखिन, एहि पर थूकि दियौक। दीवान तरंगि उठलाह। कहलखिन, ई की कहैत छी! राजाक चित्र आ एहि पर हम थूक फेकू। स्वामीजी निर्विकार भावें कहलखिन, 'ई चित्र थिकैक, राजा नहि थिकाह!' कहल जाइछ, मूर्ति पूजापर ओहि दिनुका बहस ओत्तहि समाप्त भ' गेलैक।

रम बाबाक मन्दिर

रम बाबाक मन्दिर ने आम पर्यटकक रूचिक स्थान थिक आ ने आम पर्यटक ओतय जाइछ; सैनिक क्षेत्रमे जयबाक वर्जना तँ छैके। तथापि, प्रसंग आबि गेलैक तँ सुनू रम बाबाक खीसा। कथा बड्ड पुरान नहि छैक। रमबाबा लोकनि लेहकेर

स्थानीय सिगनल रेजिमेंटकेर दू टा सैनिक रहथि, जनिका ड्यूटीक अवधिमे रम (शराब) पीबाक दण्डमे एक राति लगक पहाड़ीपर जा कय ड्यूटी देबाक आदेश भेलनि। जाड़क मास छलैक। दुनू मित्र ड्यूटी पर जेबाकाल जाड़क ओङठन ले संगमे रम केर बोतल राखि लेलनि आ पहाड़पर पहुँचि नीक जकाँ रम पीबि राति बितेबाक प्रण केलनि। किन्तु, खोराक बेसी भ' गेलनि आ दुनू गोटे ओहि राति ओत्तहि पाथर भ' गेलाह। ओएह स्मारक भ' गेल रम बाबाक मन्दिर, जकर देखभाल स्थानीय सिगनल रेजिमेंट करैत अछि।

माथो गामक, बौद्ध विहार, आ माथो विहारक भविष्यवक्ता

भारत जतेक हमरा देखल अछि, ताहिमे क्षेत्रफल आ धार्मिक स्थलक बीचक जँ अनुपातक अनुमान करी तँ दक्षिण भारतमे प्रायः उत्तर भारतक बनिस्बत पैघ-पैघ पूजा-स्थल सब बेसी छैक। किन्तु, जँ धार्मिक स्थल आ जनसंख्या अनुपात देखियैक तँ लद्दाख़ प्रायः नम्बर एक पर आबि जायत। लद्दाख़मे जतय कतहु गाम छैक ओतय मंदिर अवश्य भेटत। सबसँ ऊँच भूमि, सबसँ ऊँच भवन, आ प्रायः आस-पासक सबसँ बेसी उपजाउ भूमि बौद्ध-विहारेक होइछ। ई पूजा स्थल सब कतहु एके वा एक दोसरासँ भिन्न बौद्ध सम्प्रदायक सेहो देखबैक। लद्दाख़मे सिया मुस्लिम आबादी सेहो छैक। किन्तु, ओ लोकनि मूलतः लेह, कारगिल शहर आ तुर्तुक केर इलाकामे भेटताह। मस्जिदो सब ओही इलाकामे भेटत। ओकर सबहक वर्णन क्रमशः भेटत। बांकी सब ठाम बौद्ध समाज छथि। आइ लेह केर समीप माथो गामक बौद्ध विहारक गप्प कहैत छी। ई बौद्ध विहार सम्पूर्ण लद्दाख़मे वार्षिक भविष्यवाणी लेल प्रसिद्ध अछि। आब गप्प कनेक विस्तारसँ।

सत्यतः, भविष्यवक्ता, ओझा-गुणी, ज्योतिषी, साधु आ साधक तँ सब ठाम होइत अयलाहे। जकरा विश्वास होइत छनि, हाथ देखबैत छथि, टिप्पणि देखबैत छथि, ग्रह-शान्ति करबैत छथि आ भूत-प्रेत झड़बैत छथि। हमरा एकर सबहक गप्प सुनल बेसी, देखल कम, आ विश्वास एकदम नहि अछि। तथापि 2004 मे कौतूहलवश हम माथो विहारक वार्षिक भविष्यवक्ताक करतब देखय गेलहुँ। अवसर कोनो होइक डाक्टरी हमर जीवने थिक। एहि वार्षिक मेलाक अवसरपर विहारकेर लगहिमे हमरालोकनि सेहो मेडिकल कैंप लगाओल आ टहलैत माथो-बिहार धरि गेलहुँ। सुखठिक वणिज आ पशुपतिक दर्शन! माथो-विहार बौद्ध धर्मक तान्त्रिक सम्प्रदायक विहार थिकैक। पहिनहुँ सुनल अछि, तिब्बत-लद्दाख़ आ सम्पूर्ण पूर्वोत्तर भारतमे तन्त्र-मन्त्र-रहस्य आ एकान्त साधनाक परिपाटी सदायसँ चलैत आबि

रहल छैक। इतिहास विदित अछि, बौद्ध धर्मक उदय सनातन धर्मक सुधारक रूपमे भारतमे भेल रहैक, जाहिमे जीवन पद्धतिक निश्चित अनुशासनकें धर्म-जकाँ स्थापित कयल गेल छलैक। तें, पारंपरिक बौद्ध परिपाटी आ तन्त्र-मन्त्र-रहस्य, उड़ैत लामा आ गुफाक गर्भमे स्वनिर्वासित साधक लोकनिक गप्पपर आश्चर्य उचिते। मुदा, तर्क दोसर छैक। सारांश ई, जे बौद्ध धर्म जखन भारतसँ तिब्बत गेल छल, ओतय बौद्ध धर्मसँ भिन्न एकटा स्थानीय 'बोन' धर्मक परम्परा छलैक। आयातित नव धर्मकें स्वीकार्य बनयबाले नव आ पुरान मान्यताक संश्लेषण होइत गेलैक। स्थापित मान्यता, जलवायु, आ भौगोलिक स्थितिक कारण खान-पानक बाध्यता तँ रहबे करैक। अस्तु, स्थानीय मान्यता बौद्ध धर्ममे क्रमशः तेना मिज्झड़ होइत चल गेल जे ओकर स्वरूप बौद्ध धर्मक अनेक मौलिक मान्यतासँ पूर्णतः भिन्न भ' गेलैक। किन्तु, ओएह संश्लेषित संप्रदाय, बौद्ध धर्म-जकाँ प्रतिष्ठित भ' गेल। अनुभवो कहैत अछि, नोन-मरचाइ-मशालाक योगसँ कांचे कब-कब ओल स्वादिष्ट व्यंजन बनि जाइछ, दुर्गंधमय माछ विशिष्ट भोजन भ' जाइछ। तहिना, व्यवहारमे शुष्क, आ अनुशासनमे कठिन बौद्ध धर्म, तन्त्र-मन्त्र साधक आ मांसाहारी तिब्बती समुदायक धर्म भ' गेल आ बुद्ध ईश्वर भ' गेलाह। हँ, आइ बुद्ध जीबैत रहितथि तँ ओ हँसितथि, कि क्षुब्ध भ' मौन भ' जैतथि, से के कहत!

आब पुनः माथो महोत्सव पर आबी। माथो महोत्सव लद्दाख़मे अपना-सन अपनहि-टा अछि। एकरा मिथिलांचलक भगताक भाओ बूझि सकैत छी। ओहिना, जेना, सलहेसक पूजाक अवसर पर राजा सलहेसक गहबरमे भाओ होइत छनि। किन्तु, दुनूमे कनेक अंतर छैक। भाव प्रतिवर्ष होइत छैक। किन्तु, एतय भाओ प्रतिवर्ष होइतो एतुका भगताक चुनावक प्रत्येक चारि वर्षपर होइछ। भगताक चुनावक प्रक्रिया जटिल छैक। चुनल भगता वा भक्त साल भरि साधना करैत छथि। बीचमे पूजा-अर्चना-पाठकेर जटिल कर्मकाण्डकें पार करैत मार्च महीनाक मध्यमे पर्वक समय देवता भगतपर सवार भ' जाइत छथिन। वएह देवता माथो महोत्सव दिन छिलल कपार, काषाय वस्त्र, आ भयानक भंगिमामे भगताक रूपमे हाथमे भरिगर तरुआरि नेने सम्पूर्ण चारिमंजिला विहारमे एकत्रित जन समूहक बीच, परिसर-प्रांगण आ चौमंजिला विहारक मुड़ेर धरि पर दौगैत छथि। लोक साष्टांग दंडवतमे भूमिपर पेटकुनिया द' दैछ। उपस्थित जनसमूह भगताकें पूजैत छनि, वस्त्र पहिरबैत छनि, प्रश्न पूछैत छनि। भगताक ओहि भयानक भंगिमामे जकरा मनोनुकूल उत्तर भेटलैक, धन्य भ' गेल। जकरा उत्तर नहि भेटलैक, माथ नबौलक आ सन्तोष केलक। किन्तु, जाहि हेतु लोक भरि वर्ष भविष्यवक्ता

(oracle) क बाटा-बाटी तकैछ ओ थिक सामूहिक भविष्यवाणी। माथो महोत्सवक अवसर पर भगता अगिला वर्षक हेतु लद्दाख़क जलवायु आ प्राकृतिक विपदाक भविष्यवाणी करैत छथि। ई एहि महोत्सवक सबसँ पैघ प्रासंगिकता थिकैक, जकरा आजुक परिप्रेक्ष्यमे नहि, ओहि कालक परिप्रेक्ष्यमे देखबाक चाही जहिया लद्दाख़ भौगोलिक आ आर्थिक दृष्टिएँ अलगे टा नहि, मौसमक दृष्टिएँ सेहो अत्यधिक कठिन भूखण्ड छल। आब परिस्थिति बदललैए। किन्तु, परम्परा आ आस्थाक जड़ि माटिमे बहुत दूर धरि जाइछ छैक। तें, लोक आइओ माथो महोत्सवक बाट तकैत अछि आ भविष्यहुमे प्रायः बहुत दिन धरि एकर बाट तकैत रहत।

माने रिंग्मो

'माने पद्मे हुं (अर्थात् 'अहा! कमलमे मणि!')' तिब्बती बौद्ध लोकनिक हेतु बीज मंत्र थिक। चाहे बौद्ध लोकनिक हाथमे घूमैत धर्म-चक्र (prayer wheel) हो वा बौद्ध मन्दिर सबहक परिसरमे स्थापित छोट-पैघ-विशाल धर्मचक्र हो, ई प्रभावी मंत्र सब ठाम लिखल भेटत। एहि मंत्रक ध्वनि सबठाम कानमे पड़त। एहि मंत्रक प्रति आस्था एहन छैक जे बौद्ध इलाकामे छोट-पैघ पाथरपर एहि मंत्रकें अंकित कय स्तूप आकारक एक बीतसँ ल' कय मर्द भरिक ऊँच, पाथरक ढेर सब भेटत। अभिसिक्त पाथरक ढेरसँ बनल एहि आकृति सबकें 'छोरतेन' कहल जाइछ। मुदा, एहने अभिषिक्त पाथरक ढेर जँ छोट-पैघ देवालक आकार ल' लिअय तँ ओकरा माने-देवाल (mani-wall) कहल जाइछ। बहुतो ठाम बस्तीक बाहर एहन माने-देवाल भेटत। किन्तु, लम्बाइमे किलोमीटरसँ बेसी, चौड़ाइमे करीब 12-15 फुट आ ऊँचाइमे चारि फुटसँ बेसी लेह केर माने-रिंग्मो हमरा जनैत लद्दाखक सबसँ पैघ माने-देवाल थिक। स्पष्ट छैक, देवाल पर आ एकर फलक पर 'माने पद्मे हुं' लिखल अजस्र पाथर देखबैक। परम्परासँ बाटे-बाट चलैत पथिक जाइत-अबैत माने-देवालकें अपन दहिने राखि चलैत छथि। आधुनिक युगक अनुसन्धानक मानब छैक, कदाचित ई माने-देवालसब बाढ़िक पानिक बहावकें रोकबाक बान्ह जकाँ बनाओल गेल छल हो।

शहीद स्मारक आ हौल ऑफ फेम (सैनिक लोकनिक कीर्ति वीथी)

राष्ट्र जखन युद्ध लड़ैछ, सीमा प्रदेशकें अनिवार्यतः युद्धमे भागीदार होबय पड़ैत छैक। किन्तु, सैनिकक जन्म कतहु होइक ओकरा जतहि युद्ध हेतैक, गेनहि प्रकार। युद्धमे भागीदारीए सैनिक-जीवन सार्थकता थिकैक : हतो वा प्राप्स्यसि

स्वर्ग, जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्! तथापि युद्धमे मारल गेलापर स्वर्ग होइत छैक, कि नहि, के कहत। किन्तु, लड़ैत सैनिककें युद्धमे स्वर्गहुक कामना नहि होइछ, से हमरासँ सुनू। कारण, हमरा-सन, वा आन कोनो सैनिक लेल, स्वर्ग अपन देशे थिक। लड़िकय अपन भूमिक रक्षा केलहुँ, तँ, अपना लेल अपनहि अपन स्वर्ग बचा लेलहुँ। बस। आब एहि भूमिपर रही वा एहि भूमिक तरमे, से गौण थिक। हमर मृत शरीरकें लेह भेटैक वा लोहित नदीक कछेर, कोनो अंतर नहि। बाइबिल कहैत अछिः भूमिसँ जान, धूरि समान (Genesis 3:19)

लेह मिलिटरी जनरल हॉस्पिटल लगक स्मारक 1962 केर युद्धमे शहीद किछु एहने अनामा वीर लोकनिक समाधि थिक। ई समाधि सैनिक अस्पतालक सोझाँ सड़कक कातहिमे देखबामे आओत–शान्त, विस्मृत, आडम्बरहीन। जेना, सैनिक सबतरि होइछ। कारण, जीवित सैनिककें शासक लोकनि अपन तात्कालिक आभामंडलक आभूषण बूझैत छथि। मृत सैनिक स्मारकमे एकाकी विस्मृत भेल पड़ल रहैछ! एखनुक भारतक इएह विडम्वना अछि। तथापि, लेह अबैत जँ कहियो एहि बाटें जाइ, एहि स्मारक पर फूल भले जुनि चढ़ाबी, एक क्षण एतय अवश्य बिलमी आ एहि शहीद लोकनिकें श्रद्धाक भागी अवश्य बुझियनि। हम तँ इएह सोचैत छीः

अपन भूमि आ अपन देह, निश्यय दुनू हेतइ एक
धन्य थिकै बलिदानक संयोग, आओर ने कोनो चाही भोग!

मिलिटरी अस्पतालक समीपक शहीद स्मारक केर अतिरिक्त लेहमे एयर-फोर्सक हवाई-पट्टीक लगहि सड़कक कातहि एकटा आओर सैनिक स्मारक दर्शनीय अछि। ई थिक 'हॉल ऑफ फेम'। 'हॉल ऑफ फेम'मे भारत-पाकिस्तानक बीचक युद्धमे दुश्मनसँ छीनल बहुत रास अस्त्र-शस्त्र, माल-असबाब, आ कागज-पत्र देखबामे आओत। लेहक कार्यक्रममे समय भेटय, तँ, हॉल ऑफ फेम अवश्य देखी।

खर्दुंग-ला पास

भूमि पर पयर आ आकाशमे माथ जँ कतहु चरितार्थ होइछ तँ केवल पर्वतक माथहि पर। ताहिमे उत्तरमे नुब्रा उपत्यका आ दक्षिणमे लेहक बीचक गगनचुम्बी लद्दाख़ पर्वतशृंखलाकें पार करबाक सबसँ सुलभ स्थान थिक खर्दुंग-ला पास। लेहसँ करीब 45 किलोमीटर उत्तरमे 18387 फीटक ऊँचाइ पर स्थित खर्दुंग-ला पास हेबनि धरि देशक सबसँ ऊँच मोटरबुल पास छल। आब पूर्वी लद्दाख़हिमे एहिसँ ऊँच पास बनि गेने खर्दुंग-ला पास नंबर दू पर भ' गेलै। तथापि ई लेहसँ ततेक लग अछि जे, भोरमे जलखइ लेहमे करू, मोटर कार-टैक्सीमे चढ़ू, दू

घंटाक पछाति चाह खर्दुंग-ला पासपर पीबू आ आपस भ' दुपहरियाक भोजन पुनः लेहमे करू। बीचमे खर्दुंग-ला पासपर घिचाओल फोटोकें गाम ल' जाउ, गौरवान्वित होउ! हँ, होश-हवासमे जँ वायुक तरंगपर उडबाक अनुभव लेबय चाहैत छी, तँ, खर्दुंग-ला अवश्य आबी।

मैगनेटिक हिल

लेहसँ करीब 25 किलोमीटर पश्चिम गुरुद्वारा पत्थर साहेबक समीपहि, मैगनेटिक हिल एकटा एहन पर्यटन स्थल थिक जतय सत्य वा भ्रमकेर बीचक रेखा मेटा जाइछ आ पर्यटक आश्चर्यमे माथ हंसोथय लगैत छथि। मैगनेटिक हिलक समतल सड़कक एहि खण्डपर अपन मोटर गाड़ीक इंजनकें चलैत राखि गाड़ीकें न्यूट्रलमे छोड़ि दियौक आ देखू तमाशा। गाड़ी ढलानकेर विपरीत दिशामे अपनहि चलब शुरू क' देत। ई सत्य थिक वा भ्रम हम एहि विवादसँ दूर छी। किन्तु, पर्यटन लेल आयल छी, मजा उठाउ।

जान्सकार आ सिन्धुनदीक संगम

छोट नदीक पानि पैघ नदीमे, आ नदी सबहक पानि अंततः समुद्रमे खसैछ। ई स्वाभाविक थिक। किन्तु, दू नदीक संगमकें किएक पावन मानल जाइछ हमरा नहि बूझल अछि। तथापि जँ संगमकें केवल सुन्दरताक दृष्टिसँ देखल जाय तँ लेहसँ करीब 40 किलोमीटर पश्चिम जान्सकार आ सिन्धु नदीक संगम अपूर्व अछि। एतय जान्सकारक नीलम-सन स्वच्छ पानि आ सिन्धुकेर घोर-मट्टापानिमे मीलिकय एकाकार भ' जाइछ। जेना, आभिजात्य आ अति साधारण अपन स्वरूप बदलि एक भ' गेल हो। लगक ऊँच सड़क पर ठाढ़ होउ, आ संगमक सुषमाक आनंद लिअ'। एहि सबहक अतिरिक्त लेहक चारू कात पर्यटन स्थलक कमी नहि। किन्तु, से सब लेह जायब तँ देखब वा नहि देखब। कारण लेहमे सबसँ कीमती वस्तु थिक समय। एतय आयब, रहब, आ जलवायुकें सहब तीनू कठिन। किन्तु, स्वस्थ होइ आ रुचि हो तँ एकबेर सिन्धु दर्शन अवश्य करी। जाड़क मासमे ठंढीसँ जमि कय पाथर भेल जान्सकार नदीपर चलैत जान्सकारक मुख्यालय पदुम धरि पैदल जयबाक, चदर-वाकक नामसँ प्रसिद्ध एडवेंचर टूरिज्म यात्रा एतहि नीमूसँ आरम्भ होइछ। नीमू-पदुम धरिक निर्माणाधीन रोड बनि गेलापर चदर-वाकक गति की ओएह हेतैक जे विकाससँ सबठाम होइत एलैए, आ जान्सकार सेहो टूरिस्ट डिजास्टरक नामावलीमे एकटा नाम बनि कय रहि जायत!

अविस्मरणीय शौर्यक भूमि चुशूलमे

शहीदों के मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले
वतन पे मरनेवालों का यही बांकी निशां होगा!

शहीद अशफाकउल्ला खां केर एहि उक्तिमे सत्य आ विडंबना दूनू छैक। शहीद लोकनिक स्मारकपर माल्यार्पण सेहो होइछ, श्रद्धांजलिओ देल जाइछ, आ शहीदलोकनिकें लोक बिसरियो जाइछ। कतेक बेर तँ एहनो होइछ, जे, जाहि वीरकें सैन्य-इतिहासमे उदात्त-चरित मानल जाइछ, जनसामान्यमे ओलोकनि पूर्णतः अपरिचित रहैत छथि। ततबे नहि, अधिकतर युद्ध सीमा क्षेत्रक दुर्गम भूमिमे आ विषम परिस्थितिमे लड़ल जाइछ। तें, जनसाधारण देशक भीतरक युद्ध स्मारक तँ देखैत छथि, मुदा, ओ भूमि आ परिस्थिति जतय सैनिक अपन प्राणक आहुति दैछ, सामान्य नागरिक लोकनिक चेतना धरि नहि पहुँचि पबैछ। चलू, अजुका यात्रामे एहने तीर्थ-पूर्वी लद्दाख़क रजांग-ला स्मारक, चुशूल चली। सत्यतः, पर्यटनक दृष्टिएँ लद्दाख़मे रजांग-ला स्मारक वा चुशूल दर्शनीय स्थल सबहक सूचीमे नहि गनल जाइछ। तें, केओ भारतीय टूरिस्ट ई स्मारक देखबा लेल लद्दाख़ जेताह से सन्देहक विषय! हम सेहो ड्यूटीक क्रममे चुशूल होइत दुर्बुख गाम विदा भेल छी। रास्ता लेहसँ पूब मुँहे सिन्धु नदीक कछेरे-कछेरे सिन्धुक उद्गम-मानसरोवर-दिस जाइछ। आब भारत-चीन सीमा विवादक कारणे मानसरोवर जयबाक ई सोझ बाट बन्न अछि; भारतक स्वतंत्रताक पूर्व लद्दाख़क व्यापारी लोकनि एहि बाटें तिब्बत जाइते छलाह। एखन ई बाट ओहि पर्यटक लोकनिक हेतु उपयुक्त थिक जे पूर्वी लद्दाख़क सीमा क्षेत्र 'चांगथांग' पठारक भूगोल, जलवायु, जनजीवन आ वन्य-सम्पदाक प्रत्यक्ष अनुभव आ अध्ययन करय चाहैत छथि। 'चांगथांग' इलाका तिब्बती पठारक समान अछि; समतल-सन, पाथर आ बालुसँ पाटल बंजर पहाड़ी मरुभूमि, अत्यन्त शुष्क वातावरण आ अचानक उठैत बिहाड़ि-सन बसात, भयानक ठण्ड। गाछ-वृक्ष नदारद। जीव-जन्तुक नामपर वनगदहा-कियांग आ विलुप्त होइत तिब्बती हरिण-चिरु। चिड़इक नाम पर विभिन्न रंगक खंजन, आ सारस-ब्लैक नेक्ड क्रेन। आबादीक नाम पर घासक खोजमे सतत

चलंत तिब्बत आ लद्दाख़क यायावर, चंस्पा नामक जनजाति। एहि बाटमे सिन्धुक संग रहबे करत, किन्तु, भूमि आ नदी जेना एक दोसरासँ निरपेक्ष भ' कय चलैछ। नदीक कछेरमे खेती-बाड़ी भरिसके भेटत। जे नदी ठाम-ठाम संकीर्ण स्थानमे तेज आ भयावह छैक सएह चाकर-चौरस इलाकामे झील-जकाँ शान्त आ स्थिर भ' जाइछ। तथापि, जतहु नदी उत्थर छैक भीषण ठंढा जलक कारण सोझे नदी पार करब ने उचित, ने आवश्यक। पहाड़क शिखरसँ बहैत पानि जाहि ठाम छोट-छोट नाला आ धारा बाटें आबि सिन्धुमे खसैछ, जल बहावक वएह क्षेत्र भेल उर्वरा भूमि। ओतहि जन-जीवन आ मनुक्ख, हरियरी आ खेत-खरिहान भेटत। हँ, जाहि इलाकामे नीचा बहैत पानिकें निकास नहि छैक ओतय अनेको झील भेटत। एहि झील सबमे प्रमुख अछि, 120 कि.मी. लम्बा झील पेंगोंग-सो झील आ सोमोरीरी झील आ नोनक पारंपरिक स्रोत, सो-खार झील। पहिलुक जमानामे सो-खार झीलसँ स्थानीय लोक सब नोन उगाही करैत छल। तिब्बती व्यापारी सब लेहलग शक्ति गाओंमे झुण्डक-झुण्ड भेंडी ल' कय अबैत छलाह आ ओत्तहि भेंडी सबहक केश आ नोनक अदला-बदली होइत छलैक आ बलिष्ठ तिब्बती भेंडी-चांग्लुक-नोन लादि कय तिब्बत आपस जाइत छल। एतुका ऊँच पहाड़मे जतय समतल भूमिक बासिन्दा लेल अपनो देह भारी बूझि पड़ैत छैक, एक-एकटा चांग्लुक पंद्रह किलो धरिक वजन उठबैत छल। भार उघबाले भेंडीक प्रयोगक ई प्रायः विरले उदाहरण छल। पूर्वमे अरुणाचलसँ पश्चिममे लद्दाख़ धरि भारत-तिब्बत सीमापर जहियासँ आवागमन आ व्यापार बन्न भ' गेलैक तहियासँ लद्दाख़ आ तिब्बतक बीच ई अदला-बदलीक व्यापार इतिहास भ' गेल।

लेह बस्ती पार केलाक बाद पहिल गाओं थिक थिक्से। तकर बाद शे नामक गाओं। शे गाओंमे बाटक कातहि, जतय सड़क मोड़ लैछ, छोट-सन पहाड़ीक सड़क दिसक पक्खापर खोधल बुद्धकेर रेखाचित्र स्वतः आकृष्ट करत। बुद्ध तँ अमर छथिए। मुदा, बुद्धक रेखाचित्र बनओनिहार अनामा कलाकार एहि पाथरपर अमर भ' गेल छथि। लद्दाख़मे अहिना जहिं-तहिं इतिहास छिड़िआयल भेटल। थोड़ आबादी, बरखाक अभाव आ बंजर भूमि। एतय इतिहास हठे बिलाइत नहि छैक। तें कतेको वर्ष पूर्व मृत पर्वतारोहीक आ जीव-जन्तुक शव, माटिक भीतक महल, अन्न-पानि सब कथूकें प्रकृति जोगाकय रखने रहैछ। एतय सड़कसँ कनेक हँटि कय, पहाड़क ऊँचाइ पर, शे गामक प्रासाद आ मन्दिर सेहो छैक, मुदा, तकरा देखबा लेल बेसी समय चाही। एतयसँ किछुए आगू सड़कक बामा कात खूब चाकर आ लम्बा क्षेत्र देखबैक। सुदूर भूतमे ई कहियो जल बहावक क्षेत्र छल

हेतैक। आब तँ सब किछु सुखायल छैक। उबड़-खाबड़ भूमि, विभिन्न आकारक छोट-पैघ पाथरक अजस्र पिण्ड, छोट-पैघ स्तूप-छोरतेन जहाँ-तहाँ पसरल छैक। बौद्ध परम्परामे शुभ वा अशुभ सब सामाजिक अवसर पर स्तूपक स्थापना होइत छैक। ई स्तूप सब तकरे सबहक स्मारकक थिक। किछु आओर आगू गेलापर दाहिना दिस, सड़कसँ कनेक हँटि कय बालुक चौरस मैदानक बीचमे छोट पहाड़ी पर स्ताकना विहार आकृष्ट करत। एखन दूर जेबाक अछि, तें, आगू चली। एतयसँ आगू, लेहसँ करीब 40 कि.मी. पूब, पहिल पैघ बस्ती, कारूमे, एतुका आर्मी डिवीजनक मुख्यालय अछि। कारूमे सिन्धु सड़कक एकदम लग आबि गेल छैक। नदीपर पुल पार कय हेमिस गाओंक प्रसिद्ध हेमिस बौद्ध विहारक बाट छैक। हेमिस बौद्ध विहारक गणना लद्दाख़क सर्वाधिक संपत्तिशाली विहार सबमे सँ होइछ। विहार एतयसँ दूर नहि, किन्तु, सड़कक लगसँ ने हेमिस गाम देखबैक आ ने बौद्ध विहार! इएह थिकैक एहि हेमिस विहारक सुरक्षाक रहस्य जकर कारण सदासँ वैभवशाली ई बौद्ध-विहार डोगरा सेनापति जोरावर सिंहक आक्रमण आ लूटसँ बचि गेल। एखन हेमिस विहारक एतबे चर्चा। कारण, हेमिस विहारक गप्प कहबा लेल एकटा फूट लेख चाही।

कारू सैनिक मुख्यालयक आगू सड़क दू दिस भ' जाइछ। बामाकातक सड़क शक्ति-जिंगराल आ चांगला पास होइत दुर्बुख आ तांगसे सैनिक छावनी होइत पेंगोंग-सो झील धरि जाइछ। दहिना कातक सड़कसँ एकटा बाट हिमाचल दिस फुटइछ आ सीधा सड़क किआरी-चुमाथांग-माहे होइत भारत चीन सीमाक अंतिम गाओं देमचोकक धरि जाइछ। देमचोकसँ पहिने एही सड़कसँ सोमोरीरी झील, हानले आ चुशूल आ पेंगोंग-सो झील धरिक बाट फुटइत छैक। मुदा, पेंगोंग-सो झील जेबा लेल, ई बाट घुमान भेल। मुदा, चांगला-दर्रापर हिमपातक कारण जखन सोझ बाट बन्न भ' जाइत छैक, ई बाट तखनो खूजल रहैछ। इएह थिकैक एहि सड़कक सामरिक महत्व।

हमरालोकनि जेना-जेना पूब दिस बढ़ि रहल छी पहाड़ी ऊँचाइ क्रमशः बढ़ि रहल छैक आ तापमान स्वतः घटि रहल छैक। तथापि, एखन गरमीक मास छैक, तें, जा धरि तेज बसात नहि बहौक वा अचानक हिमपात नहि होइक दिनमे ऊनी कपड़ाक काज नहि। मुदा रातिमे? रातिमे तँ गर्मी चाहबे करी। रौद खसिते आ छाहरि होइते लद्दाख़ हाड़ हिलबयवला जाड़ लेल नामी अछि; एतय रौद आ छाहरिक बीच तापमानक अंतर 30 डिग्री सेंटीग्रेड धरि भ' सकैछ! बाटे-बाट जाइत-जाइत सड़कक काते-कात कतहु-कतहु पाँच-दस घरक गाओं, चारि-छौ

बच्चाक स्कूल सेहो नजरि पड़ल। तथापि, दूइए-चारि टा चटिया, ने शिक्षकक मनोबलकें तोड़इछ, आने चारिए-छौ नेनाक स्कूल विद्यार्थीए सबकें हताश करैछ; हमर गाम अवामक धनवती संस्कृत विद्यालय-जकाँ, जतय दू टा व्याकरणाचार्य मीलि दससँ कम छात्रकें प्रथमासँ आचार्य धरिक पाठ पढ़बैत रहथि।

हमरालोकनि चुमाथांगमे कनेक काल विराम लेल। एतयसँ आगू माहेसँ सोमोरीरी झील केर सड़क फुटइत छैक। दहिना कात फुटइत कच्ची सड़कक बीचमे बैरियर देखलियै। सोमोरीरी जेबा लेल पहिने परमिट लेबय पड़ैत छलैक। आब तकर जरूरत नहि। लद्दाख़ एबावला सामान्य पर्यटक सोमोरीरी झील नहि जाइत छथि। भूगर्भ वैज्ञानिक, जीव-वैज्ञानिक, पर्यावरण आ वन्य-जीवनक गहन अध्येता, आ दुर्गम इलाकामे स्वयं मोटर आ मोटरसाइकिल चलाकय घुमंतू roady लोकनि लेल ई झील विशेष आकर्षणक केंद्र थिक। सत्यतः, जँ जनशून्यसँ डेराइत नहि होइ, लम्बा सड़क-यात्रा, रहस्य-रोमांच नीक लगैत हो आ शरीर स्वस्थ हो तँ लद्दाख़क परिदृश्य निर्विवाद अजूबा आ आकर्षक तँ छैके! एकटा गप्प आओर, मरुभूमि तँ राजस्थानहुमे छैक। किन्तु, ऊँचाइ आ जलवायुक कारण दुनूमे कोनो समानता नहि।

चुमाथांग आ माहेक आगू सिन्धु घाटी बेस चाकर भ' जाइछ। चांगथांगमे भूमि जतय चाकर आ फैल छैक, गहींर स्थानमे आसपासक पर्वत शृंखलासँ पघिलैत बर्फक जलक जमाव स्वतः झील बना दैछ। एतहु दहिना कात छोट-सन झीलमे गोड़ बीसेक सिल्ली हेलैत देखलियैक। पक्षीसबकें देखबा लेल कनेक ठमकलहुँ तँ दूर, पहाड़क काते-कात चरैत लद्दाख़क वनगदहा, कियांग, सबपर नजरि पड़ल। एनमेन एहने वनगदहा गुजरातक कच्छ इलाकामे सेहो पाओल जाइछ। हजारो मीलक दूरी आ एकदम विपरीत जलवायुक मरुभूमिमे एके प्रकारक जंतु कोना पलैछ? प्रकृतिक एहन आश्चर्यजनक खेलक उत्तर प्रायः जीव-वैज्ञानिके द' सकथि। लद्दाख़ी वनगदहा सब झुण्डमे चलैछ आ मनुक्खक बस्ती आ मनुक्खसँ दूरे-दूर रहैछ। तें, एतुका लोक लेल कियांग कोनो काजक नहि। सुनैत छी, सीमाक पार, तिब्बत-चीनमे लोक वनगदहा शिकार करैछ। तें, ई वनगदहा सब यदा-कदा भागि कय भारत दिस आबि जाइछ। सत्य की, से के कहत। भोजन-शृंखलाक शीर्षपर बैसल मनुक्ख सब किछु खाइछ!

आस-पासक मैदानमे भेंडी-बकरीक विशाल झुण्ड ताकि-ताकि कय घास चरैत छल आ चंस्पा चरबाहसब रौद तपैत अपन-अपन काजमे लागल छल। एतय दिन-देखार माल मवेशीकें जंगली जानवरक खतरा नहि। चोरि तँ होइते नहि छैक।

मुदा, रातिमे लद्दाख़क हुड़ाड़ (wolf)-शंखो-सँ माल मवेशीकें बचबय पड़ैत छैक। किछु दूर आगू न्योमा गाओंमे, एकटा सैनिक यूनिटमे हमरालोकनि चाह-पानि कयल। एहि जनशून्य भूमिमे आगन्तुककें देखि कय सैनिकोसबकें नीक लगैत छनि। तें, लद्दाख़मे अधिक ठाम बाट-घाटपर सैनिक लोकनि गरम चाहसँ पर्यटक लोकनिक स्वागत करैत छथि। कतेक ठाम ऊँच-ऊँच पास (दर्री) पर सैनिकलोकनिक धार्मिक-स्थल सेहो देखबैक। घर परिवारसँ दूर, जनशून्य स्थानमे प्रकृतिक प्रकोप आ दुश्मन दुनूसँ सतत लड़ैत सैनिककें अपना लगक धार्मिक स्थल अनमना होइत छैक; धार्मिक काज सुरक्षाक भाव तँ दैते छैक। एहि मंदिर सबपर आवभगतमे गर्म चाहक संग प्रसादमे गर्म हलुआ आ कनेक मधुर भेटय तँ आश्चर्य नहि। हमरालोकनिक आव-भगत तँ सेनाक ड्यूटी थिकैक। तें, ओकर गप्प नहि हो।

न्योमाक आगू लोमा नामक स्थानमे सिन्धुकें पार करैत सड़क हानले दिस जाइछ। हानले भारत-तिब्बत सीमापर एकटा छोट गाओं थिक। मुदा, हाल-सालमे एकटा विशाल वेधशाला (Indian Astronomical Observatory) क निर्माणक कारण हानले अंतर्राष्ट्रीय मानचित्र पर उभरि आयल अछि। शुष्क विरल वायु, वर्षा आ मेघक अभावें सालो भरि निर्मल आकाश, समुद्र तलसँ 12000 फुटसँ बेसीक ऊँचाइ, आ प्राकृतिक अवरोधक अभावक कारण ई स्थान observatory लेल विशेषतः उपयुक्त अछि। एहि वेधशालाक दूरस्थ नियंत्रणक बैंगलोरक इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ एस्ट्रोफिजिक्स केर हाथमे छैक। जें कि हानले भारत-चीन सीमाक अत्यंत समीप अछि, तें, एहि स्थानक सामरिक आ सैनिक महत्व तँ छैके।

हमरालोकनिकें चुशूल होइत दुर्बुख जेबाक अछि। तें, लोमामे मुख्य सड़क छोड़ि उत्तर दिसक कच्ची सड़क पर उतरलहुँ। दुनू कात ऊँच-ऊँच पहाड़क बीच करीब 40 कि.मी. लम्बा आ 5-6 कि.मी. चौड़ा चुशूल उपत्यका सपाट-सन मैदान-सन छैक। पुबारिकातक पहाड़, 1962 ई क घमासान युद्धक भूमि थिक। पुबरिया पहाड़क पूबक क्षेत्र चीन नियंत्रित इलाका थिक। 62 ई. मे चीनी सेना एही सड़क आ चुशूलक हवाई पट्टीपर नियंत्रणकय भारतीय सेनाक आवागमनकें रोकय चाहैत छल। एखन एहि कच्ची सड़कपर ठाम-ठीम खोंड़ा-खच्चा आ पानिक जमाव छैक। ड्राइवर गाड़ीसँ उतरि पानिकें थाहैत छथि आ सुरक्षित बाट चुनै छथि। एतुका पानिमे थाल कादोक दरस नहि। तें, गाड़ी लसकबाक डर नहि। मुदा, रोड़ा-पाथर टायरकें नुकसान क' सकैत छैक। भंगठी भेल तँ परम समस्या; ड्राइवर अपनहि ठीक करथु। तें, एहि इलाकामे एबा लेल दुरुस्त गाड़ी, पर्याप्त इंधन, आ कुशल ड्राइवर भेनहि कुशल। गाड़ीकें कोनो नोकसान नहि हो सेहो आवश्यक।

हमरालोकनिक अगिला पड़ाव चुशूल थिक।

चुशूल, भारत-चीन सीमापर पूर्वी लद्दाख़क एकटा दूरस्थ गाओं थिक। एखुनका सर्वज्ञ गूगल वा पर्यटन सलाहकार, ट्रिप-एडवाइजरकें जँ पुछबनि तँ ओहो भरिसके एहिसँ बेसी किछुए कहताह। हँ, एतबा अवश्य जे लद्दाख़क मुख्य आकर्षण पेंगोंग-सो झील हिंदी सिनेमाक प्रसादें आब प्रसिद्ध भ' गेल अछि। ई चुशूलक लगहि अछि। मुदा, लेहसँ पेंगोंग-सो झील जयबाक ई सोझ बाट नहि थिकैक, से तँ कहनहि छी। भारतीय पर्यटकक आवागमन लेल परमिटक झंझट सेहो समाप्त भ' गेलैये, तें, भ' सकैत अछि किछु लोक एम्हरो बाटें पेंगोंग-सो झील जाइत होथि। जड़कालामे हिमपात भेलापर जखन चांगला पास बन्न भ' जाइछ तँ पेंगोंग-सो झील, वा तांगसे आ दुर्बुखक सैनिक अड्डा धरि जेबा लेल मात्र इएह टा बाट खूजल रहैछ। स्मरणीय थिक, 1962 ई. क भारत-चीन युद्धक समयमे चुशूल जेबाक इएह टा एकटा रास्ता रहैक। तहिया लेहसँ चांगला पासकेर रास्ता खुरबटिया छलैक। सामरिक महत्वक चुशूल हवाईपट्टी आ चुशूल-दुंगती-लेह मार्गपर भारतीय सेना अंत धरि अपन नियंत्रण धरि बनौने रहल जाहिसँ भारतीय सेनाक आवागमन तँ चालू रहबे केलैक, चीनी सेनाक लेह दिस बढ़बाक सम्भावना सेहो समाप्त भ' गेलैक। साधन सम्पन्न, संख्यामे कतेक गुणा अधिक आ हाइ एलटीच्युड एरियामे ट्रेंड विशाल चीनी सेनाक सामने ई कठिन काज भारतीय सेना कोना केलक, से कनेक रहि कय।

कच्ची सड़कबाटें बालु-पानि-पाथरकें पार करैत जखन हमरालोकनि चुशूल पँहुचल रही तँ अपराह्न भ' गेल रहैक। लम्बा चौड़ा समतल भूमि। दुनू कात ऊँच पहाड़। चुशूलगाम आ चीन नियंत्रित भूमिक बीच करीब पाँच किलोमीटरकेर लो-लैंड आ दलदल छैक। हवाई पट्टी आ दहिना कातक एहि दलदलक पूबक पर्वत शृंखलाक बीचोबीच करीब दू किलोमीटर केर समतल भूमिक गैप छैक, इएह थिकैक स्पैंगुर गैप जाहि बाटें तिब्बती पठारसँ चीनी सेना सोझे चुशूल आबि सकैत छल। चीनी सेनाक चुशूल पहुँचबाक दोसर बाट रजांग-ला पास भ' सकैत छलैक, जकर चर्चा आगू हयत। स्पैंगुर गैपमे एकटा बैरकनुमा भवन देखलियैक। भारत-चीन सीमा पर तैनात दुनू देशक सैनिक अधिकारी लोकनि सम्मेलन हेतु एहि भवनक उपयोग करैत छथि। स्पैंगुर गैपमे आ समतल भूमिक बीचक दल-दलमे विलुप्त होइत प्रजातिक पक्षी ब्लैक नेक्ड क्रेन (कारी गरदनिवला सारस) कीड़ा-फतिंगा चुनैत छल। समतल भूमिक इलाका perforated steel sheet सँ पाटल छैक। इएह थिक चुशूल हवाई पट्टी जकर निर्माण 1962 ई मे भारतीय सेनाक इंजीनियरिंग

कोर केने छल। एहि हवाई पट्टीपर तहिया AN-12 आ पैकेट नामक जहाजसब उतरि सेनाक साज-सामान अनैत छल।

दहिना कातक पर्वत-श्रेणीक गुरुंग हिल, स्पैन्गुर गैप, मगर हिल आ रजांग-ला पास चुशूल सेक्टरमे भारतीय सेनाक बलिदान-भूमि थिकैक। चुशूल हवाई पट्टी आ पुबरिया पर्वतशृंखलाक बीच किछुओ नहि तँ 5 किलोमीटरक दूरी तँ अवश्य हेतैक; रजांग-ला पास एहि शृंखलामे सबसँ दूर, हवाईपट्टीसँ करीब 11 कि.मी. दक्षिण पूबमे छैक। हवाईपट्टीक पश्चिम रजांग-लाक युद्ध स्मारक अछि। लगइए आइओ केओ वरिष्ठ सैनिक अधिकारी एतय आयल छलाह। अर्पित श्रद्धा-सुमन-wreath-स्मारकक आगाँ यथा-स्थान ओहिना राखल छैक। एतय हमरोलोकनि वीर शहीदलोकनिक नमन कयल। मुदा, हुनकालोकनिक उदात्त बलिदानक जखन स्मरण कयल, तँ, मोन जेना इतिहासक पन्नामे भुतिया गेल। तें, चली, कनेक इतिहासक पन्नामे बौआइ।

1962 ई. क भारत-चीन युद्ध हमरालोकनिक पीढ़ीमे सर्वविदित अछि। युद्धमे पराजयक ग्लानिसँ उबरबामे हमरालोकनिकें बहुत समय लागल छल। तथापि, एहि चीनी आक्रमणक एहि दुखद अध्यायमे रजांग-लाक युद्ध सम्पूर्ण संघर्षकेर एकमात्र गौरवमय प्रकरण थिक। तें, एहि ठाम रजांग-लाक युद्धक निरपेक्ष चर्चा करी। मुदा, युद्धक संदर्भक चर्चाक बिना गप्प बुझबामे नहि आओत। तें, पहिने भारत-चीन युद्धक पृष्ठभूमिमे चली। भारत चीन-सीमा उत्तर-पश्चिममे जम्मू कश्मीर लद्दाखसँ ल' कय पूबमे अरुणाचल प्रदेश धरि पसरल अछि। बीचमे नेपालक इलाकामे भारत चीन एक दोसरासँ दूर अछि। भूटान-चीन सीमाक सुरक्षाक भार भारतहि पर छैक। तें, भूटान-चीन सीमा सेहो व्यवहारमे भारत-चीन सीमा भेल। जे किछु। तथापि, सदातनिसँ करीब चारि हजार किलोमीटर लम्बा भारत-चीन सीमा मूलतः भारत-तिब्बत सीमा छल। तिब्बतकें भारतसँ पारम्परिक सम्बन्ध छैक; बौद्ध धर्म आ महात्मा बुद्ध केर जन्मभूमि भारतकें तिब्बती-बौद्ध समुदाय एखनहुँ गुरु मानैत अछि। तें, भारत-चीन अन्तर्राष्ट्रीय सीमा अद्यावधि परम्परा, परस्पर सम्पर्क आ सन्धि द्वारा निर्धारित छल। संगहि भारतपर अंग्रेजक शासनकेर युगमे अंग्रेजक शक्तिक योग तँ छलैके। तथापि, अंग्रेजसँ भारतक स्वतंत्रताक पूर्व, अंग्रेजी शासनक युगहुमे, तिब्बतकें ल' कय भारत-चीनक बीच सीमा विवाद नहि छलैक, से नहि। तथापि, युद्धक परिस्थिति कहियो नहि आयल छलैक। चीनमे कम्युनिस्ट सरकारक उदय आ तिब्बतकें बलपूर्वक चीनमे विलय केर पछाति चीनी नेतृत्व लद्दाख़ आ अरुणाचल प्रदेशक (तहियाक NEFA क) विवादित भूमिक क्रमशः अतिक्रमण आरंभ क'

देलक। विवादक निराकरणक हेतु दुनू देशक बीच अनेक पत्राचार आ दुनू देशक शीर्षस्थ नेताक सबहक बीच अनेक सम्मलेन भेल। किन्तु, कोनो सहमति नहि भ' सकलैक। चीनकेर आक्रामक नेतृव आ विशाल सेनासँ भारत आओर की अपेक्षा करैत। एहि बीचमे चीन लद्दाख़क दूर-दराजक निर्जन विवादित इलाकाकें निरंतर दखल करैत चल गेल। भारत एहि पर बराबरि नजरि रखने छल। मुदा, कतेक दिन धरि भारत कोनो औपचारिक विरोध नहि प्रकट केलक। क्रमशः स्थिति चिंताजनक होइत गेलैक। एहना स्थितिमे भारत, ने भूमिक अतिक्रमण सहि सकैत छल, आ ने बलपूर्वक एहन विवादित इलाकाकें दखलमे राखि सकैत छल, जतय अत्यन्त ऊँचाइ, प्रतिकूल वातावरण आ आबादीक अभावमे सेनाकें राखब असंभव छलैक। तथापि, भारत सरकार जाहि क्षेत्रकें अपन क्षेत्र बूझैत छल ओतय जहाँ-तहाँ सेनाक छोट-छोट टुकड़ी तैनात करय लागल। सीमा क्षेत्रक विवादित क्षेत्र पर क्रमशः अपन नियंत्रण बढ़यबाक एहि नीतिक नाम भारत सरकार Forward policy देलक। व्यावहारिकतामे Forward policy सीमाक्षेत्रक अत्यन्त दूर दराज इलाकामे सैनिकक थोड़-थोड़ तैनाती भेल। युद्ध लड़बाक हेतु ई तैनाती नितांत अपर्याप्त छल। तें, युद्ध तँ दूर, एहि सब इलाकामे सेनाक रखरखाव सेहो कठिन छल। लद्दाख़ क्षेत्रमे तँ किछु एहनो चौकीसब छल जतय रुखो-सुख समयमे, पांव-पैदल पहुँचबामे 10-15 दिन लागि जाइत छलैक। प्रतिकूल मौसमकेर तँ गप्पे नहि हो। आपात कालमे लगपासक चौकीसँ सहायताक कोनो भरोस नहि। एहि Forward policy क अन्तर्गत नव-नव चौकीक स्थापनासँ भारतीय आ चीनी सेनाक बीच कतेक ठाम तना-तनीक स्थिति भ' जाइक। कूटनीतिक विवाद तँ छलैके। तथापि, भारतीय नेतृत्वकें भ्रम रहैक जे चीन भारतपर आक्रमण नहि करत। देशकें स्वतंत्र भेना बस 15 वर्ष भेल रहैक। एहि बीच चीनक विपरीत भारत, ने सैनिक शक्ति बढ़यबाक प्रयास केलक आ ने भारत लग ताहि लेल आर्थिक साधन रहैक। तें, सत्यतः, भारतीय सेना युद्ध लड़बाक स्थितिमे कदापि नहि छल। भारतीय सीमा क्षेत्रमे यातायातक सुविधा नगण्य रहैक। चीन अपना क्षेत्रमे सीमा धरि सड़कक जाल बिछा नेने छल। माने, भारत सामरिक दृष्टिएँ दुर्बल छल आ राजनैतिक दृष्टिएँ भ्रममे छल। सैनिक दुर्बलता आ कूटनीतिक भ्रमकेर एहने परिस्थितिमे अक्टूबर 1962 ई. मे चीन एकाएक सम्पूर्ण भारतीय सीमापर आक्रमण क' देलक। भारतकें जोरगर धक्का तँ अवश्य लगलैक; भारत एहि लेल तैयार नहि छल। मुदा, उपाय की? भारत अपना भरि जोर लगओलक। किन्तु, चीनी सेनाक सामरिक शक्तिक आगाँ भारतकें पूर्वी आ पश्चिमी क्षेत्रमे अनेक ठाम

पराजय आ जान-मालक नोकसान उठाबय पड़लैक। तथापि, जतय, जाधरि सम्भव भेलैक सेना मोर्चा धेने रहल। चीनी आक्रमणक ई दौर जे अक्टूबर 1962 मे अरुणाचल आ लद्दाख़मे आरम्भ भेल छल से नवम्बर 1962 मे चुशूलक युद्धक पछाति चीन द्वारा एकतरफा युद्ध विरामसँ समाप्त भेल। किन्तु, युद्धक पृष्ठभूमिमे जतेक राजनैतिक आ कूटनीतिक गतिविधि भेल होइक, आम सैनिककें जाहि पराभवक सामना करय पड़ल रहैक तकरा लार्ड अल्फ्रेड टेनीन्सन, एकटा भिन्न परिप्रेक्ष्यमे, अपन कविता 'The charge of the light brigade' मे बड़ सुन्दरतासँ व्यक्त केने छथि। क्रिमीआक युद्धक सन्दर्भमे अंग्रेजी सेनाक पराभवक पृष्ठभूमिमे लिखल गेल ई कविता अनेको सैनिक अभियान पर सटीक बैसत। देखियौ :

'Not though the soldiers knew
someone has blunder'd
There's not to make reply,
There's not to reason why,
Theirs but to do and die'
सारांश एतबे,

'सैनिक लोकनि नीक जकाँ बूझैत छलाह, (सेनानायक वा राजनेता) ककरोसँ बड़का चूक भेलैए। किन्तु, सैनिकक धर्म सवाल-जबाव नहि, केवल करब आ मरब थिक'। सरिपहुँ, सैनिकक जीवनक इएह विधान थिकैक।

सैन्य जीवनक एहि आदर्शक अनुकूल, विपरीत परिस्थितिमे चुशूल आ रजांग-ला मे भारतीय सेना केहन इतिहास रचलक तकर संक्षिप्त कथा आब सुनू।

1962 ई. क भारत-चीन युद्धक सम्पूर्ण दुखद प्रकरणमे रजांग-लाक संग्राम एकमात्र गौरवमय अध्याय थिक। एहि युद्धमे 13 कुमाऊँ रेजिमेंटक 'C' कंपनीक सैनिक लोकनि जाहि वीरतासँ दुश्मनक मनोरथकें माटिमे मिला देलनि, सैन्य इतिहास तकर दोसर उदाहरण भेटब असंभव। गप्प 1962 ई. के 18 नवंबरक थिकैक। हरियाणाक ई अहीर सैनिक लोकनि भारत पाकिस्तानक पश्चिमी सीमाक समतल भूमिसँ किछुए दिन पूर्व लद्दाख़ आयल रहथि। सेनालग ने लद्दाख़क भीषण जाड़क हेतु पर्याप्त कपड़ा रहैक, ने पहाड़ी भूमिमे मोर्चाबंदी लेल कोनो औजार। 13 कुमाऊँ केर 'C' कम्पनी केर जवान लोकनि मेजर शैतान सिंहक कमानमे रजांग-ला केर 2 कि.मी. लंबा मोर्चा पर तैनात रहथि। उत्तर दिसुक पहाड़पर एही 13 कुमाऊँ रेजिमेंटक दोसर कम्पनी सब, आ 1/8 रेजिमेंटकेर गोरखा सैनिक सब तैनात छल। पहाड़क चोटीपर गत राति तेज बिहाड़िक संग हिमपातक रहल छलैक। लगैक

जाड़सँ जेना छातीक शोणित जमिकय पाथर जायत। तखने, करीब दू बजे भोरे अचानक फायरिंगक आवाज भेलैक। जासूसी दल करीब 400 चीनी सैनिकक अपना दिस एबाक सूचना अनलक। खबरि भेटिते, सब सावधान भ' गेल आ अपन-अपन मोर्चा पर जूमि गेल। किछुए कालमे दुश्मनक आक्रमण भेलैक। कंपनी कमांडर मेजर शैतान सिंहक नेतृत्वमे जवान लोकनि डटिकय मुकाबला केलनि जाहिमे सैकड़ो चीनी आक्रमणकारी मारल गेल। ओहि पहिल मुकाबलाक पछाति रजांग-ला पूबभरक नाला, जाहि बाटें दुश्मन सब ऊपर चढ़ि रहल छल, दुश्मन सबहक लाशसबसँ नीक जकाँ पाटि गेल छल। फलतः, बचल-खुचल दुश्मन जान ल' कय भागल। मुदा ओहि दिन रजांग-ला पर चीनीसेनाक ई आखिरी हमला नहि छल। कनिए कालमे चीनी सेना रजांग-लापर तेज बमबारी शुरू क' देलक। बमबारीक कारण बटालियन मुख्यालय आ 'C' कंपनीक बीच टेलिफोन आ रेडियो संपर्क टूटि गेलैक। रजांग-ला पहाड़क ऊँचाइक कारण भारतीय सेनाक तोपखाना रजांग-ला सेनाक कोनो सहायता नहि क' सकल। उत्तरमे मगर हिल, स्पेंगुर गैप, आ गुरुंग हिल पर गोरखा सैनिकसब फूटे चीनी आक्रमणक सामना क' रहल छल। माने, सबसँ अलग-थलग रजांग-ला कंपनीकें पड़ोसी कंपनी वा बटालियन मुख्यालय सहायताक कोनो आस नहि। बुझबाक थिक, लद्दाख़क ऊँच पहाड़ी क्षेत्रमे दुश्मनक अतिरिक्त ऑक्सीजनक कमी आ भीषण जाड़ मनुष्यक दोसर घातक शत्रु थिक। जाड़क अनुमान एना करू जे शून्यसँ 30 डिग्री सेंटीग्रेड नीचा तापमानमे हाथक घड़ी वा अस्त्र-शस्त्र जँ अपन चाममे भीड़ि गेल तँ चाम तहिना जरि जायत जेना धीपल लोहा भिड़लासँ। एहन विषम परिस्थितिमे दुश्मनक सेनाक चौतरफा प्रहार निरंतर जारी छल। तथापि, केओ हतोत्साहित नहि भेल आ कुमाऊँनी सेना आखिरी गोली, अंतिम जवान तक लड़बाक संकल्प केलक। स्वयं मेजर शैतान सिंह कखनहुँ मशीनगन सम्हारथि, कखनो बंकर सबहक बीच दौगैत-भगैत जवानसबकें निर्देश देथि, मनोबल बढ़बथि। एहि बीच हुनका अपना कतेक गोली लगलनि तकर हुनका कोन परवाहि छलनि। बहुत सीमित संसाधन आ शत्रुक निरन्तर प्रहारक फलस्वरूप जखन गोला-बारूद निंघटय लगलैक तँ जवानसब बेयोनेट फाइटिंग आ हाथापायीक सहारा लेलक। कहल जाइछ कतेक दुश्मनकें तँ जवानसब पाथरपर पटकि यमराजक द्वारि धरि अड़ियाति आयल। मुदा, बेहतर साजोसामान आ दुश्मनक असीमित संख्याक मुकाबलामे महज शौर्य कतेक काल टिकैत। कहल जाइछ, 18 नवम्बर 1962 क भोर जे फायरिंग आरम्भ भेल छल से ओहि दिन रातिक दस बजेक बाद जखन थम्हलैक तँ सम्पूर्ण कंपनी अपन प्राणक

बलि तँ द' चुकल छल। मुदा, एहि असंतुलित संग्राममे आखिरी श्वासधरि धरि लड़ैत-लड़ैत सैनिक लोकनि चुशूलक हवाईपट्टी तथा चुशूल-लेह सड़कपर शत्रुक पयर नहि पड़य देलक। हमरा विश्वास अछि, रजांग-लामे वीरगति प्राप्त सैनिक लोकनिक अतुलनीय शौर्य आ बलिदानक ई उदात्त गाथा अनन्त काल धरि देशवासीक हेतु प्रेरणापुंज बनल रहत।

युद्ध समाप्तिक कतेक दिनक पछाति छियानबे गोट कुमाऊँनी सैनिकक पार्थिव शरीरकें चुशूल आनल जा सकल। युद्धमे शत्रु लेल पाथर-सन कठोर सैनिक, सत्यतः, बर्फमे जमिकय पाथर भ' गेलाह छलाह। दू टा बड़का पाथरक बीच मोर्चा सम्हारने मृत मेजर शैतान सिंहक हाथमे तखनो कारबाइन मौजूद छलनि। हुनकर शरीरमे कुल नौ टा गोली लागल छलनि। दाह-संस्कारक हेतु मेजर शैतान सिंहक पार्थिव शरीरकें राजस्थानमे जोधपुर आनल गेलनि। मरणोपरांत मेजर शैतान सिंहकें देश सर्वोच्च सैनिक सम्मान परमवीर चक्रसँ राष्ट्र सम्मानित केलक। बांकी शहीद लोकनिक सामूहिक संस्कार पूर्ण सैनिक सम्मानक संग चुशूल हवाईपट्टी लगमे भेल। ओहि पावन भूमिमे एखन रजांग-ला युद्ध स्मारक अछि। दर्जनो गोरखा वीर शहीद लोकनिक स्मारक सेहो लगहिमे छनि। हमरा गौरवक बोध होइत अछि आइ हम चुशूलक युद्ध स्मारक लग छी आ मातृभूमिपर अपन प्राणक बलि देनिहार वीरलोकनिकें सादर श्रद्धा सुमन अर्पित केलहुँ-ए। 13 कुमाऊँ रेजिमेंटक पुनर्गठित 'C' कंपनी नाम आब रजांग-ला कंपनी थिक आ ई कम्पनी आब तेरह कुमाऊँक सीनियरमोस्ट कम्पनी थिक। आब जखन लद्दाख़मे पर्यटन बढ़ि रहल अछि, नित दिन दूर-दूरसँ भारतीय लोकनि एतय अओताह आ अपन गाम-नगर-शहरमे विस्मृत योद्धा लोकनिक शौर्यक गाथा देशक भरिक नेना-भुटका आ नागरिक लोकनिकें सुनओथिन। स्मरण राखी, युद्धमे शौर्य लेल जतेक सैनिकक सम्मान होइत छैक ताहिसँ कतेक बेसी अनामा वीर इतिहासमे विस्मृत रहि जाइत अछि; भारत-चीन युद्धमे अनुमानतः 3000 सैनिक अपन प्राणक बलि देने छलाह। तें, उचित तँ ई जे राष्ट्र प्रत्येक अनामा सैनिकक स्मरण करय आ श्रद्धाक तर्पण अर्पण करय।

अंतमे एकटा प्रसिद्ध सेना नायक कार्ल वोन क्लौसवित्ज केर कथनकेर उद्धरण उचित हयत।

Woe to the Govt , which relying on half-heated politics and a shackled military policy meets a foe, who like the untamed mighty forces of nature, knows no law other than his own power.

(ओहि सरकारकें विपत्तिक भोग होउ, जे राजनीतिक लाभ आ पूर्वाग्रहग्रस्त सैनिक

नीतिक कारण अपन सेनाकें एहन शत्रु, जे प्रकृतिक विभीषिका जकाँ अपन शक्तिक अतिरिक्त आओर कथूक परवाहि नहि करैछ, केर सामनाक लेल युद्धमे झोंकैत अछि)।

ई कथन हम 1962 ई. क भारत-चीन युद्धक (भारत सरकारक) आधिकारिक इतिहासक उपसंहारसँ उद्धृत केने छी। हमरा जनैत, आजुक राजनेताकें एहि उक्तिसँ सीख लेबाक चाहियनि।

पछाति किछु विशेषज्ञ 1962 ई. क भारतीय कूटनीतिक आ सामरिक अभियानकें भयंकर भूल वा 'हिमालयन ब्लंडर' केर संज्ञा देलनि; अरुणाचल क्षेत्रमे तैनात आ चीन द्वारा पराजित सैनिक कमांडर ब्रिगेडियर जॉन दलवी सेहो 'हिमालयन ब्लंडर' नामक अपन पोथीमे एहि युद्धमे पूर्वी क्षेत्रमे भारतीय सेनाक पराजयक संबंधमे अपन पक्ष रखने छथि।

पेंगोंग-सो झीलक बाट पर

रजांग-ला शहीद स्मारककेर दर्शनक पछाति ओहि दिन आ राति चुशूलमे विश्राम भेलैक। 14300 फुटसँ बेसीक ऊँचाइ। पूब-पश्चिम दुनू दिस ऊँच-ऊँच पर्वतमालाक बीच सपाट मैदान। सितम्बरक मास। रातिमे जाड़ तँ छलैके। मुदा, ओढ़ना-बिछाओनक अभाव नहि। तथापि, हाइ-एलटीच्युडक इलाकामे अनिद्रा, अभूख आ चिंताक शिकायत आम थिकैक। परिश्रम एहि सब रोगक अचूक औषधि थिक। सैनिकक जीवनमे तकरो अभाव नहि। मुदा, व्यक्तित्व आ मनोबलक असरि तँ स्वास्थ्य पर पड़िते छैक। संयोगसँ, लद्दाख़क अढ़ाइ वर्षक प्रवासक बीच हमरा शरीरपर हाई-एलटीच्युडक कोनो तात्कालिक दुष्प्रभाव नहि भेल। दूरगामी प्रभाव-जेना, मोतियाबिन्दु, देहक चामक घोकचब, स्मरणक ह्रास—पछाति देखल जेतैक।

आइ दुर्बुख गाम स्थित फील्ड-एम्बुलेंस (युद्ध क्षेत्रक सामरिक स्वास्थ्य-सेवा प्रतिष्ठान) मे स्कूली नेना सबहक आँखिक जांच करबाक अछि। सुदूर क्षेत्रमे स्वास्थ्य सेवा उपलब्ध करायब भारतीय सेनाक पुरान संस्कृति थिकैक। तें, भोरहि हमरालोकनि दुर्बुख गाम लेल विदा भेलहुँ। ताधरि चुशूल उपत्यकामे सबतरि भोरुका रौद पसरि आयल रहैक। बाटक काते-कात गौंआ सब उठि गाय-गोरु आ माल मवेशीमे लागल छलाह। पहाड़ी इलाकामे लोक सबेर उठैत अछि आ सुतितो अछि साँझे राति। नेपालमे, उपहासमे, लोक कहैक, 'सूर्य अस्त, नेपाल मस्त'। आइसँ पचास वर्ष पूर्व मिथिलांचलहुमे इएह हाल रहैक। सूर्योदयसँ पहिने उठब आ पहिले साँझ भोजन-भातसँ निश्चिन्त भ' गाम तेना निशब्द भ' जाइक जे रातिक नौ बजे धरि लोक एक नीन मारि लैत छल। प्रायः, दिन रहैत सूर्यक रोशनीमे काज निबटेबाक (daylight-saving) ई साबिक व्यवस्था रहैक। मुदा, लद्दाख़मे तहियाक मिथिलांचलक बाध्यता नहि छैक। एतय बिजुली आ सड़क सबतरि छैक। दूर-दराजहुमे शिक्षा व्यवस्था छैक। तें, लद्दाख़ देशक केंद्रसँ दूर भले हो, सरकारी व्यवस्था एतय आन ठामसँ बीसे छैक, उन्नैस नहि। एतय माल-जाल लेल

मालकघर-गोठुलाक-जगह लोक पाथरक बाड़ा बना लैछ। बकरी-भेंडीकें भीतर केलक आ फाटक लगा देलक। बरखा होइते नहि छैक। मच्छर-माछी-डांसकेर प्रकोप नहि। तें, घूड़-धुआँक परिपाटी नहि। जाड़ एतेक जे बाहर बैसब असम्भव। ततबे नहि। गाछ-वृक्ष कतहु छैक नहि, जारनि कतय पाबी। गोबर-करसी तँ चुल्हामे जरि जाइछ। सुखायल घास-पात मवेशीक चारा भ' जाइछ। जाड़ मासमे तँ माल-जाल सुखायले घासपर गुजर करैछ। तें, भरि गर्मी किसान लोकनि घरक छतपर जे घास-पात जमा करैत छथि, ताहिसँ जाड़ मासमे माल-मवेशीक गुजर भ' जाइछ। जाड़ मासमे हरियर घास लेल माल-जाल ततेक लल्ल भ' जाइछ, जे देखलियैक, भेंडी-बकरी सब जीबैत गाछक छालकें दांतसँ छीलि खा लैछ। तें, लेहमे सड़कक कातक गाछक निचला 2-3 फीट हिस्सा पर टिन ठोकल देखलियैक। ई कनेक विषयांतर भेल। मुदा, एहिसँ ई अवश्य बुझबामे आओत जे हाई-एलटीच्युडक इलाकामे प्राणिमात्र कोना गुजर करैछ।

करीब एक घंटा यात्राक बाद पेंगोंग-सो झीलक दर्शन भेल। ई दर्शन साधारण नहि, तें कनेक धैर्य करू। कहैत छी। सड़क किछु दूर झीलक कछेरे-कछेरे चलैछ। हम एहिसँ पूर्व प्रायः तीन बेर झील धरि आयल छी। मुदा, चुशूल बाटें ई पहिले यात्रा थिक। तें, एहि बेर झील केर दोसर आ वृहत् फलक केर दर्शन भेल। ई सब अवसर सेनाक नौकरीक अमूल्य बोनस थिक।

आब कनेक पेंगोंग-सो झीलक गप्प करी। सत्यतः, आब एहि झीलकेर आस पासक इलाकामे अनेको फिल्मक शूटिंग होइछ आ सिनेमा सबमे ढेर लोक एहि झीलकें देखैछ। तें, सम्भव अछि बहुतो लोककें, सिनेमहिमे भला, पेंगोंग-सो झील देखल होइनि। जिज्ञासु लेल विकिपीडिया पर कोन सूचना नहि छैक! तथापि, एतबा अवश्य कहब, मौका हो तँ एकबेर पेंगोंग-सो झीलक कछेर पर आउ। अपना आँखिए एहि झीलकें देखू आ अनुभव करू जे संसारक परिचित आश्चर्यसँ आगुओ आओर कतेक आश्चर्य भारतहिमे जहाँ-तहाँ छिड़ियायल छैक! 120 कि.मी. लम्बा पेंगोंग-सो झील कतेको अर्थमे अजगुत अछि। आसमान छूबैत, उन्नत हिमालयक शिखरसँ पघिलैत बर्फक स्वच्छ आ निर्मल जलसँ पूरित एहि झीलक नोनगर पानि मनुक्खक हेतु पीबा जोग नहि। झीलकेर पानि एतेक स्वच्छ आ पारदर्शी छैक जे जतय झील कम गहींर छैक, झीलक सतह परक बालु आ पाथर अयना जकाँ झलकैछ। तथापि, झीलमे जीव-जंतु नदारद। मुदा, एहि झीलक नीलम-सन पानिक रंग अवर्णनीय छैक। हाई-एलटीच्युडक इलाकाक निर्मल आकाश, विरल वायु, आ चमकैत रौदमे नील पानिक प्रतिपल बदलैत दर्जनों रंगकें ने कैमरा पकड़ि सकैछ,

ने एल इ डी मोनिटर ओकरा देखा सकैछ। एहि झीलक सुन्दरता केवल मनुक्खक आँखिक अनुभवक वस्तु थिक, जे केवल देखिकय अनुभव क' सकैत छी, जकरासँ चकित भ' सकैत छी। तें, यात्री सब झीलक कछेर पर किछु काल बैसथि, झील केर रंग-रूपक आनंद लेथि आ एहि अपरूप सौन्दर्यकें स्मरणक पौतीमे जोगाबथि। पेंगोंग-सो झीलक उत्तर पश्चिम कोन पर सेनाक इंजीनियरिंग कोर केर एकटा दल रहैछ। इएह लोकनि हमरालोकनि लेल नौका विहारक व्यवस्था केलनि। सामान्य पर्यटकक लेल ई सुविधा उपलब्ध नहि। कारण, ई झील भारत-चीनक बीचक विवादित क्षेत्रक बीचमे पड़ैछ। झीलक उत्तरे-दक्षिणे अंशक करीब 40 कि.मी. लम्बाइ पर भारतक अधिकार छैक आ पूबे-पश्चिमे अंशक करीब 80 कि.मी. लम्बाइ पर चीन अधिकार जमौने अछि। झीलकेर पुबरिया कछेर धरि चीन जबर्दस्ती सड़क सेहो बनौने अछि। 1962 केर युद्धसँ पूर्व झीलक पुबारिपारक किछु इलाका पर भारतीय सेनाक अधिकार रहैक। किन्तु, युद्ध कालमे झीलकें पार करैत भारतीय चौकी धरि माल-असबाब पहुँचायब आ ओकर सुरक्षा करब ततेक कठिन साबित भेलैक जे झीलक पुबारि पारक चौकी पर तैनात कतेक सैनिक लोकनि अंततः अपन प्राणक आहुति देलनि।

पेंगोंग-सो झीलक उत्तर पश्चिम कोन पर सेनाक इंजीनियरिंग कोर द्वारा संचालित विश्राम-स्थलक लगहि, पछबारि कात जे पहाड़ छैक तकरा लोक 'गार्नेट-हिल' कहैत छैक। यत्र-तत्र पसरल पाथरक ढेप सबमे 'गार्नेट' पाथरक कनी सब देखबामे अवश्य आओत। दू-चारि ढेप हमहूँ उठओलहुँ। की पता किछु भेटय। किन्तु, किछु भेटल नहि। एहि सैनिक विश्राम-स्थलक लगसँ होइत सड़क, पच्छिम मुहें, लुकुंग गाओं दिस जाइछ। लुकुंग गाओं लग, सड़कक दुनू कातक पहाड़ एक दोसराक लग सहटि अबैछ आ चुशूल उपत्यकाक चाकर-चौरस भूमिक बनिस्बत ई भूमि संकीर्ण दर्रा जकाँ भ' जाइछ। इएह बाट तांसे-दुर्बुख, आ चांग-ला पास (17350 फुट) पार करैत लेह धरि जाइछ। तें, 1962 मे भारत-चीन युद्धक समय सैनिक सुरक्षाक दृष्टिएँ ई बाट अत्यंत महत्वपूर्ण रहैक। एखन सड़कसँ उत्तरक समतल भूमि कटैया तारसँ घेरल-बेढ़ल छैक। पुछलासँ पता चलल, ई क्षेत्र बारूदी सुरंगक क्षेत्र थिक जे युद्धकालमे भारतीय सेना सड़कक सुरक्षा लेल बिछओने छल। युद्ध समाप्त भेल। आधा शताब्दीसँ लम्बा अवधि बीतल। मुदा, माइन-फील्ड जीविते अछि मारुख आ निर्दय। जहाँ ओतय पयर पड़ल कि, धमाका! विनाश आ हाहाकार!! सुनैत छियैक, युद्ध आ गृह-युद्धमे युद्ध भूमिमे प्रतिद्वन्द्वी सब जे माइन-फील्ड बिछबैछ, से पीढ़ी-दर-पीढ़ी मनुक्खक हत्या आ विकलांगताक कारण

बनैछ। बुझबाक थिक, माइन-फील्ड बिछायब आ साफ करब दुनू खतरनाक आ श्रमसाध्य काज थिक। तें, युद्धकेर समय जे माइन-फील्ड बिछाओल गेल तकरा साफ के करत? पछाति कतेक ठाम माइन-फील्ड पर जंगल-झाड़ जनमि जाइछ, आ मारुख इलाका अनचिन्हार भ' जाइछ। बाढ़ि-पानि, भू-स्खलन, आ माटिक जोत-कोड़सँ बारूदी सुरंग सब अपन स्थानसँ ससरि दूर-दूर धरि पसरि जाइछ, नदी-नाला-समुद्र धरि बहि जाइछ। तें, एखन धरि, द्वितीय विश्व युद्धक सुरंग सब भेटितो छैक आ फटितो छैक। अस्तु, 1962 क युद्धमे चीनी सेना एम्हर तँ नहि आयल। किन्तु, ई माइन-फील्ड एखनो मुँह बिचकौने बाटक कातमे अछूत-सन पड़ल अछि आ भयभीत यात्री एहि मारुख भूमिकें दूरहिसँ गोड़ लगैछ आ काते-कात आगू बढ़ि जाइछ। आब मानव-विध्वंसक माइन (anti-personnel mines) केर विरुद्ध अनेक अंतर्राष्ट्रीय सन्धि भेल अछि, किन्तु, लगैत नहि अछि, विश्व भरिमे निरंतर बढ़इत द्वन्द्वक युगमे ई नागफनी हठे उकन्नन हयत। हमरालोकनि करीब 10 बजे तांगसे फील्ड एम्बुलेंस पहुँचलहुँ। दू गोटे संगबे महिला लोकनि विश्राम लेल अफसर मेस दिस गेलीह आ हम फील्ड एम्बुलेंसमे स्कूली-बच्चा लोकनिक आँखि जाँचमे लागि गेलहुँ।

तेसर दिन : लेह ले विदा

बाटक दाहिना कात दुर्बुख गाम छैक। किछु दूरमे शयोक गाम अबैत छैक। ओही बाटें पहिने, उत्तरमुँहे, एकटा खुरबटिया, दौलतबेग ओल्डी इलाका होइत, कराकोरम पास आ कासगार(चीन) धरि जाइत छलैक। बाट दुर्गम आ भूमि बंजर छैक। 1962 क जाड़मे भारतीय सेना ओहू इलाकामे बलिदान देने छल। अकसाई-चिन ओएह भूमि थिकैक जकरा सम्बन्धमे नेहरु कहने रहथिन, 'एहि भूमिमे एकोटा दूबिओ नहि जनमैछ'। एखन तँ भारतीय वायु-सेनाक बड़का मालवाही हवाई जहाज हर्कुलिस सेहो ओतय उतरैत अछि। जे किछु। दुर्बुखसँ पश्चिम मुँहक सड़क क्रमशः चांग-लाक ऊँचाइ धरि चढ़इछ। बाटमे ठाम-ठाम हरियरी आ चारागाह सेहो छैक। एतय भेंडी-बकरीक तँ कम, मुदा याक (चंवरी गाइक) पालन बेसी होइछ। पानिक स्रोतलग गलैचा जकाँ पसरल अजस्र घास याक खूब मनसँ चरैत अछि। जाड़क मासमे इएह घास रौदमे सुखायल, छिलल घास आ पोआर-सन भ' जाइछ। पुनः, गर्मीमे जमल बर्फ जखन पानि बनि पोषक तत्व बहबय लगैछ तँ भूमि पर पोआर-सन सुखायल-सन, दूबि जे पहिन कतहु-कतहु हुलकी दैछ, सएह किछुए दिनमे, चतरि घासक हरियर गलीचा बनि जाइछ।

माल-मवेशी एतुका अर्थ-व्यवस्थाक अभिन्न अंग थिक। याक-भेंडी-बकरीक दूध-घी-छेना, गोंत-गोबर, मासु सबहक उपयोग तँ होइते अछि, हाड़-सींग-केश धरि दूरि नहि जाइछ। एकबेर पेंगोंग-सो झीलसँ लेह केर यात्रामे अहिना स्थानीय जन-जातिक आवास धरि गेल रही। याक केर केशसँ बनल तम्बू। ओही तम्बूमे जीवन-यापनक सब उपादान। भानस-भात, बच्चा-बुतरू, अन्न-पानि, बैसक, बिछाओन। याकक केशक तम्बू देखिते हमर मनक यायावर जागि उठल छल। द्वारि पर पहुँचलहुँ तँ घरवारीकें हाक देबाक कोनो काज नहि। एतुका आवासमे ने अंगना छैक, ने दलान। ने खरिहान, डीह-डाबर। जतहि धड़, ततहि घर। तम्बू भेल घरवारीक संसार। लगक पानि स्रोत भेल पोखरि-इनार। घासक अनन्त विस्तारमे, नीचासँ ल' कय पहाड़क शिखर धरि, माल-जाल ताकि-ताकि कय घास चरैछ। वएह भेल रमना। जतय जगह भेटय, नेना-भुटका खेलाइछ। माल-जालकें दुहबाक बेर किसानकें मालकें ढकढियारि अनबामे कतेक समय लगतनि तकर कोन ठेकान। कहल जाइछ, जहाँ-तहाँ बौआइत याककें एकठाम जमा करब ततेक कठिन छैक जे 1962 क युद्धमे भारतीय सेनाक भार-वाहनमे ई बड़का बाधा साबित भेल छलैक। ओहि समयमे एहि इलाकामे पीच रोड तँ रहैक नहि। सब किछु, घोड़ा-खच्चर-याकहिं पर लादल जइतैक। एतय किछु दूर पर नुब्रा उपत्यकामे तँ ऊँटपर भारवाही होइत छलैक। ओतय एखनहुँ ऊँट भेटत। मुदा, पहाड़पर यत्र-तत्र बौआइत याक अस्तबलमे बान्हल घोड़ा नहि थिक जे खुट्टा परसँ खोलि आनू आ कसू सवारी। याक प्रवृत्तिए जंगली साँढ़ थिक, जकर नियंत्रण लेल कला-कौशल आ अनुभव दुनू चाही। आ जखन काज हो, ओकरा ताकू, आनू आ दुहू, सवारी करू। खुट्टा पर बान्हल ओकरा चैन नहि। जे किछु। ओहि बेरुक यात्रामे अपन आवास लग हमरा सबकें देखि, गृहपति पारंपरिक 'जूले' (नमस्ते-स्वागत-शुभकामना) सँ स्वागत केलनि। एम्हर आम सैनिकहुक अद्‌भुत आदर होइछ। गृहपति बैसक अनलनि आ गृहिणी तुरत नोनगर चाह बनौलनि। बरकैत दूध-पानि, लद्दाख़क झीलकेर नोन, चाहक पत्ती आ गुड़-चीनीक अतिरिक्त याक केर मक्खन केर सम्मिश्रण, नोनगर चाह एहि शीतप्रदेशमे अमृत थिकैक। एतेक सरलता आ एतेक आदर। हम चाह पीबि गेलहुँ। दूरस्थ प्रदेशक एहेन आवास देखबाक कौतूहलसँ हमर कन्या आ पत्नी कनेक काल तम्बू मे बैसलीह तँ अवश्य, किन्तु, शीघ्रे किछु अजीब बेचैनीक अनुभवसँ तुरत टेन्टसँ बहरा गेलीह। लेह-लद्दाख़-तिब्बत केर रहस्य-रोमांच-तन्त्र-आ हवा केर तरंग पर उड़इत लामाक अनेक कथा पढ़ने आ सुनने छी। किन्तु, अपना कोनो प्रत्यक्ष अनुभव नहि। तें,

एहि लद्दाख़ी दम्पतिक तम्बूमे कोन पराभौतिक शक्तिक प्रभाव छल हेतैक जकर अनुभव, एके समयमे, एके ठाम भिन्न-भिन्न लोककें भिन्न-भिन्न रूपें भेल हेतैक, कहि नहि सकैत छी। एहि बेर हमरा एहि सब लेल समय नहि तें, आगू बढ़लहुँ। दुर्बुखसँ चांग-लाक यात्रामे करीब 2 घंटा लागल हयत। आन सब पहाड़ी पास जकाँ एतहु बाबाक मन्दिर, मिलिटरी पुलिस केर चेक-पोस्ट, आ चाह-पकौड़ीक स्वागत। हम एहि बाटें कतेक बेर यात्रा केने छी। तें, एहि बेर फोटो-विडियो नहि। हमर संगबे पर्यटक लोकनि फोटो घिचबौलनि। आ हमरालोकनि शीघ्रे जिंगराल-शक्ति गाओं-कारू होइत लेह केर बाट धयल। कोन ठेकान झटमे रूसनिहारि नारि-जकाँ, चांग-लाक मौसमक मूड कखन बदलि जाइक, बरखा-बर्फ शुरू भ' जाइ, भू-स्खलन भ' जाइ, चांग-ला पास-दर्रा बन्न भ' जाय आ हमरालोकनि ने एम्हरुक, आ ने ओम्हरक भ' जाइ। एहि बाटें अबैत जाइत सब यात्री एहि पहाड़ सबकें भय-मिश्रित आदरसँ देखैत छथि, आ सावधानीपूर्वक आगू बढ़ि जाइत छथि। कारण कनिए असावधानीसँ प्राकृतिक विपदा, मारुख सड़क वा ऑक्सीजनक कमी कखन जान ल' लेत कोन ठेकान!

जिस पथ जावें वीर अनेक

नुब्रा उपत्यका

शिमला, मसूरी, दार्जिलिंग, कतहु जायब हिमाच्छादित पर्वतमालाक दर्शन हयबे करत। जाड़क मास होइ आ बर्फ खसैक तँ बर्फ लगहुमे देखबैक। जयपुर, जोधपुर, जैसलमेर जाउ, सर्वत्र, जहाँ धरि नजरि जायत, बालुए-बालु। कतहु-कतहु समुद्रक लहरि जकाँ लहरैत-सन अजस्र बालुक पैघ-पैघ ढेर (sand dune) सेहो भेटत। सिमरिया-पटना-प्रयाग-बनारस जाउ अओर किछु भेटय वा नहि निरंतर बहैत गंगाक दर्शन अवश्ये हयत। किन्तु, जँ एके ठाम सैंड-ड्यून, मरुभूमि, आ हिमाच्छादित पर्वतमालाक पयर पखारैत विशाल-मारुख नदीक आश्चर्यनक संगम देखबाक मनोरथ हो, तँ, हमर संग भ' जाउ आ नुब्रा चलू। हँ, एहि बेर हम लेहसँ उत्तर मुँह विदा भेल छी। हमरा तँ ठीके बहुत दूर जयबाक अछि। मुदा, लेह धरि पहुँचल पर्यटक अओर कतहु जाथि वा नहि, लेहसँ उत्तर-खरदुंग-ला तँ जयबे करताह। बहुतो गोटेले खरदुंग-लाक यात्रा माउंट एवेरेस्टक यात्रासँ कम नहि। तकर कारणो छैकः माउंट एवेरेस्ट चढ़बा लेल स्वस्थ शरीर, बाहुबल, श्रम, आ साधन, सब किछु चाही। किन्तु, एवेरेस्ट चढ़बा लेल कोनो पक्की सड़क आ मोटरगाड़ी तँ छोड़ू, कोनो खुरबटिया धरि नहि छैक। मुदा, करीब 18000 फुटसँ ऊँच खरदुंग-ला होइत ऑल-वेदर-हाईवे (सब ऋतुमे चालू सड़क) लेहकें नुब्रा उपत्यकासँ जोड़इत अछि। तें, जनिका मनोरथ होइनि कार-टैक्सी-मोटर साइकिलसँ खरदुंग-ला भ' आबथु। आ आपस जा कय मित्र-बंधु-बान्धवकें खरदुंग-ला विजयक यशोगाथा सुनाबथु!

लेहसँ 40 कि.मी. दूर खरदुंग-लाक करीब आधासँ बेसी बाट नीक जकाँ पक्की छैक। लेहसँ करीब 25 किलोमीटर उत्तर, साउथ पुलु नामक स्थानक मिलिट्री चेक-पोस्टसँ आगू, निरंतर ढहैत माटि आ पघिलैत बर्फक कारण सड़क उबड़-खाबड़ होबय लगैत छैक। चढ़ाइ सेहो बेसी होमय लगैत छैक। इलाकाक परिदृश्य एकदम सपाट। कतहु-कतहु जमल बर्फ आ उड़इत चिड़इ, अल्पाइन

चाउ-कौआक जातिक, किन्तु, नारंगी रंगक लोल आ चांगुरबला पक्षी-देखबैक। गरमीक मासमे पहाड़क पक्खा सब पर खरहाक आकारक, मुसना रंगक जंतु-मर्मट-बिल सँ बाहर बैसल देखबैक। मनुक्खकें देखिते मर्मट बिलमे नुका जाइछ। मुदा, चील सब अपन शिकार कइए लैछः जीवो जीवस्य भक्षणम्। एम्हर गाछ वृक्षक कतहु नामो-निशान नहि। खर्दुंग-ला पर तापमान सालो भरि शून्यक करीबसँ ल' कय, शून्यसँ 35 डिग्री नीचा धरि रहैछ। तें, खर्दुंग-ला पर आउ फोटो खिचाऊ आ उत्तर वा दक्षिण जेम्हर जेबाक हो आगू बढ़ू। हमरा तँ एतय अबिते प्रत्येक बेर अनुभव भेल जेना वायुक तरंगपर फूल-जकाँ उधिया रहल होइ। लद्दाख़ी मूलक हमर तत्कालीन कमांडिंग ऑफिसर कर्नल स्मान्लाक अनुभव सेहो हमर अनुभवसँ मिलैत छनि, से ओ कहलनि। लद्दाख़क आन कोनो पास-जकाँ एत्तहु फहराइत अजस्र बौद्ध पताकाक पंक्ति, हिन्दू मंदिर आ बौद्ध पूजा-स्थल-गोम्पा देखबे करबैक। खर्दुंग-ला पर आब सौवेनिरक (स्मारिकाक) दोकान सेहो खुजि गेलैए। हम एहिबेर सातम बेर खरदुंग-ला पार करब। ई कोनो रिकॉर्ड बनेबा लेल नहि। ई तँ हमर रोजी-रोटी थिक। तथापि, एहि बेर फेर सयोक आ नुब्रा नदीक जलक स्पर्श करब। काराकोरमकें, भले दूरेसँ, देखबैक। पानामिक गाओंक उष्ण जलक स्पर्श हयत। (सुनैत छी, ओहि झरनाक गर्म जलमे अद्‌भुत रोग-निरोधक गुण छैक।) सियाचिन ग्लेशियरक मुहानापर (जतय नुब्रा नदीक उद्‌गम छैक) सर्वधर्म पूजा स्थलकें देखब।

एखन खर्दुंग-ला पास पर उत्तर मुँहे ठाढ़ भेलापर दूरमे काराकोरम पर्वतमालाक दर्शन हयत। आइसँ सत्तरि-अस्सी वर्ष पूर्व एतयसँ लद्दाख़ पर्वतमालाक अनेक बाधा पार करैत, जनशून्य भूमि आ मृत्युक उपत्यका (Death Valley) होइत, व्यापारी लोकनिक घोड़ा, खच्चर, आ ऊँट (Bactrian Camel) केर कारवां पर माल-असबाब ल' कय, काराकोरम पास(दर्रा) होइत काशगार, यारकंद, आ सिल्क-रूट पर मध्य एशिया धरि जाइत छलाह। ओहि समयमे कश्मीरक राजाक एकटा सराय काराकोरम पासक उत्तर शहादुल्लामे सेहो रहनि। किन्तु, आब ई सब इतिहास भ' चुकल अछि। यद्यपि भारतीय सेनाक अधिकार क्षेत्र, उत्तरमे, काराकोरम दर्रा धरि छैक। ओहिसँ दक्षिण दौलत बेग ओल्डी इलाकामे भारतीय सेनाक एयर स्ट्रिप छैक। किन्तु, ओम्हरुका इलाकामे एखन पर्यटन केर अनुमति नहि। असलमे हेबो कोना करतैक! ऊँचाइ, आ जलवायु सबटा प्रतिकूल। आबादी, गाछ-वृक्ष आ आधारभूत संरचना एकदम नहि।

खर्दुंग-लासँ आगू नुब्रा जेबाले खड़ा ढलान आरभ होइत छैक। सड़क कच्ची-जकाँ। मिलिटरी गाड़ी सबहक आवागमन सबसँ बेसी। करीब 15 किलोमीटर केर बाद

नार्थपुलु नामक मिलिटरी चेक-पोस्ट। आ तकर बाद नुब्रा इलाकाक पहिल गाम खर्दुंग। हमरालोकनि आब नुब्रामे पहुँचि चुकल छी। तें, ओकरे गप्प करी।

वीकिपिडियाके मानी तँ नुब्रा भेल एहन उपत्यका जाहिमे सबतरि फूले-फूल हो। तथापि, उत्तराखंडक 'वैली औफ फ्लॉवर' वा कश्मीर-जकाँ नुब्रामे बाट चलैत वनफूलकेर जंगल वा ट्युलिपकेर बगीचा नहि देखबैक। ने सेब, संतोला, बादाम केर बगीचा भेटत। लद्दाख़मे हरियरी, फूल, आ आबादी सबकें लद्दाख़क शीत मरुभूमिक परिप्रेक्ष्यमे देखियौक। एतय जाड़ मासमे दूबि धरि सुखा कय पोआर-सन पियर भ' जाइछ, से सुनबे केलहुँ। ओहि दृष्टिएँ चांगथांग (पूर्वी पठार) क बनिस्बत नुब्रामे ठाम-ठाम हरियरी बेसी भेटत। ओना हरियरी आ पानिक स्रोतक संबंध एतहु ओहने छैक जेना अंतय होइत छैक। एतय पानि बेसी छैक, सयोक आ नुब्रा नदीक कारण। किन्तु, एतेक बालु आ बालुक ढेर कतयसँ अयलैक से तँ भूगर्भ शास्त्रीए कहताह। मुदा, एखन सयोक नदी लग आबि गेले, तें, ओकरे गप्प करी।

नदीक रूपमे सयोकक धार अद्‌भुत अछि। सयोकक उद्‌गम होइछ रिमो ग्लेशियरसँ। ई ग्लेशियर सियाचिन ग्लेशियरेक उतरबरिया आंगुर जकाँ अछि। नुब्राक उद्‌गम सेहो छैक सियाचिनेसँ। माने अगले-बगल। किन्तु, पूब-दक्षिण दिशामे बहैत दुनू नदीक बीच एकटा पर्वत-शृंखला अभेद्य देबाल बनि बहुत दूर धरि दुनू नदीकें दू कात केने रहैछ। एहि बीच निर्बाध नुब्रा नदी पश्चिम मुँहक बाट धरैए आ सयोक नदीकें पूबक अलावा कोनो बाटे नहि। फलतः, सयोक पूब मुँहे बहुत दूर धरि चल जाइछ। अंततः, पूबमे जखन, नदीक आगाँ, दोसर पहाड़ सयोकक बाट घेरि लैछ, तखन सयोक नदी हारि कय, दिशा बदलि, नुब्रा नदीक दिशामे पश्चिम-दक्षिण दिस घूमि जाइछ। फलतः खलसर नामक स्थान पर दुनू नदी-नुब्रा आ सयोक-क मिलान होइछ। एतयसँ दुनू बहिना एक संग भ' सयोकक नामसँ पश्चिम-दक्षिण दिशामे बहैत पाकिस्तानमे जा कय सिंधुमे अपन जल विसर्जित करैछ। एक दोसरासँ मिलबासँ पूर्व सयोक नदीक एही लंबा यात्राक कारण एकरा मारुख नदीक (river of death) कहल जाइछ।

आब पुनः बाटपर आबी। मोन हयत, खरदुंग-ला पार कय हमरालोकनि खरदुंग गांओ होइत खलसर आयल रही। खलसर गांओसँ सयोक नदीकें पार करैत एकटा सड़क सियाचिन बेस कैम्प दिस, उत्तर पश्चिम मुँहे जाइछ। दोसर सड़क नदीक दक्षिणेसँ, दक्षिण-पश्चिम दिशामे नुब्राक मुख्यालय डिस्किट आ हुंडर-परतापुर होइत भारतक सीमांत गांओ तुर्तुक धरि जाइछ। ई सड़क सयोक नदीक बामा कछेर धेने चलैछ। एतय ई स्पष्ट करब आवश्यक जे, दुनू नदीक मिललाक पछाति नुब्रा

उपत्यकाक ई विशाल नदी सयोकेक नामसँ जानल जाइछ। हमरालोकनि बेरा-बेरी खलसरसँ फुटैत दुनू सड़कपर यात्रा करब आ दुनू दिशामे जायब। मुदा, पहिने सियाचिने बेस कैम्पसँ भ' आबी। साँझ धरि ओतयसँ आपस भ' हुंडर केर फील्ड एम्बुलेंसमे रात्रि विश्राम हेतैक। पछाति काल्हि तुर्तुकमे सद्‌भावना रैली, मेडिकल कैम्प आ नागरिक लोकनिक आँखिक रोगक जाँच हेतैक।

सियाचिन बेस कैंप

एहि बाट धयलाक संग सियाचिनक संक्षिप्त परिचय आवश्यक। सियाचिन इलाका विश्वभरिमे सबसँ ऊँच आ दुर्गम इलाकाक स्थायी युद्ध भूमि थिक। ई ओएह इलाका थिक जतय भारत-पाकिस्तानक विभाजनक पछाति, व्यावहारिक कठिनाइक कारण सीमाक निर्धारण नहि भेल रहैक। किन्तु, 1984 मे भारत सरकारकें सूचना भेटलैक जे पाकिस्तान ओहि इलाकामे अंतर्राष्ट्रीय पर्वतारोहण आरम्भ करबाक सूरसारमे छल। फलस्वरूप भारतीय सेनाक 'ऑपरेशन मेघदूत' आरम्भ भेल आ भारतीय सेना एहन बर्फीला आ हाई ऑल्टिच्युड इलाकामे स्थायी रूपें अपन अधिकार जमौलक। एहिसँ पाकिस्तानक अनधिकार भारतक भूमि हथिअएबाक आ सामरिक मंसूबा तँ ध्वस्त भ' गेलैक, किन्तु, विगत 34 वर्षमे दुनू पड़ोसी हजारो करोड़ टाका आ हजारो सैनिकक जान गमौलक अछि। ई थिकैक पड़ोसीसँ शत्रुताक मूल्य जे निरंतर दुनू पक्ष वहन करैत अछि। कारण, सियाचिनमे मनुक्खक सबसँ भयानक शत्रु एतुका विपरीत जलवायु थिकैक जे राष्ट्रीयता आ धर्मक बिनु परबाहि केने प्रत्येक मनुष्य पर प्रहार करैछ!

खलसरसँ सियाचिन बेस कैम्पक रास्ता लगभग समतल छैक जे क्रमशः नुब्राक उद्गम-सियाचिन-दिस जाइछ। आबादी बहुत थोड़ आ इलाका जनशून्य। पक्की सड़क केर अलावा दुनू कातक भूमि रोड़ा पाथरसँ भरल। पघिलैत बर्फ आ नदीक बहावक संग, नदीक बाटमे जे किछु अबैछ नदीक संग बहैत अछि, आ नहि जानि कतय धरि पहुँचि जाइछ। बहावक एहि प्रक्रियामे नदी, भूमि आ पैघ-पैघ पाथरक आकारकें तेना तरासैत चल जाइछ, जे कोनो पाथर शिवलिंगक रूप ल' लैछ आ कोनो शालिग्रामक, आ किछु पाथरक पाथरे रहि जाइछ। आ वएह पाथर-पिण्ड होइछ अंततः मनुक्खक आस्थाक प्रतीक। ओना मनुष्य सेहो नदीक वहावक आओर अनेक प्रयोग करैत आयल अछि। कहल जाइछ, ब्रह्मपुत्र-सन लंबा नदी (जे पश्चिमी तिब्बतसँ आरंभ भ' अरुणाचलक पहाड़क ऊपरसँ होइत भारतमे

खसैछ) केर उद्‌गमसँ ल’ कय समतल भूमि धरि ओकर बाटकें प्रमाणित करबा लेल तहियाक खोजी विद्वान लोकनि तिब्बतक सांङ्‌पो नदीक धारमे लकड़ीक पैघ-पैघ खंड खसबैत रहथि आ ओकरा सभकें ब्रह्मपुत्रमे तकैत रहथि। इएह प्रयोग सिद्ध कएलक जे तिब्बतक साङ्‌पो आ भारतक ब्रह्मपुत्र एके थिक। यातायात लेल नदीक प्रयोग तँ आदिकालसँ चलिए रहल अछि।

खलसरसँ सियाचिनक बाटक बामा कात किछु दूर हँटि कय नुब्रा नदी हमरालोकनिक यात्राक विपरीत दिशा (पूब-दक्षिण) दिस बहैछ। नुब्रा उपत्यकाक एहि भागमे आबादी बौद्ध लोकनिक छनि। तें, गामे-गाम गोम्पा भेटत। यद्यपि, लद्दाख़क एहि भागमे केवल चारिए पाँच टा गाम भेटत। पानामिक गाओंक गरम पानिक झरना स्थानीय लोक सबहक हेतु विशेष आकर्षण थिक। पहाड़ी इलाकामे गरम पानिक झरना कोनो अजगुत नहि। हिमाचलक तत्तापानी-मनिकरन साहेब, उत्तराखंडमे बदरिकाश्रम, लद्दाख़ेमे पुगा इलाकामे सेहो गरम पानिक अनेक झरना देखबैक। तथापि, लद्दाख़-सन शीत मरुभूमिमे गरम पानिक स्रोत तँ सब दुखहरणी कोना ने मानल जाउक। गरम पानिक एहि प्राकृतिक संपदाक उपयोग बिजली उत्पादन आ घरकें गरम रखबा लेल (space-heating) सेहो कयल जा सकैछ। लद्दाख़मे एहि संभावनाक तलाशमे एकबेर आइ आइ टी बंबईक वैज्ञानिकलोकनि हमरा रहैत लेह आयल रहथि आ हमरे लोकनिक मेसमे डेरा खसौने रहथि। जे किछु। पानामिकक एहि छोट-सन झरनामे स्नान आ जलपानसँ रोगमुक्तिक अभिलाषासँ श्रद्धालु लोकनि नहाइत छथि, पानि पीबैत छथि। पानामिकक बाद ससोमा गांओ अबैछ। एतय सेनाक अनेक प्रतिष्ठान सब आ चेक-पोस्ट छैक, कारण, एहि सीमांत इलाकामे सड़क निर्माण, रख-रखाव, आ सुरक्षा, सब केर दायित्व सेनाएक छैक। ससोमासँ आगू, वारसी, एहि सड़क पर अंतिम गांओ थिक। एतय गांओक अर्थ गोड़ पांचेक घर। वारसीक आगू, सियाचिन बेस कैम्पक लग इलाका चौड़ा भ’ जाइत छैक। सड़क केर आगू सीधा ग्लेशियरक बज्र मटमैल जमल बर्फ, चौड़ा-चौड़ा दराड़ि, फाटल भूमि देखबैक। ओना, भूमि तँ ई थिकैक नहि। ई थिक जमल, किन्तु, निरंतर बहैत नदी। एहि गलेशियरसँ निसृत नुब्रा नदी सड़कक बामा दिस द’ कय बहैछ। तें, सेनाक बेस कैम्प धरि जेबा लेल नदीपर सेनाक इंजीनियरिंग कोरकेर बनाओल एकटा सस्पेन्सन ब्रिज वा झूला पुल छैक। पुलक दोसर पार सेना यूनिटक मेडिकल इन्सपेक्सन रूम (MI Room), कैन्टीन, ट्रेनिंग एरिया, आ सर्वधर्म पूजा स्थल-ओ पी बाबाक मंदिर छैक। आइ जखन देश मे धर्म-संप्रदायक विवाद जोर पकड़ने अछि आ नव देशभक्त लोकनि

राष्ट्रीयताक लेबुल लगौने हर गली-कूचामे बरसाती बेंग जकाँ बौआइत फिरैत छथि तखन एतय ओ पी बाबाक मंदिरक चर्चा सर्वथा वांछित बूझि पड़ैछ।

ओ पी बाबा आ सर्वधर्म मंदिर

के थिकाह ओ पी बाबा? आ की थिक ई सार्वजनिक पूजा स्थल? सारांशमे ओ पी बाबा थिकाह सियाचिनमे शहीद एकटा सैनिक जे सियाचिन अभियानक आरंभमे कोनो आउट पोस्ट (OP) पर घटनाक दिन एसगरे तैनात रहथि। सर्वविदित अछि सियाचिन इलाकामे सेनाक सबसँ पैघ शत्रु प्रतिकूल जलवायु थिक, जकर कारण एतय सैकड़ों सैनिक अपन प्राणक आहुति द' चुकल छथि। अस्तु, ओ पी बाबा सेहो अपन आउट पोस्टसँ एक दिन तेना विलुप्त भेलाह जे ओकर बाद हिनका केओ घूरि कय नहि देखलकनि। आब, निरंतर होइत भूस्खलन वा ग्लेशियरक दराड़ि हिनका गीड़ि गेल वा ई शत्रुक गोलाबारीक शिकार भ' गेलाह, केओ विश्वासपूर्वक नहि कहि सकैछ। किन्तु, सियाचिनक सैनिक लोकनिक धारणा छनि जे ओ पी बाबा सैनिक लोकनिकें आसन्न खतराक पूर्वाभास दैत छथिन आ अनुशासन भंग केनिहार सैनिककें दण्डित सेहो करैत छथिन। अतः सियाचिनमे पदस्थापित सैनिक ग्लेशियरक ड्यूटीक अवधिमे खानपान आ व्यवहारक कड़ा अनुशासनक पालन करैत अपन कार्यकाल पूरा कय सकुशल अपन यूनिट वापस जाइत छथि। ओना सियाचिन अयनिहार सब सैनिकक मनमे शंका रहिते छैक। 1984 क अवधिमे, जखन सियाचिन अभियान आरंभ भेल रहैक, हमर एकटा मित्र अपन सियाचिन कार्यकाल समाप्तिक पछाति कहने छलाह, 'ड्यूटी तँ सैनिक लेल सर्वोपरि छैक। किन्तु, ओकर अतिरिक्त जँ सियाचिनमे पदस्थापित सैनिक मनमे कोनो आओर भाव अबैछ तँ ओ थिक, सियाचिनसँ सकुशल वापस हेबाक अनिश्चितता'! ओ पी बाबा सैनिक सबहक मनसँ एही दुश्चिन्ताकें भगयबामे सहायक होइत छथिन। सियाचिनक सर्वधर्म पूजा स्थलमे ओ पी बाबाक संग गुरुनानक, दुर्गा, ईसा मसीहक संग काबाक फोटो सेहो भेटत। पहिल बेर भारतीय सेनाक सर्वधर्म पूजा स्थल देखनिहार लेल ई आश्चर्यजनक भ' सकैत छनि, किन्तु, सैनिक लेल ई नव नहि। कारण, सर्वधर्म समभाव आ सैनिकक व्यक्तिगत धार्मिक आस्थाक आदर सैनिक अनुशासनक परम्परा थिकैक।

सियाचिन बेस कैंपसँ वापस खलसर

हमरालोकनि लेहसँ (खर्दुंग-ला होइत) खलसर आयल रही। आ सियाचिन बेस कैंप

सँ वापसीमे डिस्किट गाओंसँ पहिने खलसर। खलसरसँ दहिना फूटैत सड़क डिस्किट-परतापुर होइत तुर्तुक जायत, आ सोझ रोड वापस लेह।

रौद खसि चुकल छैक आ थोड़बे कालमे सूर्य पहाड़क पाछू चल जेताह। ज्ञातव्य थिक, पहाड़ी भूमिमे सबठाम इजोत अन्हार सूर्योदय आ सूर्यास्तक संग नहि होइछ। शिमला-जकाँ पहाड़क शिखरपर बसल बस्तीमे रुख-सुख समयमे सूर्योदयसँ सूर्यास्त धरि रौद रहैछ। ओतय प्रतिदिन उगैत सूर्यक लालिमा आ डूबैत सूर्यक गोला दुनू देखबैक। किन्तु, संकीर्ण उपत्यकामे कतेक ठाम भोरहुमे सूर्य ऊपर अओताह तखने देखबनि आ जहाँ कि सूर्य पश्चिमक पहाड़क पाछू गेलाह कि बुझू दिनान्त भ' गेल। लद्दाख़-सन शीत प्रदेशमे अबैत जाइत सूर्यक संग तापमानमे गंभीर परिवर्तन होइछ। लद्दाख़क किछु इलाकाक सम्बन्धमे कहबी छैक, 'जँ एहन ठाम बैसी जे रौद चेहरा पर पड़ैत हो आ पैर छायामे हो, तँ, चेहरा (तेज परावैगनी किरणक कारण) झरकि जायत आ भ' सकैत अछि पयरमे फ्रॉस्ट-बाइट (frost-bite) भ' जाय!

एखन हमरालोकनि हुन्डर स्थित फील्ड एम्बुलेंस जायब। ओत्तहि रात्रि-विश्राम हेतैक।

डिस्किट, परतापुर, थोइस आ तुर्तुक

डिस्किट नुब्रा इलाकाक मुख्यालय आ स्थानीय बाजार थिकैक। ई गाम एतुका विशाल बहुमंजिली (डिस्किट) बौद्ध विहार लेल प्रसिद्ध अछि। एहिसँ आगू चलि कय हुन्डर गाओं आओत जतय एतुका फील्ड एम्बुलेंस (भारतीय सेनाक सामरिक मेडिकल प्रतिष्ठान) छैक। लद्दाख़मे डिस्किट-हुन्डर गाओं बालुक ढेर (sand dune) आ दू टा कूबड़बाला ऊँट लेल प्रसिद्ध अछि।

दू टा कूबड़बाला ऊँट (double-humped Bactrian camel)

नुब्रा इलाकाक दू कूबड़बाला ऊँट ओहि विगत युगक प्रतिनिधि थिक जहिया लेह आ काशगारक व्यापारी लोकनिक कारवां अपन माल-असबाबक संग सीमाक दुनू दिस अबैत जाइत छलाह आ भारत तिब्बतक बीच वाणिज्य-व्यापार करैत छलाह। जलवायु अत्यन्त प्रतिकूल होइत छलैक। बाट-घाट-नदी-दर्रा भयानक। मौसम अचानक कखन बदलि जेतैक, तकर ठेकान नहि। तथापि, मनुष्यक जिजीविषा स्वतः सब भय पर विजय क' लैछ। भारतक स्वतंत्रताक समयसँ ई बाट बंद अछि। आब एहि बाटपरक साबिकक (trans karakoram) व्यापार इतिहासक पन्नामे दबि चुकल अछि। तथापि, एहि ऐतिहासिक व्यापारक भग्नावशेष दूटा कूबड़बाला ऊँट (double-humped Bactrian camel) आ दुनू दिसक लोकक बीचक औपचारिक वा अनौपचारिक रक्त-सम्बन्धकें मेटयबामे आओर बहुत समय लगतैक। अन्यथा, मंगोल लुटेरा चंगेज खानकेर अनुवांशिक पद-चिह्न (Genes) एखन धरि विश्वसँ विलुप्त भ' गेल रहैत! ई अजुका विडंबना थिक जे ई तथ्य अजुका अतिराष्ट्रवादी लोकनिकें देखबामे नहि अबैत छनि!

हुन्डर गाम डिस्किटसँ पश्चिम दक्षिणमे पड़ैत छैक। डिस्किट आ हुन्डरक बीच कनेक काल सड़कपर पश्चिम मुंहे ठाढ़ होउ। सोझ मुहें हिमाच्छादित पर्वतमाला देखबैक। पहाड़क एकदम नीचा भूमिपर सयोक नदी-कखनो शांत-मंथर-क्षीण,

कखनो घोर-मट्ठा आ तीव्र-तमसायल आ उफनैत। किएक नहि? हिनका एहि सुदूर पर्वत शृंखलासँ अरब सागर धरि जे जेबाक छनि!

गुणक खान जंगली फल सीबकथोर्न लेह बेरी

सड़क आ नदीक बीच लद्दाख़ी कटैया झाड़ सीबकथोर्न-लेह बेरीक जंगलकें देखिऔक। सीबकथोर्न वा लेह बेरी लद्दाख़ आ नुब्राक विशेषता थिक। मटरक दानाक आकारक लेह बेरी, नारंगी रंगक खटमधुर फल, अनेक पौष्टिक तत्व-जेना, विटामिन सी, विटामिन ई, आ एंटी-ऑक्सीडेंट तत्वक खान मानल जाइछ। एहि बेरीमे गुद्दा तँ कम आ आंठीक भाग बेसी होइत छैक। गाछक डारिपर सक्कतसँ गंथल फल, ने अपने खसैत छैक, आ ने गाछक डारिकें भूमिपर पटकि डारिसँ लेह बेरी झाड़बे सुलभ। लेह स्थित रक्षा अनुसन्धान विभागक फील्ड रिसर्च लेबोरेटरी (FRL) लेह बेरीपर अनेक अनुसन्धान केने अछि। फलतः, डाबर कम्पनी सीबकथोर्नक जूसकें लेह बेरीक जूसक नामसँ बजारमे बेचैछ। लेह बेरीक मसुरिक आकारक कारी-हरियर बीआकें परिशोधित कय तेल बहार कयल जाइछ, जकर प्रयोग सौन्दर्य प्रसाधनक अनेक प्रोडक्ट सबमे होइछ। ततबे नहि, लेह बेरीक कंटइया डारिसबकें माल-जालसँ सुरक्षाक हेतु लोक खेतक आरि आ परिसरक परिधि पर सेहो रखैत अछि। लेह बेरीक कंटइया डारिसब जारनिमे सेहो खूब नीक जकाँ जरैछ। किन्तु, एकरा चुल्हामे जरायब सुलभ नहि। लद्दाख़मे जाड़ तँ जानलेवा होइछ। किन्तु, एतय घूड़-धुआँक परिपाटी नहि छैक। कारण दू : एक, घास-पात आ जारनि-काठीक अभाव दोसर, एतुका शीत लहर, आ तेज बिहाड़ि-सन बसात आ तेज रौद दुनूमे घरक बाहर बैसब असंभव। सत्यतः, एतुका बसात ततबे कन-कन होइछ जे पारम्परिक घर सबमे खिड़की-जंगला अभावृत्तिए देखबैक।

आब पुनः, पश्चिम मुँहक परिदृश्य पर नजरि घुमाबी। सयोकक तट आ सड़क केर बीचक बालुक टीला (सैंड ड्यून) राजस्थानक थार मरुभूमिक स्मरण भ' आओत। एतहु राजस्थानक मरुभूमि-जकाँ बालुक छोट-पैघ असंख्य टीला (sand dune) देखबैक। किन्तु, एतेक ऊँच हिमालयमे मरुभूमि! सएह तँ थिकैक लद्दाख़!! समतल भूमिमे सैंड-ड्यून देखबाक हो तँ जैसलमेरसँ करीब चालीस किलोमीटर दूर साम गांओ जाउ, ऊँट पर चढ़ू आ ओहि इलाकाक जनजातिक मुहें 'पल्लो लटके, म्हारो पल्लो लटके.... क गीत सुनू। सामक सैंड-ड्यून (बालुक ढेर) अपन निरंतर बदलैत स्वरूप लेल प्रसिद्ध अछि। 1986-87मे भारतीय सेनाक प्रसिद्ध युद्ध अभ्यास 'ऑपरेशन ब्रास-टैक्सक' अवधिमे हम छौ मास धरि राजस्थानमे बौआइत

रही। ओहि अवधिमे हम फौजी तामझामक संग राजस्थानक टूरिस्ट आकर्षण, निरंतर बदलैत (shifting) सैंड-ड्यूनक, इलाका गेल रही। किन्तु, ओकर गप्प फेर कहियो दोसर बैसारमे।

आब हमरालोकनि हुन्डर स्थित फील्ड एम्बुलेंस लग आबि चुकल छी। एहि सामरिक प्रतिष्ठानक हॉस्पिटल, सियाचिनमे तैनात सैनिक लोकनिक हेतु निकटस्थ अस्पताल थिक। हमरालोकनिक लेहक मिलिटरी जनरल हॉस्पिटल सम्पूर्ण लद्दाख़ क्षेत्रक हेतु रेफरल सेंटर थिक। काल्हि एतुका फील्ड एम्बुलेंस भारतीय सेनाक ऑपरेशन सद्भावनाक तहत तुर्तुकमे मेडिकल कैंप आ सद्भावना रैलीक संचालन करत। हम ओही शिविरमे रोगी सबहक आँखिक जाँच आ चिकित्सा लेल आयल छी। आइ राति हमरालोकनि फील्ड अम्बुलेन्सक ऑफिसर मेसमे डेरा देब। फील्ड एम्बुलेंसकेर कमान अधिकारी, ले.कर्नल इन्दरजीत हजारी, गयाक निवासी थिकाह।

आइ राति एतय सामान्य शिष्टाचार, मित्रभाव आ आतिथ्यमे एतय कोनो कमी नहि। दिन भरि आइ लम्बा यात्रा भेलैए। आब कल्याण करोट होइ।

परतापुर / थोइस आ तुर्तुक

आइ अहल भोरे तैयारी भेलैक। आइ हमरालोकनि तुर्तुक गाओं जायब। तुर्तुक इलाकामे युद्ध बेर-बेर अंतर्राष्ट्रीय सीमाकें घुसकबैत रहलैए। अंतरराष्ट्रीय सीमाक एहि परिवर्तनसँ स्थानीय नागरिक कोना प्रभावित होइछ, से देखियैक। किन्तु, से कनेक पछाति।

आइ हमरा संग ले. कर्नल अखिल राठौड़ आ मेडिकल टीमक अतिरिक्त एतुका फील्ड एम्बुलेंसक कमान अधिकारी, ले. कर्नल इन्दरजीत हजारी सेहो छथि। तुर्तुक गाम पहुँचैत दस बाजि जेतैक। हमरालोकनि ओतय पहुँचब तखने रैली, कैंटीन आ मेडिकल कैम्पक उद्घाटन हेतैक। लेहमे रहैत हमरालग तुर्तुकसँ अनेक रोगी अबैत रहैत अछि। पछिले मासमे हम तुर्तुकक एकटा दस वर्षक रोगीक आँखिमे मोतियाविंदुक ऑपरेशन कय लेंस लगौने छियैक। आइ अपन आँखि देखयबा लेल ओहो एबे करत। हुन्डर मिलिटरी अस्पतालमे मेडिकल स्पेशलिस्ट आ सर्जन केर सुविधा छैक। किन्तु, सम्पूर्ण लद्दाख़मे मिलिटरी विभागमे एकमात्र हमरे लेह जनरल हॉस्पिटलमे आँखिक इलाजक सुविधा छैक। सोनम नोर्बु अस्पतालमे एकटा नेत्र चिकित्सक छथि। किन्तु, सुविधा-सहूलियतक कारण अधिक लोक मिलिटरी अस्पतालमे हमरे लग अबैत अछि। किन्तु, लेह जनरल हॉस्पिटलक अनुभव फेर कहियो। एखन सयोक नदीक बामा कछेर धेने आगू बढ़ी। एहि

बाटपर हुन्डरसँ आगाँ [THOISE] एयरफील्ड अबैत छैक। एतय छोट-सन गाम सेहो छैक। थोइस (THOISE) Transit Halt Of Soldiers Enroute to Siachen केर संक्षिप्त रूप (acronym) थिक। नुब्राक इलाकामे एकमात्र चाकर-चौरस भूमिपर ई एयरफील्ड सियाचिन आ सम्पूर्ण नुब्रासँ संचालित सैनिक अभियानक संचालन लेल तँ महत्वपूर्ण अछिए, नुब्राक इलाकामे ई मात्र सिविलियन एयरपोर्ट थिक। ज्ञातव्य थिक, एहि इलाका दोसर मिलिटरी एयर स्ट्रिप दौलत बेग ओल्डी नामक स्थानमे छैक जतय आवश्यकतानुसार भारतीय वायु सेनाक हवाई-जहाज उतरैत अछि, से कहनहि छी। किन्तु, ओ इलाका एतयसँ बहुत दूर उत्तरमे छैक। ओम्हर ने आबादी छैक आ ने पर्यटनक अनुमति आ सुविधा।

गर्मीक मासमे दिल्लीसँ लेह आ परतापुरक सिविल फ्लाइट पर्यटक सबसँ भरल रहैछ। किन्तु, लद्दाख़ अनेक अर्थमे अजूबा अछि। भ' सकैत अछि, अहाँ यात्राक योजना बनाबी, टिकट ली आ मौसम अचानक बदलि जाइक आ अहाँ लद्धाख जा नहि सकी। एतुका मौसमक कोन ठेकान, दुलारि संगिनी-जकाँ हिनक कखन मूड बदलि जेतनि, के कहत! दोसर, लेह आ परतापुर पहुँचि गेलहुँ तैयो आपसीमे सेहो बाधा भ' सकैत अछि। एहिठाम गरमी मासमे जखन तापमान बढ़इत छैक तँ विरल वायु (Low atmospheric pressure) क कारण हवाई जहाजक वजन उठेबाक क्षमता (payload lift) कम भ' जाइछ। अस्तु, भ' सकैत अछि, हवाई जहाजमे बहुतो सीट खाली होइक आ अहाँकें लेह वा परतापुरमे दोसर दिनक फ्लाइट लेल प्रतीक्षा करय पड़य। तें, लेह एवं परतापुरक फ्लाइट चंडीगढ़ आ दिल्लीसँ अहल भोरे करीब 5 बजे धरि उड़ि जाइछ, जाहिसँ रौदक गरमी बढ़बासँ पहिने वापसीक फ्लाइट उड़ि सकैक।

आब पुनः बाटपर आबी। डिस्किटसँ आगू तुर्तुक केर सड़क भारत-पाकिस्तानक सीमाक समीप छैक। तें, पहिने एम्हर पर्यटक केर अवर्यात नहि रहैक। किन्तु, हाल-सालमे पर्यटक केर आमदरफ्त बढ़लइ-ए। पर्यटक सब मोटामोटी तुर्तुक धरि जाइछ। बीचमे चलुंका नामक गांओ अबैछ। किन्तु, ओतय पर्यटकक दृष्टिएँ कोनो तेहन आकर्षण नहि। थोइससँ तुर्तुक केर सड़क मोटा-मोटी समतल भूमिमे चलैछ, आ बेसी ठाम नदीसँ दूर। किन्तु, कतहु-कतहु सड़क नदीक तलसँ ऊँच चढ़ि जाइछ आ नदीक कछेर सड़कक एकदम लग सहटि अबैछ। ताहिपर बामा कात 75-80 डिग्री खड़ा पहाड़क बलुआह फलक। आ सड़कक दाहिना कात गहींर नदी। एहन सब स्थानमे बालु-माटि आ मलबा कखन हहरि क' सड़क पर आबि जायत आ सड़क बंद क' देत वा चलैत गाड़ी-घोड़ा कें ल' क' नदीमे विलीन क'

देत कोन ठेकान। तथापि, राष्ट्रीय सुरक्षाक दृष्टिएँ महत्वपूर्ण एहि सड़ककें सीमा सड़क संगठनक स्थानीय दल निरंतर चालू रखने रहैछ, आ बस-मोटरकार आ सैनिक साज सामानसँ लदल भारी वाहनक यातायात निरंतर चालू रहैछ। पहिलुका युगक घोड़ा-खच्चर आ ऊँट कारवां तँ आब इतिहास भ' गेल अछि। तें, ओ सब आब कतय पाबी। एहि इलाकामे दहिना कात बाटे-बाट सैनिक चौकी, तोपखाना, आ नदी पार करबाक सैनिक पुल सेहो देखबामे आओत। स्थान सबहक नाम स्थानीय जनता आ सैनिके लोकनि बूझैत छथि। कारण, जँ गाओं नहि तँ स्थानक नाम की? एहि बाटपर चलैत-चलैत चाकर-चौरस नदी, बलुआह-रोड़ाह मरुभूमिमे जँ एकाएक हरियरी, आडूक गाछ, मटरकेर लत्ती, जौ-गहूमक खेती, टमाटर-मूर-गाँठ गोभीक खेत नजरि आबय लागय तँ बूझि लिअय, तुर्तुक पहुँचइ बला छी। किन्तु, गामसँ पहिने सड़कक बामा कात सबसेक्टर हनीफमे कारगिल युद्धमे अपन प्राण उत्सर्ग केनिहार पहिल सैनिक, जाट रेजिमेंटक लान्स नायक खड़ग सिंह, सेना मेडल, आ ओहि युद्धमे शहीद कप्तान हनिफुद्दीन, वीर चक्र केर स्मारक आकृष्ट करत।

हमर विचार जे गाओंमे प्रवेशसँ पूर्व एहि हुतात्मा लोकनिक स्मरणमे एक क्षण मौन आ एकटा नमन। देशक सर्द वीरान भूभागमे प्राणक बलि देनिहार ई युवक योद्धालोकनि, देशक हृदयस्थलमे अपन घरमे सुरक्षित, निस्संक सूतल नागरिकक आ ब्लैक-कैट कमांडोक घेरामे दिल्लीमे चलनिहार राजनेताक दृष्टिपथ पर नहि अबैत छथिन। किन्तु, जँ अहाँ कोनो सैनिककें सद्यः देखने छियनि, तँ, एतबा धरि जुनि बिसरी, जे, घर परिवारक संग प्रसन्नमुख सैनिक एहनो निर्जन प्रदेश आ विषम जलवायुमे घर-परिवारकें बिसरि निरंतर देशक सुरक्षाक लागल रहैछ। मनमे एके सुर आ एके राग, स्वर्गीय कप्तान विक्रम बत्रा, परमवीर चक्रक शब्दमे, 'चाहे तँ शत्रुक छाती पर राष्ट्रध्वजकें फहरायब, वा राष्ट्रध्वजक परिधानमे हमर पार्थिव-शरीर वापस आओत'। अतः ई 'जिस पथ जावें वीर अनेक' बाट थिक, जाहिपर फेकल जयबाक 'अभिलाषा', स्व.माखन लाल चतुर्वेदीक अमर कविता 'पुष्प की अभिलाषा' मे फूल व्यक्त कयने अछि। स्वतंत्रता संग्रामक युगमे लिखल ई कविता आब विस्मृत भ' गेल अछि तें हम एकरा एतय उद्धृत करैत छी :

चाह नहीं मैं सुरबाला के गहनों में गूँथा जाऊँ
चाह नहीं प्रेमी-माला में बिंध प्यारी को ललचाऊँ,
चाह नहीं, सम्राटों के शव पर, हे हरि, डाला जाऊँ
चाह नहीं देवों के सिरपर चढ़ूँ भाग्य पर इठलाऊँ

मुझे तोड़ लेना बनमाली! उस पथपर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

आब हमरालोकनि तुर्तुक पहुँचि चुकल छी। करीब दस बाजि गेल छैक। समयसँ पहुँचबाक धुनिमे ने कतहु चाह-पानि आ ने दम मारबाक फुरसति। एडवांस पार्टी रैली एवं मेडिकल कैंपक व्यवस्था केने अछि। सैनिक लोकनि अपना स्टालपर मुस्तैद छथि। आर्मी यूनिटक गेट पर लागल हरियर फीता कटलैक आ भ' गेल उद्घाटन। किन्तु, ओहिसँ पहिने तुर्तुक गामक परिचय। तुर्तुक गाम सयोक उपत्यकामे बाल्टिस्तानी मूलक मुसलमान लोकनिक गाम थिक। भारतक विभाजनसँ पूर्व ई गाओं सम्पूर्ण भारत-पाकिस्तान-बांग्लादेशक भूमि-जकाँ भारतेमे छल। विभाजनमे ई गाओं पाकिस्तानमे पड़ि गेल। अस्तु, एतुका कतेक नागरिक पाकिस्तानी प्रशासनक अमलमे पाकिस्तान सरकारक सेवा कयलनि। किन्तु, भूमिपर मनुष्य द्वारा खींचल डांरि पर पृथ्वी हँसैछ। वस्तुतः, प्रकृति वा मनुष्य द्वारा पृथ्वीपर पाड़ल कोनो सीमा नियमिकी नहि। विश्वकेर अनेक भागमे राष्ट्र सबहक निरंतर बदलैत सीमा एखनहुँ देखिये रहल छी। तहिना 1971क भारत-पाक युद्धमे भारतीय सेना पाकिस्तान सेनाके तुर्तुकसँ खेहारि सयोकक पछबरिया पार पहुँचा आयल। तहियासँ पाकिस्तानी सेनाक अनेक उपद्रवक बावजूद तुर्तुक भारतक अंग अछि। स्पष्ट छैक, एहन परिस्थितिमे सामान्य नागरिकक मनमे शंका उठब उचिते छैक। एतुका बहुतो नागरिकक सर-सम्बन्धी एखनहुँ पाकिस्तानमे छनि, आ ओलोकनि पाकिस्तानी सरकारक दमन-उत्पीड़न सहैत छथि। तथापि, एतुका लोक पाकिस्तानी खुफिया संस्था आइ एस आइक प्रभावमे नहि आयल अछि, से एतुका लोकक विवेक आ भारत सरकारक व्यवस्थाक सफलताक प्रतीक थिक। तुर्तुकक लोकक दुविधाक विषय पर हमर कथा 'अब्बास अली बताह छथि' ('जखन तखन' पत्रिकाक प्रथम अंक) मे चर्चा भेल अछि। वयोवृद्ध साहित्यकार पंडित गोविन्द झा एहि कथाकें पढ़ि कहने रहथि, 'हम एहन अओर कोनो कथा नहि पढ़ने छी। नीक लागल।'

आइ हमरालोकनि दिनभरि रोगीक जाँच कयल। हमर पहिलुक रोगी, बालक रहमत अली, हमरा देखि खूब प्रसन्न भेल। मोतियाविंदुक ऑपरेशनक बाद ओकर आँखि आब नीक जकाँ सुझैत छैक। ओ आब ओहिना स्कूल जाइछ जेना आँखिमे 'सीबकथोर्न'क कांट गड़बासँ पहिने जाइत छल। ओकर पिता हमरा लेल एक शीशी खुबानीक तेल अनने छथि। ग्लौकोमा (कालामोतिया) अमीना बेगमक दुनू आँखिकें निपट्ट क' देने छनि। तथापि, हमर चिकित्सासँ आब हुनक आँखिमे पीड़ा

नहि छनि। तें, ओहो प्रसन्न छथि। डाक्टरी सलाह समाप्त भेलापर अमीना बेगम, लजाइत अपन खोंइछसँ प्लास्टिकक एक टा पैकेट निकालैत छथि। पैकेटमे एक आंजुर सुखायल खुबानी छैक। हम ककरोसँ हठे उपहार स्वीकार नहि करैत छियैक। किन्तु, एहन शुष्क प्रदेश आ आवेशक एहन आर्द्रता! हम एहि उपहारकें कोना अस्वीकार करिऐक! शहरी छल-छद्मसँ अपरिचित एहि सुदूर सीमान्त प्रान्तक परिचिताक मन कोना दुखा सकैत छियनि। एहि दुनू रोगी अलावा आन कतेक नव-पुरान रोगी हमरा लग, आ हमर आन सहकर्मी लग आयल छथि। ओना तँ बुझू एखन भरि गाओं उनटि कय कैंपमे आयल अछि। ई एहन दूरस्थ गाओं लेल स्वाभाविके। अस्तु, जतय जे सुविधा छैक, लोक लाभ उठौलक।

आब दिनान्त भ' रहल छैक। स्टाफ सब वस्तु-जात बान्हि गाड़ीमे रखलनि। हमरालोकनि वापस जा रहल छी। गामक बाहर दाहिना दिस वीर शहीद लान्स नायक खड़ग सिंह आ शहीद कप्तान हनिफुद्दीनक स्मारकक ओहिना तैनात अछि जेना सैनिक अपन चौकी पर मुस्तैद रहैछ। बाटक कातमे गाछक डारि आ फूल सबहक गुच्छासब सँझुका वायुमे डोलि रहल अछि। मने कहैत हो :

मुझे तोड़ लेना वनमाली! उस पथपर देना तुम फेंक,
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक

सरिपहुँ इएह तँ थिकैक ओ पथ-

जिस पथ जावें वीर अनेक !

लेहसँ कारगिल : बटालिक बाटे

बाज्गो, सासपोल आ आल्ची

1999 क भारत-पाक युद्धक पछाति भारतमे एहन कमे पढ़ल-लिखल लोक हेताह जे बटालिकक नाम नहि सुनने होथि। एहि युद्धमे बटालिकक इलाकामे सैनिकलोकनि सैन्य इतिहासक कतेको कीर्तिमान स्थापित केलनि। किन्तु, बाज्गो, आल्ची, दा,हानु गामक नाम नव थिक। आइ हम लेहसँ कारगिलक यात्रापर छी। लेहसँ पश्चिम, खालसेसँ आगू कारगिल जेबाक बाट दू दिस फूटि जाइछ। एकटा लामयुरु आ फोतुला होइत, आ दोसर बटालिक बाटें। पहिल लग रास्ता छैक। ओहि रास्तामे अनेक ऐतिहासिक आ भौगोलिक स्थल दर्शनीय छैक। तें, लामयुरु, फोतुला, आ मुलबेख होइत कारगिलक रास्ता पर्यटक लोकनिक आम बाट थिक। कखनो काल हिमपातक कारण फोतुला पास बंद भ' जाइछ तखन खालसेसँ अचिनाथांग, दा, हानु आ बटालिक होइत हम्बोटिंग-ला पास पार कय कारगिल बाटें सैनिक यातायात जारी रहैछ। सीमा क्षेत्रक समीप भेलाक कारणे, बटालिकक बाटपर निरन्तर सैनिक यातायात आवश्यको। हमरालोकनि आइ बटालिके बाटें कारगिल जायब। एहि यात्रामे सिन्धु हमर संगबहिना छथि। तें, गप्प सिन्धुएसँ आरम्भ करी। सिन्धुक उद्गम मानसरोवर झील लग तिब्बतमे छैक। भारतमे सिन्धुक लम्बाइ करीब 800 किलोमीटर हेतैक। सिन्धु, देमचोक नामक स्थानमे भारतमे प्रवेश करैत अछि आ बटालिकसँ आगू भारतक सीमासँ निकलि पाकिस्तानमे चल जाइछ।

एहि यात्रासँ पूर्व हमरालोकनि सिन्धुक कछेरे-कछेर लेहसँ, निम्मू लग, सिन्धु आ जानस्कार नदीक संगम धरि गेल रही। आइ ओहिसँ आगू पश्चिम मुँहे जायब। रास्तामे बाज्गोक राजप्रासादक भग्नावशेष, सास्पोल गाँव, आल्चीक बौद्ध विहार, अचिनाथांग, आर्यन मूलक नागरिकक बस्ती-दा आओर हानु एवं बटालिक आओत। तकर पछाति हम्बोटिंग-लाक दर्रा होइत हमरालोकनि कारगिल धरि जायब। निम्मू

गाओं लग एकटा पैघ सैनिक मुख्यालय छैक। एतय जमीन कनेक चौड़ा होइत छैक, किन्तु, बेसी नहि। समतल भूमिक दहिना कातक पहाड़सँ झहरैत बालुक देवाल आ बामा कात सिन्धु। सिन्धुक सटले दक्षिण जान्सकार पर्वत शृंखला। इएह पर्वत शृंखला लद्दाख़ आ जान्सकारक बीचक देवाल थिक। एही शृंखलाक कारण जान्सकार जयबा लेल लोक लगभग 200 कि. मी. पश्चिम कारगिल जाइछ। ओत्तहि सुरु नदीक काते-कात जान्सकार जयबाक बाट भेटत। जँ, रोमांच नीक लगइए, पौरुष अछि, टाका खरचै लेल तैयार छी, तँ, जाड़क मासमे जमल, पाथर भेल जान्सकार नदीक धार पकड़ि, एतहिसँ जान्सकारक चदर-वाक पर चलू। एकर विशेष वर्णन हमर जान्सकार वृत्तांतमे पछाति भेटत।

बाज्गो

निम्मोसँ कनेक पश्चिम सड़कक दाहिना भाग पहाड़ीक उपर बाज्गोक राजप्रसादक भग्नावशेष दूरहिंसँ देखबामे आओत। एक समयमे ई प्रासाद लेहक राजपरिवारक एक शाखाक आवास छलनि। पछाति जम्मूक राजा गुलाब सिंहक वजीर आ सेनानायक जोरावर सिंह सेहो अपन लद्दाख़ अभियानक अवधिमे बाज्गो महलमे डेरा देने छलाह। ई भग्नावशेष आब संरक्षित स्मारक थिक। एहि महलकेर भीतर एखनहुँ बौद्ध मूर्ति, पूजा स्थल आ पेंटिंग सब छैक। बाहर लगाओल बोर्डक अनुसार ई स्मारक कतेक अर्थमे अद्वितीय अछि। किन्तु, एहि सबहक वर्णन एतय आवश्यक नहि। तकर कारणो छैक। लेह-लद्दाख़ अबैत टूरिस्टलग समयक कमीक कारण बाज्गो आम टूरिस्टक भ्रमणक लिस्टमे नहि अबैछ। हँ, निम्मू-बाज्गोसँ आओर पश्चिम आल्ची गाओं आ बौद्ध विहार अबस्से एहि इलाकाक प्रमुख पर्यटन स्थल थिक। तथापि एतयसँ आगू बढ़बासँ पूर्व एकटा गप्प कहय चाहबः बौद्ध मूर्ति आ चित्रकलाक अतिरिक्त बाज्गोक मन्दिर परिसरमे एतुका राजा सिंगे नामग्यालक माताक हेतु, जे जन्मसँ बाल्टी-मूलक मुस्लिम छलीह, एकटा बाल्टीस्तानी परिपाटीक मुस्लिम धर्मक पूजा-स्थल सेहो रहैक। एक अर्थमे ई पूजास्थल बौद्ध धर्मक संग इस्लामक सहअस्तित्व द्योतक छल। पछाति प्रायः ओ रानी बौद्ध धर्म वरण कय लेलनि आ इस्लामी पूजास्थल सेहो बौद्ध मन्दिरमे परिवर्तित भ' गेल। आब आगू चली।

बाज्गोसँ पश्चिम सासपोल नामक गाओं अबैत छैक। गरमीक मासमे सासपोलकें पारम्परिक सन्दर्भमे सुखी-सम्पन्न गाओं कहि सकैत छियैक। ओना तँ, एहि इलाकामे परम्परासँ प्रत्येक घर, प्रत्येक गाओं आत्मनिर्भर रहैत आयल अछि। माने,

जे किछु चाही-भोजन, वस्त्र, आवास, जारनि-काठी, दबाइ-बिरो आ सुरक्षा-सबहक भार जँ पूर्णतया व्यक्तिगत नहि, तँ, सामुदायिक तँ कहिए सकैत छियैक। लद्दाख़सँ बाहरक वस्तुक आम आदमीकें कोन काज। किन्तु, आधुनिक अर्थमे अर्थव्यवस्था जेना-जेना विकसित होइत जाइछ, अनका पर निर्भरता, वस्तु किनबा लेल टाका, आ टाका लेल बेसीसँ बेसी कमयबाक बाध्यता आ लोभ बढ़ल जाइछ। अपनो सबहक ओहिठाम एहिना भेलैए। आब लद्दाख़हुमे 'प्रगति'क बिहाड़िक संग बदलाव देखबामे आओत। आब एत्तहु जौ-गहुमक खेतमे फसिलक बदला होटल पनपि रहल अछि। लोक सातु बदला भात खाइछ। मिथिलांचले जकाँ एतहु फसिलक दौनी थ्रेसरसँ होइत अछि। पारंपरिक पहिनावामे बाहरसँ किनल कपड़ा-लत्ताक प्रयोग होइछ। किन्तु, एहिमे बेजाय की! जहिया, कश्मीर आ हिमाचलसँ लद्दाख़क जोड़ै बला ऑल-वेदर सुरंगक निर्माण पूर्ण भ' गेल, आ बारहो मास श्रीनगर-दिल्लीसँ माल-असबाबक आबाजाही शुरू भ' गेल, सुविधाक दृष्टिएँ लेह-लद्दाख़ आ भारतक मुख्य भूमिमे मात्र जलवायुएकटाक अन्तर रहि जेतैक। ई नीक हयत, वा बेजाय, से कहब कठिन। एतबा अवश्य जे जलवायुक परिवर्तन एहि विरल वातावरणकें कोना प्रभावित करतैक तकर एकटा चेतावनी 2010क एतुका बरखा आ बाढ़ि, जाहिमे विनाशक अभूतपूर्व विपदाक ताण्डव घर-अंगना-खेत-खरिहानकें ध्वस्त क' गेल, चैनसँ सूतल लद्दाख़कें एकाएक जगा गेल! जे किछु। आब आगू चली।

सासपोलसँ पश्चिम जेना-जेना सड़क आगू बढैछ, उत्तर आ दक्षिण, दुनू कातक पहाड़ी एक दोसराक लग आबय लगैछ, सिन्धुकेर पाट गहींर आ संकीर्ण, तथा धार द्रुत होबय लगैछ। आल्चीक दूरी लेहसँ करीब 65 कि. मी. छैक। आल्ची गाओं जेबा लेल सिन्धु नदीपर पुलकें पार करैत सिन्धु नदीक दक्षिणी कछेरपर आबय पड़त।

आल्ची बौद्ध विहार

लद्दाख़क बौद्ध विहार सबमे आल्ची विशिष्ट अछि। मानल जाइछ आल्ची बौद्ध विहारक स्थापना 10-11 हम शताब्दीक बीच बौद्ध गुरु रिन्जिंग जांग्पोक द्वारा भेल छल। ज्ञातव्य थिक, भाषाक बाधाक कारण भारतसँ तिब्बत गेल बौद्ध साहित्यकें बुझबाक एकमात्र माध्यम अनुवाद छलैक। एहि हेतु तिब्बतक राजनेतालोकनि तिब्बतसँ अनेक अनुवादककें समय समयपर भारत पठबैत रहथि। फलतः, जिज्ञासु आ भिक्षु लोकनि लद्दाख़सँ ल' कय नालंदा धरि आबि अनेक ग्रन्थक अनुवाद कयलनि आ अनुवाद सबकें पुनः तिब्बत ल' गेलाह। लोत्सावाक (महान अनुवादक)

नामसँ प्रसिद्ध, गुरु रिन्जिंग जांग्पो, तिब्बती बौद्ध धर्मक एही अनुवाद परम्पराक एक प्रमुख स्तम्भ आ विभूति छलाह। मानल जाइछ, अपन भारत प्रवासक अवधिमे गुरु रिन्जिंग जांग्पो आल्चीक आलावा शताधिक बौद्ध मठक स्थापना कयने छलाह जाहिमे सँ अनेक आब नष्ट भ' चुकल अछि।

आल्ची बौद्ध विहारमे देखबाक वस्तु सबमे दर्शनीय स्थल सब थिक, प्रार्थना भवन (दुखांग), तिनमहला मन्दिर (त्सुमसेंग), मंजुश्री मन्दिर आ छोट आकारक 'छोरतेन' (बौद्ध स्तूप) सब।

बौद्ध देवी-देवता आ बुद्धकेर जीवनकें देखबैत एहि परिसरक भवन सबमे प्राकृतिक रंगक चित्रकला एतुका विशिष्टता थिक। मानल जाइछ, एतुका चित्रकला तिब्बती आ स्थानीय कलाकारक संग कश्मीर आ हिमाचलक कलाकार लोकनिक सहयोगक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। परिसरक बाहर एकटा पोप्लारक गाछकें एतुका लोक सब 'लारछांग' वा लोत्सावाक छड़ी कहैत छथि! किन्तु, एहि तरहक जनश्रुति आन कतेक ठाम आओर अनेक महापुरुषसँ जोड़ैत भेटत। सत्य के कहत! ई गाछ, तँ कोनो तरहें हजार वर्ष पुरान नहिए अछि।

एतुका गोम्पाक भवन आ चित्रकला इंद्रधनुषी रंगकें एतेक दिन धरि सम्हारि रखबाक श्रेय एतुका जलवायु आ जनसमूह दुनूकें छैक। तथापि, बहुतो ठाम भवन दुर्बल भ' गेल छैक आ पानिक टघारसँ चित्रकलाक रंग दूरि भ' गेल छैक। किन्तु, स्थानीय लोक आ भक्तलोकनि एकर जीर्णोद्धारमे लागल छथि आ मानव सभ्यताक इतिहासक प्रतीक आल्ची-सन पुरान विहारकें भावी पीढ़ी लेल सहेजि कय रखने छथि। आल्ची बौद्ध विहारक देखभालक भार सिन्धुक उत्तरक लगेक गाम, लिकिरकेर बौद्ध विहारक जिम्मा अछि। ज्ञातव्य थिक, पर्यटन एहि इलाकाक कामधेनु थिक। अतः, एतुका सब विरासतकें बचाकय राखब समाजक हित थिकैक। एतय से सब बूझैत छथि। अन्यथा, एहि बंजर भूमि आ निर्मम जलवायुमे पर्यटक की करय अबैत। लद्दाख़क बाहर, भारतक आन इलाकाक नागरिक आ राजनेता जँ ई बूझि सकितथि, तँ, भारतमे प्रायः ई प्रश्न नहि उठैत जे ताजमहल-लालकिला आ सोमनाथ मन्दिरक निर्माता के छलाह!

बटालिक आ ब्रोग्पा समुदाय

सत्यतः, 1999 मे जँ भारत-पाकिस्तानक बीच युद्ध नहि होइत, तँ, लद्दाख़क बाहर, सैनिक लोकनिकें छोड़ि अन्तय लोक बटालिकक नामो नहि सुनैत। लद्दाख़क एहि भागमे पर्यटककें आकृष्ट करबा योग्य टूरिस्ट-स्पॉट वा आधारभूत संरचना छैको

नहि। आम पर्यटक लेहसँ आबि खालसीमे सिन्धुकें पार कय लामयुरु-मुलबेख होइत कारगिल जाइत छथि। कारगिल जेबाबला नागरिक चाहे तँ मजबूरीमे सोझ बाट(बटालिकक बाट) पकड़इत छथि अथवा बटालिकमे ब्रोग्पा समुदायक गाम सब देखबाक इच्छुक पर्यटक एम्हर सोझ पश्चिम अबैत छथि। एम्हर कतहु सोझ, कतहु सर्पाकार सड़क सिन्धुक कछेर पकड़ने चलैछ। एहि बाट पर आगू दुमखर, स्कुर्बुचन, अचिनाथांग, आ हनुथांग गाओं भेटत। हमरालोकनि अचिनाथांगमे रात्रि-विश्राम करब। अपेक्षाकृत संकीर्ण पाट आ नीचा दिसुक बहावक कारण एम्हर आबि कय सिन्धुक गति खूब तेज आ गरजैत-सन भ' जाइछ। बहुतो ठाम सड़क क्षतिग्रत-सन छैक आ कतेको ठाम सीमा सुरक्षा संगठनक कर्मी सब सड़कक मरम्मतिमे लागल छथि।

दा, हानु गाम आ ब्रोग्पा समुदाय

लद्दाख़क समुदायक अनेक मूलक नागरिक लोकनिक संगम थिक। पूबमे तिब्बती, उत्तरमे मध्य एशियाइ मूलक, पश्चिमसँ बाल्टीस्तानी, दक्षिणमे कश्मीरी मूलक, पर्यटक आ व्यापारी लोकनिक अवर्यातक कारण विभिन्न सभ्यताक संगम आ सम्मिश्रणक प्रभाव लद्दाख़क समुदायक काया कलेवरमे सबठाम देखबामे आओत। किन्तु, लद्दाख़क एक इलाका आ समुदायक लोक जँ करीब विगत 2500 वर्षसँ अपन मौलिक स्वरूप आ रक्तकें सर्वथा शुद्ध रखने अछि, तँ, ओ थिक दा, हानु, गारखोन, आ दारचिक गामक ब्रोग्पा-बौद्ध समुदाय। आर्य मूलक ब्रोग्पा समुदायक पूर्वजलोकनि सिकंदर महानक संग भारत आयल छलाह। एखनुक ब्रोग्पा लोकनि हुनके संतति थिकाह, जे, अपन मूल स्वरूपकें एखन धरि ओहिना जोगा कय रखने छथि। ब्रोग्पा समुदायक नारि-पुरुष लोकनि गौर वर्ण, ठाढ़ नाक, नील आँखि, आ माथपर गाढ़ नारंगी रंगक सुखायल फूलसँ सजल पागक कारण कतहु होथि, स्वतः चिन्हबामे आबि जेताह। हिनका लोकनिक बौद्ध परम्परा आम लद्दाख़ी आ तिब्बती बौद्ध परम्परासँ भिन्न अछि। ई लोकनि आस्थासँ बौद्ध, किन्तु, व्यवहारसँ प्रकृतिक संरक्षक थिकाह। ई लोकनि गाछ-वृक्षकें काटब पाप बूझैत छथि। भोजनमे माँस-माछ तँ दूर ई लोकनि दूध-दही धरिक सेवन नहि करैत छथि। ब्रोग्पा लोकनिक समाजमे मदिरापान आ आन समुदायसँ विवाह-दान पूर्णतः वर्जित अछि। अस्तु, अपने समुदायक बीच विवाह-दानक बाध्यतासँ ब्रोग्पा समुदायमे, बहुविवाह (polygamy) आ एके नारिक एके परिवारक, एकसँ अधिक पुरुषसँ विवाह (polyandry) क परम्परा प्रथा प्रचलित छैक। ज्ञातव्य थिक, एके नारिक एके परिवारक एकसँ

अधिक पुरुषसँ विवाह (polyandry) क परम्परा प्रथा बौद्ध लोकनिक बीच लद्दाख़सँ ल' कय पूर्वोत्तर भारतक अरुणाचल धरि प्रचलित अछि। ततबे नहि, लद्दाख़क ब्रोग्पा समुदायमे जाहि नारिकें वैवाहिक दायरामे सन्तान नहि होइत छनि हुनका आन पुरुषक संग समागमसँ सन्तान हयबकें उचित बूझल जाइछ। किन्तु, ई लोकनि ई स्वतंत्रता अपने समाज धरि सीमित रखने छथि।

एहि ठाम दा गाममे 500 सौ वर्ष पुरान दू गोट जुनिपरक गाछ एतुका वार्षिक उत्सवक केंद्र विन्दु थिक। उत्सवक अवसरपर एहि वृक्ष सबकें पंजियाकय एहि समुदायक सदस्य लोकनि एहि वृक्ष सबसँ सांकेतिक रूपें उर्जा प्राप्त करैत छथि। उत्सवक अतिरिक्त आनो दिन ग्रामीण लोकनि एहि गाछ लग बैसैत छथि आ एक दोसरासँ अपन जीवनक अनुभवक आदान-प्रदान करैत छथि। हमरालोकनि अपन यात्रामे ब्रोग्पा गाम देखैत आगू बढ़लहुँ।

दा, हानुसँ किछु दूर आगू, सिन्धुक कछेरमे तैनात भारतीय सेनाक तोपखाना (artillery gun), सैनिक लोकनिक गहमा-गहमी, आ सैनिक यूनिट सबहक फार्मेशन नंबरसँ बुझबामे आबय लागल जे हमरालोकनि बटालिकक सैनिक मोर्चापर पहुँचि गेल छी। बटालिक पहुँचि स्थानीय इन्फेंट्री बटालियनक कमान अधिकारी कर्नल दयालसँ भेंट कयल। अपना ऑफिसमे कर्नल दयाल अपना एरियाक मोर्चा सबहक संक्षिप्त जानकारी देलनि। एहन क्रूर जलवायु आ एहन मारुख स्थान-भयानक नदी, ऊँच पहाड़ आ दुर्दांत शत्रु। किन्तु, एहि सबहक दमन मात्र सेनाक मनोबल आ शौर्य करैछ। तें, एहि दुर्गम सीमा क्षेत्रमे जँ ककरो भयभीत हेबाक चाही, तँ, केवल भारतीय सेनाक शत्रुकें। कमांडिंग ऑफिसरक ब्रीफिंगक संग-संग सैनिक परम्पराक अनुकूल आवभगत आ सौजन्य भेलैक। सेना कतहु रहय, बंकरमे वा बम्बईमे कार्य पद्धति एके रहैत छैक। पछाति बुझबामे आयल कर्नल दयाल पटनाक थिकाह। किन्तु, सेनामे ई गौण थिक। कमांडिंग ऑफिसरक ब्रीफिंगक पछाति यूनिट MI Room (डाक्टरी जाँच कमरा) मे हम रोगी लोकनिक आँखिक जाँच कयल। बटालिक-सन संकीर्ण स्थानमे बटालियनक सब अवयव आ सब साज-सामानकें पर्याप्त स्थान भेटब सुलभ नहि। ताहि परसँ माल-असबाब आ सैनिक लोकनिक आवासकें शत्रुक नजरि आ तोपखानाक लक्ष्यसँ बचाकय राखब अनिवार्य। तें, काज आओर कठिन। रोगी लोकनिक जाँच-पड़तालक पछाति भोजन आ थोड़ेक काल विश्राम भेलैक। तकर पछाति चरैवेति। आब साँझसँ पूर्व कारगिल पहुँचबाक अछि। बटालिकसँ कारगिलक बाटमे एकटा ऊँच पहाड़ी पास (दर्रा) हम्बोटिंग-ला अबैत छैक। एहि सैनिक जीवनमे नहि जानि कतेक पास पार

कयल-खरदुंग-ला, चांगला-फोतुला-नामिकला-आ आइ हम्बोटिंग-ला। कतेक बेर हवाई जहाजहुसँ कुदलहुँ। ने कतहु दम फूलल, ने कतहु आयासक अनुभव भेल। सब किछु माता-पिताक देल हाड़-मांस-देह, आ मनक देन थिक। सबल मन अनेरो शरीरमे स्फूर्ति आनि दैत छैक आ दुर्बल मन सबल शरीरहुमे दुर्बलताक बोध आनि दैत छैक। तदर्थ हम्बोटिंग-ला पर एक क्षण विरमि माता-पिताक प्रति मूक तर्पण। ने कुश, ने जल, ने तिल। केवल अनावृत्त आकाश, निर्मल वायु, प्रखर रौद आ माता-पिताक स्मरण। त्रिप्यन्तु, तृप्ताः यान्तु! आ पुनः अन्तहीन यात्रा : चरैवेति! सैनिक जे थिकहुँ!!

लेह-फोतुला-कारगिल

दर्शनीय स्थान की थिक? एहन स्थान जे मनोरम, आश्चर्यजनक, ऐतिहासिक, धार्मिक वा अहाँक रुचिक अनुकूल हो। जँ, एहन स्थान सबमे रुचि अछि, तँ लेह-कारगिल-श्रीनगर मार्गपर तकर कमी नहि, जकर वर्णन यथासमय आगू भेटत। मोन हयत हमरालोकनि लेहसँ खालसी-बटालिक होइत कारगिल गेल रही। ज्ञातव्य थिक ओ बाट लेहसँ कारगिल जयबाक सोझ बाट नहि थिक, ओहि बाटें कारगिल जयबाक बाध्यता तखने हयत जखन सोझ बाटक फोतु-ला पास बर्फवारीक कारण बन्न हेतैक, से सुननहि छी।

चलू, आइ सोझ बाटें लेह-खालसेसँ कारगिल-द्रास चली। एहि बाटपर अनेको दर्शनीय स्थल अछि जकर वर्णन यथासमय हयत। सम्प्रति सिन्धुकें पार करैत सिन्धुक दछिनबरिया पार चली। खालसेमे सिन्धुपर मोटोरैबुल पुल छैक। यद्यपि एतयसँ बटालिकक बाटमे जतय पुल नहि छैक नागरिक लोकनि पुरान ढर्राक लोहाक एकटा रस्सीपर आधारित, सुदुक एक मनुक्खक बैसबा योग्य कुर्सी-सन झूला(एतय एकरा फायर फॉक्स कहैत छैक) पर बैसि, झूलाकें स्वयं झिकैत चाकर, गहींर आ उधियाइत सिन्धुकें जखन-तखन पार करैत रहथि। किन्तु, सामरिक महत्वक एहि इलाकामे आब नित्तह जहाँ-तहाँ सड़क आ पुलकेर जाल बिछाओल जा रहल अछि। चीन-पाकिस्तानक बढ़इत सामरिक सहयोग आ देशक दूर दराज आ अद्यावधि विस्मृत एहि इलाकाक कठिन जीवनमे तकर आवश्यकताओ छैक।

खालसेमे सिन्धु पार करिते सड़क ऊपर दिस चढ़य लगैछ। जाहि देशमे साधन आ टेक्नोलॉजी छैक ओतय पहाड़मे सुरंग केर द्वारा बहुतो ठाम सड़क पहाड़ी चढ़ाइक अवरोधकें सहजहि पार कय लैछ। इएह कारण थिक जे स्विट्जरलैंड-सन पहाड़ी देशमे लगभग प्रत्येक गाओं आ शहर तँ छोड़ू, समतल भूमिसँ सुंग-फ्राउ-सन हिमाच्छादित पर्वत शिखर धरि ट्रेन सोझे चढ़इत अछि। किन्तु, पहिलुका युगमे एहि दुर्गम पहाड़ी इलाकामे सड़क आ पुल बनायब सुलभ नहि रहैक। साधन आ प्रौद्योगिकीक अभावमे सड़ककें नीचासँ ऊपर चढ़बामे सड़ककें कतेक बेर दहिना

आ बामाक मोड़ लेबय पड़ैत रहैक। अनेक मोड़क, सड़कक इएह लहरिया खण्ड, जलेबीमोड़क नामसँ प्रसिद्ध अछि। खालसे-लामयुरु सड़क खण्डपर जलेबीमोड़ पर्यटक लोकनिक हेतु एकटा आकर्षण थिक। थोड़बे दूरमे अनेक मोड़ बला सड़कक खण्ड दार्जिलिंग इलाकामे बतसिया-लूपक नामसँ प्रसिद्ध अछि। मोन हयत, सत्तरिक दशकमे लोकप्रिय अभिनेता राजेश खन्नाकें ओहि इलाकामे खुला जीप ड्राइव करैत, 'मेरे सपनों की रानी कब आओगी तुम' गबैत अभिनेत्री शर्मिला टैगोरक पछोड़ धेने देखने हएबनि। पहाड़क एके पक्खाक अनेक ऊँचाइपर कतेको सड़कक शृंखला जोशीमठ-बद्रीनाथ इलाकामे सेहो देखबैक। किन्तु, जलेबीमोड़क सड़क दू पहाड़कें जोड़ैत छैक, जे दोसर भागक ऊँचाइपर चढ़लापर नीक जकाँ देखबामे अबैछ। हमरा सुनल अछि, खालसे-लामायुरू सड़क खण्डकेर जलेबी मोड़क ई अलाइनमेंट सोनम नोर्बू नामक लद्दाख़ी इंजीनियरक डिजाइन कयल छनि। ओहि युगमे जहिया लद्दाख़-सन सुदूर इलाकामे उच्च शिक्षाक अत्यंत अभाव रहैक, सोनम नोर्बू शेफील्ड (यू.के.) मे ट्रेनिंग प्राप्त कयने रहथि। हमरा इहो सुनल अछि, 1947-48 ई. मे जम्मू-कश्मीरपर पाकिस्तानी आक्रमणक समयमे ई. सोनम नोर्बू स्वयं लद्दाख़ी युवक लोकनि एकटा पैघदलकें नेतृत्व करैत लेह आयल छलाह आ एहि दलक सहायतासँ ओ स्वयं लेह एयर फील्डकें पाकिस्तानी लश्करक आक्रमणसँ सुरक्षित बचा लेने छलाह। दुखक विषय थिक, सोनम नोर्बूक नाम पर विकिपीडिया बौक अछि। अस्तु, हम एहि विषयक ऐतिहासिक प्रमाणक खोजमे लागल छी। एखन लेहकेर सोनम नोर्बू मेमोरियल हॉस्पीटलक स्थापना एही सोनम नोर्बू योगदानक प्रति आभार थिक। हमरा जनैत, स्व. सोनम नोर्बू राष्ट्रीय स्तरक एहिसँ बहुत बेसी पहिचान आ प्रसिद्धिक भागी छथि। जलेबीमोड़ पार केलापर सड़कपरसँ एकाएक ऊँचाइक अनुभव होयत। सर्वविदित अछि, पहाड़पर जेना-जेना ऊँचाइ बढ़इत छैक, वायुमंडलक दबाव आ तापमान घटय लगैछ आ बसातक गति बढ़य लगैछ। फलतः, एतय वायुक स्पर्श भले शीतल, किन्तु, अत्यंत स्फूर्तिदायक लागत। तथापि उपयुक्त गर्म कपड़ा आ टोपी पहिरब जुनि बिसरी। प्रदूषण अभावमे एहि सब इलाकामे आकाशक गाढ़ नील वर्ण मनकें स्वतः मोहि लेत। एकर अतिरिक्त पहाड़ी इलाकाक एकांत नीरवता मननकेर हेतु अत्यंत उपयुक्त मानल गेलैए। तें, सदायसँ साधक लोकनि जंगल-पहाड़ आ अन्हार गुफामे मनन चिंतनक हेतु शरण लैत छलाह आ अपन साधनाक बलें कालजयी वाङ्मयक सृजन करैत छलाह।

मूनलैंड

खालसे-कारगिल सड़क पर एतय थोड़बे दूर आगाँक परिदृश्यमे नाटकीय परिवर्तन देखबामे आओत। मूनलैंड नामक एहि पहाड़ी फलकक स्वरूप एतुका बलुआह आ पथराह माटिसँ भिन्न, चिक्कन माटि जकाँ छैक। आसपासक भूमिसँ स्वरूपमे पूर्णतः भिन्न हयबाक कारणे प्रायः एकरा मूनलैंड कहल जाइछ। मूनलैंड देखलासँ तेना लागत, जेना, पहाड़परक कोनो विशाल झीलक आधा भाग अचानक भूमिसात भ' ढहइत माटि आ बहैत पानिक संग नीचाक नदीक पानिक संग बहैत विलीन भ' गेल होइक, आ पानिसँ खाली, झीलक बचल आधा भाग, कछेरसँ ल' कय तलहटी धरि सुखायल पोखरि, झील आ जलाशय-जकाँ निराश पड़ल हो। स्थानीय बौद्ध लोकनिक आस्था छनि, बौद्ध गुरु नारोपा अपन योगक बलें एहि झीलकें ध्वस्त कय एहि उपत्यकामे अपन अनुयायी लोकनिक हेतु आवासक भूमिक निर्माण केने छलाह। पछाति एहि स्थानपर लामयुरु गाओंक गोम्पाक स्थापना भेल।

लामयुरु बौद्ध विहार

लामयुरु बौद्ध विहार दूरीक हिसाबें लगभग लेह आ कारगिलक बीचोबीच पड़ैछ। जनश्रुतिक अनुसारें लामयुरु गोम्पा लद्दाख़मे, तिब्बतमे बौद्ध धर्मक अयबासँ पूर्व प्रचलित, धार्मिक परम्परा-'बॉन' सम्प्रदायक-सर्वप्रथम पूजा-स्थल (गोम्पा) थिक जे पछाति बौद्ध लोकनिक नियंत्रणमे आबि गेल। लद्दाख़क अनेक सबसँ पुरान गोम्पा सबमे सँ एक, लामयुरु गोम्पाक नियंत्रण तिब्बती बौद्ध लोकनिक द्र-गुं-पा सम्प्रदायक हाथमे अछि। एहि विहारक पाँच टा मे सँ सबसँ पुरान मन्दिर रिन्जीन जांग्पो (प्रसिद्ध अनुवादक लोत्सावा) क द्वारा स्थापित मानल जाइछ। ढहइत माटि आ बालुक पहाड़ीपर, गाओंक ऊपर बसल ई विहार, आकारमे लद्दाख़क विशालतम विहार सबमे सँ एक अछि, जाहिमे एखनहुँ करीब डेढ़ सौ बौद्ध भिक्षु रहैत छथि।

लामयुरु गाओंसँ पश्चिम सड़क पुनः ऊपर चढ़य लगैछ। ऊपर चढ़इत सड़क करीब पंद्रह कि.मी.क भीतर करीब साढ़े तेरह हजार फुट ऊँच फोतु-ला पासक ऊँचाइ धरि पहुँचि जाइछ। फोतु-ला पास (दर्रा) लेह कारगिल मार्गपर सबसँ ऊँच स्थान थिक, जे जाड़ मासमे कतेक बेर बर्फबारीसँ बन्न तँ भ' जाइछ, किन्तु, फोतु-लापर नियमित रूपें सालो भरि बर्फ नहि भेटत। फोतु-ला पास पर टेलीविजन रिले सेंटर आ आर्मी चेकपोस्ट आ सर्वत्र दृश्य पूजास्थल अवश्ये देखबैक। आब एतय फोतु-लासँ-पश्चिम सड़क नीचा मुँहें होइछ। किन्तु, एहि बाटक अगिला मुख्य पड़ाव मुलबेखसँ पूर्व एकटा आओर दर्रा नामिक-ला पार करय पड़त।

मुलबेख चम्बा

लामयुरुसँ करीब 67 कि.मी. पश्चिम आ कारगिलसँ 45 कि.मी. पहिने मुलबेख गाओं, मुलबेख गोम्पा आ मुलबेखक मैत्रेय बुद्ध (मुलबेख चम्बा) क कारण प्रसिद्ध अछि। एहि पुरान व्यापारिक मार्गक कातहि एकटा छोट पहाड़ीक सड़क दिसुक फलक पर तरासल 9 मीटर लम्बा मैत्रेय बुद्ध एहि पहाड़ीक ऊपरक गोम्पासँ बेसी दृश्य आ सुपरिचित छथि। फलतः, मैत्रेय बुद्धक ई विशाल मूर्ति यात्री आ पर्यटककें दूरहिसँ आकृष्ट करैछ। ई मूर्ति कहिया बनल छल से ठीक-ठीक कहब कठिन। किछु विशेषज्ञ जँ एहि मूर्तिकें मात्र छौ साढ़े छौ सौ साल पुरान मानैत छथि, तँ, किछु इतिहासकार एकरा कनिष्ककालीन मानैत छथि। एहि मूर्तिक कतबहिमे खारोस्ती भाषामे लिखल आदेशक एकटा एकटा शिला-लेख छैक, जाहिमे नागरिक लोकनिकें एकटा तत्कालीन पूजा विधि, जाहिमे जीवित छागरक हृदयकें सोझे नोचि देवताकें अर्पित कयल जाइत छलनि, कें निषेध कयल गेल छैक। रोचक थिक, एहि शिलालेखक कतबहिमे दोसर शिलालेखमे मनुक्खक मनक आदि कालक दुविधा व्यक्त कयल गेल छैक : 'जँ, देवताकें प्रिय उत्सर्ग नहि भेटतनि, तँ, देवता की कहताह!' जे किछु।

मूक देवताक अव्यक्त अभीष्टक नाम पर मनुक्ख आदि कालसँ धर्म-अधर्म करैत आयल अछि। वएह धर्म-अधर्म जखन सत्ताक सोपान भ' जाइछ, तँ, मनुक्ख अपन कृत्यक समर्थनमे अनेक मतक प्रतिपादन करैछ। ज्ञातव्य थिक, मैत्रेय बुद्ध, सुपरिचित शाक्यमुनि बुद्धक विपरीत आगामी एहन युगक सदेह अवतार हेताह जखन लोक धर्मकें पूर्णतः बिसरि चुकल हयत। ई प्रायः बौद्ध लोकनिक ओहि कोटिक मान्यता थिक, जेना, गीतामे कृष्ण कहैत छथि, जे, जखन धर्मकेर ग्लानि होइत छैक आ अधर्मकेर अभ्युत्थान होइछ हम अवतार लैत छी। किन्तु, ने बुद्ध कृष्ण-जकाँ अपनाकें ईश्वर मानैत छथि आ ने बुद्ध अपना द' किछु कहने छथि। ई सब मान्यता परवर्ती बौद्ध लोकनि थिकनि, से बुझबाक थिक।

मुलबेखसँ आगू सैनिक ट्रांजिट कैंप छैक। हमरालोकनि मिलिट्री ड्यूटी पर छी। अपन राशन-संबंधी कागज देलियैक, दुपहरियाक भोजन कयल आ आगू बढ़लहुँ। किछु दूर आगू चिकतान इलाका अबैत छैक। पहिने एतहु एकटा छोट-छीन राजधानी छलैक। किन्तु, हमरा चिकतान एकटा दोसर प्रसंगक कारण मन पड़ैत अछि। एकर सम्बन्ध हमर व्यावसायिक जीवनसँ अछि। हम मूलतः मिलिटरी आइ (आँखिक) सर्जन छी। मिलिटरीमे सम्पूर्ण लद्दाख़मे आँखिक जाँचक

सुविधा केवल लेह मिलिटरी अस्पतालमे छैक, आ से एखनि हमरे जिम्मा अछि।* अस्तु, सैनिक लोकनि आ हुनक परिवारजन हमरे लग अबैत छथि, आ हम सम्पूर्ण लद्दाख़मे घूमि-घूमि आँखिक रोगक चिकित्सा करैत छी। एखन भारत सरकारक सौजन्यसँ 'ऑपरेशन सद्भावना'क अन्तर्गत भारतीय सेना सम्पूर्ण लद्दाख़क नागरिक लोकनिक हेतु सेहो मुफ्त चिकित्साक व्यवस्था केने अछि। मिलिटरी अस्पतालमे सुविधा नीक होइत छैक, से सबकें बूझल छैक। अस्तु, लोक दूर-दूरसँ विभिन्न रोगक चिकित्सा लेल लेह मिलिटरी अस्पताल आ आन-आन निकटवर्ती छोट-छोट सैनिक मेडिकल प्रतिष्ठान धरि अबैत अछि। एही क्रममे मन पड़ैत अछि, एक बेर एकटा युवक, 80-85 वर्ष वृद्ध, दुनू आँखिसँ आन्हर, अपन पिताकें पीठ पर लदने हमरा लग आयल रहथि। कहलनि, 'हम चिकतानसँ आयल छी, बहूत दूर छैक।' बुढ़ा शरीरसँ स्वस्थ रहथि। हुनक स्मरण नीक छलनि। हुनका जखन बुझबामे अयलनि जे हमरा तिब्बत-लद्दाख़ विषयक वृत्तान्तमे रुचि अछि, तँ, ओ हमरा अपन पैदल तिब्बत यात्राक अनेक वृत्तान्त सुनौलनि। हमर मान्यता अछि, मनुक्ख केओ हो, ओकरा संग गप्पमे नहि जानि कखन कोन सूक्ति, कखन कोन ज्ञान, कखन कोन उक्ति अहाँकें चमत्कृत क' जाय। संगहि हमर अनुभव अछि, डाक्टरसँ गप्प कयलासँ रोगीकें अपन अनजान भय पर नियंत्रण करबामे सफलता भेटैत छैक, आ डाक्टरक चिकित्सा सम्बन्धी काज अनेक अर्थमे सुलभ भ' जाइछ। एखनुक युगमे वैज्ञानिक प्रगतिक कारण हाइ-टेक जाँच-पड़ताल डाक्टरकें रोगक सम्बन्धमे एतेक सूचना द' दैत छैक, जे, डाक्टर लेल रोगीसँ गप्प सप्प कय रोगक इतिवृत्ति बूझब आ अपना हाथें रोगीक शरीरक जाँच गौण भेल जा रहल अछि। एहिसँ डाक्टर आ रोगीक बीचक विश्वास आ रोगीक संतुष्टिमे निरंतर ह्रास भ' रहल छैक। ई नीक नहि थिक। ई कनेक विषयांतर भेल। किन्तु, डाक्टरी शिक्षाक एक युगक अपन अनुभवमे परिवर्तनशील चिकित्सा-व्यवसायक ई स्वरूप हमरा चिकित्सक आ समाजक बीचक अनेको मतभेदक कारण बुझना जाइछ।

अस्तु, भर्तीक दोसरे दिन हम एके बैसारमे चिकतान एहि बुढ़ाक दुनू आँखिक मोतियाविंदु निकालि दुनू आँखिमे (इंट्राऑकुलर) लेंस लगा देलिअनि। फलतः, जे बुढ़ा सुदूर चिकतानसँ बेटाक पीठपर लदल लेह आयल छलाह से दोसरे दिन अपने पयर पर चलैत हमरा कोठलीमे प्रवेश कयलनि। ओहि दिन हुनकर मुँहक मुस्कीसँ हमर कंसल्टेशन-रूम चमकि गेल छल। डाक्टर लेल संतुष्ट रोगीसँ बेसी पैघ ने

* अगस्त 2002 सँ मार्च 2005

कोनो सफलता छैक, आ ने हर्ष। व्यावसायिक दृष्टिएँ अर्थ सेहो ओहीसँ अबैत छैक। एहि ठाम एतबा कहब उचित होयत, जे, जँ आँखिक बाहरी पारदर्शी भाग, आँखिक पर्दा आ स्नायु दुरुस्त हो, तँ, मोतियाविंदुक कारण पूर्णतः आन्हर आँखिमे ऑपरेशनसँ पहिनहि-जकाँ पुनः सामान्य दृष्टि आनब सामान्य थिकैक। तथापि, एहि बुढ़ाक केसमे एक टा गप्प नवीन भेलनि। सामान्यतया एक बैसारमे दुनू आँखिक मोतियाविंदुक ऑपरेशन नहि कयल जाइछ। किन्तु, ओहिमे ने कोनो हर्ज नहि, जँ, अपन दक्षतापर विश्वास हो आ ऑपरेशन थिएटरक व्यवस्था दोषमुक्त हो। एके बैसारमे दुनू आँखिक ऑपरेशन करबाक दोसर अवसर हमरा लेल पुनः लेहेमे आयल, जखन एकटा अत्यंत गरीब, मध्य वयसाहु, मनसँ विक्षिप्त महिलाकें हुनकर पुत्र हमरा लग अनने रहनि। लेहक दोसर नेत्र चिकित्सक ओहि विक्षिप्त महिलाक आँखिक ऑपरेशन करब अस्वीकार क' देने रहथिन। कारण ऑपरेशनक अवधिमे मनसँ विक्षिप्त रोगीक व्यवहार आ मनोदशा केहन हेतैक, के कहत! तें, केवल आँखिकें सुन्न क' कय ऑपरेशन, रोगी आ डाक्टर दुनू लेल घातक भ' सकैछ। तें छोट नेना, भयभीत वयस्क आ मनसँ विक्षिप्त रोगीक हेतु मोतियाविंदुक ऑपरेशन बेहोस क' कय कयल जाइछ। बेहोसीक अपन अवगुणक अतिरिक्त एहिसँ चिकित्साक खर्च बढ़ि जाइछ। हमरालोकनिक लेह सैनिक अस्पतालमे सब किछु मुफ्त रहैक। अतः, अपन युवक सहयोगी निश्चेतक डाक्टरक सहायतासँ पूर्णतया बेहोस कय हम एके बैसारमे एहि महिलाक दुनू आँखिमे लेंस लगाओल। अनुमान अछि, जँ आन कोनो रोग नहि भेल होइनि, तँ, एक युगक पछातिओ ओ महिला एखनहुँ जीविते हेतीह। ज्ञातव्य थिक, विशेषतः बुढारीमे आन्हर आँखि अकाल मृत्यु एक महत्वपूर्ण कारण थिक। संगहि आँखिसँ अशक्त एकटा परिवारजनक सुश्रुषा लेल निरंतर एक गोटे आओर चाही। से कतय भेटत! तें, बढ़ैत वयसमे प्रतिवर्ष आँखिक जाँच आ चिकित्सा सब लेल आवश्यक।

गप्पे-गप्पमे चिकतान पाछू छुटल आ थोड़बे कालमे कारगिल पहुँचब। कारगिलक गप्प अगिला बेर।

कारगिल आ द्रास

कारगिल

ओना तँ कारगिल सुदूर लद्दाख़क मात्र एकटा जिला थिक, किन्तु, कारगिल युद्धक पछाति भारतमे कारगिलक नाम के नहि सुनने हयत। कारगिल, श्रीनगर-लेह मार्ग पर लगभग बीचोबीच अबैछ। एतय शहर, सैनिक प्रतिष्ठान आ जनसंख्या शहरक लम्बाइक बीचोबीच बहैत सुरु नदीक दुनू कात बसल अछि। भारत-पकिस्तान नियंत्रण रेखाक समीप, कारगिल, श्रीनगर-लेह-बटालिक-आ जान्सकार जेबाबला सड़कक चौबटिया थिक। अस्तु, कारगिलक सामरिक महत्वकें सहजहि बूझल जा सकैछ। सर्वविदित अछि, एहि सामरिक महत्वकें बूझितो, 1999 मे, भारत जखन घोर निन्नमे सूतल छल, पाकिस्तान हमरालोकनिक राष्ट्रिय सुरक्षामे सेंध मारि रहल छल। कारगिल युद्ध हेबनिक घटना थिक। तें, एतय कारगिल युद्धक पृष्ठभूमि, रणनीति आ भारतीय सुरक्षापर एकर परिणामक विशद विवेचना आवश्यक नहि। तथापि, एतबा तँ अवश्य जे हमरालोकनिक चौकसीमे चूक भेल छल। संयोग जे, शत्रुक सामर्थ्य सेहो थोड़े छलैक।

सर्वविदित अछि, पकिस्तान जतेक बेर भारत पर आक्रमण केलक अछि, ओकरा पराजयक संग प्रतिष्ठाक हानि सेहो भेलैए। अस्तु, आब जँ पुनः पाकिस्तान भारतपर आक्रमण केलक, तँ, ओकर परिणाम पकिस्तान लेल की हेतैक से कहब कठिन। तथापि, पीठपर परमाणु बमक अहंकारसँ पाकिस्तान, भारतक विरुद्ध उपद्रव करैत रहत से पूर्णतया संभव। कहैत छैक, रोगकें आ शत्रुकें कखनहुँ थोड़ नहि बूझी। स्वतंत्र भारतक इतिहासक अनुभव कहैत अछि, हमरालोकनि पाकिस्तानकें अविश्वसनीय पड़ोसी आ घातक शत्रु बूझी सएह उचित। पाकिस्तान हमरालोकनिकें समर्थ पड़ोसी आ सशक्त शत्रु बूझय ताहिमे कोनो हर्ज नहि। कारण, भारतक बल पकिस्तानक दमन क' सकैछ, आ हमरालोकनिक प्रति पाकिस्तानक शत्रुता ओकरा पंगु बना सकैछ।

हम जहिया कारगिल गेल रही, कारगिल युद्धकें बेसी दिन नहि भेल रहैक।

स्थानीय फील्ड एम्बुलेंसक ऑपरेशन थिएटरक टिनक छत पर पाकिस्तानी गोलाबारीक निशान तखनो ओहिना रहैक। सुरु नदीक दोसर पार भारतीय सेनाक गोला-बारूदक भण्डार आ पेट्रोल-डीजलक भंडार पाकिस्तानी गोलाबारीमे कोना जरिकय भस्म भ' गेल रहैक, से लोककें बिसरल नहि रहैक। कहल जाइछ, एहि अग्निकांडक फलस्वरूप अनेक दिन धरि फटैत बम-गोला कारगिल शहर पर वज्र-जकाँ बरसैत रहल छल। एतय फील्ड एम्बुलेंस (भारतीय सेनाक सामरिक मेडिकल प्रतिष्ठान) आ इन्फेंट्री बटालियनसँ सोझे नीचा सुरु नदीपर बनल इकबाल पुलपर होइत, सड़क सोझे कारगिल शहर दिस जाइछ। अस्तु, हम साँझुक पहर टहलान लेल शहर दिस विदा भेलहुँ। कश्मीरमे सैनिक अफसर लेल ई एखन सम्भव नहि। कश्मीरक विपरीत लद्दाख़क इलाका पाकिस्तान समर्थित आतंकवादसँ मुक्त अछि। कारगिल मुस्लिम बहुल इलाका थिक। किन्तु, एतुका मुस्लिम लोकनि सिया थिकाह आ ई लोकनि सिया सम्प्रदायक ईरानी गुरु लोकनिक अनुयायी छथि। पाकिस्तान, सऊदी अरबिया सुन्नी समर्थित अंतर्राष्ट्रीय इस्लामी संगठनक अंग थिक। एहि ठाम कारगिलमे सामान्यतः पाकिस्तानी सुन्नी लोकनिकें खाद-पानि भेटब मुश्किल। यद्यपि, कारगिल युद्धक इतिहास एहि पारम्परिक सोचक प्रतिकूल प्रमाण थिक!

हम कारगिल शहर पहुँचल रही तँ साँझ हेबा पर रहैक। ओहि दिन संयोगसँ इरानसँ कोनो धर्मगुरुक अबैया रहनि। बाजारमे जहाँ-तहाँ लोक सब स्वागतमे एकत्रित छल। खुटपुटिया दोकानदार सब बाटक कातहि बोरा बिछाकय वा भूमिए पर दोकान लगौने छल। एक गोटे बासनमे सँ निकालि-निकालि, सीसाक छोट-छोट चाहक गिलासमे दही-चीनी बेचैत छल। दोसर गोटेक आगू एकटा तौला-सन धातुक पात्र रहैक। कौतूहल भेल। पुछलियैक, 'की थिकह?'

-रिस्ता है, जनाब!

जँ, अहाँ मांसाहारी छी आ कश्मीरी पुलाव, रिस्ता-गुस्तावा-यखनी नहि खेलहुँ-ए, तँ, विलम्ब जुनि करी। आब तँ सब ठाम सब व्यंजन भेटैत छैक। रिस्ता-गुस्तावा मासुक कीमाक लड्डूक आकारक व्यंजन थिक जकरा स्वादिष्ट सुगन्धित झोरमे बरकाओल जाइछ आ पुलाव-पराठाक संग परसल जाइछ। भ' गेल ने लोभ। भ' आउ कश्मीर। जुलाइमे जायब तँ कश्मीरक उपत्यकाक भ्रमण, अमरनाथक शिवलिंगक दर्शन आ गुस्तावाक भोजन सब किछु क' लेब।

द्रास

प्रसिद्धि लेल दुइए टा चाही-नीक वा बेजाय। द्रास उपत्यका एहिठामक भीषण

सर्दीक कारण प्रसिद्ध अछि। श्रीनगर-लेह राजमार्ग पर अवस्थित ई छोट-सन उपत्यका एशियाक सबसँ सर्द आ विश्वक दोसर सबसँ बेसी ठंढा स्थान थिक। एतय जाड़क समयमे तापमान शून्यसँ 60 डिग्री सेंटीग्रेड (-60° C) नीचा धरि जेबाक रिकॉर्ड छैक। ज्ञातव्य थिक, एहि इलाकामे, मसको-द्रास-कारगिल धरि, भारत-पाकिस्तानक बीचक नियंत्रण-रेखा, राजमार्गक उत्तरक पहाड़ीक समीपे छैक। जाहि स्थानमे भारतीय चौकी ऊँच स्थान पर अछि, भारतीय सेना नीचाक पाकिस्तानी पोस्ट पर सोझे प्रहार कय दबदबा बना सकैछ। विपरीत परिस्थितिमे भारत लेल सेहो परिस्थिति विपरीते छैक। सर्द इलाका आ भयानक बर्फबारीक कारण जाड़क समयमे एतय सड़क संचार छिन्न-भिन्न भ' जाइछ। फलतः, दुनू देशक सेना सदायसँ जाड़मे ऊँच स्थानक अपन-अपन पोस्ट छोड़ि कम ऊँचाइक क्षेत्रमे चल जाइ छल। गरमी अयलापर दुनू सेना पुनः अपन-अपन भूमिपर कब्जा करैत छल। 1998-99 मे पकिस्तान एहि परम्पराकें तोड़ि, जाड़मासमे भारतक खाली पोस्टकें कब्जा क' लेलक। दुर्भाग्यवश भारतीय सेना आ खुफिया संगठन आँखि मूनि, कानमे तूर-तेल द' कय गर्मी मासक प्रतीक्षा क' रहल छल। एहि बीच पाकिस्तान, हालहिमे हथियाओल ठेकान सब परसँ, श्रीनगर-लेह राजमार्ग पर निरंतर गोलाबारी आरम्भ क' देलक। एहि अभियानक असल उद्देश्य द्रास-कारगिल-लेहक यातायातकें छिन्न-भिन्न कय कश्मीरकें लद्दाख़सँ तोड़ि देबाक सामरिक मंसूबा छल। अचानक आयल इएह चुनौती सूतल भारत सरकार आ भारतीय सेनाकें जगौलक आ अंततः भारतीय सेनाक कारगिल अभियान आ अनेक अंतर्राष्ट्रीय भर्त्सनाक फलस्वरूप भारत पुनः अपन भूमि पर कब्जा केलक आ श्रीनगर-लेह राजमार्ग आ लद्दाख़क इलाका पुनः सुरक्षित भेल। एहि युद्धमे भारतकें कोन मूल्य चुकबय पड़लैक आ भारतीय सेना केहन बलिदान देलक, से इतिहास विदित अछि।

आइ हमरालोकनि कारगिलसँ द्रासकेर यात्रा पर छी। एतय सड़क पहिने सुरु नदीक दछिनबरिया कछेर धेने पश्चिम मुँहे चलैछ। पछाति जखन सुरु नदी सोझे पाकिस्तान दिस आगू बढ़इछ तँ सड़क, सुरुनदीक सहायक, सिंगो-द्रास नदीक कछेर ध' लैछ। सीमा क्षेत्रक एहि स्थानमे पग-पग पर शहीद स्मारक, तोपखानाक तोप सबहक जाल बिछाओल भेटत। कारगिलसँ कनिएक पश्चिम आ छनिगुंड गाओंसँ पूब गुरुंग पुल देखबैक। इहो गुरुंग एहि सुदूर प्रदेशमे अपन शोणितसँ भारतभूमिक हेतु तर्पण केनिहार वीर थिकाह। अस्तु, एक क्षणक विराम, एक क्षणक मौन आ नमन। अंततः शहीदकें आओर की कामना! गुरुंग पुलसँ आगाँ छनिगुंड गाओं अबैछ। एहि गाओंसँ आगू दाहिना कात, नदीक दोसर पार, ऊँच

पहाड़पर स्थित पाकिस्तानी पोस्ट सब एहि सड़क पर निरंतर निशाना सधने रहैछ, जाहिसँ भारतीय नागरिकक आवागमन बाधित होइछ, आ हमरालोकनिक सामरिक क्षति होइछ। अस्तु, एहि सड़क पर अनेक ठाम स्थायी बोर्ड देखबैक, 'दुश्मन आपको देख रहा है।' अस्तु, एतय ठमकू जुनि, आगू बढ़इत रहू। एतय छी, तँ, मन पड़ैत अछि एकटा दुखद प्रकरण। प्रायः 2000-2001 क घटना थिकैक। हम लेहमे रही। साँझुक पहर रहैक। एकटा गाड़ी एयर फोर्सक एकटा सेवारत सार्जेंटक शरीर ल' कय आयल। संगमे विधवा युवती। ई दम्पति अमरनाथ यात्राक पछाति हवाई जहाज पकड़बा लेल लेह अबैत रहथि। छनीगुंडक इलाकामे महिला ओंघाकय गाड़ीकेर सीटपर पड़ि रहलि छलि। सार्जेंट पति, चौकन्ना सीट पर बैसल छलाह। अचानक आयल निशाना साधल पाकिस्तानी गोली (स्नाइपर फायर) पतिकें ओत्तहि ढेर क' देलकनि। ज्ञातव्य थिक, ई घटना शान्ति कालक थिक। एहि सड़क पर भारतीय सेना सेहो स्थान-स्थान पर मोर्चा लगा, नियत पाकिस्तानी ठेकाना सबकें अपन निशाना पर रखने अछि, जकरा समय अयला पर क्षणमे भूमिसात कयल जा सकैछ। ज्ञातव्य थिक, भारत-पाकिस्तानक बीच ने युद्ध, ने शान्तिक एहि परिस्थितिमे नित्तह द्वन्द्व चलिते रहैछ। हँ, सब किछु करैत अछि सेना, किन्तु, जखन आवश्यकता होइत छनि, राजनेता अपन छाती ठोकैत छथि। सेना चुपचाप नित्य अपन काज करैछ। प्रचार सेनाक ने आवश्यकता थिकैक आ ने सैनिक अभियान लेल ओ उचित। यद्यपि, प्रचार वा दुष्प्रचार द्वितीय युद्धमे एहन अहम् छल, जे, हिटलर अपन सेनामे प्रचारक हेतु स्वतंत्र निदेशालय खोलने छल। नीक वा बेजाय समय कहत। आब भारतहुमे हवा बदलि चुकल अछि। पहिलुका युगमे नागरिककें जाहि सैनिक अभियानक हवा धरि नहि लगैत छलैक आब ओही हवा पर राजनीति ओसाकय फसल कटबाक परिणाम सामने अछि। आब आगू नजरि बाट दिस घुमाबी।

थोड़ेक दूर आगू संकीर्ण पहाड़ी इलाका थोड़ेक चाकर नमछर उपत्यकामे बदलि जाइछ। माने, आब हमरालोकनि द्रासमे छी। एतय गाओंसँ पहिनहि सड़कक दाहिना कात कारगिल युद्धमे शहीद हुतात्मा लोकनिक पैघ स्मारक छनि। एखन शान्ति काल थिक। हिनका लोकनिक उद्दात्त कीर्ति आ अपूर्व शौर्यक बलें राष्ट्र सुरक्षित अछि। हमरालोकनि शहीद लोकनिक सम्मानमे सड़कक कातहि गाड़ी ठाढ़ कयल। पयरे चलैत स्मारक धरि गेलहुँ आ समानधर्मा सैनिक लोकनिक स्मरण करैत मौनसँ श्रद्धा-सुमन अर्पित कयल। द्रासमे एखन खूब रौद छैक। बाटक काते-कात नदीक कछेर पर गहूमक खेती उपत्यकाकें हरियर केने अछि। जहाँ-तहाँ

वनफूल बसातमे डोलि रहल अछि। वायु सर्द छैक। तथापि, एखन गर्म कपड़ा नहि चाही। द्रासमे ई अद्‌भुत भेल! कमरामे तँ खूब नीक गर्म कपड़ा (Arctic wear) क बिना काज नहि चलत। थोड़ेक दूर आगू सड़कक कातहिमे द्रासक रिकॉर्ड तोड़ बर्फबारीक साइन बोर्ड देखबैक। ऑफिसर मेसमे पयर देल, तँ, भोजनक बेर भ' गेल रहैक। गर्म भोजन भेलैक अपन कोठलीमे जहाँ मोटगर ओढ़ना तानि पड़लहुँ, कि, बुम! बुम!! बुम!! क ध्वनिसँ सम्पूर्ण इलाका दलमलित भ' गेल। ओढ़ना एककात राखि उठलहुँ, आँखिपर चश्मा चढ़ाओल आ बाहर बरामदा पर आबि उपत्यकाक दक्षिण, दूर क्षितिजक नीचा पहाड़ दिस दृष्टि केन्द्रित केलहुँ। शान्त वातावरणक नीरवताकें चिरैत एकटा आओर गर्जनः बुम! क्षण भरिक पछाति दूर पहाड़पर माटिक ढेप-सन, मटमैल, एकटा छोट-सन, क्रमशः ऊपर उठैत विन्दुपर नजरि गेल जे क्रमशः पैघ गुबार-गोबरछत्तामे परिवर्तित भ' आकाश दिस उठैत गेल। निमेष मात्रमे फेर, बुम! समयक ई अंतर, प्रकाशक आ ध्वनिक गतिक अंतरक द्योतक थिक। हमरा बुझबामे भांगठ नहि रहल जे ई पाकिस्तानी सेनाक तोपखानाक टारगेट प्रैक्टिस छी। हँ, जँ, ई पाकिस्तानी सेनाक तोपखानाक टारगेट प्रैक्टिस थिक, तँ, ओकरा सबहक निशाना आ प्रैक्टिस दुनू दोषपूर्ण छैक। आ एहि गोलाबारीसँ एतय केओ डेरा जायत से सोचबो व्यर्थ। ई एतुका दिनचर्या थिक। अस्तु, हमहूँ कोठलीमे वापस आबि सूति रहलहुँ। किन्तु, सूतब सम्भव नहि भेल। शीघ्र हमरालोकनिक स्थानीय आर्टिलरी ब्रिगेड सेहो अपन फायरिंग आरम्भ केलक। आ संकीर्ण उपत्यकामे लगसँ होइत फायरिंग ताधरि चलैत रहल जाधरि पाकिस्तानी लोकनि सटक सीताराम कय शान्त नहि भ' गेलाह।

जान्सकार : दुधिया नदी, सोन-सन रौद आ लामालोकनिक रहस्यमय भूमि

विश्व भरिमे प्रसिद्ध, दुधिया नदी, सोन-सन रौद आ लामालोकनिक रहस्यमय भूमि, ई जान्सकार उपत्यका, भारतमे अपरिचित अछि। जान्सकारक नाम हम 1983-84 बीच सुनने रहियैक। तहिया हम विशेष सीमा सुरक्षा बल (SFF) मे पदस्थापित रही। एकटा अमरीकी पर्यटककेर जान्सकार-यात्रा वृत्तान्तक विवरणसँ जान्सकार हमरा एकटा स्वर्ग-सन, मायावी प्रदेश-जकाँ प्रतीत भेल छल। तहियेसँ हमर मोनमे जान्सकार जेबाक मनोरथ छल। करीब बीस वर्ष बाद, जखन हम लेहमे पदस्थापित रही, तँ, अनायास जखन जान्सकार जेबाक अवसर आयल, तँ, हम पड़ले पौलहुँ।

जान्सकार क्षेत्र, हिमाचल प्रदेशसँ उत्तर-पश्चिम पड़ैछ। मुदा, कश्मीरक डोडा-किश्तवार आ कश्मीर उपत्यकासँ उत्तरपूर्वक वृहत्तर हिमालय पर्वतमाला, तथा जान्सकारसँ उत्तरपूर्वक जान्सकार पर्वतमालाक अभेद्य देवालक बीच, जान्सकार क्षेत्र तेना नुकायल अछि जे केवल कृतसंकल्प सैलानी, सैनिक, आ सरकारी सेवक जान्सकार धरि जा पबैत छथि। हम जखन मेडिकल टीम ल' कय जान्सकार विदा भेल रही तँ 2004 क सितम्बर मासक आरम्भ रहैक। लद्दाख़मे जड़कालाक अयबाक बेर तँ निकट रहैक, किन्तु, आयल नहि रहैक। तथापि समुद्रतलसँ 12,000 फुटसँ बेसी ऊँचाइ केर इलाकामे तापमान तँ ऊँचाइक अनुकूले होइछ; ठंढा, बेसी ठंढा, आ भयानक ठंढा। हमर टीममे हमरा संग मेडिकल स्पेशलिस्ट, डेंटल ऑफिसर आ एकटा लेडी मेडिकल ऑफिसर छलीह। टीमक नेतृत्व आ नेत्र चिकित्साक भार हमर छल। संगमे साज-सामान आ दवाइ-दारूक हेतु सपोर्टिंग स्टाफ लोकनिक दल सेहो छल।

जम्मू कश्मीरक इलाकाक भीतर, विभिन्न क्षेत्रसँ, जान्सकार जेबाक अनेक पारम्परिक, खुरपेड़िया बाट छैक। मुदा, सबटा दुर्गम, आ सालक छौसँ आठ मास

हिमपातक कारण बन्न। आइ काल्हि कारगिल-पदुम रोड जान्सकार जयबाक सोझ बाट थिक। कारगिलसँ पक्की सड़क सुरु नदीक कछेरे-कछेरे पहिने सुरु उपत्यका दिस बढ़इत, क्रमशः पेंजी-ला पास (14, 000 फुट ऊँच पर्वतीय दर्रा) धरि चढ़इछ। पेंजी-ला पाससँ सड़क क्रमशः जान्सकार उपत्यकामे उतरैछ। हमरालोकनिक पदुम-जान्सकारक एहि बेरक यात्रामे मोटर कारसँ पहिल दिन लेहसँ कारगिल-206 कि. मी. आठ घंटाक बाट, आ दोसर दिन कारगिलसँ पदुम धरिक 250 कि.मी. बारह घंटाक बाट तय करबाक अछि। पहिलुका युगमे जान्सकार-यात्रा एहन सुलभ नहि रहैक। हिमाचल वा कश्मीरक नागरिक वृहत्तर हिमालयक ओमा-सी-ला आ शिंगो-ला दर्रा पार करैत किश्तवार वा हिमाचलक मनालीबाटें जान्सकारक मुख्यालय, पदुम धरि अबैत छलाह। एतुका लोक सब लेल सेहो दक्षिण आ पूबदिस बहरयबाक इएह सब बाट छलैक। पर्वतारोहीलोकनि एखनहुँ एहि बाटें जान्सकार धरि पर्वतारोहण करैत छथि। पहिलुक युगमे, जड़कालाक ऋतुमे, जान्सकार निवासीकें अपन प्रदेशसँ बहरयबाक हेतु एकटा तेसरो, अद्‌भुत विकल्प छलनि। एहि बाटकें आधुनिक युगक सैलानी लोकनि 'चदर वाक' क नामसँ जनैत छथि। की छलैक ई 'चदर वाक'? ई रोचक प्रसंग पछाति कनेक विस्तारसँ। मुदा, पहिने जान्सकारसँ परिचय करी। पुनः 'चदर वाक' सँ।

जान्सकार उपत्यका बाटें बहैत मुख्य नदी नाम जान्सकार थिकैक। शिवालिक आ जान्सकार पर्वतमालाक बीचक सम्पूर्ण विस्तृत भूभाग जान्सकारहिक नामसँ जानल जाइछ। एहि इलाकाक सबसँ बड़का उपत्यकाक मुख्यालय पदुम थिकैक। एहि उपत्यकाक बीच डोडा नदी आ लुंगनाक नालाक संगमसँ जान्सकार नदीक यात्रा आरम्भ होइछ जे लेहसँ पश्चिम, निम्मू लग, सिन्धुमे समाप्त होइछ। आस-पासक चट्टानमे कैल्सियमक प्रचुर मात्राक कारण नदीक पानि दुधिया वा मक्खन-सन छैक। प्रायः नदी कछेर पर तांबाक प्रचुर उपलब्धताक कारण नदीक नाम जान्सकार भेलैक। 'जांस' भेल तांबा। तें, जान्सकारक अर्थ 'उज्जर तांबाक देश' सेहो थिक।

सदातनिसँ पदुम उपत्यकासँ निम्मू धरिक जान्सकार नदीक सम्पूर्ण लम्बाइ-105 कि. मी. जाड़क मासमे जमि कय एकटा प्राकृतिक हाईवे भ' जाइत छलैक। इएह भेल पदुम आ लेहकेर बीचक पारम्परिक बाट। जान्सकारसँ लेह धरिक ई सबसँ छोट दूरी थिकैक। जान्सकारक निवासी लोकनि जड़कालामे एही बाटें चलि एतुका मुख्य उत्पाद, मक्खन आ छुर्पी (सुखायल छेना), लेह बाजार धरि ल' जा कय बेचैत छलाह। स्मरणीय थिक, लेह परम्परासँ सिल्क-मार्ग (चीनसँ मेडीटेरेनियन सागर

धरिक) क कतबहिक फीडर क्षेत्र छल। पाथर भेल जलधारक आधुनिक नाम 'चदर वाक' थिकैक। 'चदर वाक' पदुमसँ लेह धरि जयबाक दू हप्तासँ मास धरिक मौसमी यात्रा सुनबामे जतबे आश्चर्यजनक लगैछ, अछि ई ओतबे दुर्गम आ मारुख।

सुनैत छी, जलवायु परिवर्तनक कारण, आब जान्सकार नदीक सम्पूर्ण लम्बाइक जमब, आ चदर-वाक, दुनू इतिहास हेबा पर अछि। यातायातक सुविधासँ आब एहन दुर्गम बाटें जयबाक बाध्यताओ नहि छैक। लेहसँ चालीस कि.मी. दूर निम्मूसँ, पदुम धरिक, नदीक कछेरे-कछेरे पक्की सड़क बनयबाक जे काज चलि रहल छैक तकरा सम्पन्न भेलापर, किछु वर्षमे, पर्यटक आ नागरिक जलपान लेहमे करताह आ दुपहरियाक भोजन पदुममे। मुदा, भारत स्विट्जरलैंड वा ब्रिटेन तँ थिकैक नहि। नहि तँ, स्वतंत्र भारतक सरकार, पहाड़ी इलाकामे सुरंगक जाल बिछा देने रहैत। शिमला आ दार्जिलिंग, ऊटी, आ माथेरन-रेल-सन आओरो पहाड़ी रेलमार्ग बनौने रहैत। तें, निम्मू-पदुम रोड जहिया पूरा हतैक, सुनबे करबैक। नहि, जँ, हजारो करोड़क एहि परियोजनामे कोनो घोटाला भेलैक, तँ, भरिए रातिमे कतेक विशेषज्ञ पत्रकारक जन्म हयत, आ समाचार चैनेल सब दिन-राति ओकरे दाउन-ओसाउन करताह।

आब अपन पदुम यात्रा कारगिलसँ शुरु करी। कारगिलमे रात्रि विश्राम स्थानीय फील्ड एम्बुलेंस (मिलिटरीक सामरिक मेडिकल प्रतिष्ठान) मे भेलैक। फील्ड एम्बुलेंसकेर कमान अधिकारी कर्नल सकलेचा हमर मित्र छथि आ मिलिटरीक छावनीमे, ऑफिसर्स मेस, फील्ड एरियामे हमरालोकनिक घर-आँगन थिक। कश्मीरसँ कन्याकुमारी धरि ऑफिसर्स मेस पहुँचि कय लगैत अछि, अपने घर-अंगनामे छी। एके प्रकारक पद्धति, एके रीति-रिवाज-भोजन। भारतीय सेनाक वृहत्तर परिवारक ई अपनापन घरसँ दूर हेबाक आहिकें चेतनामे, हठे, नहि आबय दैछ।

हमरालोकनि भोरहि पनिपियाइ कय पूब मुँहे विदा भेलहुँ। एहिठाम, कारगिलमे, सुरु नदी पार कय, सड़क दक्षिण-पूब दिशामे सुरु नदीक किनारे-किनार जान्सकार जाइत छैक। गर्मी मासमे सुरु-भैली घास-पातक रंगसँ बहुरंगी भेल रहैत छैक। ततेक सुन्दर जे कखनहुँ आश्चर्य हयत, सत्ते, शीतल मरुभूमिमे छी? पर्वतशृंखलाक उत्तरी फलकपर भरि जाड़ जमल, आ गरमीमे पिघलैत, प्रचुर पानिए थिकैक एहि हरियरीक कारण। एहि इलाकामे गहुम, जौ, मटर केर अलावा आड़ू (apricot) क खेती खूब होइछ। संगहि, परिपूर्ण जल आ खनिजक सहयोगे सुरु-भैली अजस्र घासक खजाना थिक। एहि घाससँ एतुका माल मवेशी तँ पलिते अछि, संगहि,

अजस्र चारागाहक अनन्त विस्तारमे प्रति वर्ष जम्मू-कश्मीरक भेड़िहर-बकरबाल वा बकरीवाला-सब सेहो हाँज-क-हाँज भेंडी-बकरीक संग एतय अबैछ। ज्ञातव्य थिक, जनशून्य इलाकाक परिचित बाटें अबैत-जाइत, ई बकरबालसब शान्ति आ युद्धकालमे भारतीय सेना आ आतंकवादी, दुनू लेल, सूचनाक स्रोत साबित होइछ।

कारगिलसँ पदुम केर ई बाट लेह-बटालिक-कारगिलक इलाका-जकाँ जनशून्य नहि छैक। बाटमे त्रेस्पान गाओं, कुमाथांग सैनिक छावनी, शंको, पनिखर, नामसुरु, टंगोल, परकाचिक, आ तखन रंग्दुम गाओं अबैत छैक। हमरालोकनि दुपहरियाक भोजनक समयमे पनिखर गाओंमे सड़कक कातक एकटा देहाती होटलमे बैसलहुँ। स्टीलक बट्टामे, भफाइत झोरमे परसल मैगी-नूडल यात्री सब लेल सुलभ आ लोकप्रिय भोजन थिक। मैगी-दू मिनटमे तैयार, गरम, मसालेदार-शीतप्रदेशमे ककरा ने नीक लगतैक। किन्तु, ई तँ मात्र एकेटा विकल्प थिक। आश्चर्य तँ तखन लागल जखन दोकानक भीतर गेलहुँ। दोकानक भीतर बंगलोर-चेन्नई केर, MTR ब्रांडकेर राजमा-चावलसँ ल' कय, बीसी-बेले भात-केसरी बाथक सैकड़ों डब्बा देखि कय चकित भ' गेलहुँ। पुछलिऐक, तँ दोकानदार कहलनि-'जे बिकाइत छै, टूरिस्ट जे मंगैत अछि, से सब रखने छी'। हमरालोकनिकें दूर जेबाक छल, जल्दीमे मैगी-सूप-स्टाइल उदरस्थ कयल आ आगू बढ़लहुँ।

पनिखरसँ आगूक परिदृश्य आओर मनोरम होइत गेलैक। पहाड़क तलमे भूमि, कतहु गुलाबी, कतहु नील, आ आनठाम सर्वत्र हरियर। जतय, जेहन भैषज्य, पर्वत-भूमिक रंग ओहने। बाटक कात कतहु बैसि जाउ, पर्वतीय शीतलताक अनुभव करू, हिमालयक शुद्ध प्राणवायुकें भरि पोख फेफड़ामे भरि शहरी प्रदूषणक माहुरकें उत्सर्जित करू। इएह सब सोचैत परकाचिक गाओं पार कयल। परकाचिक गाओंक किछुए आगू, बाटक दहिना कात लगहि, करीब 100 मीटर चाकर नदीक दोसर पार, विशाल परकाचिक ग्लेशियर देखलियैक। ग्लेशियरक नाम सुनने छलहुँ, देखने नहि छलहुँ। तें, एतेक समीपसँ ग्लेशियर देखब अद्‌भुत अनुभव छल। पर्वत शिखरसँ सोझे बहैत, अजस्र जलराशिक ठोस रूप, ई ग्लेशियर, देखि एके संग कौतूहल आ रोमांच दुनू भेल। एहि ग्लेशियरक सतह आ मुहाना पर खूब चाकर-चाकर अजस्र दराड़ि-cracks and crevasse-भूकम्पक पछातिक क्षत-विक्षत भूमि जकाँ लगैत छलैक। बर्फक पातर परतसँ झाँपल इएह दराड़ि सब प्रतिवर्ष कतेको पर्वतारोहीक आ सैनिक लेल अचानक श्मशान भूमि साबित होइछ। कारगिलसँ परकाचिक धरिक आबादी मूलतः शिया मुसलमान लोकनिक थिक। किन्तु, परकाचिकक आगू बाटक काते-कात फहराइत रंग-बिरंगी बौद्ध पताका आ पाथरक

मिनी स्तूप-चोर्तेन-इलाकाक बदलैत धार्मिक आस्थाक संकेत थिक।

परकाचिक गाओं आ जान्सकारक द्वारि-पेंजिला दर्रा-क बीचक 50-60 कि. मी. केर समतल भूमिक इलाका-जे सुरु नदीक जल बहावक क्षेत्र (floodplain) थिकैक-केर बीच मात्र एकटा गाओं-रंग्दुम-अबैत छैक।

चारूकातक पहाड़सँ बहैत जल बहावक क्षेत्रक बीचक रंग्दुम गाओंमे एकटा टीला पर रंग्दुम बौद्ध-विहार अवस्थित छैक। वर्ष 2000 मे अचानक कश्मीरी आतंकवादी द्वारा तीन गोट लामाक निर्मम हत्याक कारण ई बौद्ध विहार अकस्मात् समाचारमे आयल छल। सदासँ शान्त एहि उपत्यकामे ई आतंकी हमला जतबे अस्वाभाविक छल ततबे आश्चर्यजनक। मानल जाइछ, बौद्ध विहारक चारागाहमे जम्मू-कश्मीर इलाकाक बकरबाल लोकनिक अतिक्रमणसँ शुरू भेल झगड़ा, अंततः, लामा लोकनिक हत्याक मूलमे छल। ई घटना, सदायसँ शान्त लद्दाख़क एहि इलाकामे कश्मीरी आतंकवादक पहिल, प्रतीकात्मक दस्तक छल।

रंग्दुम गोड़ दसेक घरक बस्ती थिक। रंग्दुम बौद्ध-विहार एतुका केन्द्रविंदु थिक। सब दिससँ अलग-थलग एहि गाओंक जीवन ओहिना छैक जेना कतहु आनठाम दूर दराजक गामक होइत छैक। तथापि, जीवनक मंथर गतिक घेंटकट प्रतियोगिताक अभाव तँ स्वाभाविके। कारण, सम्पूर्ण समाजक जीवनक डोरि एके संग बान्हल, संगे-संग चलैत छैक। इएह थिकैक लद्दाख़क दूर दराजक गाओंक सनातन संस्कृति। रंग्दुम बौद्ध-विहारमे एकटा छोट-सन संग्रहालय सेहो छैक। संग्रहालयमे सत्रहम शताब्दीक उत्खननमे प्राप्त दू गोट पैघ-पैघ शंख अद्‌भुत लागल। सुरु उपत्यका आ समुद्र केर की सम्बन्ध छैक, एतुका माटिमे शंख कतय सँ अयलैक, से तँ भूगर्भ वैज्ञानिके लोकनि कहताह। संग्रहालयमे संगमरमर केर बनल छोट-छोट बौद्ध मूर्ति सब सेहो छैक। आन सब किछु जेना गोम्पा-सबमे होइत छैक-मूर्ति, तंखा (रेशमी वस्त्रपर बौद्ध चित्रकलाक पर्दा), आ मोनास्ट्री (भिक्षु लोकनिक आश्रय)।

रंग्दुमसँ पेंजिला धरिक दूरी 35 कि.मी. बाट लगभग ठीके। मुदा, जेना-जेना ऊपर चढ़इत गेलहुँ, सुरु नदी केर पाट (जे कि पेंजिलासँ रंग्दुम दिस बहैछ) क्रमशः चाकर होइत गेलैक। पेंजिला धरि जाइत-जाइत सुरु नदीक प्रसार प्रायः 2 कि.मी. धरि होइक, तँ, आश्चर्य नहि।

पेंजिला दिस ऊपर चढ़इत जान्सकारक खेतिहर लोकनिक अस्थायी आवास आ गोठुला-ढोक्सा-सब पर नजरि पड़ल। पैघ-छोट पाथरक भरि डांड ऊँच देवालक आयताकार चौहद्दीमे बनल 'ढोक्सा' सब माल-मवेशी आ खेतिहर लोकनिक

ग्रीष्मकालीन आश्रय थिक। खेत खरिहान, दौनी-दोगौनिक मासमे उपत्यकाक समतल भूमिमे खेतिहर लोकनि जखन खेती करैत छथि, तँ, जनी-जाति सब माल-जालकें ऊँच पहाड़ दिस ल' अनैत छथि। ऊँच पहाड़मे इलाका खुला छैक आ घास प्रचुर। एतय माल-जाल भरि पोख घास चरैछ आ महिला लोकनि भरि मोन दूध दूहैत छथि, छेना बनबैत छथि, आ छेनाकें एतुका कड़गर रौदमे सुखाकय 'छुर्पी' बनबैत छथि। फूटल-भांगल खपरा-झुटका-सन सक्कत आ सुखाओल छेना-जान्सकारक 'छुर्पी' (सुखायल कॉटेज चीज)-लेहसँ ल' कय दार्जिलिंग-सिक्किम-भूटान धरि अनूप वस्तु जकाँ बिकाइए। जाड़क मासमे जखन दूध-दही-घी केर कमी रहैत छैक लोक सुखायल छुर्पी मुँहमे राखि धीरे-धीरे टॉफी-लेमन-चूस जकाँ चूसैत रहैछ। स्थानीय लोकक कहब छैक छुर्पीसँ शक्ति आ गर्मी दुनू भेटैत छैक।

नवीनताक लोभें जान्सकारसँ घुरतीमे हमहूँ थोड़ेक छुर्पी डाक्टर बन्धुसँ लेलहुँ। किन्तु, ओकर सुगंधि-दुर्गंध छुर्पीकें नाक धरि नहि ल' जाय देलक! मुदा से पछाति।

पशुपालनक एहि समैया अभियानमे महिला लोकनि गोबर-गोइठा सेहो एकट्ठा करैत छथि। गाछ-वृक्षसँ शून्य जान्सकार उपत्यकामे जारनिक अभाव तँ छैहे। तें, करसी-गोबर-गोइठा तँ उपयोगी होइते छैक। क्रमशः, जखन गर्मी बितैत छैक आ खेत-खरिहानक काज ओराइत छैक, ई महिला लोकनि माल-जालकें ढकढ़ियारि अपन-अपन गामक बाट धरैत छथि आ 20 सँ 100 कि.मी. धरिक लम्बा यात्रा करैत अपन-अपन गाम आपस होइत छथि। अपराधविहीन जान्सकार क्षेत्रक ई परिपाटी, माउगि-पुरुखक बीच श्रम-विभाजन, स्वतन्त्र अस्तित्व आ नारि-पुरुषक बराबरी (Gendar equality) क द्योतक थिक।

पेंजिलाक बाटमे पेंजिलासँ पहिने दू टा छोट-छोट झील सेहो छैक। झीलक रंग नीलम पाथर-सन नील, आ पारदर्शी। मुदा, लद्दाख़क सबसँ बड़का झील पेंगओंग-सो झील जकाँ झीलक पानि नोनगर छैक, कि नहि, से कहब मोसकिल। हमरा पानि चिखब बिसरि गेल। ओना, सुदूर क्षेत्र आ अनचिन्हार स्थानमे सबठामक जल पीयब उचित नहि।

पेंजिला दर्रा पार केला पर दाहिना दिस 'द्रांग-द्रुग' ग्लेशियर छैक। ई ग्लेशियर जान्सकार नामक नदीक मुख्य सहायक, डोडा वा स्टोड नदीक स्रोत थिक। संगहि, 'द्रांग-द्रुग' ग्लेशियर सियाचिनक बाद लद्दाख़क दोसर सबसँ पैघ ग्लेशियर थिक। ग्लेशियरक मुहाना मुख्य मार्गक एकदम समीप छैक। तें, द्रांग-द्रुग ग्लेशियर टूरिस्ट स्टॉप थिक। ई ग्लेशियर पर्वतारोहण लेल सेहो अनुकूल अछि।

पहाड़ी रास्ता, दुर्गम बाट, आ सब किछु देखबाक रुचि। आइ पेंजिला पहुँचैत-पहुँचैत सूर्यास्तक बेर भ' गेलैक। अस्ताचलगामी सूर्यक अंतिम किरण ग्लेशियरक कतबहिक हिमाच्छादित शिखरकें सोनाक पहाड़ बना देने छलैक। थोड़बे आगू पेंजिला पास (दर्रा) क ऊँचाइसँ दक्षिणपूर्व देखला पर नीचाक उपत्यकाक पहिल दर्शन भेल तँ लागल, आब बाजी मारि लेल। आबि गेलहुँ जान्सकार। ठीके, पेंजिलाक ऊँचाइसँ उतरब शुरु भेलाक 1-2 कि.मी. क भीतरे सड़क उपत्यकाक समतल भूमिमे पयर धरैछ। मुदा, एतयसँ पदुम 84 कि.मी.। तें, एखन आओर बहुत दूर जेबाक अछि। एतय समतल भूमि पर, सड़कक उत्तरसँ अबैत दुधिया पानिक एकटा नाला, सड़क पार करैत, दक्षिण दिसक डोडा नदीमे खसैछ, आ एतयसँ डोडा नदी सड़कक संगबे बनि पदुम धरि यात्रीक संग पुरैछ। एतयसँ आगू पदुम केर बाटमे अगिला पंद्रह किलोमीटर धरि कोनो गाम नहि। जनशून्य उपत्यका, बंजर भूमि आ शीतल पानिक कल-कल धार। धारक काते-कात जतय-ततय लेह-बेरी वा सिबकथोर्न केर कंटीला झाड़-झंखार।

कनिए कालमे हमरालोकनि पेंजिला आ पदुम केर बीचक पहिल गाम अबरान गाओंमे छी। बेस अन्हार भ' गेल छैक। तें, अबराम गाम आ आस-पासक इलाका घुरतिएमे देखब। एतयसँ पदुम धरिक बाट लगभग सोझे छैक। मुदा, कच्चा। अनेक ठाम छोट-पैघ नाला सब सड़कक उत्तरसँ आबि, रोड टपैत, सड़कक दक्षिण, नदीमे खसैछ। तें, सड़कक हालत नीक नहि आ गाड़ी सम्हारिए क' चलायब उचित। मुदा, कारगिलक नागरिक, हमरा सबहक ड्राइवर, सचढ़ आ सचेत छथि। हिनका इलाका देखल बूझल छैक। तें, कोनो चिंता नहि। ओहुना एहन जनशून्य इलाकामे रातिक यात्रा नीक नहि। जरूरत भेला पर ने गाड़ी मरम्मतिक कोनो साधन, ने टेलीफोनक सुविधा। एके टा गुण, एतय बटमारि आ अपराधक कोनो आशंका नहि। बाटमे ड्राइवर कतहु अटंकिकय पुलिस पोस्टपर किछु लिखा-पढ़ी केलनि। 10-15 मिनट समय लागल हेतैक। मुदा, एतुका पुलिसकें एखन बट्टी असुलबाक लति नहि लगलइए! ड्राइवरकें किछु दक्षिणा नहि देबय पड़लनि।

हमरालोकनि रातिक आठ बजेक करीब जखन पदुम पहुँचलहुँ तँ वज्र अन्हार भ' गेल छलैक। हाथकें हाथ नहि सूझैत। कार केर हेडलाइट जतय पड़ैत छलैक ताहिसँ बाहर इलाका ठोस कोइला-सन कारी! ऊँच पहाड़ी इलाकामे इजोरिया जेहने निर्मल होइछ, अन्हरिया तेहने भयानक। तथापि, ड्राइवर हमरा सबकें विशेष सीमा सुरक्षा बलकेर चौकी धरि सुरक्षित पहुँचौलनि। भोजन भातक पछाति जखन जम्मू-कश्मीर टूरिज्मक गेस्ट हाउसमे विश्राम लेल गेलहुँ तँ वज्र अन्हार, बिहाड़ि-सन

सनसनाइत बसात, आ परिश्रान्त देहक आलावा जँ किछु स्मरण छल तँ बस जान्सकार धरि पहुँचि जेबाक हर्ष! आब काल्हि जान्सकार देखब।

जान्सकार उपत्यकामे पहिल दिन

आइ हमरालोकनिकें मेडिकल कैम्प लगयबाक अछि। आइ भोरुका टहलान नहि भ' सकलैक। पदुम केर सब-डिस्ट्रिक्ट अस्पतालक परिसर हमरालोकनिक कैम्प थिक। एतुका सब-डिस्ट्रिक्ट अस्पताल दिनमे दस बजे खुजैत छैक। शीत प्रदेश। लोक देरीसँ उठैत हेतैक। गाओं सब दूर-दूर छैक। रोगी सबकें पैदल अयबामे सेहो समय लगतैक। एतेक छोट स्थानमे अस्पतालक नव भवन, ऐल-फैल आ पवित्र परिसर, आ रोग निदानक समुचित व्यवस्था जनता हेतु वरदान थिकैक। अपन मिथिलांचलक देहातमे जँ एहन सुविधा होइत तँ लोककें कोन कष्ट होइतैक। एहि अस्पतालमे डाक्टर अबैत छथि, आ भरि दिन अस्पतालमे रहितो छथि! अपन बिहार आ पड़ोसी उत्तर प्रदेशमे सबसँ पैघ समस्या छैक डाक्टरक अनुपस्थिति। डाक्टर लोकनिक हजार तर्क। ई नहि छैक, ओ नहि छैक। मानल। सुविधा थोड़ छैक। किन्तु, तें, डाक्टर अपन ड्यूटीक जगह पर कियैक नहि रहताह! अनुपस्थित डाक्टर, समुदायक हेतु सोचक विषय थिक। रोगीकें डाक्टरी सलाह जँ मुफ्त भेटि गेलैक, तँ रोगी औषधि कीनि लेत। किन्तु, ई विषयान्तर भेल।

उत्साही युवक, डॉ. नवाङ् चोस्दान, एतुका प्रभारी मेडिकल अफसर, वर्ष 2000 मे- हमरासँ बीस वर्ष बाद- जम्मू मेडिकल कॉलेजसँ एम.बी; बी.एस. पास केने छथि आ अपने गाम लग पदस्थापित छथि। हमरालोकनि एतहि, हॉस्पिटल बिल्डिंगमे, अपन कैंप करब।

हमरालोकनिकें दुनू उखड़ाहा रोगी देखबाक नेआर छल। किन्तु, से सम्भव नहि। एहि दूर दराज इलाकामे लोक जल्दी घरमुहाँ होइछ। रौदकें हहरिते एकाएक जाड़ होबय लगैत छैक। पहाड़क मारुख खुरबटिया बाटपर अन्हारमे चलब सम्भव नहि। डॉ. चोस्दानकें हम आग्रह केलियनि जे ओ बेरू पहर इलाका देखेबा लेल हमरालोकनिक संग चलथि। डॉ चोस्दान तुरत तैयार भ' गेलाह। हमरालोकनिक संग टोयोटा कुआलिस गाड़ी छले। दिन केर चारि बजेक समय तय भेल। चोस्दान कहलनि, 'हम गेस्ट हाउसमे आबि सबकें संगे ल' चलब।' एवमस्तु।

आइ हमरालोकनि पदुमसँ उत्तरपूब मुहें विदा भेलहुँ-स्तोंग्दे गाओं आ बौद्ध विहार। स्तोंग्दे जयबाक लेल लुंगनाक नाला/नदीक पुल पार केलहुँ। ई वैह बाट थिकैक जे साबिकमे जान्सकारकें निम्मू धरि जोड़ैत छलैक। पदुम आ स्तोंग्दे

गाओंक दूरी करीब 18 कि.मी.। सड़कक बामा कात जान्सकार नदी आ मुख्य मार्गक बीचक इलाका स्तोंग्दे गाओं पड़ैछ। उपत्यकाक बीच ठाम फिबिटिंग मोनास्ट्री 'गोम्पा' सेहो छैक।

सितम्बर मासक पहिल हप्ता। एतय एखन गहूमक फसिल कटब शुरू भेल छैक, समाप्त नहि। पाकल गहूमक खेतमे कतहु-कतहु हरियरी। मुदा, बेसी ठाम पाकल सोनहुल गहुमक समुद्र। स्तोंद्गे बौद्ध विहार सड़कक दाहिना कात लगहि, एकटा ऊँचगर टीलापर छैक। मुदा, पहाड़पर गाड़ी चढ़बाक मोटर-गाड़ीक कच्चा बाट घुमावदार, आ बेस लम्बा छैक। गौआं आ माल-मवेशी खुरपेड़िया बाटे सोझे ऊपर चढ़ि जाइछ। मानल जाइछ, एहि बौद्ध विहारक स्थापना 11 हम शताब्दीमे गुरु नारोपाक शिष्य, मारपा, कयने छलाह। करीब चारि शताब्दी पछाति ई विहार पीयर टोपी वाला, दलाई लामाक अनुयायी बौद्ध सम्प्रदायक, गेलुक्पाक, नियंत्रणमे आबि गेल।

डॉ नवाङ् स्तोंदे विहारक स्थापना आ एहि गामक बसबाक एकटा रोचक कथा कहलनिः 'तहिया, बरख भरि सम्पूर्ण जान्सकार बर्फसँ झाँपल रहैत छलैक। तथापि, एकटा तिब्बती बौद्ध गुरु, चामक नाओमे बैसि, नदीकबाटे तिब्बतसँ जान्सकार अयलाह आ एतहि एकटा गुफामे बैसि ध्यानमे मग्न भ' गेलाह। कहल जाइछ, पछाति, ओएह महात्मा एतुका बौद्ध विहार वाला पहाड़ीकें चिन्हित करैत भविष्यवाणी कयने छलाह जे 'एतय हजार-स्तोंग्दे-(लद्दाख़ी भाषामे एक हजार) घरक बस्ती बसत। एखनि देखैत छियैक, महात्माक भविष्यवाणी सत्य प्रमाणित भेलनि आ आइ स्तोंद्गे एकटा भरल-पूरल गाओं अछि।'

हमरालोकनि बौद्ध विहार पहुँचल रही तँ सूर्यास्त समकाल भ' गेल रहैक। एहि विहारक छत पर ठाढ़ भ' दक्षिण-पश्चिम दिस देखलासँ सम्पूर्ण पदुम-भैलीक विहंगम दृश्य देखबामे अबैछ। करीब 10-12 कि.मी. लम्बा आ 5-6 कि.मी. चाकर एहि समतल-सपाट उपत्यकाक पूर्वोत्तर भागमे आबिकय डोडा नदी आ लुंगनाक नालाक संगमसँ जान्सकार नदीक यात्रा आरम्भ होइछ, से कहनहि छी। उपत्यकाक पश्चिम-दक्षिण छोरपर पदुम गामक पाछू, लगैछ, चानी-सन चमकैत पर्वतमाला आ ग्लेशियर, जेना गाढ़ नील आकाशकें चूमि रहल हो। सूर्य एखनहुँ पर्वत-शिखरसँ ऊँचे छथि। तें, विहारक छतसँ पश्चिम मुँहे ठाढ़ भेला पर विरल वातावरण आ प्रखर रौदमे कैमराक लेंस अन्हाराय लगैत छैक। तें, होइत अछि, पदुम उपत्यकाक फोटोग्राफी लेल भोरहि एतय अबितहुँ। मुदा, से एहि यात्रामे सम्भव नहि। आ दोसर यात्रा फेर हयत तकर आस थोड़। जान्सकार दिल्ली-बम्बई

तँ थिकैक नहि! तें, जे किछु सम्भव भेल, कैमरामे बन्न करैत सन्तोष कयल।

स्तोंग्दे विहार आकारमे बेस पैघ। एखनि विहारक पुरान परिसरक जीर्णोद्धार चालू छैक। मुख्य मन्दिरमे महात्मा बुद्ध आ परवर्ती गुरु लोकनिक अनेक मूर्ति, भित्ति-चित्र आ तंखा सब छैक। विहारकेर द्वारिक बामा भागक कारी देवालपर लीखल स्वर्णिम रेखा-चित्र एहि गोम्पाक विशेषता थिकैक।

गोम्पाक टूरकेर पछाति लामा लोकनि हमरालोकनिकें चाहक आग्रह केलनि। हमरालोकनिक एतेक आवभगतक कारण स्थानीय डॉ. चोस्दान छलाह। चोस्दान अपन लोक-सेवाक बलें समाजमे प्रचुर आदर आ स्नेह पबैत छथि। ई भेलैक डाक्टरी व्यवसायक बोनस!

हमरा सब ठामक वायुक सेवन, सब पोखरिक पानिक स्वाद, सब ठामक भोजन चिखबाक रुचि अछि। हमरा सबहक रुचि देखैत, लामा लोकनि हमरालोकनि लेल चीनी मिट्टीक पात्रमे, स्थानीय भोजन-फे'मार-प्रस्तुत केलनि। जौ केर सातु आ मक्खनकें मधुर चाहमे सानि जे भोजन बनल से भेल फे'मार। मिथिलाक सातु आ फे'मार मे केवल मक्खन आ चाह केर अन्तर। देखबामे फे'मार बेसनक लड्डूक रंग-सन आ स्वादमे मधुर। पहिने जौ केर सातु तँ लोक मिथिलहुमे खाइते छल। मुदा, मिथिलामे ने आब जौ केर खेती होइछ, ने सातु खेबाक बाध्यता छैक। किन्तु, लेह-लद्दाख़ वा तिब्बती पठारमे समतल भूमि जकाँ ने चारि टा फसिल होइत छैक, ने समाजमे दालि-भात खयबाक परम्परा छैक। तें, जौ केर सातु मुख्य भोजन थिकैक। तिब्बत-जकाँ एतहु देविओ देवताकें सातुए चढ़ैत छनि, आ आशीर्वाद लेल दूर्वाक्षतक स्थान पर लोक मनुक्खक माथपर सातुए छीटि अभिषिक्त करैछ। अस्तु, हमरालोकनि सब गोटे लामा लोकनिक द्वारा प्रेमसँ बनाओल आ आदरसँ प्रस्तुत कयल फे'मार कनिए-कनिए चिखलहुँ।

स्तोंग्दे विहारमे गोट दसेक हरिण सेहो छैक। हरिणसबकें पहाड़क काते-कातक बंजर भूमिमे ताकि-ताकि कय हरियरी चरैत देखलियैक। एहन इलाकामे वन्य जीवक अस्तित्व कठिन छैक। किन्तु, समाजक संकल्पसँ सब किछु सम्भव छैक। तें, सबहक सहयोगें ई हरिण सब बौद्ध विहारक अभयारण्यमे पलैत-बढ़इत अछि।

स्तोंग्दे विहारक भ्रमण करैत-करैत झलफल जकाँ होबय लागल छलैक। जेना पहिने कहने छी, एतुका अन्हारमे हाथकें हाथ नहि सूझैत छैक। पहाड़ी भूमि, घुमावदार रास्ता आ ऑक्सीजनक कमी। सबटा मारुख। तें, युवक दन्त-चिकित्सक

जखन अपनहि गाड़ी चलबैत गेस्ट हाउस धरि वापस जेबाक प्रस्ताव केलनि तँ हमरा अस्वीकार करहि पड़ल।

जान्सकार उपत्यकामे दोसर दिन

एहि यात्रामे स्वास्थ्य सेवाक मूल मिशन केर अलावा एतुका जनसमुदाय, जनजीवन, जीवन पद्धति आ ग्राम्य जीवनकें लगसँ देखब आ ओहिमे अपना लोकनि ग्राम्य जीवनसँ समानता ताकब सेहो हमर उद्देश्य छल। स्थान, जलवायु, धार्मिक आस्था, आ सामाजिक रीति सबटा हमरालोकनिसँ भिन्न। मुदा, सभ्यताक निरन्तर बहावमे कोनो-ने-कोनो समान सूत्र तँ अवश्य हेतैक। सुविधाक हेतु, डॉ. नवाङ्कें एकटा लोकल गाइड देबाक हेतु हम निवेदन केलियनि। मुदा, व्यवहारमे विनम्र आ स्वभावें मृदु डॉ नवाङ् पुनः अपनहि हमरालोकनि संग अयलाह।

आइ बेरू पहर हमरालोकनि पदुमसँ करीब 6 कि.मी. दूर अवस्थित सनी गाम अयलहुँ। अपना लोकनिक इलाकामे भले सब ठाम मन्दिर हो वा नहि, एहि दूर दराज इलाकामे जतय बस्ती छैक, ततय गोम्पा अवश्य भेटत। मुदा, सनी गामक गोम्पा असाधारण गोम्पा थिक। मानल जाइछ, सनी गामक एहि प्राचीन गोम्पाक संस्थापक कुषाण सम्राट कनिष्क थिकाह। समतल भूमि पर स्थित एहि बौद्ध-विहार-गोम्पा परिसरमे, गोम्पाक पछुऐतमे स्थित स्तूपकें 'कनिक' स्तूपक नामसँ जानल जाइछ। सम्भव छैक, कनिष्क नाम क्रमशः 'कनिक' भ' गेल होइक। जे किछु। मानल जाइछ, सम्पूर्ण लद्दाख़मे ई प्राचीनतम धार्मिक स्थल थिक, जतय, प्रायः, इसवी सन् केर आरंभिक कालसँ एखन धरि पूजा-अर्चना होइत आबि रहल अछि। लोकमतक अनुसार गुरु पद्मसम्भव कतेक वर्ष धरि एतय आबि कय रहल छलाह आ लगहिक गुफामे साधना केने छलाह। तें, एहि विहारक मुख्य मन्दिरमे गुरु पद्मसम्भवक मूर्ति उचिते थिक। एहि परिसरमे गुरु नारोपाक मूर्ति सेहो छनि। गुरु नरोपाक कक्ष प्रति वर्ष मात्र एके बेर, जुलाइ मासमे, पूजा-अर्चना लेल खोलल जाइछ। एहि सनी विहारक परिसरक चतरल, विशाल पोप्लारक गाछ सेहो वृक्षविहीन जान्सकार भूभागमे एकटा अद्भुते अनुभव थिक।

विगत किछु वर्षमे सांस्कृतिक विरासतमे बढ़इत लोकरुचि वा पर्यटन उद्योगसँ बढ़इत आयकें देखैत राज्य सरकार आ किछु स्थानीय संस्थासब प्राचीन महत्वक मन्दिर आ पर्यटन स्थलक जीर्णोद्धारमे रुचि लेब शुरू केने अछि। तकरे प्रमाण स्वरूप, एतहु Indian National trust for Art and Cultural Heritage (INTACH) सँ सम्बन्धित गोड़ चारिएक आर्किटेक्ट परिसरक नाप जोख, चित्रण,

आ documentation करैत भेटलाह। गोम्पाक दर्शनक पछाति प्रधान लामा हमरालोकनिकें चाह-पानिक आग्रह केलनि। मुदा, हमरालोकनिकें आइ डॉ नवाङ् केर गाओं, रंतक्षा, जयबाक नेआर छल। डॉ. नवाङ् हमरालोकनिक संगहि छलाह। तें, चाह-पान ओतहि हेतैक।

डॉ नवाङ् केर गाओं, रंतक्षा, पदुम-कारगिल मार्ग पर सनी गाँवसँ 3 कि.मी. आ पदुमसँ 9 कि.मी. दूर डोडा-स्टोड नदीक उतरबरिया कछेरपर छनि। छोट-सन गाम। कुल बीस वा पच्चीस घर। ऊपर-नीचा भूमि आ उबड़-खाबड़ मार्ग। परिसरक सीमापर पाथरक देवाल आ देवालक ऊपर सीबकथोर्न केर कटैया झाड़क सुरक्षा-चक्र। गाममे प्रवेशसँ पूर्व डाक्टर साहेब अपन नव किचन-गार्डन आ गार्डनक बीचमे एकटा चौकोर, हरियर बैसक देखौलनि। ई हुनकर नव उपलब्धि थिकनि। ई बुझबा योग्य थिक, पहिने एहि इलाकामे लोक भांटा-सजमनि-कोबी-बंदगोबी-टमाटरसँ अपरिचित छल। हेबनिमे लेह स्थित रक्षा अनुसन्धान प्रयोगशाला-फील्ड रिसर्च लेबोरेटरी (FRL)-क प्रयासें लेह केर इलाकामे तर-तरकारी आ सेवकेर खेती आरम्भ भेलैए। भारतीय सेना एहि उत्पादक मूल उपभोक्ता थिक। एहि खेतीसँ स्थानीय किसान लोकनि सालाना करीब एक करोड़ धरिक आमदनी पबैत छथि।* मुदा, FRL सँ प्रेरित बागवानीक कोनो लक्षण एतय जान्सकारमे देखबामे नहि आयल। तें, डॉ नवाङ् केर किचेन गार्डन सत्ते गौरवक विषय थिकनि।

डॉ नवाङ् निम्न मध्यवर्गीय परिवारक पहिल डाक्टर थिकाह। आर्थिक रूपें एहिठामक सब परिवार मोटा-मोटी एके रंग। डाक्टर साहेबक पिता दिवंगत भ' गेल छथिन। वृद्धा माताक स्नेहक छाहरि तँ छनि। माताक स्नेहक छाहरि केहन होइत छैक से ककरा ने बूझल हेतैक! ओहि छाहरिक हहरि गेलापर केहन अनुभूति होइत छैक, तकर भुक्तिभोगी तँ हम स्वयं छी। विगत वर्ष 2003 मे हम एत्तहि लद्दाख़मे रही, आ माता गामहिमे शान्त भ' गेलीह। पाँच टा काठियो देबाक अवसर नहि भेटल। इएह थिकैक सैनिकक जीवन, आ सुदूर क्षेत्रक नौकरी।

डॉ. नवाङ्केर घरक आगू कोनो दलान नहि। माल-जालक घर-गोठुला-छलैक। एतुका दारुण जाड़मे कोन बुढ़ा दलान पर बैसताह! पर्दा प्रथा तँ छैके नहि। गोठुलाक आगू एकटा संकीर्ण द्वारि बाटे हमरालोकनि डॉ नवाङ्केर घरमे प्रवेश करैत पहिल मंजिल पर बैसक धरि गेलहुँ। छोट-सन बैसकक दोसर दिस आवासक दोसर कोठली आ भनसा घर। बैसकमे बैसबाक व्यवस्था भूमिपर-नीचा सतरंजीक

* वर्ष 2002-सँ 2005 मे

ऊपर देवालक काते कात ऊनी गलैचा। एतय घरे-घर महिला लोकनि गलैचा अपने हाथे बुनैत छथि। गलैचाक आगू, ढउरल-रंगल, काठक, छोट-छोट टेबुल-चौक्से, किछु तेहने जेहन टेबुल पहिने मुंशी लोकनि लिखबा लेल उपयोग करैत छलाह। बैसकमे दू-चारि प्लास्टिकक कुर्सी सेहो। मुदा, एतय निचहि बैसबाक परिपाटी छैक। नवाङ् केर बैसक लद्दाख़ीओ घरक दृष्टिसँ छोट छनि। किन्तु, हृदयमे सौजन्यक कमी नहि। हृदयक प्रेमकें ऐश्वर्यसँ कोन सरोकार! हमरालोकनि-चारि डाक्टरक दल पलथा मारि, निचहि गलीचा पर बैसैत गेलहुँ। नवाङ् कनेक सकुचाइत छथि। 'हमहूँ देहातेक निवासी छी। हमरो लोकनिक घर आँगन किछु एहने अछि' कहि हम नवाङ्कें कनेक आश्वस्त करैत छियनि। सत्ते हमरा 25 वर्ष पूर्वक कमलाक बाढ़िक मारल, अपन ढहल-ढनमनायल घर मोन पड़ैत अछि। हमरा लोकनिक घरमे बैसक, कुर्सी आ कालीन कतयसँ पाबी! हँ, डॉ नवाङ् केर बैसकमे एक कात एकटा छोट बक्सापर राखल गुलदस्ता देखि हमरा अपन घरक स्क्वाशक शीशाक बोतलक ओ फ्लावर-वास मोन पड़ि आयल जाहिमे हमर पत्नी श्रीमती रूपम, नित्य-प्रति ताजा बौगनविलियाक फूल सजाकय रखैत छलीह। आ भितघरक कोठलीक एकमात्र पुबरिया जंगलापर राखल फूलसब भोरक वायुमे अगराइत रहैत छल। आब पुनः वापस नवाङ् केर घरमे आबी।

बैसलाक तुरत बाद श्रीमती नवाङ् पारम्परिक नोनगर चाह-सोल्जा-आ बिस्कुट ल' कय उपस्थित भेलीह। एकटा प्लेटमे स्थानीय फल आड़ू-खुबानीक बीया बादाम सेहो अनलनि। खुबानीक बीया आ सुखायल खुबानी एतुका मेवा थिकैक, जे पाहुन-पड़कसँ ल' कय देवी-देवता धरिकें चढ़इत छनि। तिब्बत आ लद्दाख़क पारम्परिक चाह-सोल्जा-मे मक्खन, नोन केर संग 'ब्रिक-टी' क पत्ती आ इनहोर पानि पड़ैत छैक। सब किछुकें मोटका बांसक बड़का फोंफीमे मिलाओल जाइत छैक। बांसक फोंफी आ 'ब्रिक-टी' क प्रयोग तँ प्रायः आब नहि होइछ। किन्तु, 'सोल्जा'क लोकप्रियता कम नहि भेलैए। सोल्जा पीबाक हिस्सक लगेबामे कनेक समय लगैत छैक। पहिल बेरमे प्रायः नीक नहि लागय। तें, आब सबठाम लोक दुनू प्रकार चाह प्रस्तुत करैछ। हमरा तँ तिब्बती शरणार्थी लोकनिक संगमे एहि नोनगर चाह 'सोल्जा'क हिस्सक लागि चुकल अछि। डाक्टर साहेब हमरालोकनि लेल सेबक जूस केर छोट-छोट कार्टन सेहो अनने छथि। हुनकर नेनाकें जूस पीयबाक अनुमति तँ नहि छैक, तें, नेना जूस पीबाक प्लास्टिकक फोंफीकें सानन्द चिबबैत अछि। सूर्यास्तक समकाल भ' रहल छैक मुदा, भोजन बेर नहि। श्री मती नवाङ् सोलर लालटेन पजारैत छथि। डॉ नवाङ् कनिएक, फे'मार-सातु-चाह-मक्खन-क

जलपानक आग्रह करैत छथि। मुदा, जलखइ-पनिपियाइ फेर कहियो। हमरालोकनि नेनाकें कनेक दुलार करैत, श्रीमती आ डॉ नवाङ्सँ अनुमति लैत छी, आ पदुमकेर बाट धरैत छी। जाइत-जाइत सोचैत छी, ई रंतक्षा गाओं श्रीनगर आ दिल्लीसँ सांस्कृतिक रूपें दूर छैक। किन्तु, पाइप्ड जलापूर्ति आ सोलर लाइट व्यवस्था तँ हमरालोकनि लेल समतल भूमिओमे उपलब्ध नहि अछि। एहि मामलामे जान्सकार मिथिलासँ अवश्य आगू अछि।

जान्सकार उपत्यकामे तेसर दिन

पदुममे प्रवासक आइ तेसर दिन थिक। सोचल, जँ किछु आओर देखबाक अछि तँ भ्रमणकें भोरुका आ बेरुका दुनू उखड़ाहामे बांटय पड़त। काज तँ अछिए आ करबे करब। खाली समयकें उपयोग तँ करी। संयोगसँ अहल भोरे निन्न टूटि गेल। एखन अन्हरिया पक्ष छैक। साँझेसँ वज्र अन्हार। मुदा, भले भोरहरबामे कनिए काल लेल चान उगैत तँ अबस्से छथि। निन्न टूटल छल। जाड़ कम्मे छैक, तापमान 10 डिग्री सेंटीग्रेड। तें, भोरहरबामे पदुम उपत्यकाकें देखबाक लोभ नहि सहल गेल। बिछाओन छोड़ि कोठलीक पछबरिया जंगलाक पर्दा हँटा बाहर देखलहुँ तँ निर्मल इजोरियामे चमकैत उज्जवल-धवल हिमाच्छादित ओमाशी-ला शिखरकें देखि मोन अभिभूत भ' गेल। लगैत छलैक, जेना एकटा करिछोन, विशाल आइसक्रीम-कोन केर ऊपर वनिला आइसक्रीमक एकटा पैघ 'डोल्लोप' सफाइसँ राखल गेल हो। खिड़कीमे फ्रेम्ड ओमाशी-ला शिखरक एतबे छोट छविसँ हमरा सन्तोष नहि भेल। उठलहुँ, पयरमे चप्पल चढ़ाओल, कोठलीक छिटकिल्ली खोलल, आ बाहर आबि गेलहुँ। आकाश दिस नजरि केन्द्रित कयल तँ देखल, अन्हरियामे क्रमशः क्षीण होइत चन्द्रमाक कलेवर एक चतुर्थांश धरि बचल छलनि। मुदा, सम्पूर्ण उपत्यकामे निर्मल इजोरिया पसरल रहैक। सुनल छल, 'एकश्चन्द्रः तमोहन्ति, न च तारा गणोऽपि च' -चन्द्रमा एसगरे अन्हार पर विजय पबैत छथि, अगणित ताराक समूह कथमपि नहि ! मुदा, एतय लागल, एतुका इजोरिया चन्द्रमाक नहि, तारागणेक थिक। सत्य कहैत छी, एतेक चमत्कृत तारामंडल आ आकाशगंगा जीवनमे कहियो देखने होइ, से स्मरण नहि अछि। भेल, जेना एहि गरमीक मासमे सम्पूर्ण तारागण अहलभोरे जान्सकार नदीक दुधिया पानिमे प्रातः स्नान कय गहुम कटाइक एहि ऋतुमे जान्सकार-उत्सव-पर्वमे सम्मिलित हयबा लेल नव-नव चमत्कृत परिधानमे अन्तरिक्षमे अवतरित भेल होथि। चमत्कृत तारागणसँ आछन्न भोरहरबाक आकाश हमर मनकें तेना अभिभूत क' लेलक जे फरिच्छ हेबा धरि हम बाहरे उपत्यकामे

बूलैत परात क’ देलियैक। तखन मोन पड़ल, एक बेर देखियैक, भोरुका रौदमे ई उपत्यका केहन लगैत छैक। अस्तु, तुरत भोरुका टहलानक अनुकूल कपड़ा-लत्ता पहिरल आ पदुम सब-डिस्ट्रिक्ट हॉस्पिटलक सामनेसँ दक्षिण मुँहे जाइत रोड पकड़ि गामक दक्षिणी छोर दिसुक बाट धयल। उपत्यकामे सड़कक दक्षिणी छोर पर एकटा खण्डहर-सन भवन छलैक। दौड़िते ओहि खण्डहर पर चढ़ि गेलहुँ आ ओतयसँ सम्पूर्ण उपत्यकाक दृश्यकें भरि आँखि देखब शुरू केलहुँ। दृश्य अद्‌भुत छलैक। भेल, भोरुका रौदमे पदुमकें बिनु देखने एतुका यात्रा अपूर्ण रहैत। विरल वायु, पहाड़क ऊँचाइ आ निर्मल आकाश। भोरुका स्वर्णिम रौदमे सम्पूर्ण उपत्यका एकटा बहुरंगी पिक्चर-पोस्टकार्ड-जकाँ लगैत छलैक। बामासँ दहिना ‘स्टाकरिग्मों’ विहार, सनी गाओं, लगमे मस्जिद, सामने पहाड़क पक्खा पर कर्षा बौद्ध विहार, उपत्यकाक बीचोबीच फिबिटिंग मोनास्ट्री, दहिना कात दूर स्तोंदे बौद्ध विहार, आ सामने पहाड़क नीचा कल-कल बहैत उपत्यकाक धमनी, जान्सकार नदी। सत्ते, एहि दृश्यकें अपन आँखि, चित्रकारक पेंटिंग वा कोनो लेखमे समेटब असम्भव। फेर मोन पड़ल, आइ मेडिकल-कैंपमे रोगी देखबाक काजसँ पहिने लुंगनाक नदीक पूव शिला गाओं जयबाक नेआर छल। तें फुर्तीसँ गेस्ट हाउस वापस एलहुँ, आ नित्यक्रियादिसँ निवृत्त भ’ तैयार होइत गेलहुँ आ सब गोटे विदा भेलहुँ। तें, आब अजुका ग्राम-भ्रमणक किछु गप्प।

पदुम गाओं केर दक्षिण लुंगनाक नालाक पार, पूब गेलाक बाद शिला गाओंक बाट दहिना दिस बढ़इत छैक। बाट कच्चा। दूरी मात्र दू कि.मी.। भोरुका समय। स्कूल यूनिफार्म पहिरने बच्चासब झोरा-बस्ता ल’ कय पदुम दिस जाइत छल। सुनबामे अबैछ, लद्दाख़मे बच्चा सबहक कुल संख्यामे सँ पंचानबे प्रतिशत स्कूलमे पढ़बा लेल जाइछ। लद्दाख़-सन दूर-दराजक इलाका नहि, कोनो प्रदेशक ई संख्या गौरवक विषय थिक। पदुममे जम्मू-कश्मीर सरकारक हाई स्कूलक अलावा, भारत सरकारक केंद्रीय विद्यालय आ फ्रांसीसी एन.जी.ओ. AAZ द्वारा संचालित Lamdon Model School सेहो छैक।

हमरालोकनि जखन शिला गामक पछबरिया छोर पर पहुँचलहुँ, तँ, मटमैल, धूल-धूसरित बाट गामक हरियरीमे बदलि चुकल छलैक। एहि गाममे गहुम आ जौ केर कटाइ लगभग सम्पन्न भ’ चुकल छैक। आलूक लत्ती सेहो पिरोंछ भ’ रहल छैक। ठाम-ठीम मटर केर लत्तीकें उजाड़ि खेतिहर सब नारक टाल जकाँ लगौने छथि। खेत सबमे जहिं-तहिं खेतिहर, जनि-जाति, आ छोट-छोट नेना सब पसरल छलैक। गामक पछुऐतक पहाड़ी पर बकरी आ भेंड़िक धर्रोहि।

हमरालोकनिक मुख्य उद्देश्य एतुका ग्राम्य जीवन देखब अछि। तें, लगेक खेत मे पानिक नालाकें सरियबैत एकटा खेतिहरकें हम शोर पाड़लियनि। पुछलियनि, 'गोबा-ग्राम प्रधानक घर कोन थिकनि?' ई सज्जन अपन काज ओत्तहि छोड़ि हमरा सबकें अरिआति 'गोबा'क द्वारि तक ल' गेलाह, आ गोबा(ग्राम-प्रधान) कें बजबै लेल हुनका घरमे प्रस्तुत भेलाह। ताबते, हमरालोकनिक नजरि शिला गाओंक झरना पर पड़ल। भोरुका मृदुल रौदक अनुरागें गामक पछुऐतक पहाड़परक पाथर भेल ग्लेशियर द्रवित भ' कय जान्सकारक कमनीय तरुणी जकाँ, अगराइत, गुनगुनाइत, झटकारनहि शिला गाओंमे प्रवेश करैछ। निर्मल पानिक इएह झरना शिला गामक मनुक्ख, माल-मवेशी, खेत-पथार सब कथुक प्राण थिक। एहि झरनाक स्रोत छोट छैक, तें, जलधार क्षीण। प्रायः पानि सम्पूर्ण गाओं धरि पहुँचबै लेल गौआं लोकनिकें खूब जोगाड़ करय पड़ैत होइनि। तें, पानिक स्रोत, दूर, पुरना गामक भग्नावशेष गामक पाछूक पहाड़ीपर देखबामे अबैछ।

हमरालोकनि झरनाक आनंद लितहि रही, कि ग्राम-प्रधान नवाङ् त्सेरिंग आबि कय अभिवादन केलनि-'जूले'। 'जूले' एतुका नमस्कार, शुभकामना आ धन्यवाद तीनू थिकैक। ग्राम-प्रधान नवाङ् त्सेरिंग बाइस वर्ष धरि भारत सरकारक SSB (स्पेशल सर्विस ब्यूरो) मे नौकरी कय रिटायर भेल छथि। दुनू बेटा भारतीय सेनाक लद्दाख़ स्काउट रेजिमेंटमे सिपाही छथिन। अपन वयस पचास वर्षक करीब। घरमे पत्नी आ बरख बारहेक-तेरहक बेटी, डोल्मा, छनि। हमरालोकनि नवाङ् कें लद्दाख़ी घर परिवार देखबाक गप्प कहलियनि, तँ, ओ तुरते अपना घरक भीतर ल' गेलाह। पत्नी 'स्मोकलेस' चूल्हा पर रोटी पकबैत रहथिन। कहलनि, 'पहिने बूझल रहैत तँ भोजनक व्यवस्था करितहुँ'। मुदा, जखन बुझबामे एलनि जे हमरालोकनिक थोड़बे काल लेल आयल छी, तँ, कनेक आश्वस्त भेलाह।

लद्दाख़क इलाका शीतल-मरुभूमि थिकैक। अक्टूबरसँ मइ धरि भयंकर जाड़ अनुभव करबाक थिक, वर्णनसँ बूझब असम्भव। गर्मीओक मासमे जँ मेघ लागल होइक तँ तापमान एकाएक कम भ' जाइछ, आ जाड़ मिनटहिमे हाड़ हिला देत। तें, लद्दाख़कमे घरक निर्माणक व्यवहार हमरालोकनिसँ भिन्न छैक। तकर कारणो छैक। ऊँच पहाड़क एहि पठारमे बरखाक कोनो नाम नहि। तें, घर कच्चा ईटाक बनैछ आ गिलेबा पर जोड़ल जाइछ। देवालमे ईटा सबहक बीच गिलेबा थोड़-थोड़ देल जाइछ, जाहिसँ ईटा सबहक बीचक वायु, देवालकें लेबि देला पर नीक इंसुलेशन क' दैछ। घर सबमे खिड़की जंगला बहुत कम। खिड़की केवाड़ पारदर्शी जाहिसँ सूर्यक ताप घरकें गरम रखैछ। ततबे नहि, एतय बैसककेर रौदक गरक

देवाल, मोटा-मोटी दक्षिण दिसुक देवालपर, पारदर्शी शीशा लगेबाक परिपाटी छैक जाहिसँ रौदक गर्मीसँ घर गरम रहैक। एहि व्यवस्थासँ जखन बाहरक तापमान शून्यसँ 10-15 डिग्री नीचा रहैत छैक, तखनो घरक भीतरक तापमान 5-10 डिग्री सँ ऊपरे होइछ। घर बनावटक एहन मॉडिफिकेशनसँ लद्दाख़क लोक हाड़ हिलयवाला जाड़सँ बचैत अछि।

नवाङ् त्सेरिंग केर घर-अजायब घर

अजायब घर की थिकैक? एकठाम अजूबा वस्तु सभक संकलन। अजूबा की थिकैक? एहन वस्तु/अनुभव जे अहाँ कल्पना नहि केने होइ किंतु, देखने नहि होइएक। सत्यतः, जँ, एहि वस्तु सबहक संकलनकें अजायब घर कही तँ नवाङ् त्सेरिंगक घरकें अवश्ये अजायब घर कहि सकैत छियनि। तकर कारणो छैक। लद्दाख़ आ जान्सकार-सन इलाकामे लोककें जे किछु चाहियनि, मोटा-मोटी सबदिनसँ तकर जोगाड़ अपनहि करैत आयल छथि। संचार-संसाधन आओर अर्थ केर अभाव, स्थानीय उत्पादनक प्रेरक आ बाध्यता दुनू होइछ। तें, सदातनिसँ जौ-गहुम-दूध-मक्खन-कपड़ा- लत्ता-जूतासँ ल' कय अस्त्र-शस्त्र आ औषधि-बिरो सब किछुक उत्पादन एतुका लोक अपनहि हाथे करैत आयल छथि। नौकरीक बढ़इत अवसर, सुधरैत अर्थ व्यवस्था, आ बढ़इत संचार साधन एहि बाध्यताकें कम केलकैक-ए। किन्तु, पुरनका प्रणालीकें समाप्त हेबामे कतेक युग बीति जाइछ। नवाङ् केर घरमे भेंडी केशक बाँटल ऊनक बड़का-बड़का पोला, कपड़ा बिनबाक करघा, हाथक बनाओल चमड़ाक जूता, जाड़मे उपयोगक हेतु सुखाइत, छागरक सिरा-मासु धरि अनुमानित छल। मुदा, चारसँ लटकइत बैलून-सन फूलल, उज्जर-सन झोराकें गहिंकी नजरिसँ देखलापर किछु बुझबामे नहि आयल, तँ गृहपतिकें पुछलियनि,' ई की थिकैक'। ओ जे उत्तर देलनि से कल्पनातीत छल। कहलनि, 'ई बकरीक अमाशय फुला, ओकर मुँह बान्हि ओकरा सुखाकय बनाओल झोरा थिक। एहिमे जड़कालामे प्रयोग हेतु मक्खन राखल जाइत छैक।' कहबाक आवश्यकता नहि, लद्दाख़मे बारहो मास घी आ मक्खन ठोसे रहैत छैक, तरल घी चाही तँ आगि पजारू।

नवाङ् त्सेरिंग केर घरक कंडक्टड टूर केर पछाति हमरालोकनि कनेक काल हुनक बैसकमे बैसलहुँ। चाह बिस्कुट भेलैक आ पुनः 'जूले' क संग प्रस्थान। कहलनि, 'बूझल नहि छल जे अहाँ सब लेहसँ आयल छी। बेटी, डोल्माक आँखि सेहो देखेबाक छल। आब बूझल भेल। तँ, चलू आइ पदुम कैंपमे पुनः भेंट हयत।'

जान्सकार उपत्यकामे मेडिकल कैंप केर आखिरी दिन

आइ पदुममे हमरालोकनिक कैंपक आखिरी दिन थिक। पहिल दिन रोगी संख्या कम रहैक। ओहि दिन लेहक समीपक 'स्ताकना' बौद्ध विहारक प्रधान लामा-रिम्पोचे-पदुम आयल रहथि। धर्म-प्राण लोक लेल स्वास्थ्य सेवा आ धार्मिक अनुष्ठानक बीच धार्मिक अनुष्ठाने प्राथमिकता पबैछ। अनकर आंग-स्वांग, जन्म-मरण, विवाह-दानकें प्रधानता देब तँ अपनो लोकनिक ओतय छलैहे। काल्हि रोगी संख्या नीक रहैक। हमरालोकनि भोरहि एतयसँ चल जायब, तें, अजुका कैंपमे लोकक बेस जुटान छलैक। एतबा अवश्य, जे पदुम लेल आब मेडिकल कैंप कोनो नव नहि छियैक। एतय राज्य सरकारसँ ल' कय अमरीकी, फ्रेंच, जर्मन मिशनरी धरि आबि मेडिकल कैंप आ आँखिक ऑपरेशन करैत छथि। पछिलो मासमे एतय मोतियाविंदु ऑपरेशन कैंपमे गोड़ पचासेक ऑपरेशन आ लेंसक प्रत्यारोपण भेल रहैक। तथापि, एतय आँखिक रोगक कमी नहि छैक। बूढ़-बुढ़ानुस लेल लेह-कारगिल-श्रीनगर जा कय ऑपरेशन करायब संभव नहि। तें, लोक मासक-मास स्पेशलिस्ट कैंपक प्रतीक्षा करैछ। तथापि, एतुका समाजमे बूढ़-बुढ़ानुस ओतेक उपेक्षित नहि, जतेक एखनुक शहर-नगरक समाजमे छथि।

हाई-एलटीच्युड / ऊँच पहाड़ी इलाकाक रोग

हाई-एलटीच्युड वा ऊँच पहाड़ी इलाका-माने समुद्र तलसँ 9000 फुटसँ बेसी ऊँच इलाकामे जहिना जाड़ बेसी होइछ तहिना रौद खूब तिक्ख। वातावरणमे ऑक्सीजनक कमी। मुदा, ऑक्सीजनक कमी स्थानीय लोककें ओतेक नोकसान नहि करैत छैक जतेक पर्यटककें। ऑक्सीजनक कमीक कारणे High altitude pulmonary edema आ high altitude cerebral edema प्राणघातक आकस्मिक रोग आ विकट विपत्ति थिक। तें, लद्दाख़-सन इलाकामे थोड़ दिन लेल आबयवला पर्यटककें सावधानी राखब उचित थिक। प्राणवायुसँ विरल एहि इलाकाक दुष्प्रभावसँ बचबा लेल, शारीरिक श्रमकें क्रमशः बढ़बाक प्रक्रिया-Acclimatization. मे स्वस्थ सैनिककें हफ्ता भरिक समय लगैछ। क्रमशः Acclimatization क ई प्रक्रिया high altitude क दुष्प्रभावसँ बचबाक सार्वलौकिक प्रणाली थिक, जकर चर्चा पहिनहुँ भेल अछि।

रौदमे हानिकारक परावैगनी किरणक दुष्प्रभाव एतुका दोसर समस्या थिक। एतय रौदमे परावैगनी किरणक मात्रा सेहो समुद्रतटीय ऊँचाइसँ बहुत बेसी। भूमि पर घास नहि। बेसी काल रौदमे बैसब तँ रंग एके दिनमे ताम्रवर्णी (copper) भ' जायत। निरन्तर रौदमे काज केनिहार खेतिहर, मजदूरमे आँखिक लाली, नाखूना

आ मोतियाविंदु-सन आँखिक रोग खूब होइत छैक। एहि इलाकामे कमे वयसमे चेहराक चाम केर घोकचब, आ स्किन-कैंसरक आधिक्य सेहो परावैगनी किरणक दुष्प्रभावेक परिणाम थिक। दाँतक रोग एतुका तेसर प्रमुख समस्या थिक। कार्बोहाइड्रेट सँ परिपूर्ण सातुक भोजन आ मुँहक सफाइमे ढिलाइ, दुनू, एकर कारण थिक।

पछिला तीन दिनमे हम करीब सौ सँ बेसी आँखिक रोगीक जाँच केलहुँ-ए। किन्तु, एतय ने चश्माक दोकान छैक आ ने मुफ्त चश्माक व्यवस्था। चश्मा लेल 234 कि.मी. कारगिल, 450 कि.मी. श्रीनगर, वा 440 कि.मी. लेह के जायत! तें, केवल चश्माक पुर्जी देब बिडम्वनापूर्ण लागल। किन्तु, तकर समाधान हमरा हाथ नहि। तें, मात्र सहानुभूतिए। तथापि, जे कोनो गैर-सरकारी संस्था एहि इलाकामे आबि सेवा करैत अछि, ओ सब प्रशंसाक पात्र थिक।

अन्ततः, करीब अपराह्न दू बजे मेडिकल-कैंपक समापन कयल। मुदा, डॉ नवाङ् आइ पदुम भ्रमणमे संग नहि हेताह। हुनका कतहु रोगी देखबा लेल दूरस्थ जेबाक छनि। ऑफिसक सामने गाड़ी ठाढ़ छनि। परसू नवाङ् कहने रहथि, 'जखन पदुममे 5-6 फुट बर्फ जमल रहैत छैक, तखन जँ कोनो बजाहटि आबय, तँ, पांव-पैदल जाउ।'

मेडिकल कैंपक समाप्तिक बाद आइ घुमबा-फिरबा लेल आओर थोड़ेक समय बांकी अछि। अस्तु, करीब 3.30 बजे पुनः गेस्ट हाउससँ बहरयलहुँ। आइ पदुम उपत्यकाक पश्चिम 'स्टाकरिग्मों' विहार। एखन 'स्टाकरिग्मों' विहार केर जीर्णोद्धार चलि रहल छैक। मजदूर लोकनि सब पश्चिमी नेपालक निवासी थिकाह। स्थानीय लोककें खेतीसँ फुरसति नहि। ओहुना लद्दाख़मे देहाड़ी-मजदूरीक प्रथा नहि छैक। लोक एक दोसरक खेतमे जा कय परस्पर श्रमदान करैछ। ने केओ जन-बोनिहार, ने केओ गिरहस्त। समाजक सहयोगे सबहक खेती-बाड़ी भ' जाइत छैक। सुनल, खेत-खरिहानक आरि-धूर लेल विवाद आ पानि पटयबाक लेल ओदौद एहि इलाकामे नहि होइत छैक। खेत केर आकार सेहो छोटे-छोट छैक। आब जखन एतुका लोक नौकरी लेल बाहर जाय लागल अछि तँ खेतीक भार माउगि-मेहरि आ बूढ़े-बुढ़ानुस पर छनि। खेतिहरक कमीक कारण आब एतहु थ्रेसर आबि गेल छैक। मुदा, कतेक ठाम काटल जजातक पारम्परिक दाउनि, जे आब अपना इलाकामे विलुप्त भ' गेल अछि, सेहो देखलियैक। 'स्टाकरिग्मों' विहारमे भूसा भरल एकटा श्वेत भालु सेहो देखल। एहि इलाकामे ई 'पोलर-भालु' अजगुते थिक। हमर पुत्र, अमिय, कहलनि, 'भ' सकैत अछि, ई अल्बिनो (भुल्ल) हिमालयन भालु हो।' दन्तकथाक अनुसार करीब पचास वर्ष पूर्व एतहि ई भालु, याक केर संग द्वन्द्व-युद्धमे मारल गेल छल।

हमरालोकनि अगिला पड़ाव छल डोडा नदीक उत्तरमे 'कर्षा' बौद्ध-विहार। मानल जाइछ, एहू विहारक स्थापक गुरु पद्मसम्भवे छलाह। एहि विहारक अवलोकितेश्वरक प्राचीन भित्ति-चित्रक रंग आ सौन्दर्य आश्चर्यजनक अछि। कर्षा बौद्ध विहार जेबा लेल सड़कसँ बहुत ऊँच चढ़य पड़ल। ओहुना, बौद्ध-विहार सब गामक सबसँ ऊँचे स्थान पर भेटत। कारण छैक, विहार सबहक सम्पत्तिक सुरक्षाक चिंता। बेसी ठाम आस पासक उपजाऊ जमीनक स्वामित्व मठ आ मठाधीशक हाथ। ताहिपरसँ नागरिक लोकनि चढ़ावा-दान-दक्षिणा। ऊपरसँ, बहुतो ठाम सोना-चानीसँ बनल मूर्तिसब बेशकीमती रत्न सबसँ सजाओल छैक। तें, चोर-डकैतसँ ल' कय आक्रमणकारी सेना धरिक गिद्ध-दृष्टि बौद्ध विहार सब पर रहैत एलैये। तें, विहार सबहक ऊँच स्थान विहार आ गामक सुरक्षा दुनू लेल महत्वपूर्ण होइत छलैक। मानल जाइछ, लद्दाख़क सबसँ सम्पत्तिशाली विहार, पूर्वी लद्दाख़क, हेमिस गोम्पा केर पंजाबी सेनानायक जोरावरकेर आक्रमणसँ बचबाक एके टा कारण छलैक, ई विहार मुख्य मार्गसँ लग होइतो सड़कसँ अदृश्य छैक! से पहिनहुँ कहने छी।

स्तोंग्दे विहार जकाँ, कर्षा विहारसँ सेहो सम्पूर्ण पदुम उपत्यकाक विहंगम दृश्य भेटैछ। मुदा, एखन अन्हार पसरय लागल छैक। तें, घरमुहाँ।

मुदा, जखन गेस्ट-हाउस वापस एलहुँ, एहि यात्राक अंतिम आश्चर्य बांकिए छल। गेस्ट-हाउसक द्वारि खोलितहुँ ताहिसँ पहिनहि एकटा मैथिली-भाषी आगंतुक आबि प्रणाम केलनि। अख्तर हुसैन नामक ई व्यक्ति खुटौना (मधुबनी जिला, मिथिला) क थिकाह। एतय पदुममे बरख तीनेकसँ कपड़ा सिलाइक काज करैत छथि। बरखमे छौ मास दोकान बन्न रहैत छनि। मुदा, तकर मलाल नहि। अख्तर एहिसँ पहिने कारगिल आ देहरादूनमे काज क' चुकल छथि। अख्तर कहलनि, एतुका चाउर-दालि-नून-तेलक दोकानसँ ल' कय चाहक दोकान-होटल सब केर अधितर मालिक देहरादून केर छथि। मुदा, छोट-सन दोकानक कोठली लेल 6 हजार प्रति मास किराया द' कय, अख्तर एतय सालमे मात्र चारिसँ छौ मासक दोकानदारी करैत छथि से सूनि आश्चर्य अवश्य लागल। आखिर जीविका जतय ने ल' जाय। अख्तरकें देखि के कहत, 'बिहारी-मैथिल काहिल होइछ!'

पदुमसँ वापसी

जलपानक पछाति आइ, यात्राक चारिम दिन, जखन पदुमसँ वापस विदा भेलहुँ, तँ सम्पूर्ण उपत्यकामे सोन-सन रौद पसरि रहल छलैक। गाओंमे लोक सब उठि रहल छल। गोठुला आ भनसाघरसँ उठैत धुआँ जतय-ततय भोरुका सर्द वायुमे घनीभूत

भ’ रहल छलैक। मुदा, भोरुका रौदमे बाटक काते-कात, फुर्सतिसँ घोड़सवारी करैत युवक सभक एकटा दल अमेरिकाक वाइल्ड-वाइल्ड वेस्ट आ क्लिन्ट ईस्टवुड केर ‘काउ-बॉय’ सिनेमा सभ मोन पाड़ि देलक। सुनलियैक, जान्सकारक खुटिया घोड़ा (Zanskar pony) पर्वतारोहण आ पहाड़ी इलाकामे सैनिक अभियान लेल सबल आ सक्षम मानल जाइछ। तें, लेह केर रक्षा अनुसन्धान विभागक FRL प्रतिष्ठानमे जान्सकार घोड़ा-पशुपालनक कारण ताकब कठिन नहि।

तमिलनाडु

पुमपूहार, तरंगमवाड़ी, वेलंकन्नी, वेदारण्यम-रामारपादम एवं कोडियक्करै (Point Calimere)

पावनि-तिहारक मजा अपने इलाकामे छैक। जँ घरसँ दूरो रही आ धिया-पुता संग होथि तँ पावनिक पूरी-पकवान बनत आ पर्वक बोध होयत। किन्तु, जँ घरसँ दूर एहन स्थानमे होइ जतुका रीति रिवाज मिथिलांचलसँ भिन्न होइक, आ धिया-पुता चेतन भ' गेल होथि तँ, पावनि-तिहार आयासक बोध देबय लगैछ। एहना स्थितिमे नीक जे पावनि-तिहारमे कतहु बाहर निकलि चली। अस्तु, एहि बेर वेलंकन्नी, पॉइंट कालेमेयर, आ कोडियक्करै अभयारण्यक प्रोग्राम बनलैक। अपन गाड़ी, अपने ड्राइविंग। इन्टरनेट पर होटल बुक कयल आ विदा भेलहुँ। संयोग एहन जे जहिया भोरे यात्रा आरम्भ करबाक छल, कनेक मोन गड़बड़-जकाँ लागल। किन्तु, हम ध' तानल।

अस्तु, एहि बेर तिला-संक्रांतिमे बेलंकन्नीए भ्रमण हो। हमरा देवी-देवतामे थोड़ आस्था अछि, से भिन्न गप्प भेल। किन्तु, स्थान तँ ऐतिहासिक छैक। पोखरिमे प्रातःस्नानक स्थानपर समुद्रक कछेरमे टहलान तँ हेतैक, एकटा नव इलाका तँ देखब। ततबे नहि, एहि यात्रामे वेदारण्यम, आ कोदियक्कडैं पक्षी-विहार आ अभयारण्यक भ्रमण सेहो हेतैक। बाटमे ऐतिहासिक शहर पुम्पूहार, आ 17 हम शताब्दीमे निर्मित तरंगमवाड़ी (Tranquebar) केर डच किला-पोर्ट डेंसबोर्ग-सेहो देखब। माने, एहि बेर यात्राक नीक योग छैक। हमरा-सन यायावर लेल एहिसँ नीक आओर की!

12 जनवरी 2018। भोर सात बजे पिलैयारकुप्पमसँ विदा भेलहुँ। हमर कालेज पोंडिचेरी राज्यमे पड़ैछ। एतयसँ दक्षिण किछुए दूर पर पांडिचेरीक सीमा समाप्तिक संकेत, सड़कक दुनू कात उज्जर सपेत स्तम्भ सब छैक। तकर आगू

तमिलनाडुक कडलूर जिलाक क्षेत्र आरम्भ होइछ। किन्तु, पांडिचेरी आ तमिलनाडुक बीच ई सीमा कतेक बेर पार करय पड़त। एतयसँ करीब सौ किलोमीटर दक्षिण पांडिचेरीक कारैक्कल क्षेत्र अबैत छैक। प्रायः पांडिचेरिए टा देशक एकमात्र एहन राज्य थिक जकर चारि टा भूभाग (यानम, पांडिचेरी, कारैक्कल आ माहे) एक दोसरासँ दूर-दूर, देशक चारि टा फराक-फराक स्थान पर पसरल अछि। हमरा सभक बाटमे अन्नामल्लाई यूनिवर्सिटी टाउनशिप आ शैव तीर्थ चिदंबरम् सेहो आओत। किन्तु, हमरालोकनि आइ चिदंबरम् शहरसँ बाहरे-बाहर निकलि जायब।

करीब साढ़े आठ बजे चिदंबरम् शहरक बाहर गरम-गरम इडली-दोसै-वड़ा आ फिल्टर काफीक जलपान भेलैक। एहन पवित्र जलपान तमिलनाडुमे सब ठाम भेटत। आब आगू बढ़ी।

चेन्नईसँ नागपत्तिनम आ रामेश्वरम्-रामनाथपुरम् धरि समुद्रक कछेरे-कछेर, ईस्ट कोस्ट सड़क देशक सबसँ खतरनाक सड़क थिक। वर्ष 2015 मे एहि सड़क पर सड़क-दुर्घटनामे 17500 व्यक्तिक जान गेल छलनि। सघन बस्ती, हरियर कचोर धनखेती, नारिकेरक बगीचा, ताड़क गाछक जंगल आ अनेक नदी नालाकें पार करैत, अनेक ठाम संकीर्ण आ सर्पाकार, ई डबललेन सड़क अत्यंत व्यस्त अछि। तमिलनाडुमे सड़क साधारणतया नीक छैक, आ गाड़ीक संख्या बेहिसाब। अस्तु, सावधान भ' कय ड्राइव नहि करब, तँ, के कखन ठोकि देत कोन ठेकान! ताहिपर पटनामे छी वा पांडिचेरीमे गाय-बड़द-माल-मवेशी कखन कोन हाईवेपर कोम्हरसँ, यमराज-जकाँ अकस्मात् उपस्थित भ' जायत, से प्रायः केवल यमराज आ चित्रगुप्ते टा कहि सकैत छथि। अस्तु, मधुर गीत सुनू वा गप्प करू सड़कपर नजरि आ गाड़ीपर नियंत्रण आवश्यक।

दक्षिणक वैशाली : कावेरिपत्तिनम-पूमपुहार

चेन्नईसँ करीब 225 किलोमीटर दक्षिण, ईस्ट कोस्ट रोडपर एकटा छोट कस्बा, पूमपुहार, तमिलनाडुक ऐतिहासिक नगर आ आइ हमरालोकनिक यात्राक पहिल पड़ाव थिक। दू हजार वर्षसँ बेसी पूर्व पांड्या राजा लोकनिक शासनक अवधिमे पूमपुहार (वा कावेरिपत्तिनम) एकटा समृद्ध नगर, विशाल बन्दरगाह आ कला-संस्कृतिक प्रमुख केंद्र छल। कावेरी नदीक धार एतहि आबि अपन यात्रा समुद्रमे समाप्त करैछ। मानल जाइछ, ईसासँ करीब तीन सौ वर्ष पूर्व सुनामी-सन प्राकृतिक विपदाक कारण पूमपुहार नगर विनष्ट भ' गेल तथापि, ऐतिहासिक ऐश्वर्यक विनाशक पछातियो एहि नगरक पारंपरिक महत्व एखनहुँ अक्षुण्ण अछि

आ पूमपुहार एखनो पुरातत्वविद् लोकनिक बीच अनुसंधानक महत्वपूर्ण विन्दु थिक। पूमपुहारक यशोगाथा 'शिलापत्तिकारम्' आ 'मणिमेगलै' नामक प्राचीन तमिल काव्यमे भेटत। मादवि, कन्नगी आ कोवलनक प्रेमक त्रिकोणपर आधारित शिलापत्तिकारम् महाकाव्य पूमपुहारक ऐश्वर्य, समृद्धि आ अनेक ऐतिहासिक पात्रक जीवनक अनुपम गाथा थिक। 'शिलापत्तिकारम्'मे मदुरैक तत्कालीन पांड्या राजाक हाथें कन्नगी नामक नारिक निर्दोष पति, कोवलनक हत्याक चर्चा छैक। जनश्रुतिक अनुसार निर्दोष पतिक हत्यासँ आहत कन्नगीक रोष-कोप आ श्रापक कारण ओहि पांड्या सम्राटक शासनक अंत भ' गेलनि आ मदुरै नगर भस्म भ' गेल छल। एहि सभक अतिरिक्त, शिलापत्तिकारम्मे नारिक आभूषण, शास्त्रीय गायन-वादन आ नृत्यकलाक जेहन विस्तृत वर्णन भेटत, तकर उदहारण आओर कतहु छैक कि नहि, से कहब कठिन। प्रायः, अमृतलाल नागरक उपन्यास 'सुहाग के नुपूर' मे एकर चर्चा आयल अछि। पूमपुहारमे हमरो रुचिक कारण कन्नगी-कोवलन-आ मादविक आख्याने थिक। एतय कन्नगी-कोवलन-मादवि आ पांड्या सम्राटक संक्षिप्त खीसा अप्रासंगिक नहि होयत–

पुहर (पूमपुहर) नगरक कन्नगी नामक नारि, कवि इलांगो रचित शिलापत्तिकारम् महाकाव्यक मुख्य पात्र आ नायक कोवलनक पत्नी छलीह। सम्पत्तिशाली व्यापारीक पुत्र कोवलन पुहरकेर अत्यन्त रूपवती आ नैसर्गिक नर्तकी मादविपर आसक्त भ' जखन अपन सर्वस्व बोहा देलनि तँ अपन पत्नी कन्नगी मोन पड़लखिन। पांड्या राजा लोकनिक राजधानी मदुरै ओहि युगमे ऐश्वर्यक केंद्र छल। अस्तु, कन्नगी आ कोवलन वाणिज्य-व्यापारसँ दिन घुरयबाक आशामे मदुरै पहुँचलाह। ओतय व्यापारक हेतु पूँजीक जोगाड़ लेल, अपन पति कोवलनकें, कन्नगी अपन पयरक काड़ा मे सँ एकटा काड़ा सोनारक हाथें बेचबाक हेतु देलथिन। संयोगवश ओही समयमे मदुरैक रानीक पयरक काड़ा चोरि भ' गेल रहनि। कोवलनपर चोरिक मिथ्या आरोप लगबैत सोनार कोवलनकें ल' कय, सोझे राजाक समक्ष उपस्थित भ' गेल। क्रोधें आन्हर राजा तुरन्त कोवलनकें मृत्युदण्ड द' देलखिन। मिथ्या आरोप आ मृत्युदण्ड कन्नगीक हेतु असह्य भ' गेलनि। अस्तु, अपन पतिकें निर्दोष प्रमाणित करबा लेल कन्नगी सोझे राजाक समक्ष प्रस्तुत भेलीह। कथा छैक, रानीक पयरक काड़ाक भीतर मोतीसब भरल रहनि। कन्नगीक काड़ाक भीतर लाल पाथर भरल रहैक। ई ककरो प्रायः बूझल नहि रहैक। किन्तु, कन्नगीक राजाक समक्ष जखन कोवलनसँ जब्त काड़ाकें तोड़ि अपन पतिकें निर्दोष प्रमाणित क' देलखिन तँ पश्चाताप आ ग्लानिमे राजा तत्काल प्राण-त्याग क' देलनि। शोकमे रानिओ

तत्काले मरि गेलीह। ततबे नहि, अन्यायसँ आहत कन्नगीक श्रापसँ मदुरै नगर भस्मीभूत भ' गेल। कहल जाइछ, पछाति मदुरैक अधिष्ठात्री देवी मीनाक्षीक कृपासँ कन्नगीक क्रोध शांत भेलनि, आ हुनका मोक्ष भेटि गेलनि।

आब पुनः अजुका पूमपुहार आबी। कहबी छैक :

'बहुत शोर सुनते थे पहलू में दिल का
जो चीरा तो इक कतरा-ए-खूँ न निकला'

पूमपुहार पहुँचलहुँ तँ तकरे परि भेल। छोट-सन कस्बा। समुद्रक कछेरमे बड़का-बड़का बोल्डरक तेहन ढेर जे समुद्रकें दूरहिसँ देखू। पानिक स्पर्श नहि हयत। लगमे भिन्न-भिन्न प्रकारक सुखायल माछक अजस्र दोकान। दुर्गन्ध एहन जे ठामहि वमन भ' जायत। लगमे तमिलनाडु सरकारक अतिथिगृह। गेटमे ताला बंद छलैक। लागल, परिसरमे ककरो आबाजाही अभावृत्तिए होइत होइक। गेस्ट-हाउसक पछुऐतमे नौवहनक (shipping) लाइट-हाउस। सटले आधुनिक सरकारी म्यूजियम। म्यूजियमक चतुर्भुजाकार हालमे चारू देवालपर कारी पाथरक आधुनिक मूर्तिकला द्वारा 'शिलापत्तिकारम्'क कथाकें प्रदर्शित कयल गेल छैक। एक कात वीणा प्रभृत्तिक किछु पुरान वाद्य-यंत्र सेहो राखल। म्यूजियमक सामने सड़कक दोसर भाग एकटा जर्जर रंगमंच। समुद्रक समीप सड़कक बीचमे कन्नगीक कारी पाथरक मूर्ति। मूर्तिक चारू कात घास, गंदगी। सुनबामे आयल एतुका सब किछु-म्यूजियम, गेस्ट-हाउस, रंगशाला, सबहक निर्माण डी एम के (DMK) पार्टीक सरकारक अमलमे भेल छलैक। अस्तु, एतुका सब किछु एखुनका ए आइ डी एम के (AIADMK) पार्टीक सरकारक अवहेलनाक शिकार अछि। ठीके तँ, हमरालोकनिक देशमे इतिहास आ विरासत सब किछुक भैयारी बाँट-बखरा होइत छैक। तें, एक भाइक हिस्सामे पड़ल कुलदेवी वनवासिनी भ' जाइत छथि, तँ, दोसर भाइक हिस्सा क ब्रह्म बाबा बम्-बम् करैत रहैत छथि! अस्तु, हमरा दृष्टिएँ, हम जँ पूमपुहार नहिओ गेल रहितहुँ तैयो कोनो कचोट नहि।

तरंगमवाड़ी (Tranquebar)

पूमपूहारसँ करीब 25 किलोमीटर दक्षिण, तरंगमवाड़ी (Tranquebar), पांडिचेरी-नागपत्तिनम् सड़कपर एकटा छोट, किन्तु, ऐतिहासिक कस्बा थिक। 'तरंगमवाड़ी' शब्दक अर्थ थिक, गीत-गबैत तरंगक बाट। कोरोमंडल कछेरपर बसल एहि बस्तीलग समुद्री तरंगक ध्वनि तहिया मनमोहक छल हेतैक। किन्तु, आब एहि

स्थानक ऐतिहासिकताक कारण एतुका डच किला, अनेक चर्च आ गुटेनबर्ग प्रेस थिक। एतुका गुटेनबर्ग प्रेस प्रायः तमिल बाइबिल छापयबला पहिल भारतीय प्रेस थिक। तंजोरकेर राजा रघुनाथ नायकक अमलमे डच लोकनिकें व्यापारक हेतु एतय किला बनयबाक अनुमति भेटल छलनि। किलाक भवनपर कोर्ट ऑफ आर्म्समे निर्माणक वर्ष 1620 अंकित अछि। पछाति, डच लोकनि एहि किला आ आसपासक इलाकाकें अंग्रेज सरकारक हाथे बेचि देलनि। ज्ञातव्य थिक, डच लोकनिक एहने किन्तु एकटा छोट किला वा भवन, फोर्ट सेंट डेविड, पांडिचेरीक समीप कडलूर शहरमे सेहो छैक। पछाति कडलूर भवन पर सेहो अंग्रेज कब्जा केलक। हेबनिएमे तरंगमवाड़ीक एहि किलाक जीर्णोद्धार भेल छैक। एहि पोखरापाटन किलाक भीतर सैनिक एवं अफसर लोकनिक आवास, गोला-बारूदक भंडार, भोजनालय, चिकित्सा-कक्ष इत्यादिक भिन्न-भिन्न कक्ष छैक। किलाक ऊपरका तल्लापर पुबारिभर समुद्रक कछेर दिस एकटा संग्रहालय छैक जाहिमे एतुका विगत चारि सौ वर्षक इतिहासकें समेटल गेल अछि। सितम्बरसँ फरवरीक बीचक अनुकूल मौसममे जँ कोनो छुट्टीक दिन धिया-पुताकें एतय ल' कय आबी तँ सबकें घुमबा-फिरबाक अजस्र स्थान आ देखबाक अनेक वस्तु भेटतैक। किलासँ पूब समुद्रक कछेरमे ध्वस्त लाइट-हाउस आ किलाक बाहरक देवाल देखबैक। किलासँ पश्चिम समीपे मात्र आधा किलोमीटर लम्बा एकटा हेरिटेज सड़कपर एतुका बांकी सब ऐतिहासिक स्थल बसल अछि। आस-पासमे कोनो दोकान-दौड़ी, भोजनालय नहि भेटत। किलाक परिसरक ठीक उत्तरक भवन जे अंग्रेजक जमानामे कलक्टरक बंगला रहैक, आइ काल्हि 'होटल नीमराना' थिक। हमरालोकनि एत्तहि भोजन कयल। छोट-सन एहि कोलोनियल बंगलामे गेस्ट लोकनिक हेतु करीब सात-आठ टा कमरा छैक। किन्तु, एडवांस बुकिंग आ भरिगर किरायाक भार उठयबा लेल तैयार छी, तँ, नीमरानामे डेरा दिअ। भोरमे समुद्र तटक बालुपर बुलु, भोरुका सूर्यक किरणक सेवन करू, गोरा थिकहु तँ देहकें ताम्रवर्णी बनेबा लेल टाका खर्च करू। भारतीय कालू थिकहुँ तँ कारी हेबाक लेल टाका खरचबाक कोन काज!

तरंगमवाड़ी (Tranquebar) सँ दक्षिण कारैक्कल शहर अबैत छैक। कारैक्कल शहर पांडिचेरीक क्षेत्र थिक। एहि सड़क पर कारैक्कलसँ दक्षिण क्रमशः नागपत्तिनम शहर आ इसाई तीर्थ वेलांकनी अबैछ। 2001क सुनामीसँ नागपत्तिनम आ वेलंकन्नी शहरमे सबसँ बेसी जान-मालक क्षति भेल रहैक। तें, ओहि समयमे नागपत्तिनम एकाएक देशक मानचित्रपर जगजियार भ' उठल छल। किन्तु, एहि बेर हमरालोकनि सोझे वेलंकन्नीए जा कय विश्राम करब।

इसाई तीर्थ वेलंकन्नी

वेलंकन्नी पांडिचेरीसँ करीब डेढ़ सौ किलोमीटर दूर प्रसिद्ध इसाई तीर्थ थिक। वेलंकन्नीक देवी मदर मेरी वेलंकन्नीमे स्वास्थ्य आ आरोग्यकेर अधिष्ठात्री-जकाँ पूजल जाइत छथि। बंगालक खाड़ीक कछेरपर अवस्थित ई देवी प्रायः चारि सौ वर्ष पूर्व समुद्री तूफानमे फंसल नाविक लोकनिक प्राणरक्षाक कयने छलथि। आब तँ ई तीर्थ ततेक जागन्त अछि जे अगस्त-सितम्बरक एतुका वार्षिक महोत्सवक अवसरपर करीब मास भरि, अहोरात्र देवघरक काँवरिया-जकाँ पैदल जाइत तीर्थयात्री सड़कसब पर देखबैकः खूजल पयर, गेरुआ वस्त्र आ नाममात्र सामानक एकटा झोरा। जतहि थाकि गेलहुँ, कोनो चर्चमे वा भक्त लोकनिक परिसरमे विश्राम भ' गेल। केओ भोजन करौलक वा जल पियौलक तँ बेस, अन्यथा, अपने भरोसे गुजर करैत तीर्थ धरि पहुँचि गेलहुँ। तीर्थ यात्रीक एहि समूहमे लोक लड़ौना गाड़ीपर नेना आ रोगी परिजनकें ल' जाइत सेहो भेटि जायत। कतेक बेर देवी-देवताकें सेहो लोक रथपर चढ़ाकय दूर-दूरसँ वेलंकन्नी धरि ल' जाइछ।

हमरा लगैत अछि जखन विभिन्न धर्म, आ जीवन पद्धति एक दोसराक सम्पर्कमे अबैछ तँ अनेको परस्पर विरोधी विश्वासक बावजूद प्रत्येक पद्धति आ मान्यता एक दोसराकें कोनो-ने-कोनो रूपें प्रभावित अवश्य करैछ। अस्तु, देवघरक काँवरिया आ वेलंकन्नीक तीर्थ यात्रीमे हमरा अनेक समानता देखबामे अबैछ। ततबे नहि, एहि चर्चकेर परिसरमे करीब आधा किलोमीटर नाम आ करीब पचास मीटर चौड़ा बालुक ट्रैक देखलियैक जाहि पर भाव विभोर भक्त लोकनि ठेहुनिया दैत देवीक अर्चनामे लागल छलाह। ई बुझू एतुका दंड-प्रणाम भेल।

वेलंकन्नीकें टेम्पल-टाउनशिप कहि सकैत छियैक। कारण, एतय जे किछु छैक, सब केवल तीर्थयात्रीक सुविधा सहायताक हेतु। मेन हाईवेसँ पूब मुहें समुद्रक कछेर पर बसल चर्च दिस जाइत करीब एक किलोमीटर सड़कक दहिना भाग बुझू सब भूमि चर्चहिक परिसरमे अबैछ। परिसर साफ-सुथरा। खूब नीक व्यवस्था। पार्किंग, सभा-भवन, रंगमंच, स्टोर्स, पूजाक सामग्रीक दोकान, चाह-पानी, भक्त लोकनिक हेतु भानस करबाक हेतु किरायाक किचन, गैस, धर्मशाला। किन्तु, एतुका समुद्र-तट पर जेहने भीड़, तेहने गंदगी। गंदगी तँ हमरालोकनिक स्वाभाविक रोग थिक। एकर इलाज हेबाक चाही। प्रायः शिक्षा मात्र एहि राष्ट्रीय रोगक उन्मूलनमे सफल हयत। स्वच्छ भारत अभियान एहि दिशामे एकटा सशक्त डेग थिक।

वेदारण्यम आ रामारपादम्

13 जनवरी 2018 : आइ भोरहि फेर यात्रा शुरू भेलैक। विकिपीडियामे पढ़ल, जँ कोडियक्करै पक्षी-विहारमे पक्षी देखबाक अछि तँ भोरहि पहुँचू। 53 किलोमीटर दूर। सड़क नीक छैक, किन्तु, हमरा गाड़ी धीरे चलेबाक बाध्यता अछि, मारुख रोड पर जे छी।

सड़कक दुनू कात गाम, धानक खेती। आब एम्हर धान रोपबा आ कटबाक कोनो ऋतु नहि। एक कोलामे धान रोपल जा रहल अछि आ लगेमे दोसर कोलामे धान पाकि रहल अछि। धानक फसिल सेहो केवल डेढ़ बीत ऊँच। जँ, जँ आगू बढ़लहुँ दुनू कात पानि, जेना, पहिलुका कोसिकन्हामे आबि गेल होइ। असलमे समुद्रक लगीच ई इलाका कावेरी-डेल्टा एवं मार्स-लैंड थिकैक, जतय एकहि ठाम जंगल, पानि, नोनक खेती, माछक व्यापार आ नौवहन सब किछु छैक। वेलंकन्नी सँ किछु दूर दक्षिण वेदारण्यम कस्बा अबैत छैक। 1930 ई. मे गाँधीजीक दांडी-यात्राक समर्थनमे स्वतंत्र भारतक प्रथम गवर्नर जनरल चक्रवर्ती राजगोपालाचारी एतहि नमक-कानून भंग केने छलाह। एहि शहरमे ओकर स्मारक सेहो छैक। किन्तु, हमरालोकनि पक्षी देखबाक लोभे सोझे आगू बढ़इत चल गेलहुँ। इलाका एकाएक जंगली भ' गेलैक। दुनू कात सघन जंगल। बीचमे चमकैत, किन्तु संकीर्ण सड़क। जंगलक बीचमे सड़कक बाम भाग एकाएक, ऊपर चढ़इत सीमेंटक सीढ़ी, एकटा साइन-बोर्डः रामारपादम् : अर्थात मर्यादा पुरषोत्तम रामक चरण। कतय अयोध्या आ कतय वेदारण्यम्। आ एतय रामारपादम्। इएह सब सूत्र भारतकें एक परिवार जकाँ जोड़ने अछि। तें, बंधन ढील नहि हो, से सबहक दायित्व। किन्तु, एखन चिड़ै देखबाक उद्वेग अछि। चिड़ै इचना-पोठी-डोका-कांकोड़ लोलमे लेत आ रौद उगिते उड़ि जायत। किन्तु, रामारपादम् एतहि छथि। अस्तु, चरैवेति।

कोडियक्करै (Point Calimere), कोडियक्करै अभयारण्य एवं पक्षी-विहार

वेलंकन्नीसँ करीब पचास किलोमीटर दक्षिण, बंगालक खाड़ीक उत्तरे-दक्षिणे दिशामे चलैत कछेर, एकाएक सोझे पश्चिम दिस घूमि जाइछ। एहि भौगोलिक इलाकाकें Point Calimere क नामसँ चिन्हल जाइछ। वस्तुतः, कोडियक्करै एकटा छोट-सन गाओं थिक, आ Point Calimere एकटा आम इलाका थिक।

एहि इलाकामे एकटा अभयारण्य आ पक्षी विहार सेहो छैक। समुद्रक कछेरक लगीचमे विशाल मार्श-लैंडमे जाड़क मासमे दूर-दूरसँ अबैत पक्षीक झुण्ड एतय प्रचुर

भोजनक कारण बसेरा दैछ। अस्तु, जाड़क मासमे ई पक्षी विहार (कोडियक्करै पक्षी विहार) सेहो टूरिस्ट लोकनिक हेतु एकटा आकर्षण बनि जाइछ, से पोथीमे भले पढ़ी, किन्तु, एतुका टूरिस्ट-आकर्षण नहि थिक। कारण, वेलंकन्नी होटलमे केओ कोडियक्करै जयबा लेल आयल अछि, से हमरा नहि भेटल। तथापि, मुस्लिम बहुल एहि गाओंमे तकैत-तकैत जखन गामक बाहर समुद्रक कछेर लग पीच सड़क समाप्त भ' गेलैक आ बलुआह कच्ची सड़क आरम्भ भ' गेल तँ गाड़ी रोकल, आगू दूर-दूर धरि पसरल मटमैल भूमि, ओहने पानि, तकर आगू समुद्र। पक्षीक कतहु नामोनिशान नहि। हमरा भेल आओर आगू जाय पड़त। किन्तु, समुद्रक कछेर, कच्ची सड़क, जनशून्य इलाका, आ केवल दुइएटा प्राणी। गाड़ी रोकल। दू टा युवक समुद्र दिससँ मोटर साइकिल पर अबैत छलाह। तमिलमे पुछलिएक, आगू की छैक? उत्तर भेटल, 'समुद्र'। ओ सब गाम दिस बढ़ि गेलाह। हमरो बुझबामे आबि गेल। प्रायः पक्षी देखबाक ऋतु समाप्त भ' गेल छैक, वा एतय आब पक्षी सब लेल पर्याप्त भोजन नहि छैक, वा पर्यावरणक कोनो विकृति पक्षी सबकें आब एम्हर अयबासँ रोकैत छैक। जे किछु। पक्षी नहि देखल, तँ की! पक्षी-विहार आ कोडियक्करै तँ देखल। उत्तरमे सियाचिन आ दक्षिणमे कोडियक्करै देखि लेल। बेजाय नहि। किन्तु, अभयारण्य तँ बांकीए अछि। सुनैत छी, एतय ब्लैक-बक, जंगली घोड़ा, आ किछु आओर जन्तु सब छैक। किन्तु, पुछैत-पुछैत जखन अभयारण्यक लग पहुँचलहुँ तँ अजुका दिन सरकारी अवकाश भेलाक बावजूद बड़का लोहाक गेट पर ताला झूलैत रहैक। आखिर प्रत्येक राज्यमे अपन-अपन चारा घोटला होइत छैक। एकटा दोसर सज्जन सपरिवार कोयम्बतूरसँ आयल छलाह। वन-विभागमे किछु परिचयो छलनि। लागल गोड़ दसेक बेर फोन केलनि। किन्तु, अभयारण्यक द्वारि खोलबा लेल केओ नहि पहुँचल। सहजहि, आइ एतय पोंगल(मकर-संक्रांतिक) चारि दिनक पूजा-पाठ आ सांस्कृतिक उत्सवक अवसर छैक। हमरा अर्थ लागि गेल। पांडिचेरीसँ चलबासँ पूर्व हम सेहो तमिलनाडुक चीफ कांजेर्वेटर ऑफ फारेस्टसँ सम्पर्क केने रही जे कोडियक्करैमे हमरा सबकें केओ संग घुमाबथि। ओ चुप लगा गेल छलाह। किन्तु, तकर अर्थ हमरा तखन नहि लागल छल। आब गप्प बूझि गेलियैक। घुरतीमे कोडियक्करै गाओंमे फारेस्ट डिपार्टमेंटक गेस्ट-हाउस नजरि पड़ल। गाड़ी रोकल। पुछलिऐक, 'कमरा अछि, देखय चाहै छी?' जबावमे केयर-टेकर केर प्रश्नः 'कमरा चाही?'

-'नहि।'

-'तखन, जखन कमरा लेल आयब, देखा देब।'

हमरा अर्थ लागि गेल। हमरालोकनिक देश अनेरे नहि जर्जर भ' रहल अछि। आइ कोडियक्करैमे एकर एकटा आओर प्रमाण भेटल। किन्तु, यात्राक केक केर ऊपरक मलाइ खायब (icing on the cake) बांकिए छल। Point Calimere क लाइट-हाउस देखय गेलहुँ तँ भारतीय वायु सेनाक परिसर देखबामे आयल। भीतर गेलहुँ। युवक इन-चार्ज, फ्लाइट लेफ्टिनेंट शर्माक सौजन्य आ हुनक ऑफिसमे एक-कप गर्म चाह नीक ब्रेक छल। शर्माजी तँ जलपानहुक आग्रह करैत छलाह। किन्तु, हमरालोकनि हुनका धन्यवाद दैत वापसे हयब उचित बूझल।

पंजाब

अमृतसर, अटारी आ वागा

भारतीय सेनाक संग-संग चलैत जीवनक पच्चीस वर्ष बीति गेल। सीमा क्षेत्रसँ ल' कय देशक अनेक ठाम गेलहुँ। किन्तु, अपन देश पैघ अछि। एतेक भ्रमणक पछातियो कतेक देखब एखनो बाँकी अछि। बाँकी स्थान सभक लिस्टमे एखन धरि प्रसिद्ध तीर्थ आ ऐतिहासिक शहर अमृतसर सबसँ ऊपर छल। अस्तु, एहिबेर अमृतसर। जनवरीक मासमे उत्तर भारत जाड़ आ धुंद दुनू लेल बदनाम अछि। अमृतसरक जाड़ तँ नामी छैके। किन्तु, हमरा अढाइ वर्ष लेहमे बितओलाक पछाति जाड़सँ कोनो भय नहि।

हमरालोकनि जहिया दिल्लीसँ अमृतसर स्वर्ण शताब्दी पकड़ि अमृतसर पहुँचल रही, प्रायः जनवरीक चारि तारीख रहैक। जाड़ बेसी नहि। रौद खूब नीक। होटलक गाड़ी स्टेशनपर आयल छल। आसानीसँ होटल पहुँचि गेलहुँ। भोजन भातक अद्‌भुत व्यवस्था। जँ भारतमे नीक भोजन खेबाक हो तँ अमृतसर अवश्य भ' आउ। हमरा तँ पंजाब ओहुना भारतक अमेरिका बूझि पड़ैछ : उत्तम भोजन, परसल भोजनक परिपूर्ण मात्रा, लोककेर जीबाक स्टाइल, आ जीवनकें उत्सव बुझनिहार जँ केओ भारतमे अछि, तँ, ओ थिकाह पंजाबी नागरिक। दुपहरियामे कनेक आराम भेलैक। तकर पछाति बाजार भ्रमण। होटलक सामने एकटा ऑटोबला भेटि गेल आ बिना मोल-मोलाइके बाजार धरि ल' गेल आ पुनः होटल पहुँचा देलक। हमरालोकनिक अवश्यकताओ ततबे छल। बाजारमे किछु कपड़ा-लत्ता, फुलकारीबला लेडिज दुपट्टा, ऊनी वस्त्र आ मेवाक खरीद भेलै। सड़कक कातक दोकानमे चाह सेहो पिलहुँ। किन्तु, अजुका यात्रामे सड़कक कातमे बिकाइत सैंधव नोनक बोल्डरक आकारक बड़का-बड़का खंडकेर आलावा आओर तँ किछु आकृष्ट नहि केलक। रातिमे विश्राम भेलैक। किन्तु, दोसर दिन स्वर्ण-मन्दिर परिसरक भ्रमण दर्शन आ अटारी-वागाक भ्रमण हेतु टैक्सी ठीक भ' गेल।

स्वर्णमन्दिर अमृतसरक केंद्रविन्दु आ सिख धर्मक हृदयस्थल थिकैक। धर्म,

शौर्य, त्याग, आ बलिदानक इतिहास अमृतसरे नहि, सिख समुदायक जीवनक चादरिक ताना-बाना थिकैक। तें, ओकर विस्तृत वर्णन सम्भव नहि। तथापि, एतबा अवश्य बुझबाक थिक जे भारतक पश्चिमसँ भूमि मार्गसँ जे व्यापारी, लुटेरा, धर्म-प्रचारक वा आक्रामक भारतमे आयल ओ सब पंजाब आ सिन्धुएक बाट देने आयल छल। अस्तु, एतुका जनता ओही सबसँ प्रभावित भेल, लड़ल आ ओकर त्रासदी भोगलक। सम्पूर्ण जनसमुदायक ई अनुभव एतुका लोककें मनोवृत्तिए योद्धा आ निर्भीक बना देने छैक। ततबे नहि, ई भूमि आ एतुका जनता भारतक विभाजनक एहन त्रासदी भोगने अछि जे ककरो पुबरिया घर भारतमे आ पछबरिया घर पाकिस्तानमे चल गेलैक। अपन भाइ-बन्धु विभाजित भ' गेलैक। समृद्ध परिवार रातिए-राति शरणार्थी भ' गेल। ई सब किछु इतिहास विदित थिक। किन्तु, एहि सब त्रासदीक भुक्तभोगी लोकनि एखनो जीवित छथि, तें, एतय हृदयमे विभाजनक शूल नुकौने कतेको गोटे एखनहुँ भेटि जेताह। हुनका लोकनि लेल विभाजन इतिहास नहि, भोगल यथार्थ आ फफनाइत घाव थिक। किन्तु, आब ओकरा बिसरबे नीक।

दोसर दिन भोरे हमरालोकनि स्वर्ण मन्दिरक दर्शन-भ्रमण लेल विदा भेलहुँ। शहर कोनो ओतेक पैघ नहि। मंदिर हमरालोकनिक होटलसँ दूर नहि। मंदिरक आसपासक इलाकामे साफ-सुथरा बाजार। कपड़ा-लत्ताक दोकान। भोजनालय। एतय मन्दिरमे जल-फूल चढ़यबाक परंपरा नहि। तें, फूल-पत्ती, पंडा-पुरोहित नहि। अपने भीतर जाउ। माथा टेकू, सरोवरमे स्नान करू, कतहु बैसि कय पवित्र स्थानमे चिंतन-मनन वा ध्यान करू, गुरु लोकनिक संग एकात्मकताक अनुभव करू। परिसरमे सेवा करू, मोन हो तँ गुरुक लंगरमे प्रसाद सेवन करू आ आबि जाउ। व्यवस्था उत्तम। सरोवरमे एकोटा खढ़ नहि। पूरा परिसर चकचक करैत। सरोवरमे स्नान करबा लेल नारि-पुरुषक हेतु अलग-अलग व्यवस्था। प्रसाद किनबाक आ मन्दिरमे देबाक नियत स्थान। सब किछु नीक लागल। स्वर्ण-मन्दिरमे मोन हो तँ बैसू, गुरुवाणी सुनू, पाठ करू वा माथा टेकू आ आपस आबि जाउ। मन्दिरक परिसरमे तीर्थयात्री लोकनिक हेतु धर्मशाला, पाठ-पुरश्चरण करबाक हेतु स्थान : सचखंड। सिख धर्मक सर्वोच्च पीठ, अकाल तख़्त, आ संत जरनैल सिंह भिंडरांवालेक स्मारक गुरुद्वारा, सब किछु देखबैक। एहि गुरुद्वारा लग ऑपरेशन ब्लूस्टारक इतिहासकें बयान करैत एकटा बोर्ड सेहो देखल। परिसरक भ्रमण, स्वर्ण-मन्दिरक दर्शन, गुरुक लंगरमे भोजन आदिमे गोटेक घंटा लगले हयत। पछाति हमरालोकनि बाहर आबि जलियाँवाला बाग गेलहुँ। मन्दिर परिसरसँ बहराइत, करीब दू सौ मीटर

आगू, ई बाग दहिना कात पड़ैछ। सर्वविदित अछि, 1919 मे बैसाखीक दिन एतुका नरसंहार भारतक स्वतंत्रता संग्रामक अति महत्वपूर्ण घटना थिक, जाहिमे सैकड़ो निहत्था आ निर्दोष, बच्चा, युवक-युवती, बूढ़ आ वयसाहुक जनसमुद्र एकटा बताह-सन अंग्रेज सैनिक जनरलक हाथें मारल गेल छल। युग बीति गेलइए, किन्तु, एतुका देवाल आ शहीदी इनार ओहि बर्बरताक साक्ष्यकें एखनहुँ ओहिना जोगा कय रखने अछि।

जलियांवाला बागक भ्रमणक पछाति हमरालोकनि होटल वापस अयलहुँ आ अटारी-वागा भारत-पाक सीमा पर अंतर्राष्ट्रीय गेट बंद हेबासँ पहिलुक, प्रति दिनक परेड देखबा लेल विदा भ' गेलहुँ। नेयार छल, समयसँ पहिनहि बॉर्डर लग पहुँचि पहिने कोनो ढाबामे भोजन हेतैक आ तखन परेड देखब। पछिला पाँच सालसँ दक्षिण भारतमे रहैत सरिसबक साग सपना भ' गेल अछि। एहि इलाकामे खेत सब एखन सरिसबक फूलसँ पियर भेल छैक। अस्तु, आइ मकइक रोटी आ सरिसबक सागक भोजन हेतैक। ऐतिहासिक ग्रैंड-ट्रंक रोडपर अटारी गाओं अमृतसरसँ करीब पन्द्रह किलोमीटर पश्चिम छैक। ड्राइवर सचढ़ छल। बॉर्डरसँ किछुए पहिने रोड-साइडक एकटा नीक ढाबामे ल' गेल। भीतर-बाहर सब ठाम बैसबाक व्यवस्था। हमरालोकनि बाहरे रौदमे बैसलहुँ। रौदक अनुभूति सुखदो होइत छैक, से पांडिचेरीमे बिसरि चुकल अछि। होटलक परिसरमे एकटा परिवार, एकटा कन्याकें ल' कय सपरिवार आयल छल। कन्याक विवाह प्रायः शीघ्रे हेतनि। अस्तु, होटलक परिसरमे राखल बैल-गाड़ी आ मोटर-कारमे कनियाक विदाइक थीम फोटोग्राफी भ' रहल रहैक। एहि सबमे व्यावसायिक फोटोग्राफर मनोयोगसँ लागल छलाह। हमरालोकनि भोजनक आर्डर देलियैक, भोजन केलहुँ। किन्तु, परिपूर्ण, परसल सबटा भोजन खायब असंभव छल। ड्राइवर बुधियार छलाह। कहलनि, भोजन दूरि किएक होबय देबैक, आ शेष भोजन अपन संग राखि लेलनि। ई गप्प हमरो लोकनिकें जँचल। ढाबाक सामनेक सड़कसँ दूरहिसँ पाकिस्तानी राष्ट्रीयध्वज देखबामे आयल। अंतर्राष्ट्रीय सीमाक दुनू कात एके रंग, समतल-सपाट भूमि, एके रंग सरसों-गहूम केर खेती। दुनू कात पाँच टा नदी-पंज आब (पानि)-सँ सिंचित भूमि। वायुमे कोनो आरि-धूर नहि। किन्तु, सीमा रेखा पर कंटाह तार, शिकारी कुकूर, आ खूनक पियासल सेना। नहि जानि, राजनीति आ द्वन्द्व, मनुक्खक संग कोन-कोन खेल खेलाइत अछि। सर्वविदित अछि, भूमिपर मनुक्खक पाड़ल कोनो डांरि याजुगी नहि। प्रकृति तँ एकर एकदम परवाहि नहि करैछ। इतिहास सेहो मनुक्खक द्वन्द्वसँ निरपेक्ष रहैछ। कखन ककर पक्ष लेत, के कहत। बर्लिन शहरक बीचोबीचक ध्वस्त देवाल एकर साक्षी अछि। अमृतसर-वागा सड़कक कातक एहि ढाबामे बैसि जाड़क मृदुल रौदक

सेवन आ दिव्य भोजनक आस्वादक पछाति इएह सब मनोभाव जेना हमरा क्षणहिमे विभाजित पंजाबक ऐतिहासिक शरणार्थीमे परिवर्तित क' देने छल। सेनाक सेवाक अवधिमे अपन अनेक पंजाबी सहकर्मीसँ भारतक विभाजनक अनेक कथा सुनने छी। कथाकार सआदत हसन मंटोक कथा 'टोबा टेक सिंह' आ भीष्म साहनीक 'तमस' आ खुशवंत सिंह केर A Train to Pakistan आ आओर बहुत किछु पढ़ने छी। भरल पेट आ जाड़क रौदमे हम ओंघाए लागल रही। पत्नी लगमे बैसल भारतीय सेनाक रिटायर्ड दम्पतिसँ गप्पमे लागल रहथि। ताबते, ड्राइवर सुखी-सुखविंदरक स्वर कानमे पड़लः 'चलें, सर। देर होने से अच्छी जगह नहीं मिलेगी। प्रायोरिटी स्लिप भी नहीं है। आगे चलके आप अफसर से बात कीजिये। हम आपको सीधे इंस्पेक्टर साहेब के पास ले चलेंगे। आप बात करेंगे तो स्पेशल सीट मिल जायगा। गाड़ी भी सीधे पार्किंग तक जायेगी, नहीं तो मैडम को पैदल चलना पड़ेगा।' हमर ध्यान आ निन्न दुनू टूटल। दुनू गोटे उठि विदा भेलहुँ आ गाड़ीमे बैसि गेलहुँ।

सत्ये, अटारी-वागामे परेड देखबाले प्रायोरिटी-स्लिप अछि, तँ, विशिष्ट दीर्घामे बैसि परेड देखि सकैत छी। अन्यथा गैलरीमे बैसू। संगहि, पास संगमे भेलासँ गाड़ी पार्किंग धरि ल' जा सकैत छी। अन्यथा, दूरहि गाड़ी पार्क करू आ पैदल चलि, आधा किलोमीटर दूर बॉर्डर धरि जाउ आ वापस आउ। हमरा प्रायोरिटी-स्लिप नहि छल। किन्तु, प्रायोरिटी स्लिप नहि भेलासँ हमरा भूमिपर बैसय पड़त तकर कल्पनासँ प्रायोरिटीक सिस्टमक प्रति मनमे क्षोभ केर उदय भेल। किन्तु, परिचय देलासँ सब किछु सम्हरि गेल। बी एस एफ केर इंस्पेक्टर आदरपूर्वक ड्राइवरकें गाड़ी आगू बढ़यबाक संकेत देलखिन। दर्शक सबमे बच्चा-बूढ़-जवान-सिनेमा स्टार-सैनिकक लम्बा लाइन आ अपार जनसमूह। बीच-बीचमे सड़कमार्गसँ पाकिस्तान जेबाबला पाकिस्तानी नागरिक लोकनिक पतियानी-ट्राली-बैग-मोटा-चोटा। ई लोकनि सीमापार भारतमे अपन सम्बन्धी लोकनिसँ भेंट करय आयल छल हयताह वा रोग-व्याधिक इलाज लेल दिल्ली गेल छल हेताह। सब गोटे कस्टम चेक केर पछाति पैदल गेट धरि अबैत छथि। दुनू देशक सुरक्षाकर्मी जाँच-पड़तालक अपन-अपन प्रक्रिया पूरा करैत छथि आ यात्री लोकनि स्वदेश-पाकिस्तानमे प्रवेश करैत छथि। कतेक नीक होइतैक जँ भारत-पाकिस्तानमे सौमनस्य होइतैक आ योरोपियन यूनियनक नागरिक जकाँ लोक अपन पासपोर्ट देखबैत आ सीमाक दुनू पार बेधड़क अबैत-जाइत। किन्तु, आम नागरिकक ई सब टा मनोरथ एखनुक परिस्थितिमे असम्भव अछि। वाजपेयीजी पाकिस्तानसँ मित्रता करबामे तँ सफल नहि भेलाह, तथापि, कम सँ कम नियंत्रण रेखापर गोलाबारी नहि करबाक संधि तँ केने रहथि, जे 2003 सँ

2014 धरि चलल। किन्तु, नवका सरकारक छप्पन इंच छातीक पाकिस्तान नीति दुनू देशक बीच वैमनस्यक तेहन सिलसिला आरम्भ केलक जे विगत पाँच वर्षमे दुनू दिसुक सैकड़ो सैनिक आ नागरिक प्राणक बलिदान देलनि। आ लाभ की? सीमा घुसकि गेलैक? देशकें आर्थिक लाभ भेलैये? पाकिस्तान कमजोर भ' गेल? जँ, हँ, तँ, बड़ बेस। नहि, तँ अपने सोचू। भारत-पाकिस्तानक बीच दीर्घकालीन शान्ति दुनू देशक हितमे छैक, वा युद्ध? गरीबी, अशिक्षा, रोग, भुखमरी दुनू देशक समान शत्रु, किन्तु, नेता लोकनिक संजीवनी थिक। एहि सब रोगक निराकरणसँ सर्वत्र जनसामान्यक हित हेतैक, किन्तु, सीमापर शांतिसँ पृथकतावादी राजनीतिकेर वोटक अवसर थोड़ भ' जेतैक। युद्ध नहि भेलासँ सैनिक साज-सामान आ गोला-बारूदक उत्पादकक व्यापार आ लाभ कम भ' जेतैक। सेनाक प्रधानता कम हेतैक। अस्तु, शत्रुता कायम रहय, सत्ता फूलैत-फलैत रहय, व्यापारिक लाभ सम्पन्न देश सभक खजाना भरैत रहय। जनता कुहरय, तँ, बड़ बेस!

हमरालोकनि दर्शक दीर्घा लग पहुँचलहुँ तँ सड़कक दुनू कात, आ सीमाक दुनू पारक दर्शक दीर्घामे अपार भीड़ जमा भ' चुकल छलैक। हमरालोकनि अपन निर्धारित स्थान लेलहुँ। भारतक दीर्घाक आकार पाकिस्तानी दीर्घासँ बहुत पैघ। दर्शकक संख्या भारत दिस बहुत बेसी। नाटकीयता सेहो खूब। बीचमे एनाउंसर दर्शकक उत्साहकें बढ़बैत। सीमाक दुनू कात दुनू देशक सैनिक लोकनि। दुनू कात जयकार। नारेबाजी। देश भक्तिक गीत। आ परेड। सैनिक लोकनिक आक्रामक तेवर, पयर पटकब, बाँहि देखबैत बलक प्रदर्शन। सब किछु नाटक-जकाँ प्रतीत भेल। दू टा सम्प्रभुता संपन्न देशक बीच, जकर बीचक सीमा हजारो माइल लम्बा होइक, एकटा गेट पर कतहु एहन हास्यास्पद नाटक होइ। हमरा तँ ई नाटक निंदनीय आ 'स्टेज-मैनेज्ड' शो-जकाँ लागल। सत्यतः, जँ परेडक दृष्टिएँ देखिएक तँ परेडक स्तरकें हम साधारण कहबैक। खैर, सूर्यास्तक बेर भेलैक। दुनू देशमे मिलिटरी रिट्रीटकेर विगुल बाजल। दुनू राष्ट्रीय ध्वज सब नियमतः ध्वज-दंडसँ उतारल गेल। सीमांत दुनू दिस दुनू देशक समानान्तर गेट बंद भेल आ वर्षहुसँ होइत एहि एकमात्र दैनिक तमाशाक अंत भेल। हम पाकिस्तानक क्षितिज पर डूबैत सूर्यकें देखलहुँ। भारतहुमे तँ एहने सूर्योदय सूर्यास्त होइत छैक, सोचैत छी। तखन ई विभाजनक रेखा? दर्शक लोकनि गेट लग जा कय फोटो घिचबैत गेलाह आ सब घरमुँहा भेल। हमरो लोकनि स्थानीय अफसरसँ हाथ मिलाओल, धन्यवाद देलियनि आ अमृतसरक बाट धयल।

मध्यप्रदेश

हिंदुस्तान का दिल देखो-1

इंदौर, उज्जैन आ ओंकारेश्वर

.....उज्जैन के संत देखो
बौद्धिक महंथ देखो
खजुराहो शिल्पकारी देखो
भीमबैठका कलाकारी देखो
धर्मों की महफिल देखो
हिन्दुस्तान का दिल देखो..।

मध्यप्रदेश पर्यटनक प्रचारक एकटा सुपरिचित विडियोक ई संक्षिप्त अंश थिक। पर्यटनक प्रचारक डेढ़ मिनटकेर ई विडियो आकर्षके टा नहि छैक, ई मध्यप्रदेशक सब प्रमुख पर्यटन स्थलकें सेहो समेटने अछि। किन्तु, एहि प्रचारमे सम्मिलित सब स्थानकें एक बेरमे देखब तँ ककरो लेल सम्भव नहि। हमरा तँ एखन धरि भोपाल रेलवे स्टेशन छोड़ि मध्यप्रदेशमे किछुओ नहि देखल छल। सेहो संयोगे। सेनाक सेवाक पहिल पोस्टिंगक आरम्भ पूर्वोत्तर भारतक सीमान्तसँ केने रही। पछाति सियाचिनसँ ल' कय तमिलनाडु धरि भारतक माटि माथमे लगाओल। किन्तु, 'हिन्दुस्तान का दिल' देखब तैयो बांकीए छल। एहि बेर (2019 मे) अखिल भारतीय नेत्र-चिकित्सा संघकेर वार्षिक अधिवेशन इंदौरमे भेलैक। फरवरी मास, अनुकूल समय आ हमरालोकनिक अकाडमिक कैलेन्डरमे खाली समय। प्रोग्राम बनि गेलैक।

बूझल बात : अपन राष्ट्रकेर प्रशस्ति, के नहि सुनने रहैछ। हमरो लोकनि सुनने छी। किन्तु, पर्यटन सम्बन्धी बहुतो गप्प तखने बुझबामे अबैत छैक जखन अपने घूमी फिरी। आब यूरोप, अमेरिका, आ दक्षिण पूर्व एशिया देखलाक पछाति भारतमे पर्यटनक आनन्द आ असौकर्य दुनूक अनुभव भेल। किन्तु, जँ सबटाकें

जोड़िकय देखियैक, तँ, इएह अनुभव भेल जे देश आ विदेश दुनू पर्यटनक भिन्न-भिन्न स्वाद होइतो अपना देशक पर्यटन सब मामलामे उत्तम थिक। थोड़ खर्च, झलकौआ! अपनो देशमे पर्याप्त टाका हो, तँ, हवाई जहाज पर उड़ू, फाइव स्टार होटलमे रहू। बजट सीमित हो, तँ, ट्रेनसँ यात्रा करू आ धर्मशाला-होस्टल-बजेट होटल वा सर-सम्बन्धीक ओतय राति बिताउ, आ दिनमे दुनिया देखू, तीर्थ करू। समाजक असली दर्शन तँ तखने हयत जखन मनुक्खक बीचमे यात्रा करब। असुविधा-असौकर्य हयबे करत। गंगा-यमुनामे डूब देबैक तँ नदीक जलक संग धूल-माटि, थाल-कादोसँ कोन परहेज। आखिर सबटा तँ थिक अपने देशक माटि!

आब मध्यप्रदेशक गप्प करी। वर्ष इसवी 2000 धरि जाधरि मध्यप्रदेशक विभाजन नहि भेल रहैक, ई राज्य क्षेत्रफलक अनुसारें देशक सबसँ पैघ राज्य छल। एखनो आकारमे छोट नहि। एहि बेर हमरालोकनि केवल इंदौर, उज्जैन, ओंकारेश्वर आ भोपालक प्रोग्राम बनौने छी। पचमढ़ी सेहो जेबाक प्रोग्राम छल। किन्तु, से सम्भव नहि भ' सकल। किन्तु, तकर गप्प पछाति।

इंदौर

इंदौर मध्य भारतक आर्थिक केंद्र, मध्यप्रदेशक सबसँ पैघ शहर आ होल्कर वंशक भूतपूर्व राजधानी थिक। एखनुक युगमे पछिला तीन वर्षसँ ई शहर भारतक सबसँ स्वच्छ शहरकेर ताज सेहो पहिरने अछि। आ से उचितो, से बूझि पड़ल। सत्यतः, इंदौर वाणिज्य-व्यापारक केंद्रक अतिरिक्त आधुनिक शिक्षाक केंद्रक रूपमे सेहो सुपरिचित अछि। किन्तु, पर्यटनक दृष्टिएँ शहरक भीतर बहुत आकर्षण प्रायः नहि छैक। एतुका सर्राफा बाजार फूड मार्केट भोजन-प्रेमी लोकनिक बीच प्रसिद्ध अछि। ई बाजार राति 9 बजेसँ भोरहरबा धरि चलैछ आ स्थानीयसँ ल' कय पर्यटक लोकनि धरिक बीच अत्यन्त लोकप्रिय अछि। मैथिलीमे कहबी छैक, भोजन लेल 'जुरब, रुचब आ पचब' तीनू आवश्यक। से जँ नहि हो, तँ, देह लगा कय मारू। अस्तु, एहि मार्केटकें हमरालोकनि दूरहिसँ नमस्कार कयल। किन्तु, बहाना तँ किछु चाही। से जाड़क ऋतु आ रातुक समयमे भेटि गेल, आ संतोष करैत होटलक भोजनसँ पेट भरल आ कल्याण करोट देल। जिनगी-जान बचल तँ फेर कहियो। दोसर दिन कजराना गणेशक दर्शन कयल।

एकर अतिरिक्त रजबाड़ाक संग्रहालय सेहो देखय गेलहुँ। किन्तु, एखन रजबाड़ाक मरम्मतिक काज चलि रहल छैक, तें गेट बंद रहैक। अतः, इंदौरक भ्रमणक इतिश्री एतहि भ' गेल आ हमरालोकनि सोझे उज्जैन विदा भ' गेलहुँ।

उज्जैन

उज्जैन कतेक पुरान अछि तकर पचड़ामे नहिओ पड़ी, तँ, एतबा तँ अवश्य जे उज्जैनक इतिहास बड़ पुरान छैक। सुनैत छी, एहि ठाम ईसासँ 6-7 शताब्दी पूर्व बस्ती हेबाक पुरातात्विक प्रमाण भेटल छैक। एहिसँ बहुत बादो, तुर्क-अफगान-मुगलकेर भारतपर आक्रमणसँ पूर्व, एतय अनेक प्रसिद्ध राजवंशक प्रमाण भेटैत अछि। किन्तु, हमरा उज्जैनक नामसँ पहिल परिचय तहिया भेल छल जहिया हाइस्कूलमे रही आ कालिदासक अमर काव्यकृति 'मेघदूत'क पंडित रामचन्द्र झा 'चन्द्र' रचित मैथिली अनुवाद 'मेघदूत काव्यक छाहरि' पढ़ने रही। मेघदूतक पूर्वमेघ खण्डमे उज्जैनक अनेक प्रसंग अबैत छैक। जँ, कालिदासक मेघदूतसँ परिचित नहि होइ, तँ, एतय एतबे बूझि लियअ जे मेघदूत कविकुलगुरु कालिदासक सुप्रसिद्ध रचना थिक। एहिमे राजाक कोपें अपन देशसँ वर्ष भरि लेल निर्वासित भेल यक्षकेर कथा छैक। रामगिरि नामक पर्वतपर निर्वासनक दण्डकें भोगैत यक्षकें आषाढ़ मासमे आकाशमे उमड़ल मेघकें देखि मेघहिक माध्यमसँ अलकापुरी स्थित अपन प्रियतमाकें संदेश पठयबाक भाव मोनमे जगैत छनि। फलस्वरूप, कालिदास यक्षकेर दिससँ, एक दिसाहे, मेघसँ गप्प करैत छथि आ मेघकें अलकापुरी धरि जयबाक बाट आ जीवनक आओर कतेक रहस्य बुझबैत छथिन। मेघकें यात्राक बाट देखयबाक एहि क्रममे कालिदास कतेको नगर, पर्वत, नदी, नारि, आ समुदायक वर्णन सुनबैत छथिन। आब कालिदासेक मुँहसँ उज्जैनक कनेक वर्णन सुनि लिअय। यक्ष मेघकें कहैत छथिनः

'अलकापुरी जयबा लेल अहाँकें उत्तर दिशामे जयबाक अछि। उज्जैन ओहि बाटसँ कनेक पश्चिम छैक। किन्तु, तें की! उज्जैन जाइ अवश्य। उजैन केर वर्णन असम्भव छैक.' से कहितो कालिदास उज्जैनक प्रशंसामे कोनो कोर-कसर बांकी नहि छोड़ने छथि। ततबे नहि, आगू कालिदास उज्जैनक महाकालक चर्चा करैत मेघकें महाकाल मन्दिरक सांयकालीन आरतीक समय बाजयबला नगाड़ाक चर्चा करैत, अपन 'नगाड़ाक ध्वनि-सँ अपन गर्जन' क संग आरतीमे सम्मिलित हेबा लेल प्रेरित करैत छथिन। सत्यतः, एहन इतिहास विदित नगर आ तकर समीप जा कय काते-कात चल आबी, से असम्भव। अस्तु, हमरो लोकनि उज्जैन देखय आयल छी।

फरवरी मासक मध्य आ दुपहरियाक समय। एखन धरि रातिमे जाड़क अनुभव, भोरमे शीत समाप्त नहि भेल छैक। यद्यपि दुपहरियाक रौदमे गर्मी मासक तेजी आबय लागल छलैक। विकिपीडिया कहैत अछि उज्जैन मध्यप्रदेशक सातम सबसँ

पैघ नगर थिक। नगर जतेक टा हो, महाकाल एहि नगरकेर केंद्र विन्दु थिकाह। दुर्भाग्य एहन जे प्रत्येक धर्म-स्थलमे मनुक्खक तेहन ने रेड़ा होइछ जे धार्मिक-स्थलक धार्मिकता आ शान्ति कर्पूर जकाँ वायुमे विलीन भ' जाइछ। से अपना इलाकाक विदेश्वरसँ ल' कय वैद्यनाथ, तिरुपति सब ठाम देखबामे आओत। जतय जतेक अव्यवस्था, ततय ततेक कष्ट। संयोगसँ, बितैत समयक संग ई रेड़ा बढ़इते गेलैए। सुधरैत आर्थिक स्थिति आ यातायातक सुविधा आ जनसंख्या वृद्धि एहि परिवर्तनक जड़िमे अछि। बढ़इत भीड़कें जनमानसक धार्मिकतासँ कोनो सरोकार नहि छैक। एखन कोनो पर्व त्यौहारक समय नहि। तथापि, उज्जैनमे दर्शनक टिकट लेल मारामारी रहिते छैक, तकर सूचना इंदौरहिमे होटलक मेनेजर द' देने छलाह : 'महाकालक भस्म-आरती देखबाक हो, तँ, टिकट चाही। से सोझे भेटब मोसकिल। चाही तँ दू-दू हजारमे टिकट भेटत। हम व्यवस्था क' सकैत छी।' हमरालोकनि अढ़ाइ-अढ़ाइ सौ टाकाक दर्शनक दू टा टिकट इन्टरनेट पर किनिए कय पांडिचेरीसँ विदा भेल रही। किन्तु, भस्म-आरतीक टिकट तँ नहि छल। हमर अपन धारणा अछि जेबमे जँ बेसी टाका रहैत छैक, तँ, पाप हेबाक सम्भावना बढ़ि जाइ छैक। संभव छल, होटलक मैनेजर द्वारा ब्लैकमे आरतीक टिकट किनबाक प्रस्ताव पर, कदाचित, मुँहसँ 'हँ' निकलि जाइत! फेर कहिया उज्जैन आयब!! किन्तु, एहि प्रलोभन पर ब्लैकमे आरतीक टिकट किनबाक विचार हमरा मोनमे एकदम नहि आयल। अस्तु, निर्णय कयल जेना हयत, सोझे दर्शन करब। आम दर्शनक टिकट तँ छले। पहिने पांडिचेरीसँ चलबासँ पूर्व इन्टरनेटपर भस्म-आरतीक टिकट कटयबाक प्रयास विफल भ' गेल छल। इंदौरमे रहैत पुनः प्रयास कयल तँ सब सीट फुल। अस्तु, उज्जैन पहुँचि सोझे मन्दिर पर जा कय प्रयास करबाक विचार भेल। बाटमे टैक्सी ड्राइवर कहलनि, मन्दिरक काउंटर पर भस्म-आरतीक टिकट दिनक बारहे बजे बंद भ' जाइत छैक। तथापि, होटलमे सामान राखि, मन्दिर धरि जा कय एक बेर अपने प्रयास करबाक विचार भेल। अस्तु, टेम्पो लेलहुँ आ मंदिरक टिकट काउंटर धरि गेलहुँ, तँ, आश्चर्य लागि गेल। दिन केर करीब तीन बजैत रहैक। टिकट-बुकिंग ऑफिस खूजल छलैक। मोसकिलसँ तीन-चारि टा दर्शनार्थी। लाइनमे लागि गेलहुँ। दू टा फॉर्म भरिकय देलियैक। किन्तु, आवेदक केर पहचान-पत्रक जाँच होइत छैक, फोटो लेल जाइत छैक। पहिने राजनेता ब्लैक कैट कमांडो ल' कय चलैत छलाह। आब देवी-देवता सेहो सुरक्षाक घेरामे छथि। हमरा लग दू टा आवेदन-पत्र छल। किन्तु, तत्काल एसगरे रही। ताहिसँ काज नहि चलैत। अस्तु, होटल वापस आबि पत्नीके संग कयल आ अगिला भोरुका भस्म-आरतीक हेतु

मुफ्तमे दू टाका टिकट लैत तेना आपस अयलहुँ जेना कोनो युद्ध जीति नेने होइ! चारि हजार टाका, आ सरकारक व्यवस्थामे विश्वास बचि गेल, आ घूस द' कय दर्शन करबाक पाप आ पश्चातापसँ सेहो बचि गेलहुँ। लेकिन जनिका आस्था छनि, तनिका विचारें घूस-देनिहार आ घूस लेनिहार दुनूक जनक तँ ईश्वरे थिकाह। तें, हमरा मतें, सब किछुक जनक विश्वासे थिक!

हमरा सब काल्हिए एतयसँ चलि जायब। भस्म-आरतीमे शामिल हयबा लेल रातिमे एक बजेसँ भोरुक छौ बजे तक तँ जागहि पड़त। अस्तु, आब उज्जैन देखबाक व्यवस्था करी। होटलक बाहर एकटा टेम्पोबला युवक भेटलाह। कहलनि, साढ़े तीन सौ टाका आ मुख्य दर्शनीय-स्थल सबहक फैलसँ दर्शन। बेरुक पहर रहैक। जाड़क मृदु रौद। भीड़-भड़क्काक नाम नहि। आओर चाही की। भीड़ हमरा पसिन्न नहि। टेम्पो चालकक नाम मोहम्मद। एतुके वासी थिकाह। बारहवाँ धरि पढ़ने छथि। किन्तु, अंग्रेजीमे फेल भ' गेलाह। एतय प्रायः 'कर्पूरी डिवीजन'-सन बारहवाँ'क परिपाटी नहि छैक। अगिला बेर फेर परीक्षा देबाक विचार छनि। टूरिस्ट गाइडकेर पढ़ाइ उज्जैनमे नहि छैक। बाहर जा कय पढ़बाक उपाय नहि। तथापि, एतुका मुख्य स्थल सबहक मोटा-मोटी ज्ञान छनि। ताहीसँ टेम्पो आ टूरिज्मक व्यवसाय सम्हारैत माता-पिताक सहयोग करैत छथि। हमरालोकनि एतुका परिसरसँ अपरिचित छी। अस्तु, सब किछुक सूचना दैत चलथि तँ नीक। हमरालोकनि सबसँ पहिने शहरसँ बाहर संदीपन मुनिक आश्रम गेलहुँ।

संदीपनी आश्रम

जनश्रुति छैक, कृष्ण-बलराम एतय संदीपन मुनिक आश्रममे रहि आरंभिक शिक्षा ग्रहण केने रहथि। परिसरमे कृष्ण-बलरामक शिक्षाक सांगोपांग आधुनिक झांकीक मण्डप, शिवालय, जलाशय, वैष्णव संत वल्लभाचार्य एवं हुनक परवर्ती वैष्णव वंशज लोकनिक जीवन-वृत्तिक चित्र-वीथी आ बगीचा छैक। तें, उज्जैन वैष्णव लोकनिक तीर्थ सेहो थिक। सुनबामे आयल, एतुका विशाल (करीब तीन फुट ऊँच, तीन फुट व्यास केर) शिवलिंग हजारो वर्ष पुरान छैक। किन्तु, असली ऐतिहासिकता लेल प्रामाणिक, मानक श्रोतकें ताकी, से हमर विचार। शिवलिंग आकारमे भले छोट-पैघ होइक, हमरा जनैत, शिवलिंगक विशिष्ट छवि तँ कतहु होइत नहि छैक। पाथरक प्रकार, लिंगक आकार, वा वर्णमे भले अन्तर होइक। एकर चर्चा पुनः हेतैक।

मंगलनाथ

मंगलनाथ उज्जैनकेर ग्राम देवता थिकाह। मंगलनाथ शिव केर मन्दिर शहरसँ बाहर क्षिप्रा नदीक कछेरपर अवस्थित छनि। मंदिरक निर्माण ऊँच आधारपर भेल छैक। तें, मन्दिर धरि जेबा लेल कम-सँ-कम पचास सीढ़ी तँ चढ़हि पड़त। से संभव नहि हो, तँ, दूरेसँ महादेवकें हाथ जोड़ू आ आपस भ' जाउ। हमर पत्नी सएह कयलनि। अन्यथा, मन्दिरक परिसरसँ समीपस्थ नदी आ धानक खेत, आस-पासक इलाकाक नीक विहंगम दृश्य देखबामे आओत। हम जखन मंगलनाथ मन्दिरपर पहुँचल रही, सूर्यास्त हेबापर रहैक। पश्चिमक क्षितिज पर निस्तेज सूर्यक केवल विशाल लाल गोला आ क्षिप्रा नदीमे ओकर प्रतिबिम्ब धरि दिनान्तक प्रमाण छल। क्षिप्रामे पानि छलैक, प्रवाह नहि। मनुक्खक स्वार्थ नदी सबकें प्राणहीन आ सूर्य-चन्द्रमाकें निस्तेज क' देने छनि। तथापि एखन एतय सूर्य, आ पानिमे हुनक प्रतिबिम्ब, एकाकार भ' गेल रहैक। नदीक कछेरपरसँ दूर क्षितिजपर सूर्यक गोलाक आ समीपक धानक खेतक हरियरी घनीभूत होइत छायामे करिछोंह भ' चुकल रहैक। हमरा पुनः मेघदूत मोन पड़ल। कालिदासक शब्दमे, उज्जैनमे सूर्यास्त कालक वर्णन करैत, कथा-नायक निर्वासित यक्ष, मेघकें कहैत छथिनः 'सूर्यास्तकालक रक्ताभ अरुणक किरणसँ तोहर श्याम वर्ण शोणित टपकैत, ओहन टटका गज-चर्म-सन भ' जयतह जेहन गज-चर्म तांडव-नृत्यक समय शिव धारण करैत छथि। एहिसँ शिवकें नव गज-चर्मक आभास तँ भइए जेतनि, शिवकेर संगिनी उमा रक्तरंजित गज-चर्मकें देखबाक संतापसँ सेहो बचि जेतीह। पार्वती तोरा अनिमेष देखैत रहथुन तकर जे लाभ तोरा हेतह, से तँ फूटे!' जे किछु। कवि आ कालिदासकें सब किछु माफ छनि!

हमहूँ भारतवर्षमे अनेक ठामक सूर्योदय-सूर्यास्त देखने छी। शिमलाक सघन-श्यामल जंगलक आगाँ, समीपक गहींर उपत्यकाक दोसर पार, दूर क्षितिजपर डूबैत सूर्य हमरा अपूर्व लगैत छलाह। हमरा मोन अछि, तीन वर्ष शिमला प्रवासमे हम लोंगवुड इलाकाक अपन आवास लग, अपने टहलैत, कुकुरकें टहलबैत, वा आन काजें कार्ट-रोडक तिमुहानीपर सूर्यास्तकालमे जखन कखनो ठाढ़ होइ आ पश्चिम क्षितिजपर नजरि पड़ैत छल, मन मुग्ध भ' जाइत छल। लगैत अछि, शिमला-सन सूर्यास्त भारतमे कदाचिते आन ठाम होइत होइक। आब पिछला छौ वर्षसँ समुद्र-तटपर सूर्यास्त देखैत आबि रहल छी। कन्याकुमारीक तट पर सूर्योदय-सूर्यास्त देखबा लेल पर्यटक लोकनि कतेको टाका खर्च करैत छथि। किन्तु, समुद्रतट पर भोर आ साँझमे बेसी काल मौसम मेघाओन भ' जाइत छैक,

आ कइएक दिन घंटोसँ प्रतीक्षारत पर्यटक, अन्ततः, हियाहारुण भ' आपस जाइत छथि। किन्तु, क्षिप्रा नदीक कछेरपर उज्जैनक ई सूर्यास्त सेहो बहुत दिन धरि मोन रहत। हँ, अपना गामक कमला कातक बाधक पश्चिम क्षितिज पर, शरद ऋतुमे दूर-दूर धरि पसरल हरियर धानक समुद्रक ऊपर होइत सूर्यास्तकें देखब जुनि बिसरी। आसिन-कातिक मासमे धानक बाधक-'किरण'जीक 'सारि-वारिधि'* क-ऊपरक सूर्यास्तक आभाक कोनो जोड़ नहि!

भैरवनाथ

मंगलनाथ शिवालयसँ बेसी दूर नहि, क्षिप्रा नदीक दोसर कछेर पर, भैरवकेर एकटा प्राचीन मन्दिर छनि। मन्दिरक आगाँ तेतरिक गाछ। आगू, मन्दिरक समानांतर सोझ सड़क। सड़कक दोसर पार, मन्दिरक ठीक सोझाँ देशी-अंग्रेजी शराबकेर अजस्र दोकान। एतुका भैरव केवल मदिरा पिबैत छथि! भक्त लोकनि मदिराक बोतल खोलि द्रवकें भैरवक छविक नीचाक बिलमे ढारि दैत छथिन, आ मदिरा बहि-कय कतय जाइछ, जानथि भैरव! वा भैरवक पंडा!! हमरा एहि कर्मकांडमे कोनो विश्वास नहि। अस्तु, मन्दिर देखल आ आपस भेलहुँ। संयोगसँ ई भैरव मध्यप्रदेशमे डेरा जमौलनि। बिहार वा गुजरात-सन मद्य-निषेधित प्रदेशमे होइतथि तँ चाहे डेरा डंडा तोड़ि बाहर भगितथि वा चोर-उचक्का-पुलिस पटेलक हाथ-पयर जोड़ितथि! रक्ष रहलनि!!

गढ़कालिका

उज्जैन नगरकेर बाहर, क्षिप्रा नदीक दक्षिण, कालीक ई मन्दिर उज्जैनक प्रमुख दर्शनीय-स्थलमे परिगणित अछि। हमरालोकनिक गढ़-कालिका पहुँचैत-पहुँचैत झलफल भ' गेल रहैक। भीतर गेलहुँ तँ मन्दिरमे आरती आरम्भ भ' गेल रहैक। हमरो लोकनि सम्मिलित भ' गेलहुँ। काली देखलामे प्राचीन लगलीह। कलकत्ताक काली-जकाँ पूजाक हेतु केवल छविए-टाक प्रतीक स्थापित छनि। से बेस पैघ, विशालाक्षी। बनावटमे भैरव आ कालीक छविक शैली एके। मुदा, ई मन्दिर आ स्थान कतेक पुरान, से कहब कठिन। मन्दिरमे समय-समय पर मरम्मति भेलैए, से प्रत्यक्ष छैक। लोकक कहब छैक, कविकुलगुरु कालिदासक अधिष्ठात्री भगवती इएह थिकी। किन्तु, पहिने ई तँ निश्चय भ' जाय, कालिदास छलाह कतय केर! मिथिलामे लोक-मान्यता छैक उच्चैठक भगवती कालिदासक इष्ट थिकी। बंगाल,

* 'सारि' मिथिलामे प्रचलित धानक प्रकार सबमे एक थिक

कश्मीर, दक्षिण भारत, सब ठाम, कालिदासक जन्मस्थानक प्रति भिन्न-भिन्न धारणा छैक। किछु, जनश्रुति काल-क्रमे मुद्रित इतिहास आ ग्रंथक अंग भ' जाइछ। लोककंठमे बसल किछु जनश्रुति नदीक पानि-जकाँ निरंतर बहैत रहैछ। उज्जैनमे बहैत एही जनश्रुति सबहक स्वाद आइ एहि टेम्पो चालक मोहम्मदक मुँहें सुनल, रनिंग-कमेन्ट्रीसँ लेल।

ओंकारेश्वर

ओंकारेश्वरक गणना द्वादश ज्योतिर्लिंगमे छनि। नर्मदाक कछेरपर स्थापित नर्मदेश्वरक मन्दिर नर्मदाक पेटमे एकटा द्वीपपर, पहाड़क ऊपर, नदीक खड़ा कछेरक कगनी पर छनि। लोक-विश्वासक अनुसार ई द्वीप ॐ केर आकारक अछि। किन्तु, से मिथ्या। विश्वास नहि हो तँ 'गूगल अर्थ' देखि लियअ। द्वीप त्रिभुजाकार छैक। पहिने जहिया एतय नदी पर पुल नहि रहैक, लोक नाहपर नर्मदा पार करैत छल आ ज्योतिर्लिंगक दर्शन करैत छल। बरसात आ बाढ़ि-सन विपरीत परिस्थितिमे से संभव नहि भेलापर नदीक पछबरिया कछेरपर स्थित दोसर शिवलिंग-मामलेश्वरक दर्शन कय लोक संतोष करैत छल। अस्तु, एतय लोक ओंकारेश्वर आ मामलेश्वर दुनूकें ज्योतिर्लिंगक संज्ञा दैत छनि। शास्त्र-सम्मत की छैक, से, शास्त्र पढ़निहार बुझथु।

हमरालोकनि करीब साढ़े आठ बजे भोरमे उज्जैनसँ ओंकारेश्वर लेल विदा भेल रही। रास्तामे चाह-पानि करैत करीब एक बजे ओंकारेश्वर पहुँचल रही। बाटमे तीन टा घाटी अबैत छैक। संगहि, ई सड़क महाराष्ट्र धरि जयबाक टौल-फ्री सड़क थिक। तें, भारी-वाहनक ट्राफिक भेटब उचिते। टैक्सी चालक सचढ़ अछि, से नीक। पहाड़ी रास्ता पहिने जंगली छल हेतैक। किन्तु, आब जे किछु गाछ-वृक्ष छैक, से सब नव रोपल। सब ठाम सुखायल जारनि-सन जीवनहीन, सुखायल गाछ। हरीतिमा आ जलस्रोतकेर नितांत अभाव। बरखा ऋतुमे दृश्य अवश्य भिन्न होइत हेतैक। इंदौर शहरकेर समीप आइ आइ टी सेहो एही बाट पर पड़ैत छैक। मीटर गेज रेलवेक एकटा सिंगल लाइन सेहो एहि बाटे महू छावनी दिस जाइत अछि। आओर आगू गेलापर ओंकारेश्वरसँ किछु किलोमीटर पहिने माहेश्वर नामक तीर्थ आ शहर दिस, दहिना रास्ता फुटइत छैक। माहेश्वरहिसँ स्थानांतरित कय होल्कर लोकनि अपन राजधानी इंदौर शहर अनने रहथि। एखनो माहेश्वर विशिष्ट शैलीक सूती साड़ीक उत्पादन लेल प्रसिद्ध अछि। किन्तु, हमरालोकनि माहेश्वर नहि जायब। अस्तु, सोझे ओंकारेश्वर दिस आगू बढ़लहुँ।

ओंकारेश्वर शहर थिक वा गाओं, से कहब कठिन। किन्तु, बहुतो आन ठाम-जकाँ आब एतहु शहर आ गाँवक अंतर शीघ्रे समाप्त भ' जेतैक। एतय हमरालोकनि मार्कण्डेय संन्यास आश्रममे डेरा देब। हमर जमाय सिद्धार्थजीक परिवार एहि आश्रमक शिष्य थिकाह। हमरालोकनि हुनके लोकनिक अनुशंसापर एतय डेरा देबाक निर्णय केने छी। जखन हमरालोकनि मार्कण्डेय संन्यास आश्रममे पहुँचल रही, दिन केर करीब एक बजैत रहैक। भोजनक बेर बीति चुकल छैक, तथापि, एतुका व्यवस्थापक-श्री रमण चैतन्य-सादर भोजन करओलनि। बहुत दिनक पछाति कोनो आश्रममे रहबाक मौका लागल अछि। एहिसँ पूर्व 2001मे पांडिचेरीक अरविंद आश्रममे दू राति रहल रही। एतुको अनुशासन एक रंगाहे। नर्मदाक कछेर पर, पीपरक गाछ तर, दोमहला भवनक निचला तल पर एकटा साफ-सुथरा, सादा कोठली। दूटा खाट, ओढ़ना, बिछाओन। अटैच्ड बाथ, वेस्टर्न कमोड आ बेसिन। पाँच बजे भोर घंटीक संग चाय आ थोड़-सन घुघनी, पोहा, हलवा वा आन किछुक नाश्ता। एगारह बजे भोजन। तीन बजे चाह आ किछु जलपान। रातुक सात बजे भोजन। पाँतिमे ठाढ़ होउ, भोजन लियअ। डाइनिंग-हॉलमे आसनपर, दोसर कोठलीमे कुर्सीपर, वा मण्डपमे भूमि पर बैसि भोजन क' लियअ, आ गोइठाक छाउड़सँ थारी-बाटी-गिलास मांजि यथास्थान राखि आउ। परिसर सर्वथा शांत, चानन छिलकैत स्वच्छ। कएक टा मजरल आमक गाछ, धात्रीक गाछ, फूल-पत्ती, लता-वितान। परिसरमे एकटा शिवालय। मोन हो, तँ, भोर-साँझ नियत समयपर शिव-महिम्न स्तोत्रक पाठ आ आरतीमे शामिल होउ। एकर अतिरिक्त आदिशंकर केर एकटा मन्दिर, छात्रावास, गोशाला, डोर्मिटरी, सोलर पैनल, आ औषधालय। परिसरक नीचा, नदीक धार आ आश्रमक बीच, करीब चौथाइ किलोमीटर लम्बा आ सौ मीटर चौड़ा पक्का घाट। नर्मदाक उत्तर, आश्रमक आगू दहिना दिस नदीक खड़ा कछेरपर, पुलक पार ओंकारेश्वर तीर्थ, आ ओहिसँ आओर दूर दहिना दिस डैम। एहि हाइड्रोइलेक्ट्रिक डैमसँ समय-समय पर नदीमे पानि छोड़ल जाइत छैक जाहिसँ जलक आपूर्ति आ बिजलीक उत्पादन दुनू होइछ।

आइ हमरालोकनि आश्रमहिमे आराम कयल। किन्तु, हमरा टहलानक बिना रहि नहि होइछ। अस्तु, साँझमे टहलैत समीपक बाजार धरि गेलहुँ। बाजारमे अनेको धर्मशाला, होटल, छोट-पैघ दोकान, आ मन्दिर। देखलासँ ई गाओं नेपाल वा उत्तरांचलक कोनो छोट-सन पहाड़ी तीर्थ आ गाओं-सन लागल। छोट-छोट दोकान। सस्ता सामान। हमरा तँ बिसरि गेल छल, पाँच टाकामे गरम सिंघाड़ा, आ दस टाकामे चूड़ाक पोहा, आ पचास टाकामे दू गोटेक हेतु सिंघाड़ा-जिलेबी-पोहा भेटैत

होइ! पांडिचेरीमे तँ दू वर्ष पहिने, जी एस टी लागू भेला पर, छत्तीस टाकामे एकटा सिंघाड़ा किनने छलहुँ, से नहि बिसरल अछि। शहरमे खूब सफाइ। माछी-मच्छरक प्रकोप नहि। नदीक किनार पर नदीक जलक शुद्धताक डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड आकर्षित कयलक। सड़क सब सेहो खूब चौड़ा आ साफ। बिहारमे तँ एहन व्यवस्था एखन सपने अछि। मुदा, तैयो एतुका सरकार चुनावमे पराजित भ' गेल! जनता-जनार्दनक इच्छा!!

ओंकारेश्वरक मन्दिर

मार्कंडेय आश्रमसँ ओकारेश्वरक मंदिर गोटेक किलोमीटरक भीतरे हेतैक। किन्तु, पहाड़ी चढ़य पड़त। तें, दोसर दिन भोरे एकटा टेम्पो किराया कयल आ ओंकारेश्वर मन्दिरक समीप गेलहुँ। मन्दिरक बाट एकटा पक्का झूला पुल (सस्पेंशन ब्रिज) बाटें छैक। तीर्थयात्री लोकनिमे मराठी लोकनिक बहुलता। मन्दिरक बाटमे एकटा मराठी दाता द्वारा निर्मित विशाल धर्मशाला-गजानन धर्मशाला देखबामे आयल। पुलक दोसर पार मन्दिरक बाटमे फूल-पत्ती-बेलपातक बिक्री। मन्दिर ट्रस्ट द्वारा संचालित प्रसादक दोकान। भीड़ एकदम नहि। फूल-पात सस्ता। छोट-स्थान आ गाओंमे लोककें अपन खर्चाक अलावा लोभ सेहो कम होइत छैक; संतोषम् परमं सुखम्। परसू मंगलनाथमे जतबा फूल सौ टाकामे किनने रही, एतय दस टाकामे भेटल। दर्शनमे कोनो धक्कम-धुक्की नहि। तें, हमर पत्नी तीन दिनमे तीन बेर दर्शन केलनि। संगिनी छथि तँ हमहूँ संग देलिअनि आ दाम्पत्य-धर्मक निर्वाह कयल।

गुलाबी रंगक सैंडस्टोनक ओंकारेश्वरक मन्दिर। एतय स्थानक अभाव छैक। तें, मन्दिर आकारमे छोट। गर्भ-गृह सेहो 5 गुणा 4 फुट। शिवक विग्रह, लिंगक आकारक नहि। शिवक प्रतीक पिंड 'वोल्कानिक-रॉक' जकाँ प्रतीत होइछ। एतय रहिते अखबारमे नजरि पड़ल, एतुका एखनुका गर्भ गृह केर नीचा एकटा चैम्बर भेटलैक अछि। प्रायः आक्रमणकारी सबहक भयसँ प्राचीन शिवलिंग ओही तहखानामे नुकाओल होइक। ओहि कक्षकेर फाइबर ऑप्टिक स्कोप द्वारा जाँच पड़ताल जारी छैक। सत्य की छैक, समय कहत। ओंकारेश्वरक दर्शनक पछाति मामलेश्वरक दर्शन सेहो केलहुँ। एहि मन्दिर परिसरक कएक टा मन्दिर ढहि रहल छैक। जीर्णोद्धारक काज चालू छैक। सरकार आ समाज सजग अछि, से लागल। आखिर एतुका जनताक जीविकाक स्रोत तँ मन्दिर आ नर्मदाए थिकी। ओहुना 'नर्मदे हर!' एतुका सुपरिचित अभिवादन थिकैक।

नमामि देवि नर्मदे! : नर्मदामे झिलहरि

नर्मदा आ नर्मदाक प्रति एतुका लोकक निष्ठा आ भक्तिसँ कविकोकिल विद्यापतिक एकटा पाँती मन पड़ैत अछिः

बड़ अपराध क्षमब मोहि जानि
परसल माइ पाय तुअ पानि।

एतहु रेवा वा नर्मदाक प्रति लोकक तेहने भाव छैक, जेना हमरालोकनिकें कमला, कोशी वा गंगा माइक प्रति अछि। मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र आ गुजरातमे तँ नर्मदाक बामा कछेर पर, अमरकंटकसँ भरूच, आ पुनः नर्मदा पार कय नदीक दाहिना कछेर पर, पूबमुँहें चलैत भरूचसँ अमरकंटक धरि नर्मदा परिक्रमाक परम्परा छैक। एहना परिस्थितिमे नर्मदामे मनोरंजन, शैलानी टा केर उद्देश्य भ' सकैछ। हम पर्यटक छी। हमर पत्नी पर्यटक आ भक्त दुनू छथि। किन्तु, नर्मदा-भक्त नहि। तें, एहू नदीक जलक स्पर्श करी। नदीक तलहटीक भूमि पथरीला आ किनेरक खड़ा छैक। पानिक गहराइ कम। संगहि, नर्मदाक ऊपरी भागमे अनेक बाँधकेर कारण एतय नर्मदामे पानिक स्तर दिनमे कतेक बेर घटैत-बढ़इत रहैत छैक। मोटा-मोटी भोरुक समयमे नियमतः डैमकेर फाटक खोलि जखन पानि छोड़ल जाइछ, तँ पानिक स्तरमे 8-10 फुटकेर वृद्धि भ' जाइत छैक। ओहि समयमे बढ़ल पानिमे नदीक पेटमे जागल पाथर सब डूबि जाइछ। तें, बोटिंग लेल हमरा वएह समय अनुकूल बूझि पड़ल। आठ सौ टाका। दू टा नाविक आ दू टा यात्री। थोड़ेक मोल-मोलाइ तँ करहि पड़ल। एक घंटाक समयमे ओंकारेश्वर द्वीपक परिक्रमा कयल। ओंकारेश्वर द्वीप, एतय पूबसँ पश्चिम दिस बहैत, नदीकें दू धारामे विभाजित करैछ। नदीक दाहिना भागकें एतुका लोक कावेरी कहैछ, आ बामाकें रेवा वा नर्मदा। दू किलोमीटरक भीतरे जतय दुनू धार पुनः एकाकार होइछ एतुका लोक ओही स्थानकें संगम कहि पवित्र बूझैछ, आ संगम-स्नान करैछ। हमरा सुनल छल, अमरकंटकसँ, गुजरातमे भरूच धरिक नर्मदा नदीक कोनो कोनो खण्ड मगरमच्छ लेल बदनाम अछि। यद्यपि, देवीक स्वरूपमे भव्य, नर्मदा-देवीकें सबठाम निर्भीक मकर वाहिनीक रूपमे देखबनि। तथापि, झिलहरिक दौरान जीव-जन्तुक नाम पर केवल कारी रंगक सिल्ली सब देखबामे आयल। माछकेर नाम निशान नहि। प्रायः, नदीक निरंतर दोहनसँ माछ विलुप्त भ' गेल होइक। किन्तु, नर्मदाक एहि खण्डमे मगरमच्छक कोनो भय नहि, से एतुका मलाह लोकनि सेहो कहलनि। ओंकारेश्वर मठक समीप नदीक गहराइ काफी हेतैक, किन्तु, एतय घड़ियालसँ ककरो कहियो कोनो अवघात भेलैए, सेहो सुनबामे नहि आयल। बेरुक पहर तँ, जखन नदीमे

पानि कम भेल रहैक, तँ, करीब प्रतिदिन पर्यटक लोकनिकें नदीक पेटमे पानिसँ ऊपर जागल पाथर सब पर तड़पैत, नदीमे जहाँ-तहाँ जाइत देखलियनि। एतय नर्मदाक पानि स्वच्छ छैक आ बहाव मन्द। कछेर सब पर नदी उत्थर छैक। तें, कतेक ठाम नाविक सब नाहसँ उतरि नाहकें घिचैत गेलाह। काज श्रमसाध्य छैक। ताहिपर नाहक मोटर लेल डीजलकेर खर्च अलग। अस्तु, आठ सौ रुपैया अपव्यय नहि बूझि पड़ल, आ संतोषपूर्वक नर्मदाक स्पर्शक मनोरथ पूर कयल। स्नान अगिला बेर अमरकंटकमे हेतैक। ताधरि, चरैवेति, कीर्तिनाथः!

हिंदुस्तान का दिल देखो-2

भीमबेटकाः भूमि पर मनुष्यक पहिल डेग?

मनुष्य जखन पृथ्वीपर आयल, केहन छल, तकर अनुमान हमरालोकनिकें पृथ्वीपर प्राणीक विकासक इतिहासमे भेटैत अछि। किन्तु, आरम्भमे प्राणीक रूपमे पृथ्वीपर मनुष्यक सोच आ गतिविधि की छल हेतैक तकर प्रमाण जतबे थोड़ छैक, अनुमान ततबे बेसी। सत्यतः, मनुक्ख कोनो एके दिन नियारि कय धरती पर तँ नहि पहुँचल। अनैश्वरवादी दृष्टिएँ, मनुष्य प्रकृतिक हजारो लाखो वर्षक अनायास प्रयोगक प्रतिफल थिक। तखन कोनो एकेटा मनुष्य, नियारिक' कोनो एके दिन बांकी आन सबहक प्रतिनिधि-जकाँ तँ रथपरसँ भूमि पर नहिए उतरल हयत। पृथ्वीक एकाधिक भागपर प्राणीक निरंतर विकासक फलक रूपमे अनेको मनुष्यक समूह अनेको ठाम ओहिना विकसित भेल हयत जेना भूमिपर एके प्रकारक चुट्टी, एक दोसरासँ सर्वथा पृथक अनेक महादेशमे, पृथक-पृथक रूपमे पाओल जाइत अछि। माने, सब ठाम एकटा असगरे वा छोट-पैघ झुण्डमे मनुक्ख जतय कतहु छल हयत, आने सब जीव-जकाँ अपन अस्तित्व लेल, अपन प्रकृतिएँ अपन आवश्यकता पूर कयने हयत। एहना परिस्थितिमे कतहु बियावान, आ कतहु भरल-पूरल पृथ्वीपर मनुष्य ओएह तकने हयत, जे आन प्राणी तकैत अछि : भोजन आ प्राकृतिक प्रकोपसँ रक्षा। क्रमशः जखन मनुक्ख पेट भरबाक आ आश्रय तकबाक दिन-प्रति दिनक निरंतर संघर्षसँ निचेन भेल हयत, माने, पेट भरल छल हेतैक, आ प्रकृतिक प्रकोपसँ सुरक्षाक बोध भेल हेतैक, तखन, मनुक्खकें किछु एहन करबाक सुरता आयल हेतैक, जे भले ओकर आवश्यकता नहि होइक, किन्तु, प्रजातिक प्रवृत्ति-जकाँ काले-क्रमे (माने, हजारो बरखक अवधिमे) अनायास विकसित भ' आयल होइक। अपन नित्य-प्रतिक जीवनक अनुभवकें भूमि पर वा अपन आवासक पाथरपर लिखबाक-रंगबाक इएह प्रवृत्ति, प्रायः मनुक्खक ओहि आरंभिक प्रवृत्तिक द्योतक थिक। अपना खोपड़ीक देवाल वा विवाहक कोबरमे रंगब ढओरबाक मनुक्खक

अजुका परम्परा सेहो प्रायः मनुक्खक ओही आदिम मनोवृत्तिक समकालीन प्रतिबिम्ब थिक।

वस्तुतः, आइ हमरालोकनि भोपालसँ किछु दूर भीमबेटका नामक स्थानपर प्रागैतिहासिक गुफा आ ओहि गुफामे आदि मानवक हाथें लिखल किछु चित्रकला देखबा लेल विदा भेल छी। तें, हमरा निचेन, आदिमानवक अंतर्द्वन्द्वक सुरता मोनमे आयल।

भीमबेटका भोपाल-होशंगाबाद सड़कपर भोपालसँ करीब चालीस किलोमीटर दक्षिण-पूब पड़ैछ। सड़क सीधा, रेल-लाइनक लगभग समानांतर। कतहु-कतहु सड़क एखन बनिए रहल छैक। तें, किछु अवरोध अवश्य। किन्तु, ई निर्माण राज्यमे चौमुखी विकासक हिस्सा थिक। तें, दिन आ रुख-सुख समयमे एतबा असौकर्य सहब बड़का कष्ट नहि।

हमरालोकनि 2500 टाकामे भरि दिनुक लेल एकटा इंडिगो कार नेने छी। ड्राइवर, बल्ली, हमरालोकनिकें भीमबेटका, भोजपुर, साँची आ उदयगिरिक भग्नावशेष देखओताह। हमरालोकनि भोपालमे होटलसँ करीब 9 बजे विदा भेल रही। पुछलियनि, ई सब देखबामे कतेक समय लागत? बल्ली स्पष्टवादी छथि। कहलनि, 'से तँ अहाँ पर निर्भर अछि!' सत्ते। टहलबा-घुमबामे युवक छी, फुर्तिगर छी, तँ, कम समय लागत। वयसाहु छी, तँ, छओड़ा-मांडरसँ कोना बराबरी करबैक। अथबल आ बूढ़केर तँ गप्पे नहि। बस, विदा भेलहुँ।

भीमबेटका भोपाल-होशंगाबाद मुख्य मार्गसँ कनिए दहिना पथरीला भूमिक जंगल-जकाँ इलाका थिक। जंगल-जकाँ, कारण गाछ-वृक्ष सघन नहि। जंगलक चेक-पोस्टसँ आगाँ भूमि एकाएक पथरीला भ' जाइत छैक। रंगमे कोइला-सन कारी। गर्मी मास अयबापर छैक। अधिकतर गाछ-वृक्ष सबहक पात सुखायल। छाया थोड़। हमरालोकनि भीमबेटका पहुँचलहुँ तँ दिन केर एगारह करीब बजैत छलैक। रौद रहैक। माथपर टोपी आ आँखिपर गोगल्सकेर बावजूद भोपाल आ एतुका तापमानमे अन्तर सहजहि बुझबामे आयल। जंगलक आरम्भमे पार्किंगक समीपे एकटा गाइड भेटलाह। आइ वर्किंग-डे थिकैक। तें, पर्यटक लोकनिक कोनो भीड़ नहि। अहुना ई स्थान पिकनिक लेल ने उपयुक्त आ एतय ने तकर अनुमति छैक। तें, जे किछु पर्यटक छलाह, सब सीनियर सिटीजन। जंगली जीव-जंतु, जे शैलानीकें आकृष्ट करैछ, एतय तकरो अभाव। एतय कोनो युगमे मनुक्खक आवास छल हेतैक, सेहो, एखुनका परिस्थितिमे असंभव लगैत अछि। कारण, एहि बंजर भूमिक समीप ने फल-फूल-सन वन्य सम्पदा छैक, आ ने पानिक कोनो स्रोत।

किन्तु, से वर्तमान थिक। सुदूर अतीतमे ई स्थान अवश्य आदि मानवक आवास लेल उपयुक्त छल हेतैक, अन्यथा मनुक्ख एतय कोना रहैत। किन्तु, तकर शंका-समाधान गाइड करताह। ई मध्यवयसाहु सज्जन हमरालोकनिक भाषा सूनि, हमरा सबकें सोझे बंगाली बूझि लेलनि। से कोनो नव नहि। जतय कतहु जाइत छी, बंगाली समेतकें ई बुझबय पड़ैछ, जे 'मैथिली एकटा स्वतंत्र भाषा थिक। बिहारमे गंगाक उत्तरक बिहारसँ ल' कय नेपालक तराइ धरि लोक मैथिली बजैछ। आ गंगाक दक्षिणोमे बिहारक किछु आबादीक मातृभाषा मैथिली थिक। ई भाषा भारतीय संविधानक आठम अनुसूची सम्मिलित अछि, आदि, आदि।' जँ भाषाक अनुसार राज्य सबहक पुनर्गठनमे मैथिलीकें अपन प्रदेश होइतैक, तँ, मैथिलीकें अपने देशमे अपरिचयक ई अधोगति नहि भोगय पड़ितैक। किन्तु, ई मात्र कचोट थिक। सत्य तँ ई थिक, जे, मैथिली जनिको भाषा थिकनि, ओहो लोकनि मैथिली बजैत आ पढ़इत नहि छथि। संयोगसँ गाइड महोदयकें बंगला ततबे अबैत रहनि जे हुनका मोने केवल 'चित्र' वा छविकें 'छोबी' उच्चारण कयलासँ हिंदी बंगला बनि जाइत छैक! तें, अनेक बेर जखन 'छोबी-छोबी' उच्चारण कय मोन अकच्छ क' देलनि, तखन, मैथिलीक सम्बन्धमे हमरा हुनका ई सामान्य ज्ञान पढ़बय पड़ल। किन्तु, ताहिसँ केवल अपन मनक भड़ास निकलल। मैथिली अपनहि घरमे जाहि अपरिचयक अन्हारमे औना रहल छथि, हमरा नहि लगैत अछि तकर निराकरण एना संभव अछि। आब भीमबेटकाक गप्प करी।

भीमबेटका सम्पूर्ण विश्वमे अनेक ठाम पसरल आदि मानवक अनेक आश्रय सबमे सँ एक थिक, जतय ओकर तहियाक आवासक ठोस प्रमाण एखनहुँ उपलब्ध अछि। एहि स्थानकें भीमबेटका किएक कहैत छैक। से के कहत! सम्पूर्ण भारतमे जतय भीम, पांडव, लाक्षा इत्यादि शब्दक प्रयोग स्थानक नामसँ जोड़ल छैक, लोक स्थानक संबंध सोझे महाभारतसँ जोड़ि लैछ। किन्तु, महाभारतकें एना स्थान सबसँ जोड़बकें ऐतिहासिक संबंधक प्रमाण बूझब भ्रांतिपूर्ण थिक। एतय भीमबेटकाक उबड़-खाबड़ पथराह भूमिक ऊपर, प्रायः पानिक प्रवाहसँ तरासल, महल-दू-महलक ऊँचाइक, पाथरक अनेक छोट पैघ शिला-खण्ड सब छैक, कोनो शेषनागक फन-जकाँ, कोनो गाछ-जकाँ, कोनो चिड़ैक आकृतिक, आ कोनो महज समतल आधारपर भूमिक समानांतर छायादार छत-जकाँ। एहि शिलाखण्ड सबहक नीचा वा भीतरक उत्थर, चिक्कन खोहमे प्रायः तहिया मनुक्ख अपन आवास बनौने छल हयत, से मानल जाइछ। गुफा सबहक देवाल सब पर गेरु-सन गाढ़ लाल रंग वा उज्जर वर्णमे मनुक्खक आ मनुक्खक जीवनक अवधिक अनेक अवसरक चित्र बनल

भेटत। चारिसँ छौ आंगुरक आकारक एहि रेखा-चित्र सबहक तुलना आसानीसँ अपन गाम-घरमे बाटक काते-काते बनल माटिक घरक देवालपर माटिएसँ बनल मनुक्खक रेखा-चित्रसँ क' सकैत छियैक। सत्यतः, मनुक्खक एखनुको प्रवृत्ति इतिहासकें एखनहुँ धरि ओहिना सहेज कय रखने अछि जेना ओ सब आदिकालमे छलैक। ततबे नहि, पृथ्वीक विभिन्न भागकेर मनुक्खक जीवनक सम्पूर्ण वर्ण-पट पृथ्वीपर मनुष्यक सम्पूर्ण विकास-यात्राक सजीव दर्पण थिक। अस्तु, भीमबेटकाक एहि रेखा चित्र सबसँ एतबा तँ अवश्य प्रतीत होइछ, जे आदि मानवक ई आवास तहियाक थिकैक जहिया मनुक्खक समाज भले विकसित नहि रहल होइक, किन्तु, ओ समूहमे अवश्य रहय लागल छल। एतुका चित्र सबमे मनुक्खक जीवनक सामूहिक गतिविधि जेना सामूहिक शिकार, युद्ध आ नृत्य आदिक निरूपण एकर प्रमाण थिक। मनुक्खक आवासक ओहि अवधि धरि मनुक्ख जीव-जन्तुक उपयोग, भोजन आ सवार दुनू लेल करब आरम्भ क' लेने छल, से एतुका चित्रसँ अपने बुझबामे आओत। चित्रमे कतहु मनुक्ख हाथी पर चढ़ल अछि, कतहु घोड़ापर, आ कतहु पयरे अछि। भाला बरछा-सन अस्त्र-शस्त्रक आविष्कार भ' चुकल रहैक। हरिण आ आन जन्तुक पछोड़मे घोड़ा पर चढ़ल शिकारीक हाथमे बरछी हथियारक आविष्कार आ प्रयोग दुनूक प्रमाण थिक।

गाइड महोदयक अनुसार ई बसेरा शिकारी-संग्राहक (hunter-gatherer) समाजक सामाजिक गतिविधिक अवशेष थिक। ओ कहलनि, मनुक्खक बसेराक ई आकार पाथरपर समुद्रक पानिक बहावक परिणाम थिक। ई सत्य वा असत्य से हमरा नहि बूझल अछि। किन्तु, एतेक पैघ-पैघ शिलाखंडकें ऐना तरासब प्रकृति-जल वा वायुक अलावा आओर कोन शक्ति क' सकैत अछि! मानल जाइछ, प्राणीक रूपमे मनुक्ख सबसँ पहिने प्रायः अफ्रीका महादेशपर अवतरित भेल छल। तहिया एशिया आ अफ्रीकाक बीच समुद्रक बाधा नहि रहैक। तें अफ्रीकासँ मनुक्ख सहजहि एशिया दिस पसरैत गेल। हजारो वर्षक मनुक्खक विकास-यात्रामे शिकारी-संग्राहक, पशुपालक, खेतिहर आ नागरिक लोकनिक वर्गीकरणमे सँ शिकारी संग्राहक (hunter-gatherer) लोकनिक आवासक प्रमाण भीमबेटकाक अतिरिक्त सोआन नदीक पक्खा, आ पोटवार पठारपर भेटैत अछि। ई लोकनि जंगली जन्तुक शिकार आ फल-मूलक संग्रह कय भोजन करैत रहथि। खेती हिनका लोकनिक वृत्ति नहि रहनि, से इतिहासकार लोकनि कहैत छथि। भीमबेटका-सन गुफा अफगानिस्तानक संघाओ आ आंध्रप्रदेशक कुरनूल जिलामे सेहो भेटैत अछि। प्रसिद्ध इतिहासकार रोमिला थापरक अनुसार पेलिओलिथिक युगक एहि अवशेष

सबमे ईसापूर्व वर्ष 30000 सँ ल' कय ईसा पूर्व 10000 वर्ष धरि मनुक्खक आवास छल हयत। अनुमान इहो छैक, भीमबेटकाक सबटा चित्रकला एके युगक नहि थिक। ततबे नहि, हाथमे बरछी नेने घोड़ा-हाथीपर सवार योद्धा, आ आन चित्रमे जनसमूह, युद्ध आ जुलूसक ऐतिहासिक दस्तावेज थिक। पृथ्वीपर मनुक्खक यात्राक इतिहास आओर चित्रसब केरल केर एडक्कल गुफा आ जम्मू-कश्मीर क्षेत्रक गिलगिट-बाल्टिस्तान इलाकामे सेहो छैक। उचिते, एहि सब प्रागैतिहासिक स्थल सबहक समय निर्धारण बड़का चुनौती थिक। तथापि, पछिला पचास-वर्षमे पुरातात्विक अनुसन्धानमे नव-नव विधिक आविष्कारसँ काल-निर्धारणक क्षेत्रमे काफी प्रगति भेलैए। एहि सबमे सँ, 10000 वर्षक घटनाक जाँचमे, कार्बन-डेटिंग (कार्बनिक यौगिकमे कार्बन-14 केर निरंतर क्षय), डेनड्रो-क्रोनोलोजी (वृक्षक तनामे वार्षिक वलयक गणनाक विधि), आ थर्मोलूमिनेशेंस (Thermoluminiscence)क विधिसँ, जाहिमे आगिमे पकाओल माटिक पात्र वा उपकरणक जाँच कयल जाइछ, काल-निर्धारणक प्रक्रियामे एकरूपता आ प्रमाणिकता अयलैक-ए। जे किछु। जँ, भोपाल आबी आ भरि दिनुक समय हो, तँ, भीमबेटका जा सकैत छी। छोट धिया-पुता आ मौज-मस्ती लेल आयल पिकनिक ग्रुप लेल भीमबेटका उपयुक्त नहि।

भोजपुर, मध्यप्रदेश

जेना, इंदौरमे सबठाम रानी अहिल्याबाई होल्करक पदचाप सुनबामे आओत, भोपाल नगर राजा भोजकेर प्रशस्ति गबैत अछि। भोपालक बड़का झीलसँ ल' कय मीलो दूर भोजपुरसँ खजुराहो धरि राजा भोजकेर यशोकीर्ति सबठाम पसरल छनि। समय केर मारि, आक्रमणकारीक प्रहार, आ इतिहासकें मेटयबाक राजनैतिक संकल्प सम्पूर्ण इतिहासकें भूमि परसँ धो-पोछि कय कहाँ साफ क' पबैछ। तें, एखनहुँ विश्वमे सर्वत्र पृथ्वीपुत्र लोकनिक कीर्ति आ आक्रमणकारी लोकनिक ध्वंसक भग्नावशेष, भेटिए जायत।

भीमबेटका देखलाक पछाति हमरालोकनि भोजपुरक शिवालय देखय चलल छी। छैक तँ भोजपुरमे एकटा जैन मन्दिर सेहो, किन्तु, दुपहरियाक रौद, आ अन्हार हेबासँ पूर्व होटल पहुँचबाक निश्चयमे जैन-मन्दिरकें छोड़ि देलिऐक। एखन साँचीक शान्ति स्तूप आ ओकरे समीप उदयगिरि देखब बाँकीए अछि।

ईसवी एगारहम शताब्दी राजा भोजक शासन-काल थिक। कहल जाइछ, एकटा सशक्त बान्हक निर्माणसँ अनेक नदी आ धारक बाट रोकि कय राजा भोज

भोजपुरमे एकटा जलाशयक निर्माण कयने रहथि। ओहि जलाशयक बान्हक अवशेष एतय एखनो अछि, आ भोजपुर जेबाबला सड़क भोजपुर लग किछु दूर धरि एहि बान्हहि पर द' कय जाइछ।

शान्ति-स्तूप सबहक चर्चा करैत इतिहासकार रोमिला थापर कहैत छथि, 'स्तूपक आकार शक्ति आ प्रतिष्ठा दुनूक द्योतक छल। तें, (क्रमशः) स्तूप सबहक आकार बढ़इत गेल'। हमरा जनैत ई तथ्य आनो देवी-देवताक मंदिर आ मूर्तिक आकार लेल सेहो ओहिना लागू होइछ जेना बौद्ध स्मारक सब लेल। तें, हमरालोकनि सबसँ पैघ बुद्ध वा ईसाक मूर्ति, सबसँ पैघ मन्दिर, सबसँ पैघ शिवलिंगसँ ल' कय सबसँ पैघ सरदार पटेलक मूर्ति धरि पहुँचि गेल छी। रक्ष एतबे जे राजनेता लोकनि अपने हाथें अपन मूर्ति ठाढ़ करब तँ अवश्य आरम्भ केलनि-ए, एखन धरि राजा भोजक शिवलिंगक आकारक अपन मूर्ति स्थापित नहि केलनि-ए। मुदा, ताहू मे कोनो रहस्य होइक, से संभव।

भोजपुर गाओंक एक कातमे एकटा ऊँच टीलापर निर्मित शिवालय अपूर्ण अछि। किन्तु, पाथरक मण्डपमे एकटा ऊँच आधारशिलापर स्थापित शिवलिंग ठीके आकारमे तंजावुरकेर बृहदेश्वरसँ सेहो पैघ छथि। आधारशिला तँ एतेक ऊँच जे गर्भ-गृहमे ठाढ़, नमतीमे छौ फुटसँ बेसी ऊँच फिरंग सेहो बौनवीर-सन प्रतीत भेलाह। एतेक ऊँच आधार पर स्थापित शिव, भक्त लोकनिक पहुँचसँ ततबा दूर छथि जे ने शिवकें केओ जल चढ़ा सकैत छनि आ ने स्पर्श क' सकैत छनि। भ' सकैत अछि, इहो निर्माताक आरम्भिके उद्देश्य होइक।

पहिनहि कहलहुँ, ई मन्दिर गामक बाहर एकटा टीलापर छैक। ताहिपर ऊँच आधार। बहुतो गोटे एहि रौदमे दूरेसँ भोला बाबाकें प्रणाम केलनि। जाधरि हम दौड़इत मन्दिरकें देखि अयलहुँ, एकटा स्थानीय दोकानदार हमर पत्नीकें सादर कुर्सीपर बैसओने छलखिन। हम घूरिकय आपस अयलहुँ तँ दोकाने लग छाहरिमे एकटा वृद्धा, एकटा पथियामे पाकल ताजा लताम ल' कय बैसलि छलीह। पांडिचेरीमे नीक लताम भेटब असंभव। अस्तु, हमरा सेहन्ता भ' गेल आ लताम किनय ठाढ़ भ' गेलहुँ, तँ, अकस्मात्, देखैत छी, करीब दस वर्षक एकटा छोटि कन्या आबि कय लगमे ठाढ़ भ' गेलि। भिखारि बूझि दमसयबाक मन भेल, तँ, देखैत छी, ओकरो दृष्टि लताम दिस छलैक। बात बुझबामे आबि गेल। किनल लताममे सँ तुरत हम एकटा ओकरा द' देलिएक। छउड़ी मुसुकाइत, बिनु दहिना-बामा देखैत, लंक लेलक आ भागि गेल।

साँची

1971 मे आरम्भ करैत 2006 धरि लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, कुशीनगर सहित सबटा बौद्ध तीर्थक परिक्रमा समाप्त क' लेल। एतेक वर्षक पछाति भोपाल आयल छी, तँ साँचीओ देखिए ली। भोजपुरसँ साँची जेबाक बीचमे घंटा भरिसँ बेसिए लागत। भोजनक बेर भ' गेल रहैक। तें, भोजपुरक बाहर पहिने भोजन कयल आ आगू बढ़लहुँ। साँचीक स्तूप, किछु दूर, विदिशाक समीप पड़ैत छैक।

हमरालोकनि जखन साँची पहुँचल रही तँ रौद खूब रहैक। नगरसँ बाहर ऊँच स्थानपर शान्ति-स्तूपक अतिरिक्त आओर किछु नहि। परिसर पैघ आ दूर-दूर धरिक विहंगम दृश्य। ज्ञातव्य थिक, वैदिक कालमे धार्मिक अनुष्ठानक स्थायी स्मारकक निर्माणक परम्परा नहि छलैक। पछाति धार्मिक आवश्यकताक अनुकूल बौद्ध लोकनि स्तूप, चैत्य, आ विहारक निर्माण आरम्भ केलनि। तथापि, आकारमे एकरा सबहक स्वरूप जनसामान्यक आवाससँ भिन्न होइक तकर आवश्यकता तँ रहबे करैक। प्रायः, ताही कारणसँ स्तूप आ विहारकें दूरहिसँ चिन्हब मोसकिल नहि। तथापि, आकारमे पैघ हो वा छोट स्तूप, स्तूप थिक तँ एक प्रकारक स्मारक। साँचीक स्तूप, विहार आ वन आरंभिक बौद्धकालीन परिसर थिक। परिसरमे किछु नव निर्माण सेहो भेल छैक। आइ एतय पर्यटक लोकनि थोड़े रहथि। तथापि सुरक्षा व्यवस्था सख्त। तीर्थ-यात्रीमे अनेको श्रीलंकाक नागरिक। हमरालोकनि संक्षेपमे स्थानकेर देखल आ बाट धेलहुँ।

उदयगिरि गुफा

उदयगिरि गुफाक भ्रमण अजुका अंतिम कार्यक्रम थिक। ई स्थान लगहिक एकटा गाओंक बीच एकटा छोट-सन पहाड़ीपर अछि। देखलासँ बूझि सकैत छिऐक, एकान्त स्थानक खोजमे लागल अनेको साधक लोकनि भिन्न-भिन्न कालखण्डमे एतय आबि डेरा जमौने छल हेताह। उपद्रवसँ बचबा लेल ऊँच स्थान पर मूर्ति, मन्दिर वा ईश्वरक प्रतीक स्थापित कयने हेताह। अस्तु, बाटक कातक गुफासँ ल' कय ऊपर चढ़इत सीढ़ीक कतबहि होइत पहाड़ी ऊपर धरि विष्णु, गणेश, भगवतीक मूर्ति आ पेंटिंगसँ ल' कय निर्माणाधीन, किन्तु, अपूर्ण मन्दिरक देवाल आ सामग्री सब किछु एतय भेटत। ऊपर चढ़इत सीढ़ीक कातमे पाथरक देवाल पर अद्‌भुत प्रकारक एकटा लिपि सेहो देखल। सुनैत छी, ई लिपि एखनहुँ पुरातात्विक लोकनिक ज्ञानसँ परे छनि। एहू पहाड़ी परसँ सम्पूर्ण विदिशा शहर देखबामे अबैछ।

उदयगिरिक भ्रमणसँ आजुका यात्राक इतिश्री भेल। किन्तु, जाधरि भोपालमे

होटल आपस अयलहुँ, साँझुक करीब साढ़े सात बाजि गेल छलैक। किछुए कालमे हमर छात्र डा. परेश अओताह। अतः, तुरंत तैयार हयब शुरू कयल। कहितो छैक, अमृतं प्रिय दर्शनम्।

उत्तराखंड

पाताल भुवनेश्वर : जतय लोक कदाचिते पहुँचैत अछि

सैनिक छी, तँ, व्यवसायहि, आ यायावर छी, तँ, प्रवृत्तिएँ एहन-एहन स्थान पर पहुँचि जायब जतय जेबाक ने केओ नेयार करैत अछि आ ने स्थानीय लोकक आलावा अनका ककरो किछु बूझल होइछ। पाताल भुवनेश्वर सेहो हमर एकटा एहने अनुभव छल। 1993-1996 क बीच हम बरेली मिलिटरी अस्पतालमे पदस्थापित छलहुँ। ओहि समयमे नैनीताल, रानीखेत, पिथौरागढ़, अल्मोड़ा, कौसानी एहि सब ठाममे सेनाक यूनिट सब रहैक, किन्तु, आँखिक डाक्टरक सुविधा नहि रहैक। अस्तु, प्रत्येक मास हमरा एकाधिक बेर पिथौरागढ़ आ रानीखेत जाय पड़ैत छल। युवक शरीर आ यायावर मन। हमरा आओर चाही की! अपन अधीन सरकारी गाड़ी आ ड्राइवर। संगहि, सरकारी काजक पहिने आ बाद पर्याप्त समय। खूब घुमलहुँ। पाताल भुवनेश्वर सेहो ओहि अवधिमे पिथौरागढ़क एक यात्राक उपलब्धि थिक। ओहि जमानामे विकीपीडिया तँ रहैक नहि। अजूबा अजगुत स्थान, लोक, आ घटनाक खबरि लोक एक दोसरे वा स्थानीय लोकसँ सुनैत छल। सुनल स्थान कें देखबाक कौतूहले हमरा पातल भुवनेश्वर ल' गेल छल। बहुत दिन भ' गेलैक, कोना-कोना गेल रही तकर बहुतो गप्प बिसरि गेल। सम्भव छैक, स्थान देखबाक लोभमे हमरालोकनि ओहि स्थानक समीपक गाओंमे कोनो मेडिकल कैंप सेहो आयोजित केने होइ। ओहि इलाकामे भूतपूर्व सैनिक लोकनिक संख्या काफी छैक। कुमाऊँ रेजिमेंट, गढ़वाल रेजिमेंट आ गढ़वाल स्काउट बटालियन सबहक सैनिक लोकनिक घर-द्वार तँ एही इलाकामे छनि।

आब पाताल भुवनेश्वरक गप्प करी। पाताल आ भुवनेश्वर। माने, एतय भुवनेश्वर पातालमे छथि। पाताल छैक कतय? पाताल थिक की? शास्त्र-पुराण आ धार्मिक मान्यताक अनुकूल सृष्टिक संरचनाक तीन श्रेणीमे सबसँ ऊपर

आकाश आ सबसँ नीचा पाताल अछि। भूमि दुनूक बीच अछि। पृथ्वीक गर्भकें सेहो पातालक पर्याय बूझल जाइछ। सामान्य अर्थमे पृथ्वीक सतहसँ नीचा, भूमिक गर्भ, पाताल थिक। तें, कोयला, सोना-चानी, हीरा, आ अन्य धातुक खान सेहो पाताल थिक। भूमिसँ नीचाक गुफा-कन्दरा सेहो पाताल थिक। पाताल भुवनेश्वरक पाताल, पिथौरागढ़ आ अल्मोड़ाक बीच, गंगोरीहाट गाओंक समीप एकटा भूमिगत गुफा थिक जकर संकीर्ण प्रवेश जमीनक सतहसँ नीचा एकटा खड़ा प्राकृतिक द्वार बाटें होइछ। हमरा लगैत अछि, पहाड़क सतहसँ खड़ा द्वारकेर गहराइ कमसँ कम दू-तीन मर्द (माने बीस फुट) तँ हेबे करतैक। पहिने पता नहि लोक कोना एहि गुफामे प्रवेश करैत छल। हमरालोकनि जहिया गेल रही, लोहाक सीढ़ीसँ नीचा उतरल रही। जेना, हेबाक चाही, भीतर बज्र अन्हार छैक। किन्तु, एखन एहि गुफामे बिजली-बत्तीक व्यवस्था छैक। गुफामे उतरलाक पछाति, विभिन्न सतहपर सम्पूर्ण इलाका कम-सँ-कम दू हजार वर्गमीटरमे अवश्य पसरल हेतैक। हयत जे कोनो पैघ सभागारमे पहुँचल छी। पहाड़क ऊँचाइ, आ सूर्यक किरणक अभावमे गुफाक भीतरक वातावरण एकदम शीतल। ठाम-ठाम संकीर्ण जलधार। किन्तु, भुवनेश्वर कतय छथि? हद्द भ' गेल! भगवान तँ सबतरि छथि। किन्तु, एतुका भुवनेश्वरकें एतेक सूक्ष्म जुनि बूझी। भक्त लोकनिक आस्था अक्षुण्ण रखबा लेल प्रकृति नीक खेल खेलायल अछि। सम्पूर्ण गुफामे भूगर्भक आन्दोलन, पानिक स्राव आ खनिज यौगिकक सहयोगसँ यत्र-तत्र पाथरक विभिन्न आकारक पिंडक अजस्र समूह जहाँ-तहाँ छिड़ियायल भेटत। स्टेलेक्टाइट आ स्टेलेग्माइटक एही अजस्र आकारकें एतुका भक्त लोकनि विभिन्न देवी-देवताक स्वरूप बूझि ककरो बदरीनाथ, ककरो केदारनाथ, आ ककरो भुवनेश्वरक संज्ञासँ विभूषित केने छथि।

शहरजमीनसँ नीचा एहि प्रकारक गुफा आनो बहुत ठाम भेटत। जेना, नेपालमे पोखराक इलाकामे, हिमाचल प्रदेशमे, आ नहि जानि, कतय-कतय। किन्तु, भक्त छी, तँ, प्राकृतिक खेलक बलें बनल आकारे भुवनेश्वर थिकाह। वैज्ञानिक बुद्धिसँ प्रेरित छी, तँ, ई सब प्रकृतिक प्रयोग, रसायनक प्रताप, आ भूगर्भक उथल-पुथलकेर परिणाम थिक। किन्तु, कारण जे किछु हो, दैवी वा प्राकृतिक, खेला ककरा नीक नहि लगतैक! हमरा तँ दू टा लाभ भेल, खेला आ यात्रा दुनू। संगहि, गढ़वाल-कुमाऊँ केर पवित्र वायु सेहो भरि मोन फेफड़ामे भरल। वायु एहन वस्तु थिक जे जतेक मन हो सेवन करू। ल' कय जा नहि सकैत छी। तथापि, शहर बाजारमे बढ़इत प्रदूषणक कारण ई प्राणवायु सेहो अमोल भ' गेलै। की पता, किछु दिनमे पानिक बोतल जकाँ बोतल बंद हवा सेहो राशन-पानि जकाँ लोककें मासिक बुताद जकाँ

किनय पड़ैक। दिल्ली-सन नगरमे ऑक्सीजन बार खुजिए गेलैए। कारण, सरकार तँ क्रमशः सब किछुसँ हाथ धोनहि जा रहल अछि। तें, जखन एहि दिस हिमालयमे आबी, पाताल भुवनेश्वर गुफाकें देखी, स्वच्छ निर्मल वायुक प्रचुर सेवन करी आ प्राणकें पुनर्जीवित कय अपन-अपन शहर-नगर आपस जाइ।

योरप

रोम आ कैथोलिक लोकनिक परम पावन तीर्थ-वैटिकन सिटी

नेआर

योरप जेबाक मनोरथ बहुत दिनसँ छल, एहि बेर तैयारी शुरु भेलै आ कार्यक्रम आगू बढ़ैत गेल। सहकर्मी लोकनि कहलनि, कंडकटेड टूर ठीक रहत। 'थॉमस कुक' सुपरिचित आ विश्वस्त नाम छैक। तें, ओकरहिसँ संपर्क कयल आ कार्यक्रम निर्धारित भेल।

योरप यात्रामे अनेक बाधा छै। सबसँ पहिल योरप यात्रा महग छै। दोसर समस्या छै, पासपोर्ट-वीसाक, जे योरपक देशसब हठे देब स्वीकार नहि करैत छैक। एहन सन क्रम, धनिकक द्वारि पर सोझे पहुँचबाक अनुमति नहि। कदाचित पर्यटक स्वदेश नहि घूरथि तकर चिंता। तें, ढेर कागजी काज। मोटामोटी अहाँ ई प्रमाणित करी जे, विदेश यात्राक साधन अछि, जयबा-अयबाक टिकट अछि, आ ओतय रहबाक व्यवस्था अछि। आंग-समांग, रोग-व्याधिक इलाज लेल मेडिकल इंश्योरेंस, आ संगहि भारतमे नियामिकी रोजगार सेहो आवश्यक। कहबामे छोट, मुदा, व्यवहारमे ई सब ओझरौटबला काज छै। किन्तु, अधिकतर समस्याक समाधानक भार टूर ऑपरेटर अपना ऊपर लैत छथि, तें, खर्चकेर अलावा, कंडकटेड टूरमे अपना ऊपर दायित्व थोड़ रहैत छैक। किन्तु, जतय यात्रीकें स्वयं जायब आवश्यक छैक, जाय पड़बे करत, खर्च लगबे करत।

कंडकटेड टूर केर किछु गुण आ किछु अवगुण दुनू छैक। गुण-यात्रीकें कथुक कोनो चिंता नहि। अवगुण-कंडकटेड टूरमे यात्रीकें बजटकेर अनुसार गनल-चुनल देशक पूर्वनिर्धारित स्थान आ सीमित पर्यटन स्थलक भ्रमणक करार रहैत छैक। तें, एहन टूरमे एक-एक देश, एक-एक शहरकें अपन रुचिक अनुरूपें ऐल-फैलसँ देखबाक अवसर असम्भव। ओना भरि देश देखब तँ स्थायी निवासीओक सक्क

नहि। हमरे लोकनि, देश तँ छोड़ू, बिहारक कतेक भाग देखने छी! अस्तु, हमर यात्राक अनुभव यूरोपक कंडकटेड टूर धरि सीमित अछि।

आरम्भ : चेन्नईसँ

4 जुलाइ 2014 चेन्नई। भोरे 4 बजे चेन्नईसँ दोहा, कतार केर उड़ान। प्लेन लोकल समयसँ करीब 8.30 भोरे दोहा पहुँचल। समुद्रक कछेरक मरुभूमिमे कंक्रीट केर जंगल। दूर-दूर धरि कतहु कोनो हरियरी नहि। धूल-धूसरित क्षितिज पर दूरमे गगनचुम्बी अट्टालिका समूहक धूमिल छवि मात्र। एहेन ठाम पलखतिओ हो तँ कतय जायब, की देखब? सुनइ छियइ, मध्यपूर्वक ई शहर खरीददार-शैलानीसबमे खूब लोकप्रिय अछि। मुदा, हमरा-सन लोककें केवल देश-कोस देखब अभीष्ट अछि। एतय बेसी लोक सोना कीनैत छथि। हमरो पत्नी संगे छथि। मुदा, हमरालोकनिकें एतय खरीदारी अभीष्ट नहि।

दोहामे जलखइ-पनिपियाइक बेर छलइ। भूख लागल छल। मुदा भारतीय टाका नहि चलत। 900 भारतीय टाका देलियै। प्रायः कतारक 49 रियाल देलक। हमरा दू गोटेक जलखै लेल काफी। हमरा सब ठाम नव व्यंजन चिखबाक रुचि अछि। किछु शाकाहारी सलाद आ 'हुम्मस' लेलहुँ। हुम्मस नीक लागल। हुम्मस थिकैक की? उसिनल काबुली चना, भूजल तिल केर बुकनी, नून, ओलिवक तेल, मरचाइ आदिक मेंही पिसल स्वादिष्ट चटनी। अस्तु, नव प्रदेशमे एकटा नव व्यंजन चिखल। किछु कालक पछाति भारतीय भोजन सेहो भेटल। हमर पत्नी वेज-पुलाव आ दही खेलनि।

बेरुक पहर डेढ़ बजे दिन कतार एयरवेज केर फ्लाइट-105 रोम, इटलीक लेल उड़ल। नव वायुयान, नीक व्यवस्था आ सुन्नरि कन्या लोकनिक तत्पर सेवा। हवाई जहाज उड़ैत एकटा सेवाकर्मी पुछलनि, अहाँ डाक्टर थिकहुँ? आपातकालमे अहाँ सहायता करबै? चौंतीस वर्षक डाक्टरीक अनुभव, आ पचीस वर्षक सेनाक सेवा आ हम सहायता नहि करबइ! अवश्य, हम कहलियनि। मुदा, हम आँखिक डाक्टर छी, से सुनि महिलाकें कने दुविधा भेलनि। हमर गप्पसँ पछाति आश्वत भेली, हमरालोकनिक पीढ़ीक डाक्टर आ सेहो भारतीय सेनामे विशेषज्ञ डाक्टरहुकें बेसिक मेडिकल उपचार आ इमरजेंसी केयरमे दक्षता आवश्यक छलैक। संयोगसँ, ओहि उड़ानक अवधिमे ककरो आंग-समांग नहि भेलै।

हमरालोकनिक टूर केर पहिल पड़ाव इटली देशक राजधानी-रोम थिक। तें, सबसँ पहिने रोम केर लियोनार्दो द विन्ची फुमिसिनो एअरपोर्ट। हवाई जहाज

जखन उतरल रहै तँ स्थानीय घड़ीमे साँझक छौ बजैत रहै। मुदा, सूर्यास्त नहि भेल रहै। गर्मीक मासमे योरपमे ओहुना अन्हार हेबामे रातुक दस धरि बाजि जाइत छैक। लियोनार्दो द विन्ची फुमिसिनो एअरपोर्ट। नाम उपयुक्त छै। असलमे, जँ पौराणिक पुष्पक विमानकें छोड़ि दी, तँ, आधुनिक कालमे हेलीकाप्टरक आरंभिक आकृति आ पाँखि-सहित वायुयानक परिकल्पनाक श्रेय लियोनार्दो द विन्चीएकें छनि। विश्वकें एहन बहुमुखी प्रतिभाक वैज्ञानिक इटलीए अवदान थिकैक। लियोनार्दो द विन्ची फुमिसिनो एअरपोर्ट, रोम इटलीक सबसँ पैघ एअरपोर्ट थिकैक। सब किछु अत्यंत व्यवस्थित, कोनो असुविधा नहि। इमिग्रेशन अधिकारी पासपोर्ट पर ठप्पा लगौलनि आ रोममे स्वागत। अमेरिका-जकाँ नहि। 2009 मे अमेरिकामे इमिग्रेशनक प्रक्रिया हमर पत्नीकें कठिन परीक्षा-जकाँ लागल छलनि। अमेरिकन लोकनि सबकें संदेहपूर्ण दृष्टिसँ देखैत छथिन। उचिते!

रोम एअरपोर्ट पर 'थॉमस कुक' केर अधिकारी लोकनि लक्जरी कोचक संग तत्पर छलाह। नीक सड़क आ उत्तम बससेवा यूरोप केर विशिष्टता थिक। एतहु एअरपोर्ट आन सबठाम-जकाँ शहरक केंद्रसँ बेस दूर छैक। हमरालोकनिक रहबाक व्यवस्था शहरक भीतर होटल बार्सेलो अरान पार्कमे छल। कोनो शहरमे जाउ, काठमांडू वा कोयम्बतूर, न्यूयॉर्क वा रोम, एक स्तरक होटल केर सबतरि मोटा-मोटी एके नक्शा भेटत। एतय पीबाक जलमे लोक साधारण जल-अक्वा नेचुरले आ अक्वा फिजान्ते-सोडा-वाटर, दुनूक प्रयोग करैत छथि। भोजन आ पाकमे पितूजा-पास्ता क प्रधानता। आन पाकसबमे मरचाइ मसालाक नीक प्रयोग होइत छैक। हमरालोकनिक टूर ओपेरटर प्रत्येक ठाम स्वादिष्ट भारतीय भोजनक व्यवस्था केने रहथि। कहितो छैक, (मनुक्खक) हृदय धरि पहुँचबाक बाट पेटहि द' कय जाइछ (The way to heart is through stomach)। तें, पर्यटनमे उत्तम भोजन आनंदकें दुगुना क' दैत छैक। एहि यात्रामे कतेक ठाम स्थानीय भोजनक सुविधा सेहो रहै। जे मोन हो सैह खाउ। कोनो बाध्यता नहि। योरपमे रतुका भोजन साँझे राति खयबाक परम्परा छैक, तें होटल पहुँचि शीघ्रे भोजनक व्यवस्था रहैक। आइ-पहिल रातुक स्वागतमे-वाइनकेर व्यवस्था सेहो रहैक। भोजनकालमे किछु समय परिचय पातमे बीतल। उनचालीस यात्रीक ग्रुप। बिहारसँ केरल, कलकत्तासँ मुंबई, दुबई-दोहा धरिक यात्री। वयसमे 8 सँ अस्सी वर्षक लोक। एहि टूरमे सब ठाम संगे-संग हिंदी-अंग्रेजी भाषी गाइडक कारण स्थानीय भाषा सिखबाक बाध्यता नहि रहैक। मुदा, हमरा नव-नव भाषा सीखब नीक लगइए। एकरा हम अपन, सर्वाइवल इंस्टिंक्ट स्थलमे जड़ि जमयबाक आ अस्तित्व बचयबाक प्रवृत्ति मानैत

छी। कोना नहि हो। सेनाक सेवा आ कमला-कोसीसँ ल' कय, कृष्णा-कावेरी आ सियांग-सिन्धु धरिक घाट-घाटक पानि। नौकरी जे ने कराबय। पछिला दू वर्षसँ तमिल केर पाछू पड़ल छी। मुदा, जीवन भरि एहि परिस्थितिकें हम अनुपम अवसर मानि नव-नव भाषा सिखैत आबि रहल छी। तें, एतहु किछु सीखी। एतुका (रोम केर) भाषा, मैथिलिये जकाँ मृदु छैक। मुदा, अंग्रेजीसँ एकदम भिन्न। तें, शब्द सब परिचित नहि आ भाषा सीखब आसान नहि। दोसर दिन भोरुका जलपानक समय मात्र दुटा शब्द सिखल-ग्रात्जे (grazie), धन्यवाद, आ प्रेगो (prego)-you are welcome –अहाँक स्वागत।

यात्राक दोसर दिन रोम आओर वैटिकन सिटीक प्रोग्राम रहै। तें चलू, रोम चली। कहबी छै, 'Rome was not built in a day.' अर्थात रोम एके दिनमे नहि बनल छै। एहि कहबीमे कनेको अतिशयोक्ति नहि छै, से शहरकें देखलासँ प्रतीत होइछ। अत्यंत वैभवमय रोमक निर्माण दीर्घकालधरिक अथक परिश्रमक फल थिक। रोमक निर्माणमे अनेक पुश्त धरि कतेको सम्राट, नागरिक आ श्रमिक केर योगदान छनि। एहन वैभवमय नगरक निर्माण सरिपहुँ अकल्पनीय परिश्रमक फल थिक। रोमकें देखब, तँ, आँखि फाटल रहि जायत। पाथरक कृतिमे एहन वैभव, एहन सौन्दर्य कतय पाबी! शहर केर प्रत्येक कोन, चौक-चौराहापर प्राचीन भवन आ अवशेष भेटत। कतहु पूर्ण वैभवमे, तँ कतहु भग्नावशेष जकाँ। दिल्ली सेहो ऐतिहासिक छैक। मुदा, रोम ऐतिहासिक आ प्रागैतिहासिक दुनू छैक। रोम-सन नगरक निर्माणमे विश्वकर्माकें सेहो एक युग लागि जैतनि!

अन्न आधार थिकैक : अन्नाद्भवति भूतानि। किन्तु, जल जीवन थिकैक। तें, विश्वक प्रत्येक सभ्यता आ शहरक विकास सागर वा सदानीरा नदिएक कछेर पर विकसित होइत एलैये, खाहे ओ दिल्ली, लन्दन, पेरिस, न्यूयॉर्क हो वा पटना-कोलकाता-बम्मै। रोमकेर प्राणदायिनी नदीक नाम थिकै, टाईबर। शहरक पैघ हिस्सा नदीक उत्तरपूर्वी कछेरपर बसल छैक। आस-पासक इलाका पहाड़ी भूमि थिकै। सदातनिसँ रोम केर सीमामे छोट-पैघ सात टा पहाड़ी अबैत छैक। ईसा पूर्व चारिम शताब्दीमे एक छहरदेवालीक निर्माण कय एहि सातो पहाड़ीकें घेरि सीमाबद्ध कयल गेल छलै। एहिमे सँ मूलतः पालाटाइन हिल केर इलाकामे ऐतिहासिक अवशेष पाओल जाइछ आ कैपिटोलाइन हिल केर इलाकामे रोम केर सिटी हॉल छैक। तें पालाटाइन आ कैपिटोलाइन हिल केर इलाका सैलानीले विशेष महत्वक मानल जाइछ।

रोमक टूरमे हमरालोकनि लेल तीन-चारि टा मुख्य ऐतिहासिक स्थलक भ्रमण

निर्धारित छल। कोलोसियम, रोमन फोरम, पिआत्जा वेनेसिया, आओर ट्रेवाई फाउंटेन-फब्बारा। बाटे-बाट चलैत आओर ढेर-रास ऐतिहासिक भवन आ स्थल अगल-बगल अबैत गेलैक। आ टूर मैनेजर अपन प्रवचन दैत रहलाह। मुदा, अपरिचित नाम आ एके संग कतेक वस्तु। की-की मोन राखब! बहुत समय फोटो खिचबामे बर्बाद भ' जाइ छैक। पछाति, कचोट हैत-धुत फोटोए झिकबामे रहि गेलहुँ। आँखिक देखब तँ छुटिए गेल! सत्यतः, आब प्रत्येक स्थानक एहन विशिष्ट फोटोसब इन्टरनेट पर उपलब्ध छैक। हमर विचार पूछी, तँ, स्थान-स्थान पर यादगार लेल अपन आ अपन परिवारक फोटो झिकू, नव-नव स्थानक दर्शनक आनंद उठाउ, आ बांकी फोटो, पछाति निचेनसँ इन्टनेट पर देखू।

कोलोसियम : रोम केर पहिल पड़ाव कोलोसियम। कोलोसियम विश्व केर सर्वाधिक लोकप्रिय दर्शनीय स्थलमे सँ एक आ रोम केर सर्वाधिक लोकप्रिय स्थल थिक। कोलोसियमकें परिभाषित करब कठिन छै। कोलोसियम नाम एकर विशालताक द्योतक थिक। एकर असली नाम छलैक फ्लेवियन एम्फीथियेटर। 80 इसवीक लगभगमे फ्लेवियन वंश केर राजालोकनि एकर निर्माण करौने छलाह। वनावटमे कोलोसियमकें ने अखाड़ा कहि सकैत छिएक आ ने फिल्ड। जँ स्टेडियम कही, तँ, बेसी उपयुक्त हयत। मुदा, कोलोसियम आधुनिक स्टेडियमसँ अनेक अर्थमे भिन्न अछि। स्वरूपमे ई एकटा पैघ, खुला ऑडिटोरियम थिकैक जकर आकार आ बनावट विशाल आ विस्मयकारी छैक। गोलाकार ऊँच देवाल केर भीतर पचासो हजार लोककें, सामाजिक ओहदाक अनुसार, बैसबाक व्यवस्था। दर्शक आ खिलाड़ीकेर भीतर अयबा लेल अनेक तलपर भिन्न-भिन्न द्वार, आ विशाल तहखानाक ऊपर, सबहक बीचमे, लकड़ीक विशाल अंगनै-खेल तमाशाक प्रांगण (अरीना)। अंगनैक नीचाक विशाल तहखानाक किछु अंश (एखनुका भंग मंच केर नीचा), मधुमाछीक छत्ता-जकाँ कोठलीक समूह-जकाँ लागत। तहखानाक उपयोग साबिकमे, खिलाड़ी सबहक रहबा लेल, आ खेल तमाशामे प्रयोगक हेतु एकत्रित हिंस्र जीव-जंतु आ माल असबाव रखबा लेल होइत छलइ। आश्चर्यजनक छैक, ओहि सुदूर कालमे एतेक पैघ भवनक निर्माण, पाथरक विशाल खण्डसबकें उठायब, आनब आ प्रयोग करब। अनेक प्राकृतिक विपदा, भूकंप आ बाढ़िक प्रकोपें कोलोसियम जहाँ-तहाँ भंग भ' गेल छैक। कहल जाइछ, किछु अवशेष लोक जहाँ-तहाँ उठाकय सेहो ल' गेल छैक। एखनि, जोर-सोरसँ एहि ऐतिहासिक स्थलक जीर्णोद्धार जारी अछि।

ताहि दिन कोलोसियममे विभिन्न प्रकारक द्वन्द्व युद्ध, कुश्ती आ तरह-तरह केर खेल तमाशा लेल होइत छलैक। द्वन्द्व युद्धमे लोक हत्या आ विजय, दुनूक,

वाहवाही करैत छल। जे जीतल ओ गौरवशाली भेल, जे पराजित भेल तकर खेल स्वतः खतम।

कोलोसियमसँ दक्षिण पूर्व दिशा दिस विदा होइ। सबसँ पहिने **आर्च ऑफ कोन्स्तान्तिन** (कांस्तान्तिनक द्वार) आकृष्ट करत। कोन्स्तान्तिन रोमकेर पहिल इसाई सम्राट छलाह। ओहिसँ आगू दहिना कात पालाटाइन हिल आ ओकर ऊपरका भग्नावशेष सब देखबै। पालाटाइन हिलसँ आगू आ ओकर ठीक समानान्तर सर्कस मैक्सिमस छैक, जे एकटा पैघ फुटबॉलक फील्डनुमा मैदान थिक । तें, पालाटाइन हिलपर दक्षिण मुहें ठाढ़ भेलापर सामने सर्कस मैक्सिमसेक मैदान देखबामे आओत। ऐतिहासिक कालसँ सर्कस मैक्सिमस मैदानमे घोड़दौड़ आ रथक दौड़, विजयोत्सव, राष्ट्रीय जुलूस, धार्मिक शपथ-ग्रहण आ अनुष्ठान, खेल-तमाशा होइत छलैक। बरखा-बाढ़िक प्रकोपें आस-पासक पहाड़ीसँ अबैत पाँक आ भसाठी माटि क्रमशः एहि विशाल खेल-प्रांगणकें गिड़ैत चल गेलैक आ सर्कस मैक्सिमस दिनानुदिन छोट होइत चल गेल। तें, सर्कस मक्सिमस केर एखनुक आकार पहिलुका आकारसँ काफी छोट छै। मुदा, एहि प्रांगणक गौरवमय इतिहास विश्वविदित अछि, आ ई प्रांगण अनेक इतिहास विदित समारोहक साक्षी थिक ताहिमे कोन संदेह।

रोम केर दोसर आकर्षण थिक, **रोमन फोरम**। ऐतिहासिक रोम केर केंद्र-बिंदुमे अवस्थित विश्व-प्रसिद्ध, रोमन फोरम एकटा आयताकार चौक थिक, जे, पालाटाइन आ कापिटोलाइन पहाड़ीक बीचक समतल इलाका थिक।

आरम्भमे रोमक सात टा पहाड़ी सबहक बीचक भूमि दलदल छलै, जे क्रमशः भरैत गेलैक। ताहि दिन आसपड़ोसक खेतिहर लोकनि एतय आबि, समतल भूमिमे अपन तर-तरकारी, वस्तु-जातक अदला-बदली आ बेच-बिकीन करैत छलाह। क्रमशः ओहि इलाकामे सरकारी भवन, स्मारक, मंच, स्तम्भ आदिक निर्माण होइत चल गेलैक आ रोमन फोरम वाणिज्य-व्यापार, राजनीतिक गतिविधि, सैनिक जुलूस, आ विजयोत्सवक विश्वप्रसिद्ध केंद्र बनि गेल। अनेक ऐतिहासिक प्रासाद, सरकारी भवन, आओर रोमन साम्राज्यक आदिकालीन मंदिर आ स्मारक फोरमेक चारूकात पसरल छैक। रोमन फोरम वएह इलाका थिक जतयसँ पहिने रोमन गणराज्य, आ पछाति, रोमन सम्राट अपन शासन चलबैत छलाह । ई वैह भूमि थिक जतयसँ महान सेनापति, राजनेता, आ अधिनायक जूलियस सीजर राज केने छलाह आ अन्ततः अपने सहयोगी लोकनिक हाथें मारल गेलाह। शेक्सपियरक जूलियस सीजर नामक नाटक जूलियस सीजर आ रोमन फोरमकें सम्पूर्ण विश्वमे अमर कय देने छनि।

समय बदलै छै, लोक बदलै छै, नव घर उठैत अछि, आ पुरान घर खसैत

अछि। ई सदातनिसँ भ' एलइए। रोमन गणराज्य आ साम्राज्यक गति सेहो तेहने भेलै। एखनि रोमन फोरम मात्र भग्नावशेषक ढेर अछि। किन्तु एतबा अवश्य, रोमन फोरम, गौरवशाली रोमन गणराज्य, आ विराट रोमन साम्राज्यक उत्कर्ष-पतन, विजय-पराजयक साक्षी तँ थिके। तें, सम्पूर्ण विश्वसँ अबैत पर्यटक लेल रोमन फोरम एकटा महत्वपूर्ण पड़ाव थिक।

फोरम केर आस-पासक मंदिरसब ईसापूर्वक पैगन वा ग्रीक धर्मकेर मंदिर थिक जकर आन धर्मक एखुनका देवी देवतासँ कोनो सरोकार नहि। मुदा, मंदिरक आकार-प्रकार आ देवी देवताक सुन्दरता एहन छैक, जे एखनो सुदर्शन व्यक्तिक तुलना लोक ग्रीक देवी-देवतासँ करैछ।

पियात्सा वेनेसिया वा वेनिस चौकः रोम केर तेसर दर्शनीय इलाका थिक पियात्सा वेनेसिया। पियात्जा वेनेसिया माने वेनिसियन चौराहा, केन्द्रीय रोम केर एकटा प्रमुख चौराहा थिक। कएक प्रमुख मार्ग एतयसँ आरम्भ आ खतम होइत छै। चौक-चौराहाक बिना शहर की? दिल्लियहुमे चांदनी चौक छैक, विजय चौक छैक। राज पथ छै। मुदा, रोम केर चौक-चौराहामे किछु खास छै। ओ खासियत सड़कक चौड़ाइ, आ सुन्दरतामे नहि। खासियत छै, चारू तरफ छिड़ियायल मूर्तिकला, फब्बारा, स्तम्भ आ स्मारकमे। दक्षिण भारतक मंदिरक परिसरमे, देवालपर, आ मन्दिरक भीतर पाथरक, सीमेंटक वा माटिक, हजारो रंगीन वा सादा मूर्ति भेटत। मुदा, योरोपीय मूर्तिकला ओहिसँ एकदम भिन्न छै। पहिल, सामान्यतः, मूर्ति संगमरमर वा काँसाक भेटत। संगमरमरक मूर्तिक रंग मोटा-मोटी बरकरार छै। कांसाक मूर्तिसबहक रंग रासायनिक परिवर्तनक कारण हरियर भ' गेल छै। मूर्तिसब आकारमे पैघ आ देखबामे भव्य। सजीवता एहन, जे, मुग्ध भ' जायब। मूर्तिकलाक छात्र वा कलाप्रेमी लेल योरप आ रोम अनुभव आ आनंदक अनुपम अवसर प्रदान करैछ।

पियात्जा वेनेसिया चौराहाक प्रमुख आकर्षण थिकै आधुनिक इटलीक प्रथम सम्राट **विक्टर एमानुएल द्वितीय केर भव्य स्मारक आ पलात्जो वेनेसिया (वेनिस भवन)**। शहरकेर एकटा प्रमुख राजमार्ग (विआले फोरी द इम्पेरिआली) पिआत्जा वेनेसियासँ आरम्भ होइछ आ रोमन फोरम होइत कोलोसियम धरि जाइछ। तें, ई चौराहा सैलानी लोकनिक प्रमुख आकर्षण केंद्र थिक। श्वेत संगमरमरक विक्टर एमानुएलक भव्य स्मारक देखबामे आकृष्ट अवश्य करत, मुदा, आस-पासक ऐतिहासिक भवन आ भग्नावशेषसँ ई एतेक भिन्न अछि, जे भ' सकैत अछि ई भवन रोम केर भव्य छवि पर बड़का टा कुरूप मस्सा-जकाँ, वा मनभावन छविपर

हास्यास्पद मेकअप-जकाँ प्रतीत हो। तथापि, एहि स्मारककेर छतसँ चौराहक विहंगम दृश्य अवश्य भेटैछ।

एतुका दोसर भवन, **पलात्जो वेनेसिया-वेनिस भवन,** वेनिसक एक धर्म गुरु बनबौने छलाह। ओ गुरु ओहि युगमे वेनिस केर संत मार्क चर्च केर प्रधान रहथि। पछाति ई भवन रोमन कैथोलिक चर्च केर मुखिया-पोप-केर आवास, आ अन्ततः वेनिसकेर राजदूतावास बनल। बदलैत समय आ देशक क्षितिज पर नव-नव राजनेताक उदयक संग पलात्जो वेनेसियाक भाग्य सेहो बदलल आ बीसम शताब्दीमे इटलीक तानाशाह बेनितो मुसोलिनी सेहो एहि भवनमे अपन कार्यालय बनौलनि। एही भवनक बालकनीसँ मुसोलिनी 1936 ई. मे, पियात्जा वेनेसियामे एकत्रित जनसमूहक समक्ष, इतालवी साम्राज्यक उद्घोषणा केने छलाह। सम्प्रति एहि भवनमे एकटा राष्ट्रीय संग्रहालय अछि।

ट्रेवाइ फाउंटेन : जेना पहिने कहलहुँ, रोममे मूर्ति, स्तम्भ, चौक-चौराहा, फब्बारा, गौरवशाली प्रासाद, आ भव्य चर्च केर भरमार छै। मुदा, फब्बारा सबमे ट्रेवाइ फाउंटेन सर्वाधिक महत्वपूर्ण आ विश्वप्रसिद्ध अछि। लगभग 86 फुट ऊँच आ डेढ़ सौ फुटसँ बेसी चौड़ा ट्रेवाइ फाउंटेन कतेको नामी सिनेमाक शोभा बढौने अछि। मुदा, फब्बारासँ बेसी रोचक छैक फब्बाराक निर्माणक इतिहास। ताहि दिन ऐतिहासिक रोम केर नागरिक लोकनि पानिक आपूर्ति लेल शहरक बाहरहि, दूर-दूरसँ पाथरक लम्बा-लम्बा बाहा बनाकय शहरमे पानिक आपूर्तिक व्यवस्था केने छलाह। पानिक एहि बाहाकें अक्वाडक्ट कहै छलैक। एहिमे सँ एक प्रमुख, 23 किलोमीटर लम्बा अक्वाडक्ट-अक्वा वर्गोक (कुमारिक जलस्रोत)-एतुका मनोरम फब्बारा ट्रेवाई फाउंटेनक जलस्रोत थिक । जनश्रुति छै, ईसापूर्व प्रथम शताब्दीमे, एकटा कुमारि कन्या पियासल सैनिक सबकें रोम शहरक बाहर दूरस्थ पेय जलक स्रोत देखओने छलनि। ओहि कुमारि कन्याक स्मृतिमे एहि अक्वाडक्ट वा नहरक नाम अक्वा-वर्गो (कुमारिक जलस्रोत) पड़ल। एहि फाउंटेन केर पृष्ठभूमि केर भव्य वास्तुकलासँ नीचा बहैत जलधार, जलकस्रोत पर मनुष्यक विजयक द्योतक थिक। भवनक बीचोबीच झरनाक मध्यमे समुद्रक देवता, ओसिआनक भव्य मूर्ति छनि।

ट्रेवाइ फाउंटेनक अंगनैमे जमा पानिमे भजोखा कैंचा (सिक्का) फेकबाक परम्परा छै। मान्यता छैक, ट्रेवाइ फाउंटेनमे कैंचा फेकलासँ यात्रीकें पुनः रोम अयबाक मौका भेटैत छनि। दोसर रोचक तथ्य छै, कैंचा फेकबाक कर्मकांड। लोक सिक्का दहिना हाथमे लैत अछि आ बामा कान्हक ऊपर बाटें जलमे सिक्का फेकैत अछि। विकिपीडियाकें मानी तँ पर्यटक लोकनि प्रतिदिन करीब 3000

यूरोक सिक्का ट्रेवाइ फाउंटेनक अंगनैमे फेकैत छथि। ई फब्बाराक व्यवस्थापक लोकनि आ चोर दुनू लेल आमदनीक स्रोत थिक। हमरालोकनिक यात्रा व्यर्थ भेल। फब्बाराक मरम्मतिमे हाथ लागल छलै, फब्बारा बन्न छलै, आ अंगनै सुखायल छलै। ने फब्बाराक देखबाक आनंद उठौलहुँ आ ने भजोखा कैंचा फेकबाक मौके आयल। चौराहा लगक दोकानसँ एतुका आइसक्रीम, जेलाटो, किनल आ जेलाटोक आनंद लेलहुँ आ रोमन ग्लैडिएटरक आधुनिक नमूनाक (बहुरुपियाक) फोटो झिकल। कोन ठेकान बिनु यूरो फेकनहुँ पुनः रोम आबि ट्रेवाई फब्बारा देखबाक अवसर भेटय!

ट्रेवाइ फाउंटेनक बाटक काते-कात, दोबगली रेस्टोरेंट सब छै। बाटक काते-कात लगाओल कुर्सी-टेबुल केर इर्द-गिर्द बैसल पर्यटक आ नागरिक भोजन आ मदिराक आंनद लैत रहथि। ई दृश्य योरप केर सब शहरमे अहोरात्र भेटत। योरपमे वाइन आ बियर पीबाक भला कोनो समय आ स्थान छै! बियर तँ लोक पानि जकाँ पिबैये। मुदा, हमरा आकृष्ट केलक द्वारि-ए-द्वारि सजावट लेल लटकाओल लाल-लाल मरचाइक पैघ-पैघ गुच्छा। हमर पत्नी कहलनि, इटलीक पाक कलामे मरचाइ-मशालाक प्रचुर प्रयोग होइत छै। एहि मामलामे इटली यूरोपक आन कतेक देशसँ भिन्न अछि। हँ, नेबो-मरचाइक प्रयोग भारतमे कतेक ठाम लोक टोना-टापर लेल करैत अछि से तँ देखल छल, मुदा, मरचाइक प्रयोग लोक सजावट लेल सेहो करैये से रोचक लागल। ई हमरा लेल नव अनुभव थिक।

वर्तमान इटली आर्थिक संकटक दौरसँ गुजरि रहल अछि। हमरा सबहक गाइड-एंजेला-करीब 40 वर्षक महिला छलीह। कतहु ठाढ़ भ' क' गप्प करबाक फुरसति भेल, तँ, कहलनि, 'एखन एतुका समय बड्ड खराप छै।' हम सहानुभूतिमे पुछलियनि, 'एहि दुर्दिनक हेतु इटलीक यूरोपीय समुदायमे सम्मिलित हयबकें अहाँ जिम्मेदार मानै छियै?' एंजेला सोझ जबाव नहि देलनि। मुदा, गप्प करैत हुनक छविमे हुनकर पीड़ा चिन्हबामे हमरा कोनो भांगठ नहि भेल। दूर शून्यमे देखैत एंजेला कहलनि, 'इटलीक यूरोपियन यूनियनमे सम्मिलित भेला उत्तर असर तँ अवश्य भेलैये। पहिने जे पित्जा 10 लिरेमे भेटैत छल, आब वैह 10 यूरोमे भेटैये। आ लोकक खर्च बढ़लै-ए, आमदनी तँ नहि-ए। तखन यूरोपियन यूनियनसँ फूट हयब सेहो तँ समाधान नहिए छियै।' हमरा उत्तर भेटि गेल। ने गिड़ने उपाय, ने उगिलने उपाय। दूध, माछ, दुनू बांतर। इएह थिकै यूरोपियन यूनियनक सत्य।

आर्थिक तंगीक ई स्थिति, जर्मनी आ स्विट्जरलैंड छोड़ि, एखनि मोटा-मोटी योरोपक सब देशमे छै। प्रायः घटैत आमदनी आ पुराने जीवन पद्धति आ जीवन

स्तरकें कायम रखबाक आग्रह एहि संकटक मूल थिकै।

रोममे योरप यात्राक आरंभसँ अंत धरि सम्पूर्ण योरपमे हमरा सबहक यात्रा लक्जरी बसमे छल। बसकेर लम्बा सपाट शीशा बाटें अयना-जकाँ झलकैत बाहरक दृश्यक आनंद लैत चलैत जाउ। ठाम-ठाम, निर्धारित पड़ावपर उतरू, घूमू-फिरू। बसमे बैसू आ फेर दोसर ठामक लेल विदा। एहिसँ कतहु थकानक अनुभव नहि भेल। कतहु ट्रेन, प्लेन, आ बस पकड़बाक हुज्जत नहि भेल। मुदा, तें, लेट हेबैक से नहि। समयक पाबंदीक ख्याल राखहि पड़त। बस चालक केर ड्यूटीक समय आ दर्शनीय स्थलक टाइम-टेबुलक ध्यान राखब अनिवार्य छै, से टूर ऑपरेटर निरंतर मोन पाड़थि। कारण प्रत्यक्ष छै : प्रत्येक बसमे ड्राइवरकेर लॉग-इन डाटा रिकॉर्ड होइत रहैत छै, ड्यूटी आरम्भ आ समाप्तिक सम्पूर्ण लेखा-जोखा रिकॉर्ड होइत जाइत छैक, आ पुलिस प्रशासन सख्तीसँ सब डाटाक विश्लेषण करैत छै। नियमक उल्लंघनक परिस्थितिमे सम्बंधित ड्राइवर वा बस ऑपरेटरकें कठोर दण्डक व्यवस्था छै। तें, जतहि ड्यूटीक 12 घंटा पूरा भेलनि ड्राइवर बस रोकि देताह आ बस टस-सँ-मस्स नहि हयत। सोचबाक गप्प छै, भारतमे प्रतिवर्ष रोड-एक्सीडेंटसँ सवासँ डेढ़ लाख धरि नागरिक अकाल कालकवलित होइत छथि। घायलक तँ गप्पे छोड़ू। एहि सबमे खराब रोड, गाड़ीक रख-रखाव, ड्राइवरक अनुशासन, लचर पुलिस प्रशासनक आलावा ड्राइवरक असीमित ड्यूटी-ऑवरक कारण थकान आ गाड़ी चलयबा काल ड्राइवरक ओंघायब सेहो दुर्घटनाक हेतु जिम्मेवार अछि। मुदा, श्रमिकक अधिकार आ रोड एक्सीडेंटक रोकथाम लेल ककरा परवाहि छै। विकसित आ विकासशील देशक बीच प्रशासन व्यवस्थाक ई दुखद अंतरक अंत कहिया धरि हयत के कहत!

अस्तु, रोम शहरकेर भ्रमण भेलै आ वैटिकन लेल बस चलल। असलमे, भले वैटिकनकें संप्रभुता-सम्पन्न राष्ट्रक दर्जा होइक, वैटिकन केर इलाका छै तँ रोम शहरक भीतरे। तें, ट्रेवाई फाउंटेनसँ बस चलल, बस एकटा मोड़ पर मुड़ल आ वैटिकन केर भवनसब सामने अछि!

वैटिकन सिटी

रोमक शहरक बीच, किलानुमा वैटिकन सिटी एक संप्रभुतासंपन्न राष्ट्र आ रोमन कैथोलिक धर्मावलम्बी लोकनिक पवित्रतम तीर्थ थिक। तें, सम्पूर्ण विश्वसँ रोमन कैथोलिक तीर्थयात्री, जिज्ञासु, अध्येता आ राजनेताक अतिरिक्त हमरालोकनि-सन लाखो प्रतिवर्ष पर्यटक एतय अबैत छथि। इसाई धर्मक रोमन कैथोलिक संप्रदायक

प्रथम संरक्षक, मुखिया आ संत पीटर केर उत्तराधिकारीक रूपें सम्मानित-पोप, वैटिकन सिटी स्टेट केर राष्ट्राध्यक्ष थिकाह। मात्र 110 एकड़मे सीमित एहि राष्ट्रक अपन सुरक्षा व्यवस्था आ अपन भाषा-लैटिन-छैक। मुदा, यूरोपियन यूनियन केर आन कतेक राष्ट्र-जकाँ वैटिकनमे खरीद-बिक्री लेल यूरो चलैत छैक। वैटिकन सिटीक इलाकामे पोपकेर सुरक्षाक जिम्मा सदातनिसँ स्विस गार्डक जिम्मा छैक। वैटिकनकेर अपन कोनो सेना नहि छैक। तथापि, तीर्थ-स्थलक पवित्रता आ पोपकेर राजनीतिक निरपेक्षताक कारणे कोनो विश्वयुद्धमे वैटिकन तीर्थकें कोनो नुकसान नहि भेलै।

जेना कहल, वैटिकन अयनिहारक पर्यटकक संख्या अनगणित छै। मुदा, प्रवेश निःशुल्क नहि। तें, टिकट लेल भोरहिसँ किलाक देवालक काते-कात तीर्थयात्री आ सैलानी लोकनिक किलोमीटरसँ लम्बा कतार स्वाभाविक। वैटिकनक भीतर जे मेला भेटत तकर गप्पे कोन। परिसरक द्वारिपर सुरक्षाक पुख्ता व्यवस्था। टूर-गाइड सब सुरक्षा अधिकारीसँ रेडियो-ट्रांसमीटर लैत छथि आ अपना-अपना ग्रुपकेर प्रत्येक यात्रीकें मोबाइल-फोन-सन रेडियो रिसीवर आ इयरफोन सेट गलामे लटका दैत छथिन। यात्राक दौरान विभिन्न भाषामे लोकल गाइड लोकनि अपन ग्रुपसँ संपर्क रखैत छथि आ यात्रीक भाषामे, मद्धिम स्वरमे कमेन्ट्री दैत रहैत छथिन जे केवल अहाँकें सुनबामे आओत। एहिसँ परिसरमे शान्ति रहैत छैक। मूल टूर ऑपरेटरक, जेना, हमरा सबहक 'थॉमस कुक' केर गाइड, एक व्यक्ति अपन कम्पनीक फोल्डेबुल झंडा ल' कय आगू-आगू चलैत छथि आ दोसर गोटे अपन-अपन ग्रुपकें गोलियबैत चलैत छथि। समस्या छै, अद्‌भुत मेलामे, आ सीमित समयमे, हजारो वर्षसँ संकलित, एतेक अपरिचित मूर्ति आ पेंटिंग देखब आ ओकर गौरवमय ऐतिहासिक गाथाकें बूझब संभव नहि। एक-एक टा पेंटिंगसँ छत आ कॉरिडोर केर देवाल तेना छारल छै जे देखनिहारक आश्चर्यचकित आ अवाक् हयब अस्वाभाविक नहि। छत सब पर एहन विशाल, भव्य आ अद्‌भुत चित्रकारीक कल्पना, रंगकर्म, आ परिश्रम विस्मयकारी लागत। सत्यतः एहन बेजोड़ कृतिसब कलाकारक गहन लगन आ पीढ़ी-दर-पीढ़ीक जीतोड़ परिश्रमक फल थिक। कलाकृतिसब सृष्टिक उत्पत्ति, स्वर्ग-नरक, इसाई धर्मक इतिहास, लोकगाथा, धर्म-युद्ध, वा धर्मगुरु लोकनिक जीवनगाथाकें निरुपित करैछ। गाइडक कमेन्ट्री ध्यानसँ सुनु। बूझै छियै, तँ, बुझू। नहि, तँ, तीर्थाटन भेल, पुण्य कमायल, सएह। एतुका भीड़ भारतक कोनो भीड़ भरल बाजारक वा प्रमुख तीर्थस्थलक भीड़सँ कम नहि। तें, म्यूजियम देखबाक अलावा हमरा सबकें एक दोसरक संग छुटबाक चिंता छल। अस्तु, एक दोसराक

हाथ धेने चलैत छलहुँ। एकठाम हमरालोकनिक-पति-पत्नीक-एक दोसरक हाथ छुटल। साकांक्ष भेलहुँ। संयोगसँ, भीड़मे, पत्नीक हाथ पकड़बाक प्रयासमे दोसर महिलाक, अपरिचित गट्टा पकड़ा गेल। ओ मूक रुपें अपन हाथ झिकलनि। हम उलटिकय ताकल तँ महिलाक विस्मित छवि देखि हमरा अपन गलतीक बोध भेल, आ लजा गेलहुँ। माफी मांगि आदतन अपन पत्नीक अनुसरण कयल। संयोगसँ ओ महिला हमरे लोकनिक ग्रुपकेर छलीह, जान बांचल। विदेशमे, आ अनजानहुमे बेजा हरकत! बाप-रे-बाप!! दोसर भय गिरहकट सबहक छल। चिंता छल, पाकेट ने काटि लिअए, पासपोर्ट ने गुम्म भ' जाय। टूर ऑपरेटर कहने छलाह, वैटिकनमे लोक दूइए उद्देश्यसँ अबैए, एक, तीर्थयात्रा-पर्यटन, आ दोसर चोरि-आ गिरहकट्टी। तें सावधान रहू, पाकेट आ पासपोर्ट बचाउ, अन्यथा रोम आ वैटिकनमे हलाल हयब-पाकेट कटब, पासपोर्ट हेरायब आम गप्प थिकै! जँ एहन प्रारब्ध भेल तँ यूरोपक टूर धयले रहि जायत। घर-मुंहा होउ आ आपस जाउ। ठीके, मोन पड़ल, अपनो ओहिठाम तीर्थस्थलमे भय देखाकय, वा ठकि-फुसियाकय, चोरि-डकैती होइते छैक। विश्वासपूर्वक कहै छी, बनारस आ इलाहाबादक हमर अपन अनुभव वैटिकनक अनुभवकें अवश्य मात देतैक। हँ, वैटिकनमे कोनो पंडा-पुरोहित अहाँकें हरान नहि करत। आ ने प्रत्यक्ष रूपें चढ़ावा चढ़ेबाक वा दान दक्षिणा देबाक कोनो परम्परा देखलियइ। तें, टिकट कटाओल तँ निश्चिंत रहू। धक्का-मुक्की जे होइ, दर्शन हेबे करत। चप्पल-जूता बाहर रखबाक परम्परा छैहे नहि, तें, ओकर चिंता छोड़िये दियौ।

वैटिकन सिटीक अहातामे चारिटा प्रमुख दर्शनीय स्थल छैक-वैटिकन म्यूजियम, सिस्टिन चैपल, संत पीटर बैसिलिका, आ संत पीटर स्क्वायर वा चौक।

वैटिकन म्यूजियम समूहक लोकप्रियता विश्वविख्यात अछि। वर्ष 2013 मे देश-विदेशक 55 लाख दर्शनार्थी वैटिकन म्यूजियम देखय आयल छलाह। एतय क्लासिकल आ यूरोपक पुनर्जागरण कालक मूर्तिकला आ पेंटिंगक विश्वप्रसिद्ध संकलन भेटत। मुदा, सबकें देखब आ बूझब असंभव। प्रत्येक विधाक भाषा आ व्याकरण होइत छै, शब्दकोष होइत छै। भाषाक आस्वाद तखने कय सकब जँ गुण बूझल हो अन्यथा बानरक हाथमे नारिकेर। ओना सुन्दर स्वरूप, नेनाक निश्छल मुसुकी, सहज संगीत, निखरैत रंग, सुस्वादु व्यंजन, आ फूलक सुगंधि, भाषा आ व्याकरणसँ परे, सबकें आनन्दित करैछ। ताहिरूपें एतुका मूर्ति सब अद्‌भुत सजीव लागत, पेंटिंग सब मोनकें मुग्ध कय देत। मुदा, चित्रकला आ मूर्तिकलाक व्याकरण आ इतिहास सीखल रहैत तँ एक मासक टूर सेहो काफी नहि होइत। एतय सबसँ

जटिल समस्या छैक, अजस्र जनसमूह। मुदा, करबैक की? रोमन कैथोलिक क्रिस्चियन परंपरामे ई तीर्थ परम धाम थिक। तें, श्रद्धालु लेल मात्र वैटिकनक यात्रा जीवनक सफलता आ मुक्तिक द्वार बुझू। मुदा, से गप्प पुनः पछाति।

वैटिकन म्यूजियमक प्रमुख आकर्षण थिक वास्तुकार-चित्रकार-आविष्कारक लियोनार्दो-द-विन्चीक मूर्तिकला। विश्वप्रसिद्ध चित्रकार माइकलएंजेलो आ राफेल केर बनाओल चित्र सब सेहो एहि संग्रहलायक शोभा थिक। म्यूजियम केर अनेक खण्ड विगत पोप लोकनिक स्मृतिमे निर्मित छैक। म्यूजियमक भिन्न-भिन्न खण्डमे स्थान-स्थान पर ऐतिहासिक पात्र लोकनिक आदमकद मूर्ति, मुखौटा, बस्ट-छातीक ऊपरक मूर्ति-केर अतिरिक्त जीव-जंतु केर मूर्ति, पाथरक ताबूत, हेडस्टोन, शिलालेख, आ इटली नक्शा देखाबमे आओत। सम्पूर्ण कलाकृतिक सविस्तर वर्णन हमर ज्ञानसँ परे अछि। तें, एतद्धि रामायणम्!

सिस्टिन चैपेल पोप केर आवासक समीपक प्रार्थनाकक्ष थिक। बाहरसँ ई श्रीविहीन भवन-जकाँ लागत; कतहु किछु सजावट नहि। मुदा, भीतर जायब तँ अद्‌भुत कलाकृति आ चतुर्दिक सजावट चकित कय देत। सिस्टिन चैपेल छैक पुरान। मुदा, एकर जीर्णोद्धार यूरोपक पुनर्जागरण कालमे पोप सिक्स्टसकेर नेतृत्व कालमे भेल छल। तें, सिस्टिन चैपेलक नामकरण हुनकहि नाम पर भेल छनि आ ई चैपल सिस्टीन चैपेल कहबैत अछि। एहि प्रार्थनाकक्षक विशिष्टता थिक एकर सीलिंग पर सुशोभित माइकलएंजेलोक अद्वितीय चित्रकला। एहि चित्रकलाक बलें, विगत 500 वर्षसँ, ई प्रार्थनाकक्ष सम्पूर्ण विश्वसँ तीर्थयात्रीक अलावा, कला प्रेमीसबकें चुम्बक जकाँ झिकैत रहलै-ए। सिस्टिन चैपेलक देवाल सब पर बनाओल ईसा (क्राइस्ट) आओर मुशा (मोसेस) क, जीवन वृत्तिक अनुपम आ बेजोड़ भित्ति-चित्र सेहो एतुका अद्वितीय आकर्षण थिक। अपन धार्मिक प्रसिद्धि आ विश्वप्रसिद्ध कलाकार लोकनिक कलाकृति सबहक बलें सम्पूर्ण विश्वक कलाप्रेमी आ तीर्थयात्री, दुनू लेल, वैटिकनक सिस्टिन चैपेल पवित्र तीर्थ थिक। कलाप्रेमी आ तीर्थयात्री एतय आबि अपन जीवनभरिक साध पूर्ण करैत छथि आ अपनाकें धन्य बूझैत छथि। सरिपहुँ, कलाकृतिसब छैहे एहन बेजोड़ जे एकरासबकें देखैत कोन कलाप्रेमीक मोन अघयतैक!

रोमन कैथोलिक सम्प्रदायक पोप चुनबाक परम्परा सेहो सिस्टिन चैपलक प्रसिद्धिक एकटा आओर प्रमुख कारण थिक। परम्परागतरूपें पोप केर चुनाव सिस्टिन चैपेलहिमे मतदान द्वारा होइत छनि। चुनावक पछाति बैलेट-पेपर केर जरयबाक अदभुत परम्परा छैक। सफल चुनावक अवसर पर सिस्टिन चैपेलक

चिमनीसँ उठैत उज्जर धुआँ बाहर प्रतीक्षारत जन समूहकें नव पोप केर चुनावक शुभ सूचना दैछ। जँ, मतदान नव पोप केर चुनावमे असफल भेल, तँ, जरैत बैलट पेपरमे भीजल-तितल घास-फूस दए चिमनीसँ कारी धुआँ निकालि, धर्मगुरु लोकनि मतदान प्रक्रिया द्वारा नव पोपकेर चुनावक अभियानमे अपन विफलता सूचित करैत छथि। ई रियाय वैटिकनमे सदायसँ चलैत आबि रहलै-ए।

संत पीटर बसिलिका वैटिकन सिटी स्टेट केर तेसर मुख्य आकर्षण थिक। संत पीटर बसिलिकाक निर्माण यूरोपक पुनर्जागरण कालमे भेल छलैक। इतिहासकार लोकनिक अनुसारें एत्तहि, बैसिलिकाक आगूक विशाल परिसरमे संत पीटर, रोमन सम्राटक हाथें शहीद भेल छलाह। संत पीटर ईसा मसीहकेर प्रारंभिक बारह अनुयायी मे सँ एक छलाह से तँ सर्वविदिते अछि। बैसिलिकाक आगूक विशाल परिसर-संत पीटर चौक- केर बीचोबीच ठाढ़ पाथरक विशाल स्तंभ-ओबेलिस्क-दू हजार वर्ष पूर्वक ओहि दुखद त्रासदीक मूक साक्षी थिक। शहादतक पछाति एत्तहि, समीपक एक पहाड़ी पर संत पीटरकेर अंतिम संस्कार भेल छलनि। क्रमशः समय-समय पर ओहि इलाकामे अनेक संत आ पोप लोकनिक समाधि स्थापित होइत चल गेल। अंततः संत पीटरेक समाधि पर संत पीटर बसिलिकाक निर्माण भेल। संत पीटरक समाधि पर, आ मूलतः हुनके स्मृतिमे निर्मित ई समाधि, तें, संत पीटर बसिलिकाक नामे विश्व विदित भेल। आकारमे संत पीटर बसिलिकाक गणना विश्वभरिक विशालतम चर्चमे होइछ। रोमन कैथोलिक धार्मिक आस्थाक अनेक तीर्थमे सेहो ई एक पवित्रतम तीर्थमे परिगणित होइछ। काल-क्रमे, समयक मारिसँ ई भवन जर्जर भ' गेल छल। तें, सोलहम आ सत्रहम शताब्दीक बीचक लम्बा अवधिमे, जे काल यूरोपमे कला, विज्ञान, आ सांस्कृतिक पुनर्जागरण कालक नामे जानल जाइछ, एकर पुनर्निर्माण भेल। आजुक संत पीटर बसिलिका ओही पुनर्जागरण कालक देन थिक। ततबे नहि, एकर नवनिर्मित स्वरूपक संरचनाक श्रेय छनि पुनर्जागरण कालक विश्वविख्यात वास्तुकार-दोनांतो, माइकेल एंजेलो, मादेर्नो आ बर्निनीकें। तें, ई भवन आ एकर भीतरक मूर्ति, स्थापत्य, आ चित्रकला योरपक पुनर्जागरण कालक कलाक उत्कृष्ट नमूना मानल जाइछ।

सत्यतः, संत पीटर बसिलिका-सन भव्य तीर्थ केर वर्णन असंभव अछि। एहि भवनक विशाल, गोलाकार गुम्बद रोमक परिचय थिकैक। भवन केर बाहर, आगू बरामदा पर, दुनू कातमे दूटा विशाल मूर्ति संत पीटर आ संत पॉल केर थिकनि। मुख्य भवन केर प्रवेश सामनेक विशाल कक्ष बाटें होइछ। भीतर दोबगली छोट-पैघ अनेको प्रार्थना कक्ष, पोप लोकनिक समाधि, धर्मगुरु लोकनिक मूर्ति आ अनुपम

चित्रकला देखाबामे आओत। मुदा, इसाई धर्मक इतिहास आ गाथासँ अपरिचित हमरालोकनि-सन अबूझ यात्री लेल गाइड केर कमेन्ट्री काफी नहि। यद्यपि, संत पीटर केर समाधि एतुका प्रमुख आकर्षण थिक, तथापि, 'पियएता'क नामसँ प्रसिद्ध, संगमरमरमे, माइकल एंजेलोक अनुपम कृति, जाहिमे शोकाकुल माता मेरीक कोरमे प्राणहीन ईसाक शरीर चित्रित छनि, अहाँकें आकृष्ट अवश्य करत। आखिर माताक कोरमे संतानक मृत शरीर कोन सहृदय मनुष्यक हृदयमे करुणा नहि जगओतैक।

वर्षभरि संत पीटर बसिलिकामे पर्व त्यौहारक अवसर पर विश्वभरिक श्रद्धालुक समागम होइते रहैछ जाहिमे कतेको बेर पोप जनसमूहकें संबोधित करैत छथिन, प्रवचन दैत छथिन। एहि सब अवसरमे प्रमुख अछि, क्रिसमसक आ ईस्टरक समागम (मास) जाहिमे लाखहुँ श्रद्धालु हिस्सा लैत छथि आ विश्वभरिक करोड़ो लोक पोप केर उपदेश आ सन्देश सुनैत छथि।

हमरालोकनि संत पीटर बसिलिका आ संत पीटर स्क्वायरसँ टहलिकय बहराइत सड़कक कातक उज्जर रेखा पार भेलहुँ कि मनुक्खक भीड़ छंटल, वैटिकनक भ्रमण पूर्ण भेल, आ गाइड कहलनि आब अहाँ, वैटिकन सिटी राष्ट्रक सीमा पार कय रोम, इटलीक सीमामे दाखिल छी ! चरैवेति। ....

हँ, एकटा गप्प मन पड़ल : कतेक नीक होइतैक, जँ, आनो राष्ट्रसब अपन पड़ोसी सब संग अपन सीमापर आयब-जायब अहिना सरल रखैत, तँ, युद्ध आ मतभेदसँ मनुक्खक परिवार आ चूल्हि-चिनबारक बीच आरि-धूर नहि पड़ितैक। योरोपियन यूनियन अपना सबमे तँ इएह व्यवस्था आरम्भ कयने छल। किन्तु, योरपमे आब पुनः देवाल ठाढ़ भ' रहल अछि।

वैटिकन सिटी आ रोम शहर केर कंडकटेड टूर समाप्त भेल। भोजनक व्यवस्था भारतीय होटल, जयपुरमे छल। छोट रेस्टोरेंट, स्वादिष्ट भोजन आ भारतीय मूलक होटल मालिक। हाथ धोबालय वाशरूम लेल गेलहुँ, तँ, भनसाघर लग भनसिया सबसँ भेंट भेल। पंजाबी नागरिक लोकनि, 7-8 गोटे। सबहक कपड़ा-लत्ता, अस्तव्यस्त बाथरूममे, एकटा कपबोर्डमे जेना-तेना राखल छलनि। भनसिया आ बेयरा लोकनि प्रायः रेस्टोरेंटक भीतरे कहुना कय रहैत छथि। सोचै छी, दूर-दूरसँ उज्जवल भविष्यक खोजमे एशियाक कतेको देशसँ लोक यूरोप अबैत अछि। दिन-रातिक कठिन परिश्रम आ सैकड़ो असुविधा-असौकर्यकें सहैत धन संचय कय किछु टाका अपन देश ल' जाइत अछि। नहि जानि, कतेक गोटे अपन घर-परिवारकें

कहैत हेतैक जे भारतीय मूलक श्रमिकलोकनि विदेशमे कमाइ लेल कोन-कोन पापड़ बेलैत छथि। कहबी छै, गुड़क मारि धोकड़े जनैत अछि। सएह गप्प।

हमरालोकनि भोजन कयल आ अगिला पड़ाव इटलीक प्रातो शहर लेल विदा भेलहुँ। बाटमे गाड़ी टाइबर नदीक एकटा पुल पार भेलै, तँ, बामाकात, टाइबर नदी, आ नदीक दोसर पारक, रोम शहरक बिनु देखल भाग सब आकृष्ट केलक। नदीक जल गाढ़, किन्तु स्वच्छ। रोडसँ नीचा आ नदीक कछेरमे अजस्र दोकान-दौड़ी आ छोट-छोट इटरी-भोजनालय। नदीमे सैलानी सब लेल मोटराइज नाओ। ई सुविधा यूरोपमे आम गप्प छै। एकर अतिरिक्त थोड़े-थोड़ दूर पर अनेक पुल। प्रत्येक पुलक दुनू भाग, सड़कक कातमे, सजावटक मोहक मूर्ति सब, जेना, यात्रीक स्वागतमे ठाढ़ हो। संत पीटर बसिलिकाक विशाल गुम्बद तँ देखबे करबै। मुदा, हमरा आकृष्ट कयलक एकटा विशाल, गोलाकार, प्राचीन भवन आ भवनक ऊपरक मूर्ति। मूर्तिक हाथमे तरुआरि छैक। पछाति बुझबामे आयल भवनक नाम थिकै कासेल संत एंजेलो, पवित्र देवदूतक भवन। मूलतः ई भवन रोमक सम्राट एड्रिअनक समाधि छलनि। पछाति ई भवन सैनिक किला आ तखन आओर आन-आन सम्राट आ राजनेता लोकनिक समाधि सेहो बनल। मुदा, आब एहिमे संग्रहालय छैक। मोटा-मोटी एतबे, रोममे देखबाक घुमबाक अंत नहि छै। जतेक समय हो, देखू घुमू। इतिहास बूझल अछि, तँ, आनंद दूना। नहि बूझल अछि, तँ, धनि सन। आगू बढ़ू। हँ-हँ। हमरालोकनिकें तँ प्रातो पहुँचबाक अछि।

सुनइ छी, प्रातो शहर पैघ छै। मुदा, हमरालोकनि एतय साँझमे पहुँचल छी। प्रातो शहर पहाड़ी इलाकाक समीपे अछि। एतुका मौसम एखन अनुकूल छै। शहरक एक कातमे बसल हमरालोकनिक आवास, अपार्टमेंट होटल थिक। माने, सब सुविधा-सम्पन्न, फर्निश्ड फ्लैट। फ्लैटक खिड़कीसँ लगक हरियर पहाड़ी आ फूल-पत्ती नीक लागल। खेबाक पीबाक व्यवस्था, अलग बिल्डिंगमे रेस्टोरेंटमे छै। रूम सर्विसक सुविधा नहि। चाहो बनयबाक व्यवस्था नहि, से अखरल। टेलीफोन आ इन्टरनेट छैक। टीवी सेहो। मुदा, स्थानीय भाषाक टीवीक कोन काज! शुकुर जे एतय रातिए भरि एतय रहबाक अछि। बाहर निकलि, लग केर बाजार जयबाक मोन भेल। मुदा, भाषाक बाधा मोन पड़ल। संगहि, गप्प इहो जे हमरालोकनिक ग्रुप पैघ अछि। मुदा, छी तँ सब फूटे-फूट। पति-पत्नीक बीच एक टा मोबाइल टेलीफोन। अचानक जरूरत भेलापर संपर्को कोना हयत। रातिमे भोजन 'थॉमस कुक' केर लोकल ठीकेदारक जिम्मा। ठीकेदार लोकनि लाहौरक निवासी पाकिस्तानी थिकाह। हमर सबहक संगी जनरल पुरी पता ठेकाना पुछलखिन। मोटा-मोटी,

जीविका जतय ने ल' जाय। मुदा, एकटा गप्प कहू? पाकिस्तानी लोकनिक बनाओल भोजन ओहने स्वादिष्ट लागल जेना अपने लोकनि बनबैत छी। भोजनमे ओहन कोनो कटुता कहाँ छलइ जेहन कटुताक बोध, पाकिस्तान शब्द सुनि भारतमे अनुभव होइछ! असलमे कटुताक मूल अपन मोन आ अपन विचारे थिक!

लीनिंग टावरक शहर, पीसा

तेसर दिन भोर। तैयार भ' जलखइ पनिपियाइ भेलै। बसमे सामान लादल आ लीनिंग टावर देखबा लेल, पीसा शहर लेल विदा होइत गेलहुँ। करीब एक घंटाक बस यात्रा। पीसा पहुँचबासँ पूर्व टूर गाइड चेतावनी देलनि-'पीसामे जे किछु किनबाक हो, बंगलादेशी दोकानदारसँ ली। सोमाली दोकानदार लोकनिसँ दूर रहब। सोमाली व्यापारीसँ जँ किछु मोलेबइ आ नहि किनलहुँ, तँ, कोनो दशा बांकी नहि राखत! सोमाली लोकनिक पूरा झुण्ड घेरि लेत, आदि-आदि।'

मन पड़ल दादा कहने रहथि, भारतक स्वतंत्रताक तुरत बाद बहुतो शरणार्थी लोकनि गामे-गाम घूमि जीविका लेल बहुतो माल-असबाब बेचथि। खूब मोल-मोलाइ होइक। किन्तु, मोल-मोलाइ पटि गेल आ तखन जँ वस्तु किनबासँ ना नुकुर केलियैक, तँ, बेचनिहार सब खरीदारक कोनो दशा बाँकी नहि रखथिन। एतहु सोमाली नागरिक लोकनि तँ शरणार्थीए थिकाह!

पीसा शहरक प्रसिद्धिक एकेटा कारण एकेटा छै : लीनिंग टावर वा झुकल मीनार। जगह तँ छोटे छै। पहिने ई मीनार सात टा विश्वप्रसिद्ध आश्चर्यमे सँ एक छल। विश्वप्रसिद्ध आश्चर्यक एखनुक फेहरिश्तमे लीनिंग टावरक नाम नदारद अछि, से भिन्न गप्प। मुदा, एहि कलाकृति लेल पर्यटकक रुचिमे कोनो कमी देखबामे नहि आयल। ई मीनार एखनहुँ इटलीक लोकप्रिय पर्यटन स्थल थिक। आ मीनारे देखय सब एतय अबैत अछि। प्रसिद्ध मीनार स्थानीय चर्च केर परिसरेमे छैक। चर्च केर परिसरमे चर्च आ चैपलकेर संगमरमरक अलग-अलग भवन छै। लीनिंग टावर, चर्चक परिसरमे, फराक, आठ मंजिली, बेल-टावर थिकै। पहिल मंजिलक निर्माणक पछाति आधारक कमजोरीक दुआरे टावर एक दिस झुकि गेलै। फलतः, निर्माण बहुत दिन धरि ओतबे पर ठमकल रहलै। पछाति फेर केओ हिम्मत केलनि आ आठ मंजिली बेल-टावर बनल तँ विश्वप्रसिद्धे भ' गेल! टावर पर चढ़बाक टिकट लगैछ। पुरान मीनार आ संगमरमरक करीब तीन सौ पिच्छड़

सीढ़ी। मारे मुँह। हमरालोकनि नहि चढ़लहुँ। प्राण बांचत, तँ, आन पहाड़ चढ़ब, अमरनाथ वा मानसरोवर झील देखि आयब!

संगमरमरक एहि टावरक नक्काशीमे हाथी आ बानरक छवि देखलियैक, से रोचक लागल। कारण हाथी आ बानर दुनूमे सँ एको जंतु योरपमे नहि होइछ।

एहि शहरमे बस एतबे। यादगार लेल यात्री लोकनि टावरक परिसरमे, टावरे-जकाँ झुकैत फोटो झिकबै छथि। हमहूँ फोटो झिकबौलहुँ। आखिर, मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते हैं! घुरतीमे टूर ऑपरेटर कहलनि, 'पिसाक शहर विश्व प्रसिद्ध संत गोबैन नामक शीशाक प्रसिद्ध कम्पनी लेल सेहो चिन्हल जाइछ।

फ्लोरेंस

फ्लोरेंस शहरक नाम आधुनिक नर्सिंग व्यवसायक अग्रदूत फ्लोरेंस नाइटेंगलक संग जुड़ल छनि, से सर्वविदित अछि। 'लेडी विथ द लैंप'क नामे सुपरिचित फ्लोरेंस नाइटेंगल, निर्विवाद विश्वविख्यात छथि। फ्लोरेंस नाइटेंगलक जन्मदिन सबतरि अंतर्राष्ट्रीय नर्सिंग-दिवसक रूपमे मनाओल जाइछ। मुदा, फ्लोरेंसक प्रसिद्धिक कारण फ्लोरेंस नाइटेंगले टा नहि छथि। यूरोपीय पुनर्जागरणक कालमे कला-विज्ञानविद्क बीच फ्लोरेंस कला, विज्ञान आ ललित कलाक क्षेत्रमे सिद्धपीठक रूपें समादृत छल। सुनल अछि, यूरोपीय पुनर्जागरण केर मुहिम फ्लोरेंसेसँ आरम्भ भेल छै। ओहि युगक कतेको कलाकार-मूर्तिकार, चित्रकार, साहित्यकार आ वैज्ञानिक फ्लोरेंसहिक निवासी छलाह। विकसित होइत कलाक नव-नव आयामकें प्रसिद्ध कला मनीषी लोकनिसँ सीखि कतेको आन कलाप्रेमी आ गुणी लोकनि सम्पूर्ण यूरोपमे ओहि नव विधा सबहक प्रचार कयलनि। ओ कलाकृतिसब पछाति रेनासां आर्टक नामसँ विश्वप्रसिद्ध भेल। ततबे नहि, ओहि समयमे मौलिक विज्ञान, खगोलशास्त्र आ चिकित्साविज्ञानक क्षेत्रमे सेहो प्रगति भेलै। लिओनार्दो द विन्ची, माइकेल एंजेलो, गैलिलिओ, कवि दांते आदि, सब गोटे फ्लोरेंसक ओही युगक देन थिकाह। ततबे नहि, बहुतदिन धरि फ्लोरेंस इटलीक राजधानी आ यूरोपक आर्थिक, सांस्कृतिक आ राजनैतिक केंद्र सेहो छल। तें फ्लोरेंस कलाप्रेमीक मक्का तँ थिके, ई विज्ञानक इतिहास आ राजनीतिक अध्येताक हेतु सेहो महत्वपूर्ण स्थान थिक। महान राजनेता, लेखक, आ चिन्तक मैकेयावेली सेहो फ्लोरेंसहिक देन थिकाह। सहजहि, सब टूर ओपरेटर अपन ग्रुपके फ्लोरेंस अनिते छथिन। तें, फ्लोरेंसमे पर्यटक केर कोनो कमी नहि। एहन पुरान नगरक पग-पगसँ इतिहास आ दन्तकथा जुड़ल छैक। मुदा, सामान्य पर्यटक लेल, जे एक-एक शहरमे एक-एक दिन लेल अबै छथि, ई संभव नहि जे सब किछु निचेनसँ देखि पाबथि। सीमित समयमे पर्यटक सबकें सब किछु नीक-जकाँ बुझायब टूरगाइड लेल सेहो संभव नहि। सत्यतः, सामान्य रुचिक पर्यटककें आन देशक इतिहास आ भूगोलक एतेक

जानकारी ने रहैत छनि आ ने सब लेल एतेक जानकारी एकत्र करब संभवे छै। हमरा देश-कोस घुमबाक रुचि अछि, देश-प्रदेशक जानकारी नीक लगइए। मुदा, ने यूरोपक इतिहास बूझल अछि आ ने यूरोपक विस्तृत भूगोलसँ परिचित छी। टूर ऑपरेटर सेहो कहलनि, 'बेसी इतिहास सुनयबैक, तँ, यात्री लोकनि अकच्छ भ' जाइत छथि। तें, हमरालोकनि संक्षेपमे सूचना दैत जगह देखा दैत छियै।' फ्लोरेंसमे सेहो टूर ऑपरेटर एकटा लोकल गाइड रखने छलाह। महिला हालहिक प्रसवक पछाति प्रायः पहिले बेर, टूरिस्ट सबहक बीच काज पर आयल छलीह। तें, प्रायः अवचेतनक कोनो आन चिंताक कारण व्यवहारमे सहजताक अभाव प्रतीत भेल आ महिला ड्यूटीकें ड्यूटी जकाँ पूरा करबामे लागल छलीह, से सबकें अनुभव भेलै। जँ केयो दोहराकें प्रश्न पुछलखिन, तँ, एके कमेन्ट : ई तँ हम पहिनहि कहि चुकल छी। अहाँ ध्यानसँ सुनु।' एक तँ ऐतिहासिक गप्प-सप्प, दोसर, धाराप्रवाह भाषण, आ ताहि पर अंग्रेजी बजबाक भिन्न शैली। अन्ततः, हमरालोकनिक ग्रुपक एकटा सीनियर सिटीजन प्रतिवाद केलखिन। मुदा, महिलाक लेल धनि सन। सीमित समयक कॉन्ट्रैक्टमे सीमित काज करबाक छलनि, केलनि। बस। एहिना होइत छै, जँ, अहाँकें अपन व्यवसायमे आनन्द नहि अबैत हो वा सीमित समयमे काज करबाक वा विधि पुरयबाक बाध्यता हो। मुदा, संभव छैक, एहिना विधि पुरयबामे जीविका छूटि जाइछ। रोमकेर हमरालोकनिक गाइड, एंजेला, नगरक खिस्सा सुनबैत काल, स्वतः इतिहासक भुक्तभोगी जकाँ भावविह्वल भ' जाइत छलीह। जे केओ किछु प्रश्न पुछलखिन, स्थिरसँ संतोषजनक उत्तर भेटलनि। ई थिकै व्यावसायिक प्रतिबद्धता-प्रोफेशनल कमिटमेंट। तें, मात्र चारिए-पाँच घंटाक परिचय आ कतेको टूरिस्ट गाइडमे एकटा एंजेलाएटा किएक मोन छथि। हमरा दृष्टिमे, एखन भारतमे टूरिस्ट गाइडक व्यवसाय तेना भ' कय विकसित नहि भेल छैक, वा हमरालोकनि टूरिस्ट गाइडकें ओतेक प्रोत्साहन नहि दैत छियै। जँ, ऐतिहासिक महत्वक इलाका सबमे टूरिस्ट गाइडक व्यवसायक मानक शिक्षा वैकल्पिक विषयक रूपें हाइ स्कूलमे उपलब्ध होइतैक, तँ, कतेक युवक लोकनि लेल रोजगारक आ स्वावलंबनक बाट खुजितैक।

हमरालोकनि फ्लोरेंस पहुँचल रही तँ दिनक करीब बारह बजेक समय छल हएतै। बाहरसँ पहाड़ी बाटें अबैत घुमावदार सड़क, शहरमे, एकटा टीलापर फैल जगह-पियात्सा माइकेलएंजिलो अर्थात माइकेलएंजिलो चौक-धरि पहुँचल छलै। पहिने ओत्तहि हमरालोकनिक बस रुकल आ हमरालोकनि बससँ उतरैत गेलहुँ। असलमे, ई स्थान चौक तँ कोनो अर्थमे नहिए छैक। थिकै, शहरक बाहरक एकटा

प्रमुख भ्यू पॉइंट। एतयसँ सम्पूर्ण शहरक विहंगम दृश्य भेटत। भ्यू पॉइंटक आगू किछु गाछ-वृक्षक समूह छै आ तकर आगू अरनो नामक नदी फ्लोरेंस शहर देने बहैत छैक। नदीक दोसर पार खूब चौड़ा सड़क, विशाल नगर आ दूरमे विशाल गुम्बद, स्तंभ, आ एकटा पुरान किला आकृष्ट केलक। लिलीक फूल फ्लोरेंस शहरक परिचय आ एतुका निशानी थिकै। चौराहाक बीचोबीच, ऊँच आधार पर माइकेलएंजिलोक विश्व प्रसिद्ध कृति डेविड केर मूर्तिक 'नमूना' छै। एहि मूर्तिक अनुकृति फ्लोरेंस आ सम्पूर्ण योरपमे अनेक ठाम भेटत। मूर्तिक आगू टेलिस्कोप सब लागल छै। यूरोक सिक्का खसाउ आ शहर केर मैग्नीफाइड भ्यू देखू। यादगार लेल फ्लोरेंसक पृष्ठभूमिमे हमरालोकनि फोटो झिकौलहुँ। मौज मस्तीएक बीचमे पानिक एक अछार आबि गेलैक आ सब बस दिस भागल। छाता संगमे छल, काज आयल। ओना योरपकेर टूरमे छाता संग राखब उचित, सब ठाम काज देत। भ्यू पॉइंटसँ आबि हमरालोकनि एकटा भारतीय रेस्टोरेंटमे भोजन कयल। आ फेर शुरू भेलै शहर केर भ्रमण। चली, 'पित्जा ले दूओमो' अर्थात गुम्बद चौक।

स्थानीय जनतामे 'दूओमो दि फिरेंत्जे' क नामसँ प्रसिद्ध फ्लोरेंस केर षट्कोणीय गुम्बद फ्लोरेंस शहरक प्रमुख टूरिस्ट आकर्षण थिक। संत मेरी चर्चक ('बसिलीका दि सन्ता मरिया दि फियोरे') ई गुम्बद अपन युगमे भवन निर्माणक क्षेत्रमे एकटा अजूबा क्रांति छलैक। षट्कोणीय आकार आ निर्माणमे इंटाक प्रयोग। तें, ई गुम्बद विश्वभरिमे एखनहुँ बेजोड़ अछि। ओना, वास्तुकलामे गुम्बदक इतिहास बहुत पुरान छैक। जेना पहिने कहलहुँ, नगरक बाहरहु पर्यटककें सबसँ पहिने ई गुम्बदे आकृष्ट करैत छैक। आकारमे संत मेरीक चर्च विशाल तँ छैके, एकर संगमरमरक बाहरी देवालक रंग-बिरंगी पैनल लोककें विशेष रूपें आकृष्ट करैत छैक। आ सएह एहि भवनक विशेषता थिकै। चर्च केर लगहिमे विशाल बेल-टावर छैक। चर्चहि-जकाँ ई बेल-टावर अपन सौन्दर्य आ कलाकृति लेल बेजोड़ मानल जाइछ। एहि पाँच मंजिली बेल-टावर केर बाहरी देवाल पर सृष्टिसँ ल' कय, देवी-देवता, कृषि-पशुपालन, वास्तुकला, विज्ञान, खगोलशास्त्र, आ चिकित्साशास्त्र सबसँ सम्बंधित भित्ति-चित्र भेटत। सड़कक दोसर कात बैपटिस्त्री छैक-जतय इसाई नेना सबहक इसाई धर्ममे पहिल धार्मिक संस्कार होइत छै। जनश्रुतिक अनुसार, एहि बैपटिस्त्रीमे माइकेलएंजिलोसँ ल' कय मैकेयावेली धरि सबहक बैपटिज्म (आरंभिक संस्कार) भेल छनि। बैपटिस्त्रीक केबाड़क पट्टा सबपर धातुक नक्काशी सेहो बेस चर्चित छै। ओना जेना धार्मिक भवन सबमे होइत छै, नक्काशी सबमे छैक तँ धार्मिके आख्यानक वर्णन।

संत मेरी चर्चक दोसरो कात एकटा पैघ चौराहा छैक पिआत्जा दि ला सिनुरिया अर्थात भद्रलोक वा भलमानुस लोकनिक चौक। साबिकमे सरकारी कामकाज केर ऑफिस-दफ्तर सब ओत्तहि छलैक। ऑफिस सभक अतिरिक्त एतय एकटा पैघ संग्रहालय सेहो छैक। मुदा, हमरालोकनिकें संग्रहालय देखबाक अवसर नहि भेटल। चौक पर, बाहरे, ततबा मूर्तिसब छै जे देखबाले समय थोड़ भ' जाइछ। कोना ने होउक, दू हप्ताक समय, आ दस देशक भ्रमण। टूर ऑपरेटर की करताह! सैर-सपाटाक संग एक-एक दिनमे बससँ तीनसँ पाँच सौ मील केर दूरी तय करबाक बाध्यता जे छै। तें, देखू आ आगू बढ़ू। रक्ष एतबे जे नीक सड़क आ आरामदायक बसमे ने गाड़ीक झमारक अनुभव हयत आ ने सुतनिहारक नींदे बाधित हेतनि। तें, मोन होअय तँ सुतु वा बाहर परिदृश्यक आनंद उठाउ।

भलमानुस लोकनिक चौकपर मुख्य भवन (पलात्जो दि सिनुरिया) केर बाहर माइकेलएंजिलोक विश्वप्रसिद्ध कृति डेविडक मूर्तिक अनुकृति पर्यटकक मुख्य आकर्षण थिकै। करीब सवा 5 मीटर ऊँच डेविडक असली मूर्ति, एतुका संग्रहालय-गैलरी ऑफ अकादेमी ऑफ फ्लोरेंस-मे राखल छैक। संगमरमरक मूर्तिमे मनुष्यक शरीरक एहेन चित्रण, जाहिमे शरीर-रचनाक सूक्ष्मतम खूबी निखरैत होइक, मूर्तिकें कालजयी आ कलाकारकें अमर बना देने छैक। हाथ-पयर, वक्ष, आ पेटक एक-एक मांस-पेशी, हाथक शिरा मनुष्यक शरीरसँ एको रत्ती भिन्न नहि लागत। मूर्तिक नग्न स्वरूप बलशाली लोकनायक आ देवी-देवताकक मानवीय गुण आ मनुक्खे सन शरीरक द्योतक थिक। माने, देवी-देवता आ महापुरुष लोकनिक शरीर सेहो मनुष्येक शरीर-जकाँ रहनि। रेनासां कालमे योरपक मूर्तिकार सबमे डेविडक मूर्ति गढ़बाक प्रचलन आम छल हेतैक। कारण, डेविड धार्मिक इतिहासक एहन लोकनायक थिकाह, जे एसगरे अजेय शत्रुकें सोझ द्वन्द्वमे पराजित कय इतिहास रचने छलाह। तें, रेनासां कालक अनेक मूर्तिकार लोकनि डेविडक मूर्ति गढ़ने छथि। मुदा, माइकेलएंजिलोक डेविड निर्विवाद आओर सबहक कलाक नाक काटि बेजोड़ कृतिक दर्जाक हकदार अछि।

डेविड केर मूर्तिक बामा कात एकटा पुरान, पक्का मंडप आ मंच छै-लोत्जिया दि लान्जी। ई स्थान प्रायः पहिने सैनिक लोकनिक विश्राम स्थल आ पछाति जनसभाक सम्बोधनक मंच छल। एखनि एहि मंडपमे अनेक प्रकारक मूर्तिक संकलन छै जाहिमे पर्सियसक मूर्ति (दहिना हाथमे तरुआरि आ बामा हाथमे मेदुसाक काटल मुड़ी लेने), आ 'सेबाइन नारिक बलात्कारक अद्‌भुत वा वीभत्स-मूर्तिकला, तथा मेडिचि परिवारक चिह्न-जोड़ा सिंह-प्रधान छै। मूर्तिसबहक

सन्दर्भ ग्रीक-रोमन आ यूरोपियन लोकगाथा आ इतिहाससँ छैक। तें, सामान्य सैलानी लेल मूर्ति मूर्तिवते रहि जाइछ। आजुक युगमे जखन सब सूचना कम्प्यूटरक बटन पर उपलब्ध छैक, तखन, मुख्य पर्यटन स्थल सबहक विषयमे किछु जानकारी संकलित क' कय देश-कोस देखबा लेल बहराइ, तँ, नीक। मुदा, ई सब किछु अपन रुचिपर निर्भर छैक। तथापि, एतय मेडिची परिवारक कनेक परिचय देब बेजाय नहि हयत। मेडिची परिवार 14 हम सँ 18 हम शताब्दी धरि फ्लोरेंसमे सबसँ सुपरिचित आ प्रभावशाली परिवार छल। विशाल वैभव आ राजनैतिक प्रभावक कारण एहि परिवारक वर्चस्व सम्पूर्ण यूरोपमे चर्चित छलै। ततबे नहि, एके मेडिची वंशसँ चारि टा पोपक योगदान सेहो एहि परिवारक अद्वितीये रिकॉर्ड थिक। इसाई धर्मक इतिहासमे एहन उदहारण विरले भेटत। कलाक पृष्ठपोषणमे सेहो मेडिची परिवारक योगदान अभूतपूर्व मानल जाइछ। यूरोपियन पुनर्जागरणक समयमे कलाक क्षेत्रक विकासमे कलाकार लोकनिकें जाहि चारि परिवारसँ सबसँ बेसी सहयोग आ प्रोत्साहन भेटलनि ताहिमे सँ मेडिची परिवार अग्रणी छल। सदातनिसँ भ' एलैये, पुरान घर खसैत अछि, नव घर उठैत अछि। तहिना समयक संग, क्रमशः, मेडिचीओ परिवारक सूर्यास्त भेलै आ एहि परिवारक प्रभाव इतिहास बनि गेल। किन्तु, कहबी छै, 'कीर्तिः यस्य सः जीवति'-कीर्तिए मनुष्यकें अमर बनबैत छै। तें, फ्लोरेंसक नागरिक सबहक संग मेडिची परिवार सेहो फ्लोरेंसक गौरव केर हिस्सेदार छथि आ फ्लोरेंसक कीर्ति अमर अछि।

होली क्रॉस बसिलिका : गुम्बद चौक केर भ्रमणक पछाति टूर ऑपरेटर हमरालोकनिकें होली क्रॉस बसिलिका नामक चर्च देखबय ल' गेलाह। एहि चर्च केर बाट अरनो नदीक किनेरे-किनेरे छै। नदीक दुनू कछेर पर बस्ती तँ छैहे। चर्चक समीपक पुलपर दोबगली दोकान-दौरीमे अबैत जाइत नागरिक आ पर्यटक वस्तु-जात किनैत-बेसाहैत छथि।

होली क्रॉस बसिलिका आकारमे पैघ आ रंगमे उज्जर दप-दप। चर्च केर भवन डेविड केर स्टारसँ सुशोभित। चर्चक भवनमे डेविड केर स्टार-आम नहि। चर्च केर आगूक परिसरमे एक कात कवि दान्तेक मूर्ति। हमरालोकनिकें भीतर जेबाक समय नहि छल। गाइड कहलनि, सैकड़ो वर्ष धरि फ्लोरेंसकेर सब महत्वपूर्ण व्यक्ति लोकनिक अंत्येष्टि एत्तहि होइत अयलनि-ए। तें, ई बसिलिका गैलिलिओ गैलिली सन खगोलशास्त्री, दांते सन कवि, मैकेयावेली सन राजनैतिज्ञ, माइकेलएंजेलो बोनारोत्ती सन मूर्तिकार-वास्तुकार, नर्सिंग व्यवसायक अग्रदूत फ्लोरेंस नाइटेंगेलक आलावा राष्ट्रक विभिन्न क्षेत्रक अनगणित अग्रणी हस्ती लोकनिक अंतिम विश्राम-स्थल

थिक। एकेसंग एतेक विश्वप्रसिद्ध हस्ती लोकनिक नाम सुनि हमरालोकनिक चकित हयब अस्वाभाविक नहि। सत्ते, एकेठाम एतेक विश्वप्रसिद्ध हस्ती लोकनिक समाधि आन ठाम विरले भेटत। तें, हे कवि, कलाकार, वैज्ञानिक, समाजसेवी, राजनेता, शास्त्रविद, आ अनामा नागरिक अपने लोकनिकें कोटि-कोटि श्रद्धांजलि। देश केर सीमा होइत छै, मनुष्यकेर जाति-धर्म होइत छै। मुदा, ज्ञान, विज्ञान, कला आ साहित्य सम्पूर्ण मनुष्य जातिक साझा विरासत थिक। तें, गुणीक सर्वत्र सम्मान होइछ, विद्वान सर्वत्र पूजित होइत छथि। 'स्वदेशे पूज्यते राजा, विद्वान सर्वत्र पूज्यते'। एखन एतबे आ फ्लोरेंससँ विदा। रातिमे पदुआ नामक शहरमे होटल शेराटनमे विश्राम हेतइ। काल्हि भोरे फेर, चरैवेति!

वेनिस

वेनिस, पेरिस वा स्विट्जरलैंड ककरा नहि सुनल छैक। आजुक युवावर्गकें जनिका विभव छनि, तनिका वेनिस, पेरिस वा स्विट्जरलैंडहिमे हनीमून मनयबाक मनोरथ रहैत छनि। कश्मीर, काठमांडू वा केरल ओहिसँ नीचा स्थान पबैछ। आ से असंगत नहि। हमरालोकनिक ग्रुपमे आइ भोरहिसँ वेनिस जयबाक गहमागहमी छै। हमरालोकनि सब उत्साहसँ भरल छी। रातिमे पानि भेलैए आ एखनहुँ हल्का झीसी पड़ि रहल छैक। मेघ लागल छै। मेघ लागल होइक, सूर्य नुकायल होथि, रौद नहि होइक आ समुद्रमे बोटिंग करबाक हो। वेनिस घुमबाक एहिसँ बेसी अनुकूल दिन की हेतैक! सब गोटे बाहर आबि बसमे सामान लादल, होटलक आगूमे फोटोग्राफी भेलै, बसमे नीक-नीक सीट ताकि बैसैत गेलहुँ। एतयसँ पहिने फुसिना नामक स्थान जाइ। फुसिनामे बस आ ड्राइवर विश्राम करताह। हमरालोकनि रिजर्व नाहमे सवार हयब आ तखन वेनिस। आइ कतेक गोटेक जिनगीक मनोरथ पूर हयत। ई इटलीक वेनेजिया इलाका थिक, सएह थिकै वेनिसक इतालवी नाम। फुसिना एकटा शान्त आ नीरव-सन इलाका लागल। ओना पैघ शहरकें छोड़ि यूरोप-अमेरिकामे सब ठाम शांति आ नीरवता भेटत। भारतसँ हालहिमे इंगलैंड पहुँचल एकटा डाक्टर, जनशून्य सड़क आ नीरव शहर देखि ककरो पुछने रहथिन, 'एतय कर्फ्यू लागल छै?' सत्यतः, एशियाई लोककें यूरोपक छोट शहरसबमे एहन अनुभूति हयब आश्चर्यजनक नहि। जे किछु। फुसिनामे हमरालोकनि 50 यात्री बला मोटराइज्ड नाहमे सवार भेलहुँ, कैमरासँ शूटिंग लेल उपयुक्त स्थान चुनल आ लक्ष्य बेध लेल तैयार। फेर कहिया भेटत एहन मौका। जे चित्र मनोरम लागल, आ जे चित्र संवेदना आ स्मरण धरि पहुँचैमे विफल भेल, तकरा सबकें कैमरामे बन्न क' ली। निचेनसँ बैसिकय पछाति देखब।

नाहसँ फुसिनासँ वेनिस केर यात्रामे करीब आधा घंटा लगैत छैक। बामा कात दूरमे वेनिस द्वीपकें मुख्य भूमिकें जोड़ैत विशाल पुल आ आगू एड्रिएटिक समुद्रक विशाल जल राशि। ताहूसँ दूर, नाकक सोझमे वेनिस। वेनिस जेबाक आ आपस

होइत मोटरबोट लेल जल मार्गक निसानदेहीले करीब सौ-पचास मीटरक दूरी पर दोबगली लकड़ीक, मोट-मोट, आ पैघ-पैघ खम्भा गाड़ल छैक। पानिक गहराइ एतबा छैक जे छोट-छोट यात्री बोट आ विशाल व्यावसायिक जलपोत दुनूकें अपन-अपन जलमार्गसँ जाइत देखलियैक। जल मार्गक दुनुकात लग आ दूरमे अनेक छोट पैघ द्वीप देखलिऐक। कतेक द्वीप जनशून्य छै। किछु पर मात्र भग्नावशेष देखबामे आयल। मुदा, जँ, जँ, आगू बढ़ब बामा कातक क्षितिज पर वेनिसक संत मार्क चौक (पिआत्जा सान मार्को) क चर्च केर गुम्बद, चर्च केर घंटाघर, पैघ-पैघ जल जहाज, डॉग वा ड्यूक (पहिलुका युगक प्रशासक) केर भवन आकृष्ट केलक। जलमार्गक दहिना कात आबादीसँ भरल दोसर द्वीप छैक। जहाजक डेक पर ठाढ़ भेलासँ शीतल जल हवा आ समुद्रक पानिक फुहारा शरीरकें शीतल तँ करबे करत, ऊपर उड़इत छोट-पैघ पक्षी, लगे बाटे जाइत जहाज, गीत गबैत नाविक आ सुन्दर शहर केर पिक्चर पोस्टकार्ड-सन छवि, अनेरे मनकें मोहि लेत। हमरालोकनि सब यात्री-दम्पति बेरा-बेरी डेक पर ठाढ़ भेलहुँ, समुद्री पानिक फुहारमे भिजलहुँ, फोटो झिकौलहुँ आ एक दोसरा संग हंसी-मजाक-चौल आ गीत-गाना भेलै। जँ-जँ कछेर लग अयलैक नाह, नाविक, आ यात्रीक भीड़ आ उत्साह बढ़ैत गेलैक। हमरालोकनि नाहसँ उतरलहुँ तँ गोंडोला राइड लेल नाविक सब पहिनहिसँ तैयार छलाह। कन्डक्टेड टूर केर इएह गुण छैक; अपना किछु आयास नहि करय पड़त। अहाँ टाका देलियै आ निश्चिन्त रहू। अहाँक सब सेवाक चिंताक भार आब टूर ऑपरेटरक छनि। आतिथ्य सत्कारमे 'थॉमस कुक' सर्वत्र अव्वल दर्जामे पास होइत एलाह, से अवश्य कहब।

वेनिस आइसँ नहि, अनेको शताब्दीसँ विश्वविख्यात इलाका अछि। वेनिसक स्वरूप अजूबा छै। एड्रिआटिक सागरक एक खण्डमे-लैगूनमे छोट-पैघ, करीब एक सौ अठारह द्वीपक समूह। किछु आबाद, किछु जनशून्य। जँ प्राकृतिक जलमार्ग द्वीप सबकें एक दोसराकें विभाजित केने छै, तँ अनेको पुलसब एक दोसराकें जोड़ने छै। एहिमे सँ पैघ आबादी बला मुख्य द्वीपसमूह वेनिस थिकै। सुनै छी, मध्य युग आ रेनासां कालमे वेनिस समुद्री व्यापारक प्रमुख केंद्र छल आ बहुत दिन धरि वेनिस द्वीपसमूह स्वतंत्र गणराज्य सेहो छल। समुद्री व्यापार वेनिसक आर्थिक समृद्धिक प्रमुख स्रोत छलै। जँ, अर्थ समृद्धिक सोपान थिकै, तँ, द्वंद्वक मूल सेहो थिकै। तें, समय-समय पर वेनिसक प्रभुता लेल संघर्ष आ प्रभुतामे परिवर्तन सेहो भेलै। मुदा, जखन एशिया आ अमेरिकाक जलमार्ग विकसित भेलैक, पोर्तुगीज भारतक बाट पर विजय पताका फहरओलनि, कोलम्बस अमेरिका पहुँचि गेलाह, तँ,

क्रमशः भूमिमार्ग आ सड़क यातायात गौण होइत गेलैक। सहजहि, दुनिया भरिमे वैकल्पिक बाट खुजलासँ वेनिसक व्यापारकें झटका अवश्य लगलै। मुदा, अपन प्राकृतिक सौन्दर्य आ अद्‌भुत भौगोलिक स्वरूपक कारण सैलानी आ रोमांटिक जनगण लेल वेनिसक आकर्षण कनेको कम नहि भेलैक। आ एखनो वेनिस विश्वकेर अनेको सर्वाधिक लोकप्रिय टूरिस्ट केंद्रमे सँ एक थिक। एखनि लगभग 50000 टूरिस्ट प्रतिदिन वेनिस अबैत छथि। टूरिस्टक आवाजाही जँ एक दिस वेनिसक समृद्धिक मार्ग प्रशस्त करैत छैक, तँ, दोसर दिस नित्य बढ़ैत टूरिस्टक संख्या वेनिसक आधारभूत संरचना पर अभूतपूर्व बोझ सेहो साबित होइत छैक। मुदा, समृद्धि आ प्रसिद्धि सब किछु अपन सूदि असूलै छै, ताहिमे कोन संदेह। अपनहुँ देशमे शिमला, मसूरी, दार्जिलिंग आ लेह केर हालत देखिते छियैक।

वेनिसक प्रसिद्धिक अनेक कारण छैक। जलमग्न चौहद्दी, अनगणित केनाल, सैकड़ो पुल, एतुका अद्‌भुत मुखौटा। नागरिक लोकनि सार्वजनिक उत्सवक अवसर सब पर ई मुखौटा पहिरै छथि। वेनिस केर अनेक विशेषण आ अनेक पर्याय छैक। पानिक शहर आ पानिपर दहाइत शहर, केनालक शहर, पुलक शहर, आ मुखौटाक शहर। जनिका जे देखबामे एलनि ओ वेनिस केर नामकरण तहिना केलनि। मुदा, एहि ठाम सबसँ लोकप्रिय अछि, गंडोला छोट-छोट नाह, देखबामे सुन्दर आकारमे छोट। वेनिस अबैत सब नव-पुरान दम्पतिक एके मनोरथ रहै छनि, गंडोलामे बैसि ग्रैंड कैनालमे झिलहरि खेलाइ-नौका विहार होइ आ गोंडोलामे फोटो झिकाबी। हमरो लोकनिक टूर ऑपरेटर तकर व्यवस्था केने छलाह। एक-एक गंडोलामे दू टाक परिवार आ एकटा नाविक। आ फेर भेलैक अद्‌भुत नगर वेनिसक भ्रमण। नगरमे गली, मुहल्ला, चौराहा होइत छै, एतय गलीक नाम पर कनाल छै, द्वीप सब मुहल्ला थिकै। सीमेंट कंक्रीटसँ निर्मित होटल, संग्रहालय आ चर्च, दोकान दौरी सब पानिएक बीच लकड़ीक आधार पर फलि-फूलि रहल छैक। नाहसँ जाउ, नाहसँ आउ। छै ने अद्‌भुत। नावहिसँ मुनिसिपैलिटी बला कचरा सेहो जमा करैछ। हमरालोकनि-जकाँ लोक कचड़ा पानिमे प्रवाहित नै करैछ। आब देखी स्वच्छ भारत अभियानक प्रेरणासँ हमरालोकनिक स्वभाव कतेक बदलैत अछि आ भारत कतेक स्वच्छ होइछ। जँ, भारतकें देखी, तँ, छोट-छोट नाहसँ नित्य यातायातक दृष्टिएँ केरल केर कोट्टयम, अलप्पी, कोच्चिकें वेनिस कहि सकैत छियैक। किन्तु, दुनूमे समानता कम ओ भिन्नता बेसी भेटत।

पिआत्जा सान मार्को-संत मार्क चौक वेनिसक केंद्र थिकै। संत मार्क एतुका रक्षक थिकाह। संत मार्क बसिलिका एतुका प्रमुख पूजाघर थिक। सिंह संत

मार्ककेर निशानी थिकनि। तें, चौक पर पैघ पैघ स्तम्भ पर सिंहक स्वर्णिम मूर्ति देखबै। मुदा, सिंह छैक अद्‌भुत। सिंह सबकें पक्षी-जकाँ एक-एक जोड़ा पाँखि छै! एकर सम्बन्ध, भ' सकैत अछि कोनो लोककथा वा कपोलकल्पित परीकथासँ होइक। बसिलिकाक आगू बड़का खुला मैदान-सन अंगनै छैक, जकर चौकोर मैदानक तीनू कातक बहुमंजिली भवनसबमे पहिलुक युगमे समुद्री व्यापारी सबहक कार्यालय, प्रतिष्ठान आ गोदाम रहैक। एखन अंगनैक चारूकात रेस्टोरेंट, होटल, बाजार आ व्यावसायिक प्रतिष्ठान भेटत। चर्च केर दहिना कातक भवन पर पैघ घड़ी आ छत पर पैघ घड़ीघंटा छैक। घंटाक दुनुकात ठाढ़ आदमकद मूर्तिक हाथक पैघ-पैघ हथौड़ा प्रत्येक घंटा पर घंट पर बजरैत छैक। ई घड़ीघंट एतुका टूरिस्टक आकर्षण थिक। हमरोलोकनि धैर्यपूर्वक ई दृश्य देखबा लेल प्रतीक्षा कयल आ देखल।

वेनिस शीशाक सामान, गिलास, झूमर, मूर्ति आ घर सजेबाक अनेक सामान लेल सेहो प्रसिद्ध अछि। आब वेनिसक बुरानो-मुरानो द्वीप ग्लास-उत्पादनक केंद्र थिकै। मुदा, मुख्य शहरमे, चौक केर एक कातक, एकटा गलीमे एकटा फैक्ट्री मुरानो शीशा फैक्ट्री एखनो छै। हमरालोकनिक टूर ऑपरेटर हमरालोकनिकें मुरानो शीशा फैक्ट्री ल' गेलाह। ओतय पिघलल शीशाकें मोड़ि शो-पीसक जीवजंतु निर्माणक कारीगरी देखल। महिलालोकनि शीशाक किछु आभूषण सेहो कीनैत गेलीह। दोकानमे सोनक परत चढ़ाओल शीशाक पात्र सब सेहो बिक्री लेल रहैक। मुदा, तीन सँ छौ हजार टाकाक एक-एक गिलास लेल रुचि आ टाका दुनू चाही। एकर अतिरिक्त वेनिस, लेस वा जालीदार वस्त्र लेल सेहो प्रसिद्ध अछि। मुदा, समयक कमीक कारणे सब किछु देखब असंभव।

यूरोप टूरमे बाथरूमक प्रयोग एकटा पैघ समस्या छैक। सबठाम टाका लागत। हाईवे पर टूर ऑपरेटर 2-3 घंटा पर बस रोकि हमरालोकनिकें 'कम्फर्ट स्टॉप' दैत छलाह। काफी-चाह पीबू वा नहि शौचालयक मुफ्त प्रयोग कय सकैत छी। मुदा, वेनिसमे से नहि। कम-सँ-कम कॉफी, तँ, किनहि पड़त। सेहो रेस्टोरेंटमे ठाढ़े-ठाढ़ काफी पीबू, दू यूरो दियौ। बाथरूमक प्रयोग मुफ्त। मुदा, जँ कुर्सीपर बैसि काफी पीयब, तँ, एगारह यूरो लागत। छै ने अद्‌भुत!

वेनिसक चौक-चौराहाक भ्रमणक पछाति हमरालोकनि फुसिना वापसी लेल पुनः नाह पर सवार भेलहुँ। मुदा, नाहपर सवार भेलापर बुझबामे आयल वेनिसक आस्वादक चटनी-अंचार एखन धरि बांकिए छल। नाह पर एक-एक टा टेबुल पर दू-दू टा दम्पतिक लेल थारी सजाओल राखल छलैक। भारतीय भोजन-प्रत्येक ट्रे मे

वेजिटेबल बिरियानी आ रायता, ताहि पर एक-एकटा क' सिंघाड़ा आ थोड़ेक हलुआ। सबकें भूख लागल छलैक, सब भोजन पर टूटि पड़ल। हमरा सब सोचलहुँ, वाह! एहिसँ नीक वेनिस भ्रमण आओर की हेतैक। मुदा, जखन एकटा युवक अक्कोर्डियन बजबैत गीत गायब शुरू केलनि, तँ, बुझबामे आयल, ई अंतिम सरप्राइज तँ एखन धरि बांकी-ए छल। हमरा भेल कलाकार भारतीय हेताह, हम पुछलियनि, आप कहाँ से हैं? विस्मित होइत, इतालवी भाषामे, गायक किछु कहलनि, तँ, सत्ते चकित भेलहुँ। एड्रियाटिक सागरमे नौका विहार, नाह पर भारतीय भोजन, आ ताहि पर साक्षात गीत गबैत स्थानीय गबैया, भेलै ने सोना पर सोहागा!

ऑस्ट्रिया

इटलीक यात्रा वेनिसमे समाप्त भेल। हमरालोकनि ऑस्ट्रियाक दिस विदा भेलहुँ। ऑस्ट्रियाक किछु दृश्य अंग्रेजी फिल्म 'साउंड ऑफ म्यूजिक'मे देखल छल। 'साउंड ऑफ म्यूजिक' नामक फिल्म गीत-संगीतक पाछू बताहि, एकटा सुन्नरि, मुदा, निर्धन कुमारि कन्याक अनुपम संगीत-प्रेमक कथाकें अविस्मरणीय बना देने अछि। ओहि फिल्ममे देखल ऑस्ट्रियाक प्राकृतिक सौन्दर्य मन मोहि लेने छल। अपने देखलियैक, स्विट्जरलैंडक पड़ोसिया, ऑस्ट्रिया छैहो सुन्दर। पिक्चर पोस्टकार्ड-जकाँ। चिक्कन सड़क। सड़कक काते-कात सुरुचिपूर्ण रूपें काटल घास। दोबगली सूरजमुखी आ सेबक खेती। हरियर कचोर पहाड़ आ ठाम-ठाम नागरिकक आवास। सौंसे देश फुलवारी जकाँ लगैत छैक। मीलो धरि, विशाल प्लाट सबमे 3-4-5 फुट केर, छोट-छोट सेबक गाछमे झबरल हरियर आ लाल-लाल फल। प्रायः एहि सेबक प्रयोग वाइनक उत्पादनक उद्योगमे होइत छैक।

दूर-दूर धरि जाइत सड़क दुनूकात तेना घेरल-बेढ़ल छैक, जे तेज चलैत गाड़ीक सामने अकस्मात कोनो माल-मवेशी वा मनुक्ख आबि जायत तकर शंका नहि। अपन गतिसँ, अपन बाट धेने चलैत जाउ निर्धारित समय पर लक्ष्य धरि पहुँचि जायब। आइ हमरालोकनिकें ऑस्ट्रियाक इन्सब्रूक्क शहर धरि पहुँचबाक अछि, ओतहि रात्रि विश्राम हेतैक। बाटमे बहुतो पहाड़ एलैक। मुदा, कतहु घुमावदार सड़क, दुर्गम बाट नहि। हम मोटा-मोटी 15 वर्ष भारत आ नेपालक पहाड़ी इलाकामे रहल छी। अपन देशमे पहाड़ी इलाकाक यात्रा देहकें झमारिकय राखि देत। ऊँच पहाड़ आ गहींर खाइसँ भय हयत से फूटे। हमरा पहाड़ पर यात्रामे भयक पहिल अनुभव भेल छल 1983 मे चकराता (तहिया उत्तरप्रदेश, आब

उत्तराखंड) जेबाकाल। एक बेरमे एकहि दिससँ मोटर गाड़ी जेबा योग्य सड़क। ऊँच पहाड़ आ गहींर खाइ। हमरालोकनि गंगा-कोसी-कमलाक समतल भूमिक नागरिक छी। पहाड़क दर्शन पहिलेबेर भेल छल। पछाति तँ 18387 फुट ऊँच खर्दुंग-ला पास सात बेर पार केलहुँ। मुदा, चकराताक यात्रा आ खर्दुंग-ला पास पार करबाक बीच हमरा बीस वर्ष लागल छल। बीस वर्षक अंतराल भयकें आनंदमे बदलि देने छल। मुदा, से विषयांतर भ' गेल।

तथापि, यूरोपक अल्पाइन पर्वत शृंखलाक स्वरूप हिमालय पर्वत शृंखलासँ भिन्न छैक। ताहिमे सुनइ छियै, हिमालय पर्वत शृंखला वयसमे युवक छथि आ ऊँचाइमे निरंतर बढ़ैत। भ' सकैत छै, हिमालयक स्वरूपमे ओतुका नदी सबहक योगदान सेहो होइक। तथापि, जखन तुलना भ' रहलैए तँ हिमालयक निंदा कोना करबनि। हिमालय हमरालोकनिक पड़ोसी थिकाह, रखबार थिकाह। प्राणदायिनी सरिता-नीरक स्रोत थिकाह। हँ, किरण जीक शब्दमे, 'जखन तमसाइत छथि तखनि प्रलयो मचा दैत छथि'। तें, ऑस्ट्रियाक पर्वत शृंखला आ हिमालय पर्वत शृंखला दुनू स्वरूप, सौन्दर्य आ प्रकृतिमे भिन्न। असलमे जखन दुनू देखबै, तखने बुझबैक, दू टा सुन्नरि नारि आ दू टा सुन्दर पहाड़मे तुलना कतेक कठिन छैक! मुदा, से भेल प्रकृति। यूरोपमे पहाड़ी इलाकाक रोड भारतक पहाड़ी भूमिक रोड सबसँ एकदम भिन्न भेटत। समतल बाट। ऊपर चढ़ब, नीचा जायब। घुमावदार बाट। गहींर खाइ। तेहन कतहु नहि। समतल बाटसँ यात्रा सुगम आ द्रुत होइछ। बाटमे सैकड़ो छोट-पैघ सुरंग भेटत। सुरंग सबहक लम्बाइ 100-200 मीटरसँ ल' कय 20 किलोमीटर धरि। सुरंगक भीतर, बिजुली आ प्रकाश, दोतरफा सड़क, स्वचालित सिग्नलिंग व्यवस्था। सब टा विडियो-कैमराकंट्रोल्ड। कतहु पुलिस वा सुरक्षा अधिकारीक चेकिंग नहि। सोझ बाट पकड़ने चलैत जाउ। पहाड़क ऊँचाइ चढ़ैत चल जायत, मुदा, पहाड़ चढ़बाक अनुभव नहि होयत। यूरोप केर अनेक देशक अर्थव्यवस्थामे पर्यटन उद्योगक महत्वपूर्ण योगदान छै। आ पर्यटन उद्योगक मूलमे छैक नीक सड़क आ आरामदेह यातायात, विश्वसनीय होटल उद्योग आ नीक कानून व्यवस्था। हमरालोकनि एहि सब तराजू पर झूस पड़ैत छी। भारतमे आब पहाड़ी प्रदेशसबमे आर्थिक, सामाजिक आ आधारभूत संरचनाक विकासक मुद्दा पर नव-नव राज्य बनल अछि। नव-नव राज्यमे नेतालोकनि सत्ता आ शक्तिक उपभोगमे संलग्न छथि। तथापि, पहाड़ी राज्य सबहक नगण्य प्रगति नव-नव राज्यक स्थापना पर मौलिक प्रश्न उठबैत अछि। आधारभूत-संरचनाक नगण्य प्रगति लेल प्रशासक आ राजनेता दुनू अवश्य जबावदेह छथि।

इन्सब्रुक आ स्वारोव्स्की क्रिस्टल म्यूजियम

हमरालोकनि इन्सब्रुक पहुँचल रही तँ बेस अबेर भ' गेल रहै। हमरालोकनि होटल गौएर-बेयरमे डेरा कयल। इन्सब्रुक शहर विंटर ओलंपिक्स लेल प्रसिद्ध अछि। पछिला पच्चीस वर्षमे इन्सब्रुककें दू टा विंटर ओलिंपिक आयोजित करबाक गौरव प्राप्त छैक। हमरा सबहक होटल स्थानीय विश्वविद्यालयक लगहि, सड़कक दोसर कात छल। सूटकेस-सामान होटलमे राखि हमरालोकनि मैरी सड़क (मैरी टेरेस्सा स्त्रास्से) दिस विदा भेलहुँ। एतुका एही तेराहा पर एकटा भवन गोल्डन रूफले प्रसिद्ध अछि। असलमे ई गोल्डन रूफ, एक टा पैघ भवनक, एकहि टा छोट-सन, बालकनीक स्वर्णिम (सोनाक नहि) छत थिक। गोल्डन रूफ बला भवनक ठीक सामने, चौराहापरक एकटा ऊँच स्तम्भपर मदर मेरीक मूर्ति छनि। आस-पास व्यावसायिक प्रतिष्ठान, होटल आ पब छैक। कनेक आओर दूर गेला पर एकटा चारि सितारा होटल-गोल्डनर एडलर, छैक। गाइडसँ सुनलहुँ, 9वम सदीमे स्थापित गोल्डनर एडलर होटल, विश्व केर सर्वप्रथम आधुनिक होटल थिक। ई तथ्य निर्विवाद, स्वतंत्र अनुसंधानक विषय थिक। होटल केर बाहरी देवाल पर अनेक महत्वपूर्ण हस्तीक सूची भेटत, जे 15 हम आ 20 सम शताब्दीमे इन्स्ब्रुक केर एहि होटलमे समय-समय पर रहल छलाह। 1494 सँ 1999 धरिक एहि लिस्टमे यूरोप आओर एशियाक अनेक राजकुमार-राजकुमारीक अलावा प्रसिद्ध साहित्यकार आ कलाकार केर नाम सेहो लिखल देखलहुँ। 1773 मे संगीतकार मोजार्ट, 1952 मे अल्बर्ट कामू, आ 1972 मे ज्यां पॉल सार्त्र एहि होटलमे ठहरल छलाह। ई गप्प एहि होटलक हेतु गौरवक गप्प अवश्य। होटल केर देवाल परक शिलालेख सब पर होटलक किछु अतिविशिष्ट ऐतिहासिक पाहुन लोकनिक सम्मति अंकित भेटत जाहिमे साहित्यकार गेटेक नाम हमरा चिन्हार लागल। होटलसँ कनेके दूर पर इन्स नदी बहैत छै। हमरालोकनि चौड़ा नहरनुमा इन्स नदीक पुल धरि गेलहुँ। नदीक दोसर दिस पहाड़, जंगल आ झरना सब देखलियैक। शहरक एहि भागमे ने

देखबाक आओर किछु देखलियैक आ ने देखबाक समय छल। घुरतीमे बैगपाइपर बजबैत, रंग-बिरंगी ड्रेसमे सजल, गोड़ बीसेक पुरुख आ नारि संगीतकारक एकटा दल अभरल। 'कॉन्सर्ट-इन-रॉयल पैलेस' नामक ई दल, कोनो होटलमे लाइव-परफॉरमेंस लेल जा रहल छल। दल केर अगुआइ करैत कन्याक हाथक बोर्डसँ दलक परिचय बुझलियैक। समयक कमीक दुआरे लाइव परफॉरमेंसक आनंद नहि उठा सकलहुँ।

यूरोप आ अमेरिकाक अनेक शहरमे चौक-चौराहापर आ बाजारमे रहरहां रंगल, ढउरल, मूर्तिवत ठाढ़ मनुक्ख भेटि जायत। ठाढ़ मनुक्ख उज्जर दप-दप संगमरमर वा ग्रेनाइट सन चमकैत कारी पाथरक मूर्ति-सन लागत। सड़कक कात मे चित्रकार लोकनिक रोडसाइड वर्कशॉप सेहो आकृष्ट करत, से इन्स्ब्रुकमे सेहो देखल। ई दुनू कला जीविकाक साधन थिकै। इच्छा हो तँ पेंटिंग कीनू, कलाकारकें प्रोत्साहित करियउ।

सायंकाल होटलक रेस्टोरेंटमे भोजनमे सम्मिलित भेलहुँ तँ लखनपाल नामक होटल-कर्मीसँ भेंट भेल। बिलासपुर, हिमाचल प्रदेशक निवासी, लखनपाल अनेक वर्षसँ यूरोपेमे भनसिया वा शेफ केर व्यवसायमे छथि। गप्पक क्रममे लखनपाल पुछलनि, 'भारतमे ई व्यवसाय नहि चलतैक?' लखनपाल होटल व्यवसायमे अपने अनुभवी छलाह। हम सब की कहितियनि। कहलियनि, 'किएक ने चलत। लोक हाथे-हाथ लोकि लेत।' मुदा, सत्य ई छैक, एक बेर जकरा योरप केर चिक्कन-चुनमुन-साफ-सुथरा-सीटल जिनगीक हिस्सक लागि गेलैक ओ आब किन्नहुँ घुरि कय घर आओत?

स्वारोव्स्की क्रिस्टल म्यूजियम

भोरमे जलपानक पछाति हमरालोकनिक बस फेर आगू बढ़ल। अगिला पड़ाव छल ऑस्ट्रियामे वाट्टेन नामक स्थान। एतुका स्वारोव्स्की क्रिस्टल म्यूजियम विश्वप्रसिद्ध अछि। क्रिस्टलक उपयोग आभूषण, सजावटक साजो-सामान, क्राकरी-बर्तन-बासन, पहिरनाक वस्त्र आ आओर कतेक वस्तुमे होइछ। क्रिस्टलक गिलास, बर्तन आ आभूषण देखल छल। मुदा, विविध रंग, आकार-प्रकार, एहन अद्‌भुत, चमकैत क्रिस्टलक विविध वस्तुक एतेक विशाल संकलन कल्पनातीत छल। सुनबामे आयल, चेकोस्लोवाकियाक स्वारोव्स्की नामक व्यक्ति क्रिस्टलक उत्पादनक अग्रदूत छलाह। आइ स्वारोव्स्की क्रिस्टलक शो रूम बैंगलोर-बम्बईसँ न्यूयॉर्क-लॉस वेगास धरि भेटत। एतय एहि म्यूजियमकेर बाहरी स्वरूप जतबे अजूबा छैक, ततबे विविध आ विस्मयकारी छैक भितुरका, क्रिस्टलक संकलन। प्रवेश द्वारक आगाँ ठाढ़ भेलापर

एकटा पैघ दानवक छवि आकृष्ट करत। सबतरि चतरैत लत्तीक कारण दानवक रंग हरियर कचोर छैक आ क्रिस्टलक दुनू आँखि चमचम चमकैत छैक। दानवक मुँहसँ अनवरत बहैत जलधार आगाँक पूलमे जमा होइत छैक। म्यूजियमक भीतर बामा कातमे, पहिने टिकट घर, आ तकर आगू, म्यूजियमक प्रवेश द्वार छैक। म्यूजियममे पहिने पैघ एल सी डी स्क्रीन पर चलैत विडियो पनोरामामे स्वारोव्स्की क्रिस्टलकेर उत्पादनक इतिहास आ म्यूजियमक संक्षिप्त झांकी देखि सकैत छी। आगू म्यूजियममे सब किछु क्रिस्टलेक छैक, जाहिमे छोट आभूषणसँ ल' कय सजावटक झूमर (सैन्डलियर), जूता, जैकेट आ इवनिंग गाउन, जीव-जंतु, फल-फलहरी, गाछ-वृक्ष, नर्तकी सबहक आदमकद मूर्ति, तथा ताजमहल एवं न्यूयॉर्कक एम्पायर एस्टेट बिल्डिंगक नमूना धरि, सबकिछु भेटत। आगू बढ़ैत बाट, क्रमशः, स्वारोव्स्की क्रिस्टलक शोरूममे समाप्त होइत छैक। ओतय जे किछु पसिन्न पड़य कीनू, नहि पसिन्न पड़य, जुनि कीनू। नहि तँ, वाशरूमक सुविधा छै, निवृत्त भ' आउ। यूरोपमे मुफ्त वाशरूम सेहो तँ उपकारे थिकैक! सत्यतः, असली हीरा-पन्ना-नीलम सन चमकैत क्रिस्टलक आभूषणक एतेक पैघ संकलन देखिकय ककरा किनबाक सेहन्ता नहि हेतैक। हमरोलोकनि यादगारक रूपें किछु कीनल।

स्वारोव्स्की क्रिस्टल म्यूजियमसँ निकलि हमरालोकनि फेल्डकर्स शहर पहुचलहुँ। एतय बाटक कातहिमे, संगम रेस्टोरेंटमे भोजनक व्यवस्था छलैक। होटलक स्वामी कोलकाताक थिकाह, चीनी मूलक भारतीय। पहाड़क क्रमशः बढ़ैत ऊँचाइ आ अल्पाइन मौसमक पहिल अनुभव एत्तहि भेल। बरखा होइत रहैक आ वातावरणमे कनेक ठंढी आबि गेल रहैक। तें, छोट-सन, संगम रेस्टोरेंटक सुखद ऊष्मा आ तप्त भोजन सबकें नीक लगलैक। भोजन नीक रहबो करैक। दूर देशमे जड़ि जमयबाक एके टा मंत्र छै-नीक सेवा आ सुपथ मूल्य। तखने ग्लोबल व्यापारक वातावरणमे फल-फूलि सकैत छी, अन्यथा, भूमंडलीकरणक ई बिहाड़ि ककरा कतय ल' जा कय फेकत तकर कोन ठेकान। मुदा एतबा अवश्य, अहाँक रुचि भले कतबो ग्लोबल हो, सुदूर प्रदेशमे अपन रुचिक भोजनमे जे आनंद होइछ, से आनंद अपरिचित लोकल भोजनमे अभावृत्तिए भेटत। से सुस्वादु आ रुचिकर भारतीय भोजनक आनंद संगम होटलमे भेटल। वाह!

भोजनक पछाति टूर ओपेरटर कहलनि, जँ सबहक विचार हो, तँ, कनेक लंबा बाटसँ चली? अहाँ लोकनिकें लिस्टेंनस्टीन देशक ड्राइव-थ्रू भ' जायत। कहै छै, नेकी और पूछ-पूछ। वदुज नामक शहर, लिस्टेंनस्टीनक मुख्यालय थिकैक। 25 किलोमीटर लम्बा आ 6 किलोमीटर चौड़ा ई छोट-सन पहाड़ी देश स्विट्जरलैंडहि-जकाँ

व्यापारी, राजनेता आ धनाढ्य व्यक्ति लोकनिक अवैध संपत्तिक बैंकिंग व्यवस्थाक स्वर्ग थिक। अपन अकूत संपत्तिकें एतय जमा करू, ककरो कानो-कान खबरि नहि हेतैक। एहि अति छोट-सन देशक फॉक्स बैंक्सक नाम सुनल छल, भवन सेहो देखलियैक। सुनै छी, अम्बानी परिवारसँ लालू प्रसाद धरि, अपन अवैध धन एतहि नुकौने छथि। टूर ऑपरेटर कहलनि, उत्पादनक नामपर लिस्टेंनस्टीनमे 'मोसे बेयर' कॉम्पैक्ट डिस्क-सीडी बनैत छैक। प्रायः, ततबे। रोडक कातमे राष्ट्रीय सभागार आ ऊपर पहाड़ पर राजाक किला देखि देखल देश सबहक लिस्टमे एकटा आओर नाम, एकटा आओर संख्या बढ़ल आ आगू बढ़ैत गेलहुँ। शहरसँ निकलैत राइन नदीक पहिल दर्शन एतहि भेल।

स्विट्जरलैंड दिस बढ़ैत, आस-पासक पहाड़ क्रमशः ऊँच होइत गेलै। परिदृश्य सेहो बदललैक। चाकर-चौरस मैदानसँ ल' कय, समुद्रक लहरि जकाँ तरंगित उपत्यकाक निरंतर बदलैत स्वरूप, दूर-दूर धरि पसरल हरीतिमा, क्षितिजकें झंपने वन-सम्पदा-सम्पन्न-पर्वतशृंखला आ ठाम-ठाम अगराइत निर्मल जलक निर्झर झरना सब। उपत्यकामे जहाँ-तहाँ आबादीक छोट-छोट खपड़ैल घरक समूह। सम्पूर्ण परिदृश्य लागत, कोनो सिद्धहस्त, गुणी कलाकारक अनुपम पेंटिंग हो। सरिपहुँ, सम्पूर्ण विश्वक पर्यटक स्विट्जरलैंड अयबा लेल अनेरे नहि आफन तोड़ने रहैत छथि। जौं-जौं आगू बढ़ब, बाटक काते-कात मधुर जलक, पैघ-पैघ झील सब छैक। दुनू कात पहाड़कें चिरैत सपाट सड़क, मीलो लम्बा झील, आ पर्वत शिखरसँ निर्बाध बहैत झरना । ने देखैत मोन भरत, आ ने ठाढ़ भ' सबहक चित्रे उतारि सकैत छी। तें, हमरालोकनि किछु देखल आ किछुकें कैमरामे बन्न कयल। मुदा, प्रकृतिक रचनाकारक कल्पनासँ सजाओल एहि नंदन-काननक वास्तविक फोटो झिकब जँ एतेक सुलभ रहितैक, तँ, लोक स्विट्जरलैंड कथी ले अबैत?

स्विट्जरलैंडमे पारंपरिक स्वागत

स्विट्जरलैंडक डेलेनविल नामक गाँवमे, थॉमस कुक हमरालोकनिक भव्य स्वागतक व्यवस्था केने छल। स्थानक उपनाम थिकै, थॉमस कुक गाँव। टूर ओपरेटर कहलनि, ने ई पहाड़ 'थॉमस कुक' केर संपत्ति थिकै, आ ने एहि गामक नाम 'थॉमस कुक' गाँव थिकै। तखन, वाणिज्य व्यवसायमे एहन नाटक करहि पड़ैत छै!

डेलेनविल गाँव मुख्य मार्गसँ दूर, एकटा पहाड़ पर छैक। गाँवधरि जेबा लेल सड़क छै, मुदा, हमरालोकनि रोपवेसँ गाँव धरि गेल रही। हरियर कचोर पहाड़, सर्पाकार सड़क, कात-कतहु घर आ उड़ैत मेघ सबहक ऊपर चलैत रोपवे। गाँव

धरि पहुँचबामे करीब दस मिनट लागल हयत। टूर ऑपरेटर, पर्यटक लोकनि लेल पारंपरिक स्वागतक व्यवस्था केने छलाह। अस्तु, हमरालोकनि एकटा रेस्टोरेंटक परिसरमे एकत्रित भेलहुँ। हाथमे देशक झंडा लेने, स्विट्जरलैंडक पारंपरिक पोशाकमे एकटा पुरुष आ लम्बा भोंपूकें हाथसँ सम्हारि, मुँहमे लगौने एकटा सुन्नरि महिला स्वागतमे तत्पर छलीह। सज्जन पारम्परिक रूपें झंडा उड़यबाक (फ्लैग थ्रोइंग) करतब देखौलनि, महिला संग-संग तुरही बजौलनि। हमरालोकनि धन्यवाद देलिअनि, फोटो झिकाओल आ हुनका लोकनिसँ विदा लेल। स्वागत-मंडलसँ परिचय पात आ गप्प-सप्प करबाक इच्छा अवश्य भेल। मुदा, भाषाक बाधाक कोन उपाय। स्विट्जरलैंडक एहि भागमे प्रायः जर्मन भाषा चलैत छैक। सुनलहुँ, स्विट्जरलैंडमे जर्मन, फ्रेंच केर अलावा रोमानस्क भाषाक प्रचलन छैक। हमरालोकनि एहि सबसँ अपरिचित छी। तें, मुसुकी, नमस्कार, हाथ मिलौनाइ, आ धन्यवादसँ काज चलाओल। सोचैत छी, कतेक नीक होइत, जँ, सम्पूर्ण विश्वमे सब एके भाषा बजैत, सब एक दोसरासँ मेल आ सद्भावसँ रहैत, सब एक दोसरक आपत्ति-विपत्तिमे सहायक होइतैक। एखनि जखन एक देशक स्वार्थ दोसरक विनाशक कारण बनि रहल छैक, तखन, हमरा हमर अपन विरासत, अपन पूर्वजक जीवन-दर्शनपर गर्व होइछ जे भाषा, जाति, धर्म, सम्प्रदाय आ लिंगक विभेदसँ आगाँ उठि उद्घोषणा कयने रहथि :

अयं निजः परोवेति गणना, लघु चेतसाम्
उदार चरितानाम् तु वसुधैव कुटुम्बकम्।

भाषा भले एक नहि हो, एकरे श्रीमद्भगवद्गीतामे *'आत्मौपम्येन सर्वत्र'*

सबठाम, सबकें अपने-जकाँ बूझब, कहलकैये। भ' सकैत अछि, अहाँ कही, ई आदर्श भेल। होअओ। तें, एतबे।

एहि गाँवमे जाधरि सामूहिक स्वागतक औपचारिकता पूरा भेलै, एकटा आन युवक अपन सहयोगी सब संगे हमरालोकनिक प्रतीक्षा करैत छलाह। टोबॉगन नामक रोमांचक खेल-'एडवेंचर स्पोर्ट'-हुनकहि जिम्मा छलनि। टोबॉगन एहि पहाड़ी इलाकाक एकटा अद्भुत खेल थिक। एहिमे एक-एक व्यक्ति, एक-एकटा लो-लेवल, छोटसन आयताकार बैसकमे बैसैत छथि। बैसक मोटोराइज्ड सिस्टमसँ समतल भूमि आ पहाड़क ढलानपर स्टीलक बाहामे तेजीसँ चलैत अछि-कतहु सीधा ऊपर, कतहु सोझे नीचा आ कतहु समतल-जकाँ सेहो। गति पर नियंत्रण लेल बैसकमे हैंडल होइत छै। मुदा, डरक लेल जँ बड़ धीरे गेलहुँ, तँ ई संभव अछि जे तेजीसँ अबैत कोनो आन यात्रीक टोबॉगन अहाँकें पाछूसँ टक्कर दियए। जे किछु। ढलान देखि पहिने तँ हमरो किछु भय भेल। मुदा, 80 वर्षक जनरल पुरीकें जखन टोबॉगन

पर बैसल देखलियनि, तँ, हिम्मत केलहुँ। आखिर हमहूँ तँ पाराटूपर छीहे। भारतीय सेनामे बहुत कम गोटेकें पाराटूपर हेबाक गौरव प्राप्त छनि। हम ओहि गौरवक भागी तँ अवश्य छी। अस्तु, टोबॉगनक गति आ खेलक रोमांचक अनुभव कयल। पछाति, अनुमान भेल, असलमे ई खेल ओतेक खतरनाक छैक नहि, जतेक ओतुका युवक लोकनि हिदायत दैत छथिन। मुदा, ताहिसँ नोकसान की! एतबा अवश्य जे यूरोपमे सबठाम यात्रीक सुरक्षाकें सर्वोपरि दर्जा देल जाइत छैक। से उचिते। कारण, असावधानीसँ भेल क्षतिक दण्ड के भोगय चाहत। चौकस सुरक्षा व्यवस्था, सक्षम आ त्वरित न्याय यूरोपक विशेषता थिकैक।

टोबॉगनक अनुभवक पछाति, लगहि स्थानीय किसानकेर दलानमे हमरालोकनि जमा भेलहुँ। एहि दलानक दोसर भागमे घोड़सार छैक जाहिमे गोड़ दसेक घोड़ा बान्हल देखलियैक। दलानमे पोटैटो रोस्टी (तेलमे छानल, भुजबी कयल आलूक मुठरा), आ ब्रेड केर संग चीज फोंडू-(चीजेक एक प्रकारक चटनी बुझू)-परसल गेल। संगमे एप्पल वोद्‌का, रेड वाइन आ ब्रांडीक व्यवस्था सेहो रहै। दूर देशमे प्लेजर ट्रिप, सेहो स्विट्‌जरलैंडमे, हमर फौजी प्रवृत्ति जागि उठल। हम सबकें उठौलहुँ। चलै चलू, कनेक नाच गान होइक। भिन्न-भिन्न प्रदेश, भिन्न-भिन्न भाषा आ भिन्न प्रकारक सामाजिक संस्कारक लोककेर कनेक धखायब तँ उचिते। तथापि, लोक सब उठल। स्विट्‌जरलैंडक पहाड़मे छुट्टी, अनुकूल मौसम, आ एप्पल वोद्‌काक असरि। छोटसँ पैघ, युवक-युवतीसँ ल' कय वयसाहु धरि। सब वयसक ग्रुप लेल पार्टी लेल एहिसँ बेसी अनुकूल अवसर आओर की होइतैक! सब उठल, नाच गान भेलै। महिलालोकनि हिंदीसँ ल' कय मराठी धरिक गीत-संगीतक धुनि पर जमि कय नचैत गेलीह। सत्ते, सबकें खूब मजा अयलैक, से प्रतीत भेल। भिन्न-भिन्न वयसक, भिन्न-भिन्न प्रदेशक ग्रुपमे, पहिले बेर सबकें सबसंगे धाख छुटलैक आ हमरालोकनिक बीचक अपरिचयक देवाल नीक-जकाँ ध्वस्त भेल।

पारंपरिक स्वागतक एहि उत्सवक पछाति हमरालोकनि रोपवेसँ पुनः समतल भूमिमे एलहुँ आ अपन स्पेशल मर्सिडीज बसमे बैसि जुरिच शहर लेल विदा भेलहुँ। आब जाधरि जुरिच पहुँचब बसमे नींद पूरा करू वा बाहरक दृश्यक आनन्द उठाउ। आगाँ आब तीन राति विश्राम होटल स्विस्सोटेल, जुरिचमे हेतैक।

स्विट्जरलैंडमे तीन दिन

घुमंत प्राणी देश-दुनिया किएक घुमैत छथि, तकर उत्तर कठिन नहि छैक। केओ देश-कोस देखबा लेल जाइत छथि, केओ किनै-बेसाहैक लेल घुमैत छथि, केओ समाज सेवा लेल, आ केओ तीर्थाटन लेल। किछु लोकक उद्देश्य एहिसँ भिन्नहुँ होइत छनि। मुदा, तकर गप्प एखन छोड़ी। हमरा दृष्टिएँ देखबाक वस्तु होइछ प्राकृतिक सुन्दरता आ अनुभव करबाक वस्तु होइछ सुखद जलवायु। सुखद जलवायुक सेवन स्वास्थ्यवर्द्धक होइछ, तें, साबिकमे पहाड़ सबपर टीबी सैनिटोरियम स्थापित कयल जाइत छलैक। टीबी रोगाणुक औषधिक आविष्कारक पछाति सैनिटोरियमक परम्परा आब इतिहास भ' चुकल अछि। ओना स्विट्जरलैंडक प्रसिद्धिक कारण अनेक छैक। मुदा, स्विस घड़ी वा मशीनक गप्प हमरालोकनिक पीढ़ीक सब केओ सुनने हेताह। एहि युगमे ओहि प्रकारक तकनीकी ज्ञान सर्वत्र उपलब्ध छैक। तथापि, व्यापारी आ राजनेताक गप्प छोड़ि दी, तँ, आम पर्यटक स्विट्जरलैंड जाइत छथि देशे देखबा लेल। किन्तु, जँ भारत आ नेपालक पहाड़ देखल हो, तँ, मनमे ई प्रश्न उठब स्वाभाविक जे स्विट्जरलैंडक पहाड़मे एहि सबसँ भिन्न छैक की? हमर यात्रा वृतांतक ई अंश ओही प्रश्नक उत्तर थिक। पहिने सारांशमे, आ फेर विस्तारसँ। सारांशमे, स्विट्जरलैंडमे पर्यटककें ग्लेशियरकें लगसँ देखबाक अवसर भेटैछ। झील सबमे झिलहरि खेलेबाक, 'नौका विहारक' अवसर भेटैछ आ जनिका एडवेंचर स्पोर्टमे रुचि छनि ओलोकनि पर्वतारोहण आ स्कीइंगकेर आनंद ल' सकैत छथि। हम लद्दाख़ केर सियाचिन ग्लेशियर धरि आ जान्सकार उपत्यकाक समीपक द्रांग-द्रुम ग्लेशियर धरि गेल छी। सियाचिन केर बेस कैंपमे ग्लेशियरक मुहाना देखबामे आओत। मुदा, हवाइ उड़ानक बिना ग्लेशियरक विहंगम दृश्य नहि देखि सकैत छी, आ तकरो सुविधा आम जनता लेल उपलब्ध नहि। ततबे नहि, सियाचिन ग्लेशियरक इलाका सैन्य महत्वक इलाका भेलाक कारणे आम पर्यटक लेल खूजल नहि छैक। मुदा, स्विट्जरलैंडमे ट्रेनसँ सीधा पर्वत शिखर धरि जा सकैत छी। मतलब, टेक्नोलॉजीक बलें ग्लेशियरक दर्शनक जे अवसर स्विट्जरलैंडमे

भेटत, से भारत-नेपालमे सहजहि उपलब्ध नहि हयत। पैदल जाउ, पर्वतारोहण करू, तँ, अपना देशमे पहाड़क कोनो कमी छै!

दोसर गप्प, स्विट्जरलैंड निर्विवाद सुन्दर छैक। मुदा, नागरिक लोकनि ओहि सुन्दरतामे सफाइ, सजावटक आ टेक्नोलॉजीक बलें चारि चान लगौने छथि। दूर-दूर धरि पसरल हरीतिमा, समुद्रक लहरि सन हिलकोरैत हरियर-कचोर भूमि, मीलो लम्बा झीलसब, हिमाच्छादित पर्वत शिखर, आ ताहि पर शहर-नगरकेर सुन्दर वास्तुकला। ऊपरसँ सम्पूर्ण देशमे घास सेहो एकेरंग काटल भेटत। टूरिस्टक मनोरंजन लेल आओर चाहियैक की!

स्विट्जरलैंडमे हमरालोकनिकें दू गोट पहाड़ युंगफ्राउ आ माउंट टिटलिस, आ दू टा शहर लुसिन आ इन्टरलाकेन देखबाक अवसर भेटल छल।

युंगफ्राउ

'युंगफ्राउ' क अर्थ होइछ किशोरी। संभव अछि, पहाड़क सुन्दरताकें देखि केओ कवि एकरा सुन्दरि किशोरी कहि संबोधित केने हेथिन आ ई पर्वत भ' गेल युंगफ्राउ! युंगफ्राउकें योरोपक शिखर सेहो कहल जाइछ, यद्यपि ई योरोपक सर्वाधिक ऊँच शिखर थिक नहि। तथापि, लोकप्रियतामे ई अवश्य सबकें मात केने अछि। एतय लगसँ ग्लेशियर देखलहुँ। जेना कहने छी, हम पहिनहुँ ग्लेशियर देखने छी। मुदा, एतय चारू कातसँ बंद वातानुकूलित बिल्डिंग पर्यटककें हाई अलटीच्युडक तेज हवा आ हाड़ हिलबैबला जाड़सँ बचा लैछ। युंगफ्राउ जेबा लेल इन्टरलाकेन शहरसँ पहाड़क तलहटीक बस्ती, लौटरब्रनेन वा ग्रिडेनवाल्ड धरि बस आ ट्रेन दुनू जाइत छैक। मुदा, ओहिसँ ऊपरक बाट ट्रेनहिक छैक। इन्टरलाकेन शहरसँ पूब, रेलमार्ग लौटरब्रनेन दिस, आ पश्चिममे, ग्रिडेनवाल्ड दिस जाइछ। दुनू रेलमार्ग आगू (क्लीनसेडेग स्टेशनपर) पुनः एक दोसरासँ मिलि युंगफ्राउक एगेनवाल्ड स्टेशन धरि जाइछ। अपन देशमे सेहो शिमला, दार्जिलिंग आ नीलगिरि रेल अछि। मुदा, युंगफ्राउ रेल ओहिसँ अनेक अर्थमे भिन्न छै। एक तँ चढ़ाइक ढलान कठिन छैक। दोसर, मीटर गेज लाइनक ई रेल कॉग व्हील रेल थिक, जाहिमे तीन-तीन टा समानांतर पटरी आ डिब्बा सबमे तीन-तीन टा समानांतर पहिया होइछ। दुनू कातक दू पहिया आम पहिया-सन रेल लाइन पर गुड़कैछ। बीचक दांतदार पहिया बीचक, तेसर, दांतदार पटरी पर ट्रेनकें तेना धेने तेना चलैछ जे रेलगाड़ी तीख पहाड़ी ढलानक बावजूद ट्रेनक ऊपरे मुहें गति बनौने चलैछ। हमरालोकनि लौटरब्रनेन धरि बससँ गेल छलहुँ। लौटरब्रनेनमे टिकट कीनल छल। गाड़ी एबामे किछु समय

बांकी रहैक, तें, स्टेशनसँ बाहर कनिएक दूर चललहुँ। एतय लगसँ आल्प्स पर्वतमाला केर हिमाच्छादित शिखरक पहिल दर्शन भेल। लौटरब्रनेनसँ, लौटरब्रनेन-ग्रीडेनवाल्ड आ लौटरब्रनेन-इन्टरलाकेन ट्रेकिंग आ साइकिलिंग रूट काफी लोकप्रिय छैक। साइकिलसँ ऊपर पहाड़ दिस जाइत आ पहाड़सँ नीचा अबैत किछु युवक-युवती लोकनि एतय भेटलाह। सेहन्ता तँ हमरो भेल, एसकरे निचेनसँ देश-कोस देखी, माटिक स्पर्श करी आ भूमि, भैषज्य, फूल-पात, जीव-जंतु कें लगसँ देखिकय चीन्ही। मुदा, तेहि नो दिवसा गताः! शरीर ने बूढ़ होइत छैक, मनकें की हेतैक! मनकें जँ बुढ़ापा अबितैक तँ च्यवन मुनि अनेरे सुकन्या पर आसक्त होइतथि! दोसर, यूरोपक एक-एक देशक निचेनसँ भ्रमण मध्यवित्त लोकक सक्कक बाहर थिकै। ओना मनोरथक कोनो सीमा छै! हमरा सेनाक सेवाक प्रसादें सम्पूर्ण भारत देश देखबाक अवसर तँ भेटल अछि। सेहो कोनो कम थिकै। अस्तु।

लौटरब्रनेन स्टेशन पहुँचल रही तँ हमरा सबहक ट्रेन अयबामे बेसी देरी नहि रहैक। ताहिपर टूर ऑपरेटर केर एके टा चिंता, केयो छूटि ने जाथि। सबतरि सबहक संगोरे तँ हुनक ड्यूटीए छलनि। करताह की! टूर ऑपरेशन आओर थिकैक की? एकटा इवेन्ट मैनेजमेंट। हमरासब प्लेटफार्म पर अयलहुँ। गाड़ी एलइ। चढ़ैत गेलहुँ। ट्रेन क्लीनसेडेग स्टेशन दिस बढ़ल। दहिना दिस लौटरब्रनेन गाँव : दुनू कात सोझे ठाढ़ ऊँच देवाल सन दूटा पहाड़, पहाड़क सतह पर बहैत अजस्र जलधार आ गामक पृष्ठभूमिमे हिमाच्छादित पर्वतमाला-इएह थिकै लौटरब्रनेन गाँवक परिचय। ट्रेनसँ ऊपर चढ़ैत आ उतरैत एहि गाओंक विहंगम दृश्य देखबइ। 50 मिनटक ट्रेन यात्राक पछाति हमरालोकनि क्लीनसेडेग नामक स्टेशन पहुँचलहुँ। क्लीनसेडेग स्टेशन पर ट्रेन बदली भेलै। दोसर ट्रेनसँ सब गोटे इगेनवांड स्टेशन धरि जाइत गेलहुँ। क्लीनसेडेग स्टेशनसँ किछुए आगू पहाड़क भीतरे-भीतर करीब 7 किलोमीटर लम्बा सुरंग आरम्भ होइत छैक। सुनलहुँ, 1912 मे, सोलह वर्षक निर्माणक पछाति एहि रेलखंडक (क्लीनसेडेग-इगेनवांड) उद्घाटन भेल छइ। सुरंगक भीतरे-भीतर गाड़ी सोझे युंगफ्राउ (इगेनवांड स्टेशन) पहुँचैत छैक। बाटमे कतेक ठाम, सुरंगक शाखा सब पहाड़क दुनू पक्खासँ बाहर ग्लेशियर धरि जाइछ। जँ समय हो तँ रेलसँ उतरि सुरंगक बाहरदिस ग्लेशियरक विहंगम दृश्य देखि सकै छी। बेर-विपत्ति पड़लापर एहि शाखा-सुरंग सबहक उपयोग बर्फमे फँसल पर्वतारोहीक बचाव लेल सेहो कयल जाइछ।

युंगफ्राउ टूरिस्ट स्टेशन एकटा पैघ, मल्टी-स्टोरी बिल्डिंग काम्प्लेक्स थिक। एतय पर्यटक लेल आकर्षणक कमी नहि। मुदा, एतुका मुख्य आकर्षण थिक

स्टेशनक बाहर ग्लेशियरक क्लोज-भ्यू, लगसँ दर्शन-अवलोकन। रेलवे स्टेशनक आगू ओना बिल्डिंग काम्प्लेक्सक आरम्भमे सूचना विभागक कार्यालय छैक। तकर आगू एकठाम बड़का स्क्रीन पर निरंतर चलैत विडियो पर युंगफ्राउ रेलक निर्माणक इतिहास आ वर्तमान सुविधाक डाक्यूमेंट्री फिल्म देखि सकै छी। आओर आगू चलिकय एकटा लम्बा बर्फीला सुरंग-ग्लेशियर वाक-छै। ग्लेशियर-वाकमे देवालक काते-कातक पाइप पकड़ू, पयर बैसा कय नहुँ-नहुँ चलू। आखिर, आयल छी बर्फक आंनदे लेबा लेल आ खसबो नहि करब से कोना हयत। एतुका आइस वाक देखि हमरा जड़कालाक शिमला प्रवास मोन पड़ल। शिमलामे कतेको के ने हड्डी टूटलनि। मुदा, युंगफ्राउमे ककरो खसैत नहि देखलियैक। एकर अतिरिक्त आइस पैलेस आ संग्रहालय भेटत। आइस पैलेसमे बर्फक बनल विभिन्न जंगली जंतु, जेना भालु, पेंगुइन इत्यादिक मूर्तिकला आकृष्ट करत। बर्फक बाट पिच्छड़ तँ छैके। युंगफ्राऊ बिल्डिंगमे एकटा मुख्य स्थान छै स्फिंक्स हाल। स्फिंक्स हालसँ लिफ्टक द्वारा स्फिंक्स ग्लोबल ऑब्जरवेशन प्लेटफार्म धरिक बाट छै। समीपेमे अंतरराष्ट्रीय हाई अलटीच्युड फाउंडेशन सेहो छैक। भारतीय सेनाक हाई अलटीच्युड मेडिकल रिसर्च सेंटर, लेहमे अछि। लेहकेर हाई अलटीच्युड मेडिकल रिसर्च सेंटर संग हम अपनहुँ काज केने छी आ हाई अलटीच्युड मेडिसिनमे रुचि रखैत छी। मुदा, लेह शुष्क मरुभूमिक इलाका थिकै। ओतय बर्फक नामोनिशान नहि। एतुका अंतरराष्ट्रीय हाई अलटीच्युड फाउंडेशनमे जेबाक अवसर हमरा नहि भेटल।

युंगफ्राउ टूरिस्ट स्टेशनक एहि भवनमे अनेक रेस्टोरेंट छै। हमरालोकनिक भोजनक व्यवस्था प्लेनेट बॉलीवुडमे छल। प्लेनेट बॉलीवुडक स्वामी भारतीय मूलक छथि। गरम दिव्य भोजन, सैम्पैनक एक गिलास, आ युंगफ्राउ अयबाक संतुष्टि एतुका सर्द वातावरणमे सबकें गर्मीक अनुभूति देलकै आ हमरालोकनि खिड़की सब बाटें भरि मोन ग्लेशियर देखलहुँ आ ग्लेशियरक फोटो झिकलहुँ। अंततः, एकठाम भवनसँ बाहर निकलि छोट-सन बाट-क्लिफ वाक-सेहो छैक, जाहिपर बर्फमे चलबाक आनंद ल' सकैत छी आ एहि ठामसँ गरदनि घुमाकय ग्लेशियरक चारु भरक नजारा ल' सकैत छी। हम बर्फ पर ततेक चलल छी जे ई अनुभव हमरा लेल नव नहि छल, तें, बस कयल। घुरतीक ट्रेनमे निश्चय पर्वतीय इलाकाक दोसर फलक देखबाक अवसर भेटल। मुदा, सबसँ हर्षक विषय जे हमरालोकनिक यात्राक दौरान किशोरी युंगफ्राउ केर चित्त निरंतर सुभ्यस्त छलनि, मूड लगातार नीक छलनि। नहि, तँ, कतेक गोटे स्विट्जरलैंड अबैत छथि आ खराब मौसमक कारण युंगफ्राऊ आबियोकय किछु नहि देखि पबै छथि। कहै छै, माउगिक मूड आ पहाड़क मौसमक कोन ठेकान? कखन कोना बदलि

जायत, देवो न जानाति कुतो मनुष्यः! मुदा, हमरा जनैत मूड बदलबाक संबंध माउगि आ पुरुषसँ नहि, परिस्थितिसँ छैक।

इन्टरलाकेन

स्विट्जरलैंडमे झील-झरनाक कमी नहि छैक। सब पैघ-शहर बड़का-बड़का झीलेक किनेर पर बसल छै, छोट झील सबहक तँ कोन कमी। ओना एकर कारण सेहो छैक। झील आ नदी, भोजन आ जलक अलावा यातायातक सेहो सुलभ साधन थिकै। अपना देशमे राजस्थान मोन पड़ैए। आन किछु लेल नहि। झील आ सरोवर लेल। जल, सरोवर आ झील छै तँ आबादी भेटत नहि तँ पचासो मील चल जाउ जनशून्य मरुभूमिक अलावा किछु नहि। तें, गाँव सबहक नाम जामसर, ठकुरियासर, जैतसर, आदि सुनबैक।

इन्टरलाकेन सेहो जलस्रोते लग अछि। मुदा, इन्टरलाकेन लग एके टा लेक(झील) नहि छैक। इन्टरलाकेन शब्दक अर्थे छैक झीलक मांझठाम-दू झीलक बीचक शहर। माने, ई शहर दूटा पैघ झील-ब्रिएन्ज आ थुन-केर बीच एकटा छोट-सन शहर थिक, जकर बीच बाटें आर नामक नदी दुनू झीलकें जोड़ैत छै। ई शहर अछि छोट, मुदा, पर्यटनक दृष्टिएँ इन्टरलाकेन शहर सुपरिचित अछि। तकर कारण सेहो छैक इन्टरलाकेन शहरसँ पहाड़ दिसुक ट्रेन, बस आ ट्रेकिंगकें अनेक बाट आरम्भ होइत छैक। संगहि, इन्टरलाकेन शहर एहि पहाड़ी इलाकाकें राष्ट्रीय आ अंतर्राष्ट्रीय रेल मार्गसँ सेहो जोड़ैत छैक। ओना नदी आ झीलक जलमार्ग बाटें योरपमे यातायात सबठामे भेटत। केओ कहलनि, एखनहुँ वाणिज्य-व्यापार लेल माल असबाबक ढुलाइमे जर्मनीमे राइन नदीक जलमार्गक प्रचुर उपयोग होइछ। हमरालोकनि गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी-सन नदीक अछैत जलमार्ग द्वारा यातायातक प्रति उदासीन छी। प्रायः अंग्रेजक भारत अयबासँ पूर्व जखन रेल गाड़ीक चलनसारि नहि भेल रहैक, उत्तर भारतमे नदी बाटें यातायात छल होइ, नहि, तँ, कविकुलगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुर 'नौकाडूबी' नामक उपन्यास कोना लिखितथि। आब भ' सकैत अछि तेज, वैकल्पिक यातायातक सुविधाक कारण जलमार्ग गौण भ' गेल हो। हिमालयसँ बहराइत नदी सबमे प्रति वर्षक प्रचुर पाँक आ नदीक कम गहराइक कारण भारी जहाजक यातायात असंभव छैक, सेहो ठीक। मुदा, नदी बाटें जलमार्गक उपयोग दक्षिण भारतक नदी सबमे सेहो नहि देखैत छियै। तथापि, जाहि रूपें नदी सबमे अनधिकार बालुक चोरि होइत छैक, सरकारकें एहि जल मार्ग सबकें चालू रखबामे बेसी खर्च उठबय नहि पड़ितैक!

एत्तहि सुनल, इन्टरलाकेन शहर बॉलीवुड फिल्म निर्माता लोकनिमे काफी लोकप्रिय अछि। स्विट्जरलैंडक अनेक लोकेशन पर फिल्म निर्माता स्व. यश चोपड़ाक अनेक फिल्म, जेना, सिलसिला, चांदनी, दिलवाले दुल्हनियाँ ले जायेंगे, आदिक शूटिंग भेल छैक। फिल्म निर्माणक क्रममे स्व. यश चोपड़ा एतय ततेक बेर आयल छलाह आ एहि शहरमे ओ ततेक सुपरिचित रहथि जे हुनकर निधन पर एहि शहरक नागरिक लोकनि एतय सार्वजनिक शोकक प्रदर्शन कयने छलाह। सुनै छी, स्विट्जरलैंड सरकार यश चोपड़ाकें इन्टरलाकेन शहरक राजदूतक उपाधिसँ सेहो सम्मानित कयने छलनि। कतेक भारतीय फिल्म-प्रेमी लोकनि स्विट्जरलैंड आबि अपन-अपन प्रिय फिल्म सबहक शूटिंगक लोकेशन तकबा लेल जहाँ-तहाँ बौआइतो छथि। मुदा, फिल्म निर्माणक सत्य जनिका बूझल छनि तनिका ई बुझबामे कनेको भांगठ नहि हेतनि जे फिल्म निर्माणक अपन फूटे बाध्यता होइत छै। तें, जँ अहाँ कोनो फिल्म कलाकारकें फिल्ममे पूजा लेल कोनो मंदिरमे पैसैत देखैत छियनि, तँ, भ' सकैत अछि तुरते, पूजा करैत काल हुनका समक्ष कोनो दोसरे मंदिरक देवी-देवता होथिन। एहि परिस्थितिमे फिल्म शूटिंग केर कतेक लोकेशन ताकब। फिल्म देखलहुँ, भ' गेलैक। मुदा, से थोड़े होइत छैक, दिल है कि मानता नहीं! तें, चेन्नईमे तमिल फिल्म जगतक वर्तमान कलाकार खुशबूक मंदिर छनि। रजनीकांत सुपरमैन थिकाह, एम जी रामचंद्रनक फिल्म देखबासँ पूर्व लोक सिनेमा हॉलक बाहर नारिकेर फोड़ैत छल। एहि सबहक एके अर्थ : भक्ति मनुष्यक प्रति हो वा देवताक प्रति, भक्ति तर्कसँ परे होइछ। एहि भक्तिकें भगवान कृष्ण सेहो स्वीकार करैत छथि आ श्रीमद्भगवद्गीतामे कहने छथिनः

यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम्।

(अर्थात, भक्त श्रद्धापूर्वक भगवानक जाहि रूपक उपासना करय चाहैत अछि, हम भक्तक ओही श्रद्धामे भक्तक विश्वासकें दृढ़ क' दैत छियैक।)

एतय एकहिठाम फिल्म सिताराक लोकप्रियता आ प्रशंसा तथा भक्ति आ श्रीमद्भगवद्गीताक सूक्ति सबकें नहि रुचय। मुदा, इहो एकटा दृष्टि थिकै। गौर करियौ, भगवान कृष्ण सेहो मनुष्यक भक्तिक स्वतंत्रताक आदर करैत छथि। भ' सकैत अछि, श्रीमद्भगवद्गीताक ई श्लोक अजुका सर्वधर्म-समभावक विरोधी लोकनिक आँखि खोलय। किन्तु, कहबी छैक, सूतलकें ने जगाओल जाय, जागल कतहु जागय!

चलू आब पुनः इन्टरलाकेन आ यश चोपड़ाक गप्प करीः यशराज फिल्म, टूर

ऑपरेटर लोकनिक सहयोगसँ, किछु दिनधरि यश चोपड़ा सर्किटपर पर्यटनक पैकेज सेहो चलौलनि। मुदा, पछाति ओ प्रोग्राम बन्न भ' गेल। ओना देखबा लेल इन्टरलाकेनमे किछु तँ नहि भेटल सिवाय अनुकूल जलवायु आ आल्प्स पर्वत शृंखलाक एक आओर पहलूक स्वरूप। एतय शहरक बीचसँ जाइत मुख्य मार्गक एक कात एकटा पैघ फील्ड छै आ दोसर दिस होटल, रेस्टोरेंट आ व्यापारिक प्रतिष्ठान। दर्शनीय स्थल सब आसपासक पहाड़ आ उपत्यकामे छिड़ियायल छैक। ओना एतहु शहरक मुख्य मार्गसँ युंगफ्राउ पर्वत शिखर देखबामे आओत। जेना, पोखरा नेपालमे सबठामसँ अन्नपूर्णाक पर्वत शिखर आकृष्ट करत। मुदा, अन्नपूर्णाक शिखर कतहु तीर केर नोकसन शिलाखंड-जकाँ देखायत आ कतहु माछक पुच्छी-जकाँ। तें, अन्नपूर्णाक शिखर नेपाली लोकनिक बीच माछापुछ्रेक नामसँ प्रसिद्ध अछि। संगहि, अन्नपूर्णा पर्वत शिखरपर बर्फ अभावृत्तिये देखबै, आ जखन कखनो हिमपात होइतो छैक, तँ, प्रात भेने सूर्यक पहिले किरण ओकरा चिक्कन-चुनमुन क' दैत छैक। भोरुका सूर्य आ अन्नपूर्णा शिखरक प्रणय पर किछु हमरो उक्ति सुनू :

अन्नपूर्णाक भाल पर अरुणोदयक पहिले चुम्मा
कय दैत छनि अन्नपूर्णाक गालकें लाल
आ क्रमशः तरुणाइत रौद केर स्पर्शसँ
पसरय लगैछ अन्नपूर्णाक कमनीय कायापर
स्वेद केर बुन्न, पमार, आ फेर धार!
ओएह पमार क्रमशः बनैछ-
सेती, गण्डकी, मर्श्यांगदी, मेछी, आ महाकालीक धार!

युंगफ्राउक शिखर तेहन प्रखर नहि, आ ओतेक ऊँचो तँ नहिए। मुदा, छैक नीक-जकाँ बर्फसँ झाँपल।

इन्टरलाकेन नगरक केंद्रमे एकटा सभागृह-कसीनो कुरसाल बेस प्रसिद्ध छैक। भवनक बाहरी स्वरूप आ परिसर आकर्षक छैहो। कसीनो कुरसालक परिसरमे फूल-पत्तीक बीचमे, बाटक कातहिमे, फ्लोरल क्लॉक-फूल-पत्तीक गुच्छा आ धातुक कांटासँ फुलवारीमे भूमिपर बनल घड़ी-देखलहुँ। फ्लोरल क्लॉक एतुका प्रमुख आकर्षण थिकै। तें, पहिल बेर तँ ई अद्‌भुत लागल। मुदा, पछाति फ्लोरल क्लॉक योरप केर आनो-आन शहरमे अनेक ठाम देखलियैक। तें, भ' सकैत अछि योरोपियन लोकनिकें फ्लोरल-क्लॉक अजूबा नहि लगैत होइन। मुदा, हमरालोकनिक टूर ऑपरेटर तँ एशियाई पर्यटकक संगे छथि, ताहिमे हमरालोकनिमे सँ एहिसँ पहिने यूरोप केओ नहि आयल छी। तखन फ्लोरल क्लॉककें दर्शनीय कहब कोन बेजाय।

माउंट टिटलिस पर्वत शिखर

माउंट टिटलिसक यात्रा रोटा-एयर रोपवे-राइड लेल प्रसिद्ध अछि। रोपवे स्टेशन धरि जेबा लेल हमरालोकनि जुरिचसँ बससँ एंजेलबर्ग शहर धरि जाइत गेलहुँ। ओतयसँ रोपवेक गोंडोला दू स्टेशन, आ एक गोंडोला बदलीकक पछाति माउंट टिटलिस पर्वत शिखर धरि चढ़ौलक। एतुका गोंडोला-रोटा एयर-विश्वप्रसिद्ध अछि। यात्रीकें नेनहि गोंडोलाक आधार चक्र-जकाँ धीरे-धीरे घुमैत छै आ यात्री ठाढ़े-ठाढ़ आसपासक उपत्यकाक लैंडस्केपक चारूभरक पहाड़, चारागाह, झरना, ग्लेशियर, चरैत माल-मवेशी देखैत आनंद लैत रहथु। माउंट टिटलिस केर शिखरपर युंगफ्राउए जकाँ ग्लेशियर-वाक गुफा, रेस्टोरेंट, फोटो स्टूडियो, क्युरियो शॉप तँ छैहे, पर्वत शिखरपर बेस पैघगर समतल, हिमाच्छादित भूमि छैक, जाहि पर यात्री लोकनिकें बर्फपर चलबाक, खसबाक, फोटो झिकयबाक आनंदक प्रचुर अवसर भेटैत छनि। ई स्थान लोककें बेसी आकृष्ट करैत छैक। तथापि, हमरा सबसँ नीक एतुका लम्बा सस्पेंशन ब्रिज (झूला-पुल) लागल। सुनै छी, ई यूरोपक सबसँ ऊँच सस्पेंशन ब्रिज थिक। तेज बर्फीला हवा, ऊँचाइ, ऊँच सीढ़ी एवं बरखा-बर्फसँ परहेज हो तँ एहि सस्पेंशन ब्रिज पर जुनि जाउ। हम शिमलाक बर्फवारी, उधमपुरक आ लेहक तेज हवा, असम केर बरखा झेलि चुकल छी आ खर्दुन्गला पासक 18387 फुट केर ऊँचाइ कतेको बेर पार केने छी, हेलिकोप्टरसँ पाराशूट जम्प केने छी। तखन ई सस्पेंशन की थिक! हमरा तँ, जानब विहित छल। मुदा, पुल पर चढ़बा लेल सौ-डेढ़ सौ सीढ़ी चढ़य पड़ैत छैक, यद्यपि खतरा कोनो नहि। हँ, सम्पूर्ण इलाकाकें अन्हार केने मेघ, आ जनशून्य परिदृश्य कनेक भयाओन अवश्य लागत। पुलक लम्बाइ सौ मीटर तँ हेबे करतैक। मुदा, सब किछु पूर्ण सुरक्षित छैक। असलमे ई सब देखि, मनमे एके भाव अबैत रहल-भारतमे ने पहाड़क कमी छै ने, ग्लेशियरक। कमी छैक तँ बस पूँजी, राष्ट्रीय इच्छाशक्ति, आ टेक्नोलोजीक। हमरालोकनिक प्राकृतिक सम्पदा आ समृद्धिक बीच एके टा अभेद्य बाधा अछि अपन प्राकृतिक सम्पदाक पूंजीक प्रति उदासीनता आ सबकिछु पर सरकारक एकाधिकार। पूंजीक कमी आ व्यापारी वर्गमे उद्योगधर्मिताक कमी सेहो हमरालोकनिक राष्ट्रीय रोग थिक। फलतः, डेक्कन रेल हो वा राष्ट्रीय विरासतक संरक्षण, सब किछु लेल हमरालोकनि सरकारीए पहल लेल आकासी देने रहैत छी। भ' सकैत अछि, बदलैत भारतमे अगिला पीढ़ीक सोच बदलैक। शिवास्ते पन्थानः! घुरतीमे ग्लेशियरसँ नीचा पहाड़हि पर एकटा रेस्टोरेंटमे भोजन भेलै आ पुनः एंजेलबर्ग आबि हमरालोकनि लुसिन शहर देखबा लेल गेलहुँ।

लुसिन शहर आ आहत सिंह

लुसिन शहर स्विट्जरलैंडक एन्जेल्बर्ग आ जुरिच शहरक बीच पड़ैत छैक। तें, माउंट टिटलिसक भ्रमणक पछाति हमरालोकनि लुसिन अयलहुँ। एतय टूर ऑपरेटर हमरालोकनिकें सोझे विश्वप्रसिद्ध लायन-मोनुमेंट ल' गेलाह। एकटा छोट-सन पार्कमे सोझे ठाढ़, प्राकृतिक, शिलाखण्डक फलकपर, पाथरक ई विशाल, श्वेत सिंह फ्रांसीसी क्रान्तिक समयमे शहीद आओर आहत स्विस सैनिकक स्मारक थिक। ऐतिहासिक विवरणक अनुसार, फ्रांसिसी क्रान्तिक काल फ्रांसक सम्राट, सोलहम लुइकें सपरिवार अपन आवास-वर्साय पैलेससँ पड़यबा लेल बाध्य होमय पड़ छलनि। पलायनक क्रममे सम्राट अनेक ठाम नुकयलाह। मुदा, अंततः मारल गेलाह। मुदा, एहनो परिस्थितिमे, सम्राटक वफादार, स्विस सैनिकक एकटा बड़का जत्था लड़ैत मारल गेल छल। तें, पछाति स्विस गार्डक ओहि दलक केओ बांचल सदस्य, अपन सहकर्मी लोकनिक वीरता आ कर्तव्यनिष्ठाक स्मृतिमे, एहि स्मारकक निर्माण करओलनि। अस्तु, फ्रांसक सम्राटक स्विस गार्डकें समर्पित ई स्मारक स्विस गार्डक वफादारीक आ वीरताक प्रतीक मानल जाइछ। कहल जाइछ, एहि स्मारककें देखि प्रसिद्ध अमेरिकी लेखक मार्क ट्वेन ततेक प्रभावित भ' गेल छलाह जे ओ अपन यात्रा वृतांतमे एहि स्मारकक विशेष उल्लेख केने छथि। पाथर खोहमे, घायल अवस्थामे, ढाल पर ओंगठल, एहि सिंह केर छवि पर प्रतिबिम्बित पीड़ा मर्मस्पर्शी छैक। तें, मार्क ट्वेन एहि स्मारककें 'पाथरमे निर्मित विश्व केर सर्वाधिक कारुणिक आ प्रभावोत्पादक कलाक' संज्ञा देने छथिन।

'लायन-मोन्यूमेंट'क भ्रमणक पछाति हमरालोकनि लगहिक बाजारमे किछु शौपिंग कयल-स्विस चॉकलेट, गाइक गरदामीक पारंपरिक पितड़िया घंटी आ आओर किछु छोट-मोट वस्तु। संगी-साथी लोकनि घड़ी आ कपड़ा लत्ता सेहो किनैत गेलाह। खरीद-बिक्रीमे तँ हमरा कोनो रुचि नहि, तें, मात्र चॉकलेट कीनि संतोष कयल। शौपिंग केर पछाति लेक लुसिनमे बोटिंगकेर व्यवस्था छलै। यावत् समय भेलैक हमरालोकनि रोडक कातमे बैसि सुस्तयलहुँ। अनुकूल जलवायु आ आरामदेह बसक कारण दिन-प्रति दिनक लगातार भ्रमण आ लम्बा-लम्बा बस यात्राक बावजूद थकानसँ बचल छी। कनिए कालमे हमरालोकनिक मोटरबोट तैयार छल आ फेर भेलै लेक लुसिनमे नौका विहार। ई बोटिंग वेनिसक बाद हमरालोकनिक दोसर बोटिंग थिक। पैघ झील आ दूरमे छोट-छोट पहाड़। पोखराक फेवा लेक स्मरण भ' आयल। मुदा, अन्नपूर्णाक पर्वत शिखर, लग केर सरांगकोट गाँव, दोसर दिस सघन जंगल आ बीचमे बराही मंदिर सब मिलाकय फेवा-ताल आकारमे छोट मुदा सुन्दरतामे बीस, उन्नैस नहि।

लुसिन शहर केर तेसर आकर्षण थिक चैपल ब्रिज-एतुका लकड़ीक पुल। सुनै छी, चौदहम शताब्दीमे निर्मित काठक ई ऐतिहासिक पुल किछु वर्ष पूर्व अगिलग्गीमे अंशतः नष्ट भ' गेल छल। तथापि, जीर्णोद्धारक पछाति, ई नव पुल एखनहुँ पर्यटकक आकर्षण बनल अछि। यद्यपि, पर्यटनक अतिरिक्त आब एहि पुलक कोनो व्यावहारिक उपयोग नहि छैक। झीलक संकीर्ण हिस्साकें पार कय शहरक दोसर भाग जेबा लेल आब सीमेंट-कंक्रीटक आधुनिक पुल लगहिमे छैक। मुदा, यूरोपमे विरासतकें जोगाकय रखबाक अद्‌भुत उत्साह देखबै। संगहि देशक अर्थव्यवस्थामे पर्यटन एकटा प्रमुख स्तम्भ थिक। तें, ऐतिहासिक धरोहरकें पूँजी-जकाँ जोगायब राष्ट्रीय प्राथमिकता थिकैक। अफसोच, हमरालोकनि अपन विरासत केर प्रति एतेक उदासीन किएक छी। प्रतिदिन कतहु कोनो ऐतिहासिक अवशेष ध्वस्त भ' रहल अछि, आ कतहु राष्ट्रीय विरासत आ ऐतिहासिक भूमिक अतिक्रमण भ' रहल अछि। राष्ट्र निस्संक सूतल अछि, आ हमरालोकनि बौक भेल देखि रहल छी, सब किछुसँ निरपेक्ष वा किछु करबासँ अशक्त! रक्षको यत्र भक्षकः, किं न तत्र भविष्यति!

करीब दू सौ मीटर लम्बा ई पुल फूलक गमला आ पेंटिंग सबसँ नीक-जकाँ सजाओल अछि। हमरहु लोकनि पैदल पुल पार केलहुँ, फोटो झिकौलहुँ। मुदा, यावत् बस दिस अबितहुँ, कि बरखा आबि गेल। फेर वैह गप्प, नारिक मोन आ पहाड़क मौसम, बदलैमे कतेक समय लागत! मुदा, पहाड़ी इलाका आ साँझुक समयमे पानिमे भीजब, ने सुखद, ने स्वास्थ्यकर। खैर, आब लुसिनसँ स्विस्सोटेल होटल, जुरिच धरि बसमे 40 मिनटसँ बेसी नहि लागत। तीतल कपड़ाकें देह लगाकय मारू!

साफहाउसेन शहर, राइन जल-प्रपात आ टिटिसी

स्विट्जरलैंडक यात्रा समाप्त कय हमरालोकनि जर्मनी लेल विदा भेलहुँ। मुदा, स्विट्जरलैंडमे एकटा आओर मनोरम दर्शनीय स्थल देखब एखन धरि बांकीए छल साफहाउसेन शहरमे राइन नदीक वाटर-फाल वा जल-प्रपात। राइन नदी यूरोपकेर पैघ नदी सबमे सँ एक अछि। एहि नदीक उद्गम तँ छैक स्विट्जरलैंडक आल्प्स पर्वतशृंखलाक ग्लेशियरसँ, मुदा, नदी आरम्भ होइत अछि जर्मनीक लेक कॉन्स्टेंससँ। ओतयसँ ई नदी लिस्टेंनस्टीन, स्विट्जरलैंड, जर्मनी, फ्रांस आ नीदरलैंड्स होइत अंततः उत्तरी सागर (नार्थ सी) मे विसर्जित होइछ। साफहाउसेनमे 27 मीटर ऊँच आ सौ-दू-सौ मीटर चौड़ा जलप्रपातक उधियाइत दुधिया पानि एतुका मुख्य टूरिस्ट आकर्षण थिक। हमरालोकनि साफहाउसेन पहुँचल रही तँ भोरेक समय छलै। वाटर-फालकें लगसँ देखबाक हेतु मोटर बोटक व्यवस्था रहैक। सब गोटे नाहमे बैसलहुँ आ नाविक नाओक दू तीन चक्कर लगबैत अनेक बेर प्रपातक लग धरि नाहकें ल' गेलाह। जल प्रपातक मुहाना दिस ऊँचसँ खसैत विशाल जलराशि जबरदस्त फुहारा छोड़ैत छैक। तें, जतेक बेर नाह लगसँ गेलैक शीतल जलक फुहारासँ सब नीक-जकाँ भीजल। भोरुका तीतब भकुआयल लोकक भक्क छोड़एबा लेल खूब असरदार भेलै आ लोक खूब मौज मस्ती केलक, आ खूब फोटोग्राफी भेलै। नदीक किनेर पर एकटा छोट-सन चलंत दोकान सेहो छलै। किछु गोटे किछु-किछु कीनि-बेसाहि खाइतो गेलाह। हमरालोकनिक मोन तँ राइन नदीक शीतल जलक फुहारिएँसँ भरि गेल छल। तें, आगू बढ़लौं।

अगिला पड़ाव जर्मनीक लेक टिटिसी आ ब्लैक फारेस्टक इलाकामे भेलै। ई छोट नगर लेक टिटिसी आ जर्मन कुकु-क्लॉकले प्रसिद्ध अछि। मध्यम आकारक झील, गाढ़ हरियर पानि। एक दिस शहर आ दोसर दिस सघन जंगल। झीलक पानि जाड़ मासमे जमि कय बर्फ भ' जाइ छै। नीक समयमे पर्यटक लोकनि बोटिंग करै छथि आ लोक माछ सेहो मारैत अछि। ओना टिटिसीक लगेक इलाका न्यूस्तादत इलाका स्पा-टाउन थिकै यूरोपमे एहन बहुत स्पा-टाउन छै, जतय

स्वास्थ्यलाभक उद्धेश्ये लोक मिनरल-वाटरक प्राकृतिक स्रोतमे स्नान करबा लेल पहुँचैत अछि। गर्म पानिक झरना तँ अनेक ठाम भारतहुमे छैके। हिमाचलप्रदेशक तत्तापानी, कुलु-मनाली उत्तराखण्डमे बदरिकाश्रम, लद्दाख़मे पुगाक इलाकामे गर्म पानिक झरना तँ देखल अछि।

टिटिसीक बाजारमे चमड़ाक बेल्ट आ एतुका विच (डाइनि) लोकनिक भयाओन पुतरी बिकाइत देखलियैक। कौतुहलसँ दोकानदार महिलासँ हमर पत्नी पुछलथिन- 'ई डाइनि सब कतय रहै छथि? महिला कहलनि- 'फारेस्टमे' गप्प बूझि गेलियैक। अपना लोकनिक इलाकामे तँ डाइनिक अपमानजनक धारणा छैहे। भ' सकैत अछि, एतहु धिया-पुताकें डरबै लेल भूत-प्रेत आ डाइनि-योगिनीक अवधारणा होइक। मुदा, टूर ओपेरटर हमरा सबकें ने लेक देखाबय एतय अनने छथि आ ने जादू-टोनाक प्रदर्शनी लेल। असलमे ब्लैक फारेस्ट इलाका लोकप्रिय कुकु-क्लॉकक निर्माण आ निर्यात लेल प्रसिद्ध अछि। हमरालोकनि एतुका द्रुबा परिवारक दोकानमे गेलहुँ। एकटा कुमारि कन्या हमरा लोकनिकें कुकु-क्लॉक निर्माण पर छोट-सन डेमोन्सट्रेशन देलनि आ अपन दोकानक अनेको प्रकारक छोट-पैघ, सस्ता-महग देवाल घड़ी देखौलनि। छोट वा पैघ सब कुकु-क्लॉकक विशेषता एके छै : प्रत्येक घंटा पर घड़ीक उपरका भागसँ एकटा कोइली बेर-बेर बहराइत छैक आ भीतर जयबासँ पूर्व प्रत्येक बेर कुहुकि दैछ। ई निर्विवाद जे कक्कू-क्लॉक ब्लैक फोरेस्टक अलावा विश्वमे आनो बहुत ठाम बनैत छैक। तथापि, ब्लैक फोरेस्ट कक्कू-क्लॉक लेल प्रसिद्ध अवश्य अछि। संभव छै, थोकमे चीनमे बनल डिजिटल कुकु-क्लॉक जे दिन ने एहू उद्योगकें गीड़ि लेत। कारण, एत्तहु बैटरीए ऑपरेटेड घड़ीक बेसी मांग छै। मेकानिकल घड़ी बनयबामे समय बेसी लगैत छै, दाम सेहो बेसी। तँ, कीनत के!

हमरालोकनि 125 यूरोमे एकटा घड़ी कीनल। मुदा, सेहो बैट्री बला। खरीद बिक्रीकें बढ़ावा देबा लेल यूरोपियन यूनियन पर्यटककें VAT रिफंड केर सुविधा देने छैक। सब ठाम दोकानदारसँ VAT रिफंड केर फॉर्म लैत चलू। यूरोपसँ बहराइत काल एअरपोर्टपर सबटा टाका कैशमे वापस लियअ। हमरो लोकनिकें एहि घड़ीमे करीब 22 यूरोक रिफंड भेटल। बेजाय नहि, यत् लब्धम्, तत् लब्धम्।

टिटिसीमे एकटा आओर नव वस्तुपर नजरि पड़ल : टूरिस्ट सूचना केन्द्रक भवनक देवालमे एकटा छोटसन ताखमे कार्डियक डिफीब्रिलेटर राखल देखलियइ। ई मशीन अवश्ये पर्यटक लोकनिक बेर-बेगरताक हेतु हेतैक। सत्यतः, हार्ट-अटैक-सन इमेरजेंसीमे कतेक गोटे लेल डिफीब्रिलेटर प्राणरक्षक साबित हेतैक। खरीद बिक्रीक पछाति लंच लेल हमरालोकनि लगेक एकटा होटलमे गेलहुँ। भोजनक मेन कोर्स

केर अलावा मेनू पर ब्लैक-फारेस्ट केक सेहो रहैक। मुदा, सत्यतः, एहिसँ नीक ब्लैक फारेस्ट केक काठमांडू, पोखरा आ दिल्लीमे भेटैत छैक। तें, बस नाम बड़े और दर्शन छोटे, तकरे परि!

टिटिसीक भ्रमण केर पछाति हमरालोकनिक बस फेर चलल। करीब दू-तीन घंटाक यात्राक पछाति हमरालोकनि हाइडेल्बर्ग पहुँचलहुँ। मुदा, हाइडेल्बर्गक हमरालोकनिक भ्रमण बहुत संक्षिप्त छल। नेक्कार (Neckar) नदीक काते कात सोझे, हाइडेल्बर्ग युनिवर्सिटी इलाका जाइत गेलहुँ आ शीघ्रे घूमे-घामि आगू विदा भेलहुँ। सीमित समय आ कतेक ठाम, सब ठाम विस्तृत भ्रमण, असंभव छै किने। 1386 मे स्थापित विश्वप्रसिद्ध हाइडेल्बर्ग विश्वविद्यालयक गुलाबी सैंडस्टोनक ओरिजिनल बिल्डिंग देखलियैक। एहि विश्वविद्यालयक अनेक विभागसब शहरक बाहरक, दोसर, पैघ परिसरमे छैक। एखन धरि 56 टा नोबेल पुरस्कार विजेताक सरोकार हाइडेल्बर्ग विश्वविद्यालयसँ छनि। एतबे एहि विश्वविद्यालयकें विश्वकेर अग्रणी विश्वविद्यालयक दर्जा देबा लेल काफी छै। विश्वविद्यालयक पृष्ठभूमिमे ऊँच पहाड़ पर हाइडेल्बर्ग कासल (किला) देखबामे आयल। मुदा, किलाकें दूरहिसँ देखि संतोष कयल। रातिमे विश्राम फ्रैंकफर्ट शहरमे भेलै। मुदा, शहर देखबाक समय कहाँ रहैक। तें, सोझे विश्राम।

राइन नदीमे नौका विहार

इटली, ऑस्ट्रिया, लिस्टेंनस्टीन आ स्विट्जरलैंडक भ्रमणक पछाति विगत 20 घंटा सँ जर्मनीमे छी। भाषा, भोजन-खान-पान आ संस्कृतिमे योरपकेर सब देशमे किछु भिन्नता तँ अवश्य छै, मुदा, एखनि धरि बाहरी परिदृश्यमे एक देशसँ दोसर देशमे काफी समानता सेहो छै। तथापि, जँ हाईवेसँ तजबीज करी, तँ इटलीमे सूरजमुखी आ मकैक खेतीक बाहुल्य देखलियैक। ऑस्ट्रियामे सेब केर बगीचा सब आकृष्ट केलक। स्विट्जरलैंडमे पहाड़ी भूमि, पशुपालन, झील झरनाक बाहुल्य, आ खेती कम। एतय, जर्मनीमे दूर-दूर धरि पसरल गहूमक खेती आकृष्ट केलक। मुदा, अद्‌भुत छै। माल-मवेशी बहुत ठाम देखबामे आयल। किन्तु, किसान कतहु देखबामे नहि अयलाह। लागल खेती, पाकल खेती, जोतल खेत सब नजरि पड़ल। मुदा, सब ठाम दूर-दूर धरि क्षितिज धरि पसरल खेत जनशून्य छलै। मालो-मवेशी जतय कतहु देखबै, सड़कसँ दूर, पैघ-पैघ फार्ममे चरैतसँ बेसी, घास चरिकय खेतहिमे बैसल, अलसाइत-सुस्ताइत। सड़क पर, नगरमे बौआइत माल-मवेशी आ कुकुर बिलाइक तँ गप्पे जुनि करी। ओ केवल एशियामे भेटत।

आइ हमरालोकनि जर्मनीएमे छी। पहिने राइन नदी पर बोटिंग हेतैक। पुनः, प्रसिद्ध शहर कोलोन जयबाक अछि। राइन नदी पर बोटिंग लेल भोरे हमरालोकनि बससँ विदा भेलहुँ। करीब डेढ़ घंटाक बस यात्राक पछाति राइन नदीक पश्चिमी कछेरपर बसल एहि छोट-सन संत गोअर नामक शहरमे छी। नदीकेर पाट चौड़ा छैक। स्वच्छ, गाढ़ मटमैल पानिक वेग तेज। नदीक दुनू कछेर पर पहाड़े-पहाड़ छैक। आसपासक पहाड़पर अनेकानेक किलासब नजरि पड़ल। आबादी सड़कक काते-कात छै। एहि शहरमे पर्यटन आ मोटर बोटिंग आमदनीक मुख्य जरिया बूझि पड़ल। हमरालोकनिक नाओ-मोटर बोट-प्रतीक्षारत छल। चढ़ैत गेलहुँ। दोमहला मोटरबोट। ऊपर खुला डेक। बैसबाक मारते रास कुर्सी आ बेंच। बिचला महल पर, रेस्टोरेंट, बार आ क्युरियो शॉप। हमरालोकनि ओपन डेक पर बैसैत गेलहुँ। भोरुका समय। गर्मीक मास। शीतल वायु आ हल्का सुखद रौद। आओर चाही

की। सुनलहुँ, एहि इलाकामे नदी आन ठामसँ संकीर्ण छैक आ नदीक जलस्तरक नीचा पाथरक अनेक चट्टान छैक। एहि अदृश्य चट्टान सबहक कारण हेबनि धरि अनेक नाविकक दुर्घटना भेलैए। मुदा, जनमानसमे दुर्घटनासब एकटा दोसरे दंतकथासँ जुड़ल छैक। स्थानीय मान्यता अनुसार, प्रेममे असफल लोरेली नामक एकटा जलकन्याक एहिठाम नदीक बीचक टीलापर बैसि नाविक सबकें लोभबैत रहैछ आ आसक्त नाविक सब अनेरे दुर्घटनाक शिकार भ' जाइछ। इएह रहस्य थिक एहि स्थानक लोकप्रियताक कारण। स्थानीय कथा आ लोकगीतमे लोरेलीक एतेक चर्चा भेलैए जे ऐतिहासिक आधारक अभावहुमे लोरेली संत गोएरक शहरक पहिचान भ' गेलीहे। तें, नदीक दुनू पाटक बीच ऊँच चट्टानपर लोरेलीक कारी पाथरक मूर्ति देखबै। हमरालोकनि जाहि नावपर झिलहरि खेलेलहुँ ओकरो नाम लोरेलीए रहैक। एक घंटाक झीलहरिक (नौका विहार) क पछाति हमरालोकनि वापस भेलहुँ। आब यु डी कोलोन लेल प्रसिद्ध शहर कोलोन चली।

कोलोन

जर्मनीक अनेक विशाल शहरमे कोलोन एक थिक। शहरक इतिहाससँ सामान्य पर्यटकक कोन सरोकार। तथापि, सुनल नाम आ परिचित वस्तुक हेतु जिज्ञासा हयब अस्वाभाविक नहि। आब कहू शहरी पुरुष-पात्रमे यु डी कोलोन कोनो अपरिचित नाम थिकै? मुदा सत्य तँ ई थिकै, यु डी कोलोनक सम्बन्ध कोलोनसँ हयब आवश्यक नहि। हँ, यु डी कोलोनक प्रसिद्ध ब्रांड 4711 क जन्मभूमि कोलोने थिकै। बड़ खुद्‌बुद्दी लागल छल। आखिर एहि प्रसिद्ध ब्रांडक नाम 4711 किएक छै। मुदा, आब बुझलियैक कोलोनक ग्लोकेनगास्से नामक सड़क पर 4711 नंबरक भवनमे 18 हम शताब्दीमे एहि लोकप्रिय यु डी कोलोनक उत्पादन आरभ भेल रहैक। कोलोनक सम्बन्धमे दोसर परिचित गप्प ई जे दोसर विश्वयुद्धमे कोलोन शहर लगभग ध्वस्त भ' गेल छल। मुदा, विश्वयुद्धक समाप्तिक स्वर्ण-जयंती बीति गेलाक बाद आब विश्वयुद्ध ककरा मोन छै! भुक्त-भोगी, बचल-खुचल सैनिक वा पुश्त-दर--पुश्त प्रतिशोधक ज्वालाक आगिकें सुनगाकय जोगौने समुदायकें वा इतिहासक अध्येताकें। हमरो ई प्रसंग तें मोन पड़ल। टूर ऑपरेटर हमरालोकनिकें सोझे कोलोन कैथेड्रल-एतुका विश्वप्रसिद्ध गिरिजाघर ल' गेलाह। आकार-प्रकार, बनावट आ वास्तुकलामे हमर अपन देखल सब कैथेड्रलसँ ई भिन्न अछि। इसाई धर्मक इतिहाससँ अभिज्ञ आ चर्चक वास्तुकलासँ अपरिचित हमरा-सन पर्यटक लेल एहि पूजास्थलक वर्णन असंभव अछि। तथापि, एतबा अवश्य कहब जे ई

गिरिजाघर असाधारण तँ अवश्य छैक। असाधारण आकार, बाहरी सजावट आ भितरूका स्टेन्ड ग्लास पेन्टिंग सब। एहू कैथेड्रलमे 'पिएटा' प्रकारक मूर्तिकला-माता मेरीक कोरमे ईसाक मृत शरीर-देखलहुँ। मूर्तिक आगूमे जरैत असंख्य मोमबत्ती सम्पूर्ण स्थानकें आध्यात्मिक आभा प्रदान करैत छैक। हमरो लोकनिक ग्रुपक कतेक श्रद्धालु एतय मोमबत्ती जरौलनि। चर्चकेर परिसर मोटा-मोटी सीमेंट-कंक्रीटेक छै। कत्तहु कोनो हरियरी, गाछ-वृक्ष नहि। चर्चकेर कातमे वाश-रूमक सुविधा छलै। हमरालोकनिकें आवश्यकता नहि छल। मुदा, ओतय एकटा महिलाक 800 यूरो चोरि भ' गेलनि, से पछाति सुनलहुँ। चर्चकेर परिसर आ आसपासक इलाकामे अनेक दृश्य आकृष्ट केलक। चर्चकेर लगेमे गाजा-पट्टीमे इसरायली बमबारीक मूक विरोधमे बैनर लेने बैसल फिलिस्तीनी। भूमिपर चारकोल पेंटिंग करैत कलाकार। सड़कक कातमे बैसि बाजा बजबैत संगीतकार, सड़कहि पर अभिनय करैत नुक्कड़-नाटककार, आ अपन मार्गदर्शक कुकुरक संगे बैसल दृष्टिविहीन भिखारि। कनिए दूरमे दृष्ट एतेक विविधता प्रायः एकठाम अभरल नहि छल। भ' सकैत अछि, प्रतिदिन कैथेड्रल देखबा लेल अबैत बीस हजारसँ बेसी पर्यटकक संख्या सबकें एत्तहि घिचैत होइक। एहिठाम आसपासमे सब ठाम 4711 यु डी कोलोनक प्रचार आ बिक्री देखल। ई यु-डी-कोलोन भेटैत तँ छैक सबठाम। मुदा, कोलोन एलहुँ तकर किछु निसानी तँ चाही। अस्तु हमरोलोकनि 4711 यु डी कोलोनक किछु छोट-पैघ बोतल कीनल। कैथेड्रलसँ किछु दूर हटि कय रंगोली नामक रेस्टोरेंटमे हमरालोकनिक लंच केर व्यवस्था छल। भोजन आशानुरूपें छल। मुदा, रेस्टोरेंटक बाहर द्वारिपर लटकल नेबो-मरचाइक झाबाक आ देवनागरीमे 'बुरी नजर बाले तेरा मुँह काला' क छोट-सन लटकेना देखि हँसी लागि गेल। देशमे रही वा विदेशमे, अपन विश्वास आ अन्धविश्वास कतहु मनुक्खक पछोड़ नहि छोड़ैत छैक। तें, कलकत्ता, काबुल वा कोलोन कत्तहु चल जाइ, दिन तकाकए यात्रा करब, नीक दिन देखि काज आरम्भ करब, आ द्वारि पर नेबो-मरचाइ लटकायब संग नहि छोड़त। इएह तँ थिक संस्कार आ संस्कृति। प्रसंगात्, विश्वास वा अंधविश्वासक एकटा आओर प्रसंग मोन पड़ल। पुरान गप्प थिक, आधुनिक परमाणु विज्ञानक आदिपुरुष नील बोर केर गप्प। नील बोर केर दुआरि पर घोड़ाक नाल लटकल देखि केओ आगन्तुक पुछने छलथिन, 'प्रोफेसर बोर, घोड़ाक नाल शुभ होइत छै, से अहूँ मानैत छियै?' नील बोर मुसुकाइत कहलथिन, 'नहि। विश्वास तँ नहि होइए। मुदा, सुनै छियैक, घोड़ाक नाल हुनको लोकनि लेल शुभ होइत छनि जे एहि व्यवहारकें अन्धविश्वास बूझैत छथिन!' सएह थिकै विश्वास!

ब्रसेल्स

जर्मनीक यात्रा समाप्तकय हमरालोकनि बेल्जियम केर सीमामे पैसलहुँ। बेल्जियममे पहिल पड़ाव देशक राजधानी ब्रसेल्समे भेलै। राजनीतिक रूपें एहि शहरक प्रसिद्धिक अनेक कारण छैक, जेना, यूरोपियन यूनियन केर मुख्यालय, आ सर्वशक्तिमान सैनिक संगठन, नॉर्थ अटलांटिक ट्रीटी आर्गेनाइजेशन (NATO) क मुख्यालय। संभव छै, ई शहर आन प्रकारक राजनीतिक गतिविधिक केंद्र सेहो हो, कारण एहि शहरक केंद्र-विन्दु-सिटी स्क्वायर-मे आसपासक देवाल, पुल, आ खम्भा सब पर रंग-बिरंगक नारा आ राजनीतिक कार्टून पर नजरि पड़ल।

ब्रसेल्समे गाइड हमरालोकनिकें सोझे सिटी स्क्वायरमे ल' गेलाह। एकटा पैघ, चौकोर अंगनै-सन एहि स्थानक चारूकात बिल्डिंगे-बिल्डिंग छै। मुदा, टूरिस्टक आकर्षण थिक एतुका टाउन हॉल ग्रैंड-प्लास आ ओकर ठीक सामनेक भवन ब्रेड हाउस वा मेजों ज ह्वा। गाइड लोकनि एतबे कहलनि जे पूर्वमे एतय सिटी हॉलक भव्य भवन केर आलावा व्यापारी लोकनिक खरीद-बिक्रीक स्थानक अनेक भवन सेहो छल। खरीद बिक्रीक अनेक वस्तुमे ब्रेडकेर दोकान-दौरी सेहो छल हेतइ। जेना-जेना आवश्यकता भेलै, भवन बनैत गेलै। योजनाबद्ध निर्माणक अभावमे बेतरतीब निर्माण असंभव नहि। तें, एतुका ड्यूक आसपासक बेतरतीब दोकान दौरीकें हटाकए म्युनिसिपल भवनक टक्करमे ओकर ठीक सामने एकटा भव्य भवनक निर्माण करौलनि। वैह भवन ब्रेड हाउस वा मेजों ज ह्वा (Maison du Roi) क नामसँ प्रसिद्ध भेल। मुदा, सत्य पूछी तँ एहि इलाकामे पर्यटकक मुख्य आकर्षण थिक 'मानेकिन पी' सद्यः मूतैत बालक। मुत्ती करैमे मस्त ई नेना थिकाह के? ई गप्प प्रायः नीक-जकाँ ककरो बूझल नहि छैक। आ जे गप्प ककरो नहि बूझल होइछ तकरा लेल जतेक मुँह ततेक गप्प। एहू बालकक इतिहास किछु तेहने छनि। ककरो कहब छै, जे हाट-बाजारमे खरीद-बिक्री करैत अपन नेनासँ एकटा माताक संग छूटि गेलनि। हुनका बाटमे जे भेटनि, बेचारो सबकें भुतियायल नेनाक तकैमे मदति लेल कहैत गेलखिन, नगर केर मेयरकें सेहो। फल भेलै जे

सम्पूर्ण नगर एहि बालककें तकबामे लागि गेल। अन्ततः, जखनि ई भेटलाह तँ लोक देखलकनि जे सड़कक कातमे कतहु निर्विकार भावें मूति रहल छलाह। एहि बालकक आन खीसासब तँ आओर अजगुत छै : कि तँ कुल्लम दुइये बरखक वयसक ई नेना ब्रसेल्सक ओहि इलाकाक ड्यूक वा शासक छलाह। हिनकहि लेल हिनकर सेना सब लड़ैत छल। मुदा, हौसला आफजाई लेल किछु तँ चाहियैक। अपन हौसला बढ़बै लेल सैनिक सब हिनकहि चुनलक। मुदा, तहिया ड्यूक ततबे छोट छलाह जे युद्धक समय हिनक बफादार सैनिकसब हिनका एकटा पथियामे राखि लगहिक एकटा गाछसँ लटका कय रखने छलनि। दू बर्खक नेनाक कोन ठेकान। मुत्ती लगलनि। जत्तहि छलाह, सैनिक सबहक देहे पर मूति देलखिन। आ ई भ' गेलाह पी-बोआए। तेसर कथा आओर अद्‌भुत छै : कि, तँ, कोनो समयमे एहि नगरपर चढ़ाइ करैत दुश्मन सैनिक सबहक विस्फोटक सामग्री एहि बालकक मुत्तीसँ निष्क्रिय भ' गेल रहैक आ शहर विनाशसँ बचि गेल छल। भेलै ने जतेक मुँह ततेक गप्प। पछाति केओ मूर्तिकार ओहि बालकक मूर्ति बनौलनि आ मूर्ति भ' गेल मानेकिन पी। मुदा, दू-तीन टा कथा सत्य। एक, जे पी-बोआएक पहिल मूर्ति 17म शताब्दीक छल। दू, ई मूर्ति ब्रसेल्स शहरकेर सुपरिचित टूरिस्ट आकर्षण थिक। तीन, समय-समय पर एहि मूर्तिकें अपन लोकप्रियताक मूल्य सेहो चुकबय पड़लैए। अनेक बेर चोर सब एहि मूर्तिकें चोराकय ल' गेल। तें, आब असली मूर्ति स्थानीय संग्रहालयमे अछि आ पुरान मूर्तिक अनुकृति ग्रां प्लास चौराहाक समीपे पर्यटकक आकर्षणक केंद्र बनल अछि। सुनलहुँ, आब एहि मूर्तिक नकल विश्व केर आनो-आन शहर पर्यटन केन्द्र सबपर स्थापित अछि। एतुका नागरिककें तँ ई ततेक दुलारू छथिन जे कखनो हिनका शहरक मेयरक परिधानमे सजाओल जाइछ, तँ कखनहु जुडो खिलाड़ी-जकाँ। देखै नहि छियैक, माय बाप अपन धिया-पुताकें कोन-कोन ड्रेस ने पहिरबैत छैक। असलमे दुलारू नेनाक गप्पे नहि हो!

मानेकिन-पीक इलाकामे ब्रसेल्सकेर प्रसिद्ध भोजन-वाफ्ल आ चॉकलेट-केर अनेक दोकानसब छैक। ब्रेड-केक-मालपुआ-पैन केक, जे किछु, केर वैमात्रेय, एहि मधुर, गरम-गर्म वाफ्लक आस्वाद हमरो लोकनि केलहुँ। 1 यूरो, एक प्लेट। कीनू आ रोडक कातहिमे ठाढ़ भ' क' खाउ। वाह, ब्रसेल्सकेर एहि प्रसिद्ध मूर्ति लग ठाढ़ भ' हमरो लोकनि वाफ्ल आ आइसक्रीमक संग मौहक कयल।

साबिकमे सुनैत छियैक बेल्जियम शीशाक सामान लेल प्रसिद्ध रहैक। हमर पत्नीकें किछु किनबाक नेयार रहनि। मुदा, पछाति बोध भेल जे बदलैत युगमे विभिन्न वस्तुक उत्पादन आ व्यापार साबिक जकाँ रहलैक नहि। पुरान लोककें

भले पुराने गप्प स्मरण होउ आ वस्तु-जात तकैत फिरय। मुदा, आब तँ सब किछु बनैत छैक चीनमे : कपड़ा हो, चमड़ा हो, वा इलेक्ट्रॉनिक सामान। 2008 मे हमर कन्या सुष्मिता जखन अमेरिकासँ छुट्टीमे आयल रहथि, तँ, हमरा लेल तीनटा सनेस अनने रहथि : आइपौड, टाइ, आ नॉर्थ कैरोलिना विश्वविद्यालयक लोगोबला बेसबॉल कैप। तीनूक जन्मभूमि चीने रहैक। हेबनिएमे एकटा प्रसिद्ध पत्रकार कोनो बेजाय नहि कहलनिए, सब वस्तु जँ एहिना चीनमे बनैत रहलैक, तँ, अंततः अमेरिकी लोकनि ब्रेड बेक करताह आ एक दोसराकें केवल ब्रेड-आ बर्गर बेचैत रहताह! कोन ठेकान आनो देश सबहक इएह परि होइक! किन्तु, 'कौन जाने किस घड़ी वक्त का बदले मिजाज!' देखैत छियैक हेबनिमे विश्व बाजारमे नव-नव छहरदेवाली ठाढ़ भ' रहल अछि। तें, देखैत रहू : आगे आगे होता है क्या!

ब्रसेल्सकेर ग्रां प्लास केर भ्रमण कय हमरालोकनि शहरसँ बहराए लगलहुँ तँ एतुका दोसर प्रसिद्ध आइकॉन ऐटोमियम लग बस रुकलैक। लोहाक बनल परमाणुक अनुकृतिमे निर्मित नौ टा पैघ-पैघ गोलाकार कक्षक संयोगें बनल ई भवन आजुक ब्रसेल्सकेर पहिचान थिक। पचासक दशकमे कोनो ट्रेड फेयरक उपलक्षमे ऐटोमियमकेर निर्माण भेल छल। समय रहलासँ लोक ऐटोमियम संग्रहालयक भीतर सेहो जाइछ। मुदा, हमरा सब कतेक घूमब। कनडक्टेड टूरक एकटा इहो दोष थिकै सब दिनुक दिनचर्या एतेक पॉवर-पैक्ड रहैत छै जे दिनान्त होइत होइत ततेक ने थाकि जायब जे कतेककें हेतैक जे आब आरामे होइ। तें, कविवर यात्रीक अंदाज-ए-बयां मे, 'ब्रसेल्स केर ऐटोमियम बाग के (दूरहिसँ) नमस्कार हम कैल'। रातिमे विश्राम बीभेर-एन्न नामक शहरमे भेलै।

हे'एग आ मदूरोडैम

आइ यात्राक प्रायः दसम दिन थिक। रातिमे विश्राम होटल हांगर फाल्क बेफरें (Van Der Valk Beveren)मे भेलै। भोरमे मौसम कनेक मेघओन जकाँ छलैक। मुदा, जेबाक तँ छले। सीमित अवधिक टूरमे अलसयबाक स्कोप कहाँ! ताहि लेल भिन्न प्रकारक प्रोग्राम चाही। अस्तु, हमरालोकनि आइ नीदरलैंड्स केर टूर पर विदा भेल छी। यात्रा लम्बा छै। रोटरडैम शहर होइत पहिने हे'एग जायब, तखन एम्स्टर्डम आ पछाति वोलेंदाम। गरमीक मासमे लोक टुलिप गार्डन देखबा लेल हॉलैंड जाइत अछि। जुलाइ मासमे हॉलैंडक टुलिप गार्डन एखन जोतल खेत मात्र रहि गेल अछि। गाइड कहलनि, देखैत छिऐक, इएह सब थिक टुलिप गार्डनक इलाका। अपना सबहक देश-जकाँ कि एतय कोला सब छोट-छोट होइछ। एम्हर अयबामे किछु हप्ता विलम्बसँ आयल छी, नहि तँ चारू कात' 'दूर तक निगाह में हैं गुल खिले हुए' देखबामे अबैत। सुनैत छी, आब कश्मीरहुमे व्यावसायिक स्तरपर टुलिपक खेती होइत छैक। फूलक बगीचा तँ ओतहु देखि सकै छी। मुदा, कश्मीर कश्मीर थिक, आ हॉलैंड नेदरलैंड्स आओर भिन्न देश।

सुनने छी, रोटरडैम योरप केर सबसँ पैघ बंदरगाह थिक। पैघ शहर सेहो। मुदा, हमरा सबकें तँ बाटे-बाट जेबाक अछि। रॉटरडैम बाहरे-बाहर पार भ' गेलहुँ, तँ, आगू अयलै (Den Haag) वा हे'एग। ई शहर नीदरलैंड्स केर मुख्यालय थिकैक। स्थानीय डच भाषामे एहि शहरक नाम थिक 'देन हैश', देशक बाहरक लोक लेल ई शहर थिक हे'एग। हे'एगमे अंतर्राष्ट्रीय न्यायालयक मुख्यालय छै, से सुनल छल। मुदा, टूर ऑपरेटरक नजरिमे तकर प्रधानता नहि। मदुरोडैम नामक मिनिएचर हॉलैंड नीदरलैंड्स देखयबा लेल हमरालोकनिकें हे'एग अनने छथि। तें, सोझे मिनी हॉलैंड-मदुरोडैम चली। मुदा, मदुरोडैमक भ्रमणसँ पहिने किछु गप्प।

द्वितीय विश्वयुद्ध विश्वभरि लेल एकटा भयानक त्रासदी छल, से सर्वविदित अछि। जे देश एहि युद्धमे लड़ल वा झोंकल गेल ओकर नोकसान तँ सहजहि भेलै। मुदा, जे देश दूर छल सेहो युद्धक असरसँ अछूत कहाँ रहल। मुदा, एहि युद्धक

एकटा तेसरो कोटिक भुक्तभोगीसब छल : यहूदी समाज, जर्मन सरकारक दृष्टिमे सरकार विरोधी सैनिक, राजनेता, बुद्धिजीवी, कलाकार, साहित्यकार, वैज्ञानिक आ समाजक आओर कतेक वर्ग। जातिसँ यहूदी, जॉर्ज मदुरो जर्मनीक फासीवादी सरकारक विरुद्ध भूमिगत योद्धा छलाह। फलतः, जर्मन सरकारक बंदी भेलाह आ 1945 ई. मे अंततः जर्मन कंसंट्रेशन कैंपमे युवावस्थहिमे हिनक मृत्यु भ' गेलनि। जर्मन फासिज्मक विरुद्ध संघर्षमे हुनक अतुलनीय योगदानक हेतु नीदरलैंड्सक सरकार जॉर्ज मदुरोकें सर्वोच्च राष्ट्रीय सम्मान देलकनि। 1952 ई. मे एही युवक केर स्मृतिमे मदुरोडैम मिनिएचर पार्कक उद्घाटन भेल। एहि पार्कक निर्माण लेल जॉर्ज मदुरोक परिवारसँ विपुल आर्थिक योगदान प्राप्त भेल छलै। आरम्भमे एहि पार्कसँ जे किछु आमदनी होइत छलै, टीबीक रोगीक सहायताक मदमे खर्च होइत छलइ। एखनुका गप्प नहि कहब। आब योरपमे टीबीक रोग विरले होइत छै। तें, कहब मोश्किल, मदुरोडैमक आमदनीक प्रयोग आब कोन रूपें होइत छैक।

आब मदुरोडैमक गप्प करी। मदुरोडैमक एकटा पार्क थिक। मुदा, एम्यूजमेंट पार्क नहि, एतय खेल-कूद, पिकनिक आ पार्टीक सुविधा नहि छै। देशक सम्पूर्ण विविधताकें समेटने किछुए एकड़क ई छोट-सन पार्क हॉलैंडकेर विस्तृत, विहंगम झांकी प्रस्तुत करैछ आ पर्यटककें देशक सांस्कृतिक विरासत, औद्योगिक शक्ति आ समृद्धिसँ परिचय करबैत अछि। हेबनिमे एहि पार्कक पुनर्निर्माण भेलैए आ पार्ककेर स्वर्ण-जयंती वर्ष 2012 मे एहि पार्ककें दोसर स्वरूपक उदय भेलैए। नव निर्मित पार्कक तीनटा थीम छैक : 1. जल-मनुष्यक मित्र आ शत्रु, 2. ऐतिहासिक नगर सब, 3. विश्वक हेतु प्रेरणास्रोतक रूपमे नीदरलैंड्स। जे किछु। मुदा, पार्क देखबामे तँ नीक अवश्य लागत। हम एहि प्रकारक कोनो आन पार्क नहि देखने छी।

पार्ककेर बाहर जलाशय छै। छोट आकारक एहि कृत्रिम जलाशयमे खड़हीक खेती होइछ छै, जेना, नदीक छाड़न, नासी, वा चौर-चाँचरमे होइत छैक। आगू स्वागतकक्षसँ भीतर पैसैत, पार्कक भीतर वृत्ताकार सड़कक नीचाक अंगनैक नीचा मुख्य पार्कक परिदृश्य एकदमे भिन्न छैक। पार्क केर सहरजमीन सड़कसँ दू चारि हाथ नीचा छै, जेना नीदरलैंड्सक बेसी भू-भाग सड़क आ बान्ह आ समुद्रतलसँ नीचहि छैक। आरम्भमे बाटक कातहि जॉर्ज मदुरोक बस्टक संग हुनक अतिसंक्षिप्त जीवन वृत्ति भेटत। आगू यत्र-तत्र सड़क सब मुख्य मार्गकें छोड़ि पार्कक भीतर जाइत। इच्छा हो तँ पार्कक भीतर घुमू वा बाहरेक सड़कपर चक्कर लगाउ आ ओत्तहिसँ देशक विहंगम दृश्यक आनंद उठाउ। हॉलैंडक प्रतिरूप एहि पार्कमे सब किछु छै? विशाल राजप्रासाद, अप्रतिम चर्च आ व्यापारिक भवन सबहक छोट-छोट,

किन्तु, प्रामाणिक अनुकृति। मीलहु लम्बा, दोतरफा इलेक्ट्रीफाईड रेल लाइन आ निरन्तर अबैत-जाइत रेलगाड़ी। हॉलैंडक सुपरिचित पवन चक्की सब, विशाल इलेक्ट्रिक पॉवर प्लांट, कार्यरत जलसंशोधन प्रतिष्ठान। पैघ-पैघ बंदरगाह। निर्बाध गतिएँ अबैत जाइत छोट-पैघ समुद्री जहाज, टैंकर आ नाह। मुदा, कतहु कोनो ठाम रेल, जहाज वा हवाई जहाजमे टक्कर होइत नहि देखबै। लगहि छै, एम्स्टरडैम एअरपोर्टक भवन, रनवे आ टैक्सी-ट्रैक पर अबैत-जाइत सुपरजंबो हवाई जहाज। हॉलैंडक पुरान बस्ती आ आधुनिक शहर, गगनचुम्बी अट्टालिका आ देहातक इलाकामे मध्यम वर्गीय आवास। अपन-अपन व्यवसायमे व्यस्त नागरिक लोकनि। पोशाक-कपड़ा-लत्ता-सेहो मौसम आ ऋतुक अनुकूल। शहरक बाहर दूर-दूर धरि पसरल टुलिप फूलक खेती आ फूल लोढ़इत युवक युवती सेहो देखबै। शहर-नगरकेर गाछ-वृक्ष, खढ़-पात, अंगना-बहरी, अगुएत-पछुएत सब सरिपहुँएक लागत। पार्कक बीचो-बीच सड़क पर नव-पुरान-सब प्रकारक-पुल-ओवरब्रिज-सस्पेंशन ब्रिज छैक। यदि दूरसँ, एहि सबठाम ठाढ़ यात्रीक फोटो लेबैक तँ सब किछु एकदम स्वाभाविक बूझि पड़त। जेना, सत्ते लोक भवनक आगाँ, पुलपर, सड़कपर जाइत अबैत हो। पार्कक एक कात, बेस पैघगर सोलर पैनल छैक। प्रायः पार्क केर रेल, हवाई-जहाज, कल-कारखानाक संचालन सौर-उर्जाएसँ होइत छै। एतय आइ दिनमे नीक रौद रहैक। पार्ककेर चारू कात रौदक कोनो अवरोध नहि। दिनुका रौद आ आसपासक परिदृश्य फोटो झिकबा लेल खूब उपयुक्त बूझि पड़ल। हमरालोकनि सम्पूर्ण हॉलैंडक एहन अजगुत नमूनाक खूब फोटोग्राफी केलहुँ। जखन सबहक मोन खूब तृप्त भेलै, तँ, सब विदा होइत गेलहुँ। फेर एकटा आओर शहर, एकटा आओर नगर। आब एम्सटरडैम।

एम्सटरडैम

जँ हॉलैंडकें किछुए शब्दमे परिभाषित करबा लेल कही तँ हमरा मोन पड़त, पवनचक्की, नदी-नाला-कैनाल-नाओ, साइकिलक अम्बार, लकड़ीक जूता, आ चीज केर प्रचुर उत्पादन। हमरो लोकनिक देश तँ कृषिप्रधान अछि। पशुपालनक प्रधानता तँ केहन छैक से तँ पटना, पांडिचेरी आ बंगलोरक सड़क पर बौआइत माल-मवेशीक झुण्ड देखि ककरो बुझबामे आबि जेतैक। दूध, दही, घी, छेना आ खोआक मिठाइ ककरा नहि नीक लगैत छैक। मुदा, अपन देशमे दूधकें परिशोधित कय चीज बनयबाक आ खयबाक रेवाज ओतेक लोकप्रिय नहि। एकर विपरीत यूरोप आ अमेरिकामे भोजन आ पाकमे चीजकेर प्रचुर प्रयोग आम गप्प थिक। हमरालोकनि

दूधकें हाथसँ महिकय वा मशीनसँ पेरि कय घी बनबैत छी। प्रायः भारतकेर गर्म जलवायु लेल इएह उपयुक्त छै। तें, भारतकेर मैदानी इलाका वा समतल भूमिमे दूध, दही, छेना आ घी बनबैत छी। मुदा, चीज बनयबाक प्रचलन नहि छैक। हँ, लद्दाख़-सन ठंढा प्रदेशक ऊँच पर्वतीय क्षेत्रमे छुर्पी-छेनाक सुखौंत-बनयबाक विधि अवश्य देखने छिऐक। भारतमे व्यावसायिक स्तरपर अमूल, ब्रिटानिया आ आन कम्पनी चीजक उत्पादन करैत अछि, आ बाजारमे भेटितो छैक। मुदा, चीज केर उत्पादन कोना होइत छैक, से हमरालोकनिकें देखल नहि छल। योरपमे गृह-उद्योगक क्षेत्रमे चीज उत्पादन होइछ। हॉलैंड अबैत टूरिस्ट लेल, तें, चीज फैक्ट्रीक भ्रमण टूर ऑपरेटर लोकनिक प्रोग्राम पर रहिते छनि। आइ अम्स्टरडैमक बाहरक ग्रामीण इलाकामे चीज फैक्ट्री देखबाक प्रोग्राम छलैक। छोट-सन दू-तीन कोठलीक फैक्ट्री। प्रवेश करिते चीज बनयबाक सरंजाम-बर्तन-बासन, लट-खुट सामान। मारिते रास सुखायल भैषज्य-फूल-पत्ती-जड़ी-बूटी। प्रायः चीज केर फ्लेवरिंगकेर मर-मशाला होइ। अगिला कोठलीमे तैयार चीजकेर बड़का-बड़का थुम्हा, शेल्फ सबपर नीकजकाँ सजाओल। तेसर कोठलीमे चीज बनयबाक बड़का नादि आ दूध मथबाक स्वचालित रही। एत्तहि चीज बनयबाक प्रदर्शन भेलैक। एकटा सज्जन आ हुनकर संगी महिला, सबहक स्वागतमे तत्पर छलीह एहि सब एक्सकर्शनमे खरीद-बिक्री आ प्रचारक संभावना तँ रहिते छैक। महिलाक ड्यूटी छलनि चीज बनयबाक प्रक्रियाक प्रदर्शन। सज्जन काठक जूता बनयबाक कला प्रदर्शित करताह। वस्तु दुनू भिन्न-भिन्न, मुदा, बनैत छै एके ठाम। मोटा-मोटी गप्प बुझलियैक। चीज बनयबाक प्रक्रिया श्रमसाध्य छै आ बहुत रास दूधसँ थोड़ चीज बनैत छैक। दूध मथबासँ पूर्व दूधमे अनेक प्रकारक रसायन मिलाओल जाइत छैक, किछु सर्वविदित आ किछु गोपनीय। आखिर ट्रेड सीक्रेट थिक, सबकें कोना कहथिन। दोसर गप्प वेजीटेरियन आ नॉन-वेजीटेरियन चीज केर अंतर बुझलियैक। नॉन-वेजीटेरियन चीजमे बाछाक अमाशयक एंजाइम-रेटिनिन-केर उपयोग होइत छैक। ततबे। पछाति जकरा जे मोन भेलै, प्रश्नोत्तर करैत कने-मने चीज किनैत गेलहुँ।

चीजक कथा समाप्त भेल, तँ, युवक काठक जूता वा जूती देखबय लगलाह। बॉलीवुडसँ परिचित छलाह। तें, कनेक हंसी-मजाक सेहो भेलै। खड़ाऊँ आ खरपा तँ हमरो लोकनिकें देखल अछि, प्लास्टिकक इजाद पुरातन व्यवसाय आ वस्तुकें भले खा गेल होइक। मुदा, एतुका जूता, खडाऊँ आ खरपासँ भिन्न, भरि पयरक हल्लुक जूता थिक। प्रायः जाड़क मासमे बर्फमे चलबामे सुलभ हेतैक। शहरक रोडपर चलब, तँ, खसबे करब। जँ, अभ्यास हो, तँ, शहर-बजारमे धिया-पुता सबकें

पहिया बला जुत्ता पहिरि दौगैत देखिते छियैक। हमरा अहाँ बुते पार लागत! सएह गप्प। तथापि, हॉलैंडक गाओंक दू टा पुरातन परम्परासँ परिचित भेलहुँ।

आब चली एम्सटरडम। मुदा शहरक गप्पसँ पहिने नेदरलैंड्सकेर साइकिलक गप्प। प्रायः विश्व केर आन कोनो देशमे साइकिल चालक लेल एतेक सामाजिक सहयोग आ साइकिल चालकक सुरक्षा लेल एतेक सुव्यवस्था नहि छैक। संख्याक गणनामे भ' सकैत अछि, भारत आ चीनमे हॉलैंडसँ बेसिए साइकिल होइक। गाइड कहलनि, एम्सटरडम शहरमे साइकिलक संख्या कुल जनसंख्यासँ बेसी छैक। सबठाम साइकिल-पार्किंग केर सुविधा। साइकिल लेल (गाढ़ गेरुक रंगक) फूट सड़क, ट्राफिक सिगनल आ लाइटिंग। सुनैत छी, सम्पूर्ण देशमे साइकिल ट्रैक छै। कारणो छै, समतल भूमि, अनुकूल जलवायु आ छोट पैघ शहरमे मोटर ट्राफिकसँ बचबाक नागरिकक संकल्प। संगहि एहि परम्परासँ देश वातावरण प्रदूषणक दुष्प्रभावसँ तँ बचिते अछि, पेट्रोल-डीजलक मदमे सेहो खर्च बहुत कम भ' जाइत छैक। सुनैत छी, नेदरलैंड्सक सरकार साइकिल सवारीक सुरक्षा लेल अनेक कानून बनौने अछि। काश! अपनहुँ देशमे एकर व्यवस्था होइत। अपना ओहिठाम तँ शहर सबमे पैदल यात्री सबसँ असुरक्षित छथि। साइकिल यात्रीक तँ गप्पे छोड़ी। आब जखन स्वच्छ भारतक अभियान जोर पकड़ने अछि, पांव पैदल आ साइकिलसँ चलैत जनता लेल सेहो नव फुटपाथ आ सड़कक काते-काते साइकिलक हेतु फूट साइकिल-ट्रैक केर आवश्यकता छै। एहिसँ पर्यावरणक रक्षा तँ हेबे करतैक, साइकिल सवार सेहो सुरक्षित रहताह।

आब शहरमे चली। हॉलैंड नेदरलैंड्स देशक अनेक शहरक नामक अंतमे डैम छैक। माने, आस-पासक नदी पर बान्ह (डैम) बान्हि नदीक पेट आ शहरक सीमाकें फुटाओल गेल छैक। एम्सटरडम शहरक बीच धरि सेहो एम्सटेल नामक नदीक धार छैक, जाहिसँ शहरक भीतरक अनेक केनालकें जोड़ि शहरक संरचना भेल छैक। केनाल सबहक नामो अद्‌भुत-राजा लोकनिक केनाल, राजकुमार लोकनिक केनाल, आ आम नागरिकक केनाल। माने, पहिने सामाजिक ओहदाक अनुसार शहरक इलाका विभाजित रहैक। मुदा, से तँ पुरान गप्प भेल। एखनुक समयमे सैलानी एतय भिन्न-भिन्न उद्देश्यसँ अबैत छथि वाणिज्य व्यापार, विशुद्ध मनोरंजन वा शहरक सैकड़ो किलोमीटरक केनालक जालमे नौका विहारक आनंद लेबाक हेतु। एहि शहरमे शहरक केंद्र डैम-स्क्वायर खूब प्रसिद्ध छैक। हमरो लोकनि डैम स्क्वायर गेलहुँ आ आसपासक चौक-चौराहा, भवन, आ शहर बाजार देखल। साइकिलक बाहुल्य-एक सवारीक साइकिल, दू सवारीक साइकिल, दू-तीन बच्चाकें

संगे बैसौने, ट्रेलरबला साइकिल तँ आम छैक। डैम-स्क्वायरलग हमरो लोकनिक मोटर-बोट तैयार छल। नौका विहार भेलै। रास्तामे एम्सटरडैमक रेड-लाइट डिस्ट्रिक्ट पर सेहो नजरि पड़ल। मुदा, सबसँ बेसी आकृष्ट केलक फूलसँ सजाओल पुल सब। फूलक एहन सजावट, जेना, विवाह-दान लेल केओ अपन घर-अंगना सजौने होअय। एहि ठाम बाजारमे शहरक अनेक मोनुमेंटक मेंमेंटोमे काठक जूता सबठाम भेटत। चीज सेहो कीनि सकैत छी। हमरा तँ किनबाक-बेसाहबक लूरि आ रुचि नहि अछि। तें, कनेक-मनेक विंडो-शौपिंग भेलै आ हमरालोकनि सब गोटे भोजन करबा लेल लगहिक रेस्टोरेंटक बाट धयल। बेरुक पहर दोसर ठामक भ्रमण। तावत बसमे झपकी लिअय वा हमरा-जकाँ चारू कात नजरि घुमाउ आ देश-कोस देखू।

मुदा, जँ, कॉफी-शॉप, विश्वप्रसिद्ध पेंटर रेम्ब्रांट, आ एन फ्रैंक केर चर्चाक बिना एम्सटरडमक गप्प समाप्त भ' जाय तँ ओहने हयत जेना अमृतसरक गप्प करी आ पराठेवाली गली, जलियांवाला बाग, आ हफीमक गप्प नहि हो। तथापि, अंतर छै। एम्सटरडमक कॉफी-शॉपमे गांजा उपलब्ध भ' जायत आ दू-चारि दम्म झीकि सकै छी, माने गांजाक सेवन कानूनी छैक। तें, टूर ऑपरेटर पहिनहि हमरालोकनिकें सचेत क' देलनि, 'जँ कॉफी पीबाक हो, तँ, जहाँ-तहाँ कॉफी शॉपक बोर्ड देखि कय दोकानमे पैसि नहि जायब। हमरा पूछि लेब, हम उपयुक्त स्थान देखा देब।' आ पुनः टूर गाइड हमरा सबकें एम्सटरडैमक कॉफी शॉपक इतिहास फरिछाकय सुनौलनि। औ बाबू, एक तँ विदेश, अपरिचित भाषा, आ ताहि पर टकुआ तान केने टूर ऑपरेटर। टस-सँ-मस हेबाक तँ स्कोपे नहि आ कॉफी-शॉप। आ भांगे गांजा पीबाक हयत तँ अपना देशमे ताहि पर कोन प्रतिबन्ध छै। जहाँ-तहाँ तँ भांगक जंगल होइछ मिथिलांचलमे। मोन अछि, बहुत दिन पूर्व एकटा पंजाबी पड़ोसीसँ गप्प होइत छल। कहलियनि, हमरालोकनिक इलाकामे तँ जहाँ-तहाँ खाली-खेतमे भांग उपजै छै। कहलनि, से बेस। मुदा, पंजाबमे खाली जगह कतय भेटत। हम कहलिअनि, कोनो बात नहि मिथिलांचल आउ। कोन एहन गाम छै, जतय भांग नहि भेटत!

आब कनेक गप्प एन-फ्रैंक केर। नाजी जर्मनीसँ संत्रस्त, एम्सटरडैमक निवासी, नौ-दस वर्षक एहि यहूदी कन्याक अज्ञात-वासक मानसिक यातनापूर्ण दिनक डायरी विश्व भरिमे प्रसिद्ध अछि। जाहि भवनमे एन-फ्रैंकक परिवार विश्व-युद्धक समय नुकायल छल ओहि भवनमे स्थापित संग्रहालय आब विश्वभरिक पर्यटकक हेतु एकटा दर्शनीय स्थल अछि। हमरालोकनिक एहि स्थानक भ्रमण नहि क' सकलहुँ। मुदा, दोसरक पीड़ामे जँ रुचि हो, तँ, एन फ्रैंकक डायरी अवश्य पढ़ू।

वोलेंदाम आ अपन गाम

वोलेंडैम उत्तरी हॉलैंडक एकटा छोट शहर थिक। टूर ऑपरेटर हमरालोकनिकें हॉलैंडक 'डाइक' वा बांध देखेबा लेल एतय अनने छथि। समुद्रसँ जुड़ल पैघ जलाशयक कछेरमे, बाँधपर आ बांधक पछुऐतमे बसल ई नगर वाटर-फ्रंट पर घुमबा-फिरबाक, किनबा-बेसाहबाक, भोजन-जलपानक हेतु एकटा नीक जगह बूझि पड़ल। समुद्रक पानि नीलाभ छै, नदीक पानि-जकाँ घोर-मट्ठा नहि। मुदा, सोचू, जँ, कमला नदीक बान्हेपर आबादी होइ, दोकान-दौरी होइ आ बान्हक पछुऐतमे शहर होइक, कमला नदीक बान्हक पेट बाढ़िसँ भरल होइक, तँ, वोलेंडैम आ अपन गाम एके रंग लागत ने! नहि। सत्यतः, दुनूमे तुलना कोनो नहि छैक। मुदा, खाकामे कोनो तेहन अन्तरो नहि छैक। हँ, वोलेंडैम समुद्री नदीक कछेर पर अछि आ हमरालोकनि हिमालयसँ बहराइत नदीक कछेरपर छी। हॉलैंड देश समुद्र तलसँ नीचा छैक से ठीक, मुदा, प्रतिवर्ष प्रचुर पांकक कारण हमरालोकनिक गाम सेहो आब कमलाक पेटसँ कतेको हाथ नीचा तँ अछिए। तें, तँ, जखन कमलाक बान्ह टुटैत छै, तँ, सम्पूर्ण इलाकामे प्रलय भ' जाइछ। हँ, कमलाक कातमे ने नाह भेटत, ने जहाज। ने माछ मारबाक सुविधा, ने पिकनिक केर सहूलियत। मुदा, हमरा मनमे सदिखन एके गप्प घुरियाइत रहैए, जँ, नीक सड़क, होटल-रेस्टोरेंट, रहबाक व्यवस्था आ यातायातक सुविधा रहितैक, तँ, मिथिलांचल-बिहार-भारतमे कि पर्यटन स्थलक कमी छै। आकि एतय मिथिलामे पर्यटकक कमी रहितैक। आ सेहो खेबा-पीबाक, रहबाक-जयबाक मूल्य योरप अमेरिकाक तुलनामे मडुआक दोबर। आधारभूत संरचनाक कमिए एहन कारण थिक, जे हमरालोकनि अपन पछुआड़क पर्यटन स्थलधरि नहि जा पबै छी। दरभंगासँ कुशेश्वर स्थान वा जनकपुर, उच्चैठ जायब असंभव छल। आब स्थिति सुधरि रहल अछि। तें, कोसी महासेतुक प्रसादें हमरालोकनि एके दिनमे मंडन मिश्रक डीह, उग्रताराक मंदिर आ स्वामी लक्ष्मीनाथ गोसाईंक कुटी धरि जाकय गाम घूरि अयलहुँ। दस वर्ष पहिने ई

कल्पनातीत छलै। मुदा, स्थितिक सुधार मात्र सड़केटा धरि सीमित अछि। एखन तँ आन सुविधाक सुधारमे युग बीति जेतैक।

जे किछु। वोलेंदाममे एक कात नागरिक लोकनिक आवासक पतियानी आ दोसर दिस विशाल जलाशयक बीच बान्हपर चलैत हमरालोकनि बहुत दूर धरि गेलहुँ। लोक सबहक घर सुन्दर, सजाओल-सीटल। फूलक गमला आ घासक छोट-पैघ टिक्कड़। सोचैत छी, सौंदर्य-बोध तँ हमरो लोकनिकें अछि। वा नहियो अछि। मुदा, नगर-शहर आ देशकें सुन्दर बनेबामे नागरिकक सौन्दर्य-बोधक संग सामाजिक समृद्धि, आधारभूत संरचना आ सचढ़ लोकप्रशासनक सहयोग अति आवश्यक छैक। नहि तँ, वर्षहुसँ पटनामे भूमिगत नालाक निर्माण आ सफाइपर करोड़ो टाका खर्च भ' रहलैए। मुदा, एके वर्षामे कोना सम्पूर्ण शहर जलमग्न भ' जाइछ!

हमरालोकनि वोलेंदामक बंदरगाहबला इलाका दिस गेल रही। एहि ठाम ओएह सब वस्तु भेटल, जे टूरिस्ट-स्पॉट सब पर होइत छै। दोकान सबमे लोकल परिदृश्य-सीन-सीनरीक पोस्टर, पोस्टकार्ड आ पेंटिंग। होटल, रेस्टोरेंट। किछु मेमेंटो। आ, हँ, सर्वव्यापी चाइनीज खेलौना! मुदा, वोलेंदाम शहर दिस जयबाकाल दू टा दृश्य आकृष्ट केने छल : एक, दूर दूर तक पसरल हरियर कचोर भूमि, जाहिमे कमे ठाम फसिल लागल छलै, मुदा, सबतरि ठाम-ठाम चरैत आ पाजु करैत गाय-गोरू अवश्ये रहैक। दू, सड़कक काते-कात संकीर्ण नहरि सबमे दुनू दिससँ अबैत-जाइत मोटर बोट। यातायात आ माल-वाहन लेल छोट-छोट केनालक एहन प्रयोग अद्‌भुत लागल। तखन इएह तँ थिक हॉलैंडक विशेषता!

पेरिस

बेल्जियम केर बेफरें शहरसँ भोरे पेरिस लेल बससँ विदा होइत गेलहुँ। पेरिस धरि करीब अढ़ाइ घंटाक यात्रा। मुदा, हमरालोकनि सोझे पेरिस नहि गेलहुँ। शहर केर बाहरे शान्तिली (स्थानीय लोककें शांतीई कहैत सुनलियैक) नामक गाओं। एकटा पैघ प्रासाद, फ्रांसिसी भाषामे, सातो (chateau)। चारू तरफ गढ़-खाइ, आ घोड़सार। विशाल बगीचा। मुदा, फूल कत्तहु नहि। पेरिस शहर केर बाहर ई भवन सुपरिचित टूरिस्ट स्पॉट थिक। फ्रांसिसी टूर ऑपरेटर कहलनि, एहि भवनक बगीचाक अनुकरणमे फ्रांस केर रानी, मेरी अन्तोनेत्ते, वर्साय प्रासादक बगीचा बनबओने छलीह। मुदा, हमरा किछु आने पक्ष आकृष्ट केलक। भवन केर बाहर एक जोड़ा स्वस्थ आ सुदर्शन कारी शिकारी कुकुर। दोसर दिस बारहसिंगा। टूरिस्ट गाइड कहलनि, शिकार एतुका सामंतलोकनिक मुख्य पेशा छलनि। एहि सबठाम शिकारी कुकुर सामंत लोकनिक सहचर छलनि। तें, कुकुरक मूर्ति नीक शिकारी कुत्ता सबहक स्मारक थिकैक।

सातो शांतीई भेल एकटा प्रासाद-विशाल भवन। स्पष्ट छैक राजा वा सामन्त लोकनि जतय कतहु, जाहि भव्य भवन सबमे रहैत छलाह तकर आकार एक व्यक्तिक आवश्यकतासँ कतेक अधिक पैघ होइत छलैक। किन्तु, प्रत्येक व्यक्तिक आवश्यकता ओकर आवश्यकता पर आ दायित्व पर निर्भर करैछ। भारतक राष्ट्रपति भवनमे सेहो लगभग 360 टा कमरा छैक। अस्तु, सातो शांतीई सेहो एकटा सामन्तक भव्य आवासक प्रतीक थिक जाहिमे अनेक आवास-गृह, विशाल पुस्तकालय, चित्र-वीथी (फोटो गैलरी), शस्त्रागारक संग मूर्तिकला, घरेलू उपस्कर, कपड़ा-लत्ता, आ भोग-विलासक अनेक उपकरणक भव्य संग्रह छैक। वस्तुक विविधता आ संकलित वस्तु-जातक एतेक विस्तृत आयामकें देखि सकैत छी, थोड़ समयमे सूक्ष्म दृष्टिएँ देखब आ बूझब असम्भव छैक।

सातो शांतीईक भ्रमण केर पछाति, ओहि परिसरमे टूर ऑपरेटर-थॉमस कुक-भोजनक व्यवस्था केने छलाह। कोनो बेजाय नहि, सुननहि छी, हृदय केर बाट

पेट बाटें होइछ। लगैत अछि, थॉमस-कुक एहि गप्पकें गेठरी बान्हि रखने छथि। सबठाम अपन रुचिक, पवित्र आ स्वादिष्ट भोजन सबकें नीक लगैत छैक। फैशनमे भले कहियौक हम नव-नव भोजन चीखए चाहैत छी। मुदा, संतुष्टि चिन्हले-जानल भोजनमे भेटैत छैक। तें, गरम-गरम पूड़ी, पुलाव आ आन सब किछुक अलावा अलफोंसो आमक रस एतय खूब हिट भेलैक। अंततः, भरल पेट आ संतुष्ट मन। बसमे बैसलहुँ आ बस पेरिस दिस विदा भेल।

फ्रांस केर पर्यटन कनेक संक्षिप्त बुझू। एक दिन दुपहरियामे पहुँचल रही आ दोसर दिन भोरहि यूनाइटेड किंगडम (UK) केर लेल प्रस्थान। मोनमे प्रश्न उठैछ एतबे कालमे की सब देखब! मुदा, आब जखन आपस आबि गेलहुँ, तँ, लगैत अछि ओतबे कालमे जे किछु देखलहुँ, से अवश्य अविस्मरणीय।

सातो शांतीईक भ्रमण केर पछाति हमरालोकनिक सोझे दोसर पड़ाव छल सीन नदीपर नौका विहार। टूर ऑपरेटरकेर बस शांतीई गाओंसँ सोझे एफिल टावर लग सीन नदीक किनेर पर उतारलक। टूर ओपरटर पूरा ग्रुप लेल टिकट किननहि छलाह। बड़का मोटर बोटकेर ओपन डेक। सबकें अपन-अपन मनपसंद स्थान चुनबा लेल पर्याप्त विकल्प। मोटर-बोट केर सीढ़ी-ए पर फोटोग्राफर पतियानीमे ठाढ़, फोटो झिकैत। फोटो चाही, तँ, यूरो दियउ, फोटो ल' लिअय। नहि चाही, जुनि लिअय। डिजिटल फोटोमे फिल्म दूरि हेबाक, टाकाक बरबादीक कोनो भय नहि। सीन नदीक एहि नौका विहारसँ आस-पासक पेरिस देखबाक अवसर भेटल। एहि नदीक किनेर पर पेरिसवासी लोकनि कोना दिन बितबैत छथि तकरो किछु अनुभव भेल। जहिया सँ ज्ञान-प्राण भेल, हमरालोकनि पेरिसक नाम फैशनक पर्यायकेर रूपमे सुनैत एलियैक। देखी, पेरिसमे फैशन केहन छैक! मुदा, हमरा लगैत अछि फैशन एकटा दृष्टि थिकैक, जीवन पद्धति थिकैक जकरा केवल पहिनावासँ नहि जोड़बाक चाही। एहि तर्ककें जँ कनेक आगू धरि ल' जाइ तँ नेहरुक आलावा महात्मा गाँधी सेहो एकटा फैशनक प्रवर्तक छलाह। मात्र धोती, जनउ आ कान्हपर अंगपोछाक पहिरनामे गूढ़ शास्त्रक चर्चा करैत हमरालोकनि गामक पण्डितलोकनि सेहो एकटा फैशनकेर प्रतिनिधि छलाह, भले ओहि फैशनक भौगोलिक आ सामयिक सीमा थोड़े छल होइक। अस्तु, हमरालोकनि नाहपर चढ़बाक आ पेरिस देखबाक दुनू आनन्द लेल आ पुनः एफिल टावर लग आबि एहि विश्वप्रसिद्ध टावर केर तेसर मंजिल धरि चढ़बाक पतियानीमे लागि गेलहुँ।

एफिल टावर : देस-कोस घुमनिहार आ पेपर-समाचार-पत्र पढ़निहारमे अभावृत्तिए एहन केओ हेताह जे एफिल टावरक नाम सुनने नहि होथि। तथापि, नाम सुनबा,

फोटो आ सिनेमामे देखबामे, आ सद्यः एफिल टावरपर चढ़बाक अनुभवमे अन्तर नहि छैक, से कोना कहब। हमरालोकनिक टिकट टावरक तेसर महल धरि चढ़बाक हेतु छल। तेसर महलसँ सम्पूर्ण पेरिस, ट्राकेहेयो स्क्वायर, आ नदीक विहंगम दृश्य अत्यन्त मनोरम लागल। किन्तु, एफिल टावरक तेमहलापर सेहो पाकेटमारि होइत छैक तकर हिदायतकेर बोर्ड पढ़िकय हँसी लागि गेल।

विश्व-प्रसिद्ध लौव्रे-म्यूजियम (louvre museum) : लौव्रे-म्यूजियमकें देखबा लेल एक दिन पर्याप्त नहि, प्रायः एक मासहु नहि। म्यूजियम केर सामग्री एतेक विविध छैक जे ओकरा सबहक अवलोकन आ अध्ययन ने एक व्यक्तिक रुचिमे निहित भ' सकैत छैक, आ ने एक व्यक्ति एकटा टा जीवनमे विविधताक एतेक विस्तृत आयामकें अपन रुचिमे समेटि-ए सकैत अछि। मिस्रकेर प्रागैतिहासिक छोट-छोट मूर्तिसँ ल' कय, विशालतम स्थापत्य धरिक विभिन्नताक बीच लेओनार्दो दा विन्चीक मोनालिसाक पेंटिंग एतुका सबसँ पैघ आकर्षण थिक। एहि संग्रहालयमे लोकक मेलामे एक दोसराक संग छूटब, कोनो वीथी वा हालमे भुतिया जायब खूब सम्भव छैक। किन्तु, एहन विश्वप्रसिद्ध संग्रहालयमे फोटो झिकबाक कोनो मनाही नहि, से सबकें नीक लगैत छैक। यद्यपि, एखनुक युगमे विश्वक कोनो एहन संग्रहालय नहि जकर भीतर केर टूर इन्टरनेट पर (virtual tour) उपलब्ध नहि। तथापि, सिनेमामे देखब, इन्टरनेट पर टूर आ प्रत्यक्ष देखबामे बड अंतर छैक।

वर्साय

लौव्रे-म्यूजियम देखलाक पछाति वर्साय प्रासाद देखय गेल रही। वर्साय प्रासादकेर वर्णन करब सरल नहि। प्रायः आब तकर आवश्यकता सेहो नहि। इन्टरनेटकेर वेब-पेज पर सूचना उपलब्ध छैक। किन्तु, एखनो सब तँ ने इन्टरनेट पर हवाखोरी करै-ए आ ने सब इन्टरनेटसँ परिचिते छथि। तें, बहुत संक्षेपमे एतबा कहि सकैत छी, पेरिसक वर्साय प्रासाद आकार, ऐश्वर्य, आ ऐतिहासिकतामे विश्वप्रसिद्ध अछि। ई वएह प्रासाद थिक जकर ऐश्वर्य आ तत्कालीन राजाक निरंकुश जीवन शैली फ्रांसिसी जनताक असंतोष आ फ्रांसिसी क्रान्तिक कारण बनल छल आ विद्रोहक सुनगैत चिनगी अंततः एहन अगड़ाहीक रूप लेलक जे राजा लुइस 16म आ रानी मेरी अन्तोनेत्तेक दिन-देखार फांसीक पछातिए मिझायल। ओ भेल एकटा ऐतिहासिक प्रकरण। किन्तु, वर्साय पैलेस ओहुना अनेक ऐतिहासिक शीर्ष-सम्मलेन आ कालजयी सन्धि सबहक प्रत्यक्षदर्शी थिक। प्रथम विश्वयुद्धक पछातिक प्रसिद्ध वर्साय-सन्धि (treaty of Verseilles), जाहिमे द्वितीय विश्व-युद्धक बीजारोपण भेल छल, से

एही वर्साय-पैलेस केर शीश-महलमे भेल छल। आबहु, एहि शीश-महलमे कतेक राजनेताक सार्वजनिक सम्मान होइछ आ कतेक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मलेनक आयोजन होइछ।

एहि दुनू विश्व-पर्यटन स्थलक दर्शनक बीचक बाट ओही कॉन्कर्ड-स्क्वायरक बीच होइत जाइत छैक, जतय राजा लुइस 16म आ रानी मेरी अन्तोनेत्तेकें दिन-देखार सार्वजानिक रूपें फांसीक देल गेल रहनि। सामनेक सांज एलिजी (Champs Elysees), आ विजय द्वार (The Arc de Triomphe de l Étoile) सेहो देखल। एहि द्वारकें दिल्लीक इण्डिया-गेट जकाँ बूझि सकैत छी। पेरिस केर चार्ल्स द' गॉल चौकपरक एहि द्वारक निर्माण फ्रांसिसी क्रान्तिक शहीद आ नेपोलियनक नेतृत्वमे लड़ाइ सबमे वीर-गति प्राप्त सैनिक लोकनिक स्मृतिमे भेल अछि। द्वारिक भीतर छाहरिमे अज्ञातनामा वीर-सैनिक समाधि छैक जतय श्रद्धाक ज्योति अनवरत प्रज्वलित रहैछ।

एक दिनुक पेरिस यात्रा लेल एतेक काफी। आन ठाम रहितहुँ तँ कतेक गोटे थाकि कय थस खा लेने रहितथि। किन्तु, योरपक अनुकूल जलवायु आ टूर ऑपरेटर केर व्यवस्था कतहु आयासक अनुभव होमय नहि देलक। एकटा गप्प आओर, जाहिमे मोन लागि गेल ताहिसँ ने जल्दी मोन अघाइत छैक आ ने देह थकैत छैक। बेमोनक काजमे थकन, निन्न आ मोन अकछायब एकदम स्वाभाविक। सम्पूर्ण योरपक यात्रामे आब इंगलैंडहि टा बांकी अछि। मुदा, पेरिस केर होटल-नोवोटेल-नीक नहि लागल। पहिल बेर फल-मूलक क्वालिटी कनेक उन्नैस बुझबामे आयल। बाथ-रूम छोट। टब असुविधाजनक। ओढ़ना-बिछाओन ठीक। करू आराम। किन्तु, हमरा सब-सन जे यात्री लोकनि लीडो-शो देखबाक हेतु नाम लिखौने रहथि, तनिका हेतु रतुका भोजन केर पछाति आओरो प्रोग्राम रहैक-लीडो-शोकेर। टिकट प्रति व्यक्ति 100 यूरो, माने करीब दस हजार टाका। बड़ बढ़िया। जीवनमे पहिल बेर पेरिसमे छी। लीडो शो सेहो नहि देखब, तँ, अयबे किएक केलहुँ। अस्तु, भोजन-भातक पछाति कनेक विश्राम भेलैक। निर्धारित समयपर सब गोटे शो जयबा लेल तैयार भेलहुँ। टूर गाइड दिनहिसँ कतेक बेर कहने छलाह, आइ रातिमे विशेष प्रोग्राम छैक। किन्तु, पुछलापर बाजथि नहि। अंततः, भेद लीडो शो जेबाकाल बाटमे खुजल। रातिक करीब दस बजे एफिल टावरक लाइट एकाएक जराओल जाइछ। सम्पूर्ण टावर स्वर्णिम आभामे अपूर्व लगैछ। ई अनुभव तखनहि सम्भव, जँ, रोशनी बरलासँ पूर्व टावर लग पहुँचि गेल रही। हमरालोकनि टूर गाइड सचढ़ छलाह। सब किछु क्लॉक-वर्क-घड़ीक काँटा-जकाँ। हमरालोकनि समयपर एफिल

टावर लग पहुँचलहुँ। एफिल टावरक रातुक आभा मोनकें मुग्ध क' देलक। किन्तु, एहि प्रकरणमे एकटा आओर अनुभव भेल। जूनियर टूर गाइड केर इच्छा रहनि जे बस चालक हमरालोकनिकें टावरक ठीक सामने उतारय, जाहिसँ दिन भरिक थाकल यात्रीलोकनिकें बेसी चलय नहि पड़नि, आ थॉमस कुककें यश-यश भ' जाइक। किन्तु, बस चालक किन्हुँ नहि मानलकनि। योरपमे सबठाम बस ठाढ़ हेबाक नियत स्थान छैक। नियत स्थान छोड़ि बस-कारकें आन ठाम ठाढ़ करब दंडनीय छैक। ततबे नहि, कानूनक उल्लंघनसँ ड्राइवरकेर लाइसेंस जब्त भ' सकैत छनि, आ जीविका धरि पर आघात पहुँचि सकैछ। अस्तु, ड्राइवरकें जे करब उचित छलनि, केलनि। कारण योरप-अमेरिकामे ने अहाँ अपन धौंस जमा सकैत छियैक, आ ने, ओतय लोकक आत्मसम्मानकें जीविकासँ जोड़बाक परिपाटी छैक। जकर जे काज छैक, ओकर मालिक ओएह भेल। ओहुना, हमरालोकनिकें कोनो असुविधा नहि भेल। जगमगाइत स्वर्णिम आभामे नहाइत एफिल टावरकें भरि मोन देखलहुँ। फोटोग्राफी भेलैक, आ पुनः सब गोटे बसमे जमा भेलहुँ आ आगू चललहुँ लीडो शो।

लीडो-शो : पेरिस केर लीडो शो विश्व-प्रसिद्ध लाइव शो थिक जाहिमे स्टैंड-अप-कॉमेडीसँ ल' कय, कैबरे-शो धरि, आ जिमनास्टिक्ससँ ल' कय सांस्कृतिक झांकी सब किछु भेटत। हमरालोकनि तँ एहि शो लेल बहुत उत्साहित रही। लीडो थिएटर सेहो केन्द्रीय पेरिसमे, सांज-एलिजी-ए पर छैक। भीतरकेर व्यवस्था एक्सक्लुसिव क्लब-जकाँ। मद्धिम रोशनीमे छोट-छोट समूहमे बैसबाक व्यवस्था। स्वागतमे एक ग्लास शैम्पैन। दू गिलास रहितैक तँ आओर नीक! मुदा, हमरा तकर मलाल नहि, हमर पत्नी, रूपमकें शैम्पेनकेर स्वाद पसिन्न नहि छनि। तें, ओ सेलिब्रेशनमे एक चुस्की ल' मधुपर्क केलनि आ हम दुनू ग्लास आस्वादपूर्वक पीबि लेल। किछुए कालमे शो आरम्भ भेलैक सांस्कृतिक-शोसँ। किछु नाच गाना, ग्रुप शो। बीचमे भव्य कैबरे। आम कैबरे जाहि वीभत्सताक दिस संकेत करैछ तकर छूति नहि। बीच-बीचमे मंचकेर अद्‌भुत परिवर्तन। कखनो नृत्य आ तुरत आइस स्केटिंग। दर्शक केर संग कॉमेडी। कतहु गणपतिक आगमन। अंतमे हाथी आ महावत। हमरा विचारें एखनुक युगमे ने लीडो शो कोनो अजूबा, आ ने कैबरे किछु आश्चर्यजनक। एहि प्रकारक शो आब विश्वकेर अनेक भागमे होइत छैक, जे लोक घर बैसल देखैत अछि। कैबरेकें छोड़ि दी, तँ, बैंकाक-थाईलैंड केर सियाम-निरामित शो सेहो एही कोटिक थिक, मुदा, एहन नहि। किन्तु, पेरिस एलहुँ आ लीडो-शो

नहि देखल तँ कदाचित कचोट ने रहि जाय, तें, देखि अवश्य ली। तथापि, प्रत्यक्ष लीडो शो देखबामे आनंद नहि आयल, से कोना कहब। विद्यार्थी जीवनमे दरभंगामे 1970 दशकमे उमा-सोसाइटी-नेशनल-लाइट हाउस-पूनम थियेटरमे सवा तीन रुपैयामे बालकोनीमे बैसि सिनेमा देखैत रही। सिंघाड़ा-पकौड़ा खाइ। बादमे पटना-दिल्ली-बंगलोर सबठामक कार्यक्रम देखल। किन्तु, लीडो शो-सन शो तँ देखब एखन धरि बाँकीए छल। अस्तु, पेरिसक लीडो शो एकटा नव अनुभव भेल।

लीडो शो करीब मध्यरात्रिक लगीच समाप्त भेलैक। मुदा, मध्यरात्रिमे तँ पेरिस जगैत अछि। तें, सूर्य डूबले पर, मध्यरात्रि बितलेपर, तँ, पेरिसमे दिन होइत छैक! तथापि, पेरिस-बाइ-नाईट फेर कहियो! आइ हमरालोकनिक गाड़ी लगहिमे प्रतीक्षारत छल, तें, बाटे-बाट जे देखबामे आयल, देखल। आ फेर होटल आबि विश्राम। भोरे यू के* क हेतु ट्रेन पकड़बाक अछि।

* UK (यूके) युनाइटेड किंगडम, ब्रिटेन

लंदन

योरपमे अयला करीब दू हफ्ता पुरबा लेल अछि। एखन धरिक सब यात्रा बसहिसँ भेलैये। आब यात्रा ट्रेनसँ हेतैक, लंदन लेल। UK एकटा द्वीप थिक। आन कोनो देशसँ संपर्क नहि से नहि सकैत छियैक। किन्तु, से UK क हेतु छातीक कांट, आयरलैंड गणराज्यक कारण। अन्यथा UK एसगरे अछि, एसगरे रहत। अतः, स्पष्ट छैक आयरलैंड गणराज्यक अलावा एहि देशकें आन कोनो देशसँ भूमिक संपर्क नहि। सदातनिसँ चल अबैत ई स्थिति 1994 मे बदलि गेलैक जखन फ्रांस आ UK भूमिगत रेल-मार्ग, यूरो-टनलसँ जुड़ल। ई भूमिगत रेलमार्ग फ्रांस आ UK केर बीचक समुद्र-इंगलिश चैनल-केर भूमिक सतहसँ बहुत नीचा होइत डबल रेलवे लाइनसँ जुड़ल अछि। यद्यपि इंगलैंड-फ्रांसक बीचक समुद्रक (इंगलिश चैनल) पाट करीब 51 कि.मी. मात्र छैक। किन्तु, हमरालोकनिकें पेरिससँ लंदन पहुँचबामे करीब साढ़े तीन घंटा लागि गेल। बहुत रास समय इमीग्रेशन आ समयसँ पहिने पहुँचबाक बाध्यता दुआरे सेहो। दोसर पेरिस केर घड़ीक समय लंदनसँ एक घंटा पूबक हिसाबें चलैत छैक। पेरिसकेर स्टेशन गार दे नोर्डसँ ट्रेनमे चढ़ब अन्तर्राष्ट्रीय यात्रा भेल, तें, एतय यात्री लोकनिकें प्रब्रजन (immigration) केर औपचारिकता। UK क अतिरिक्त योरपकेर आन सब देशक यात्रा लेल एकहि टा वीसा Schengen Visa चाही। केवल UK क यात्राले सबकें फूट ब्रिटिश वीसा चाही। कारण, यूरोपियन यूनियनमे होइतो (वर्ष 2014 मे) ब्रिटेन अपन राष्ट्रीय सीमाकें अनका सबसँ फूट घेड़ने-बेढ़ने अछि। अस्तु, स्टेशन पर वीसाक जाँच भेल। कनेक पूछ-ताछ आ पासपोर्ट पर ब्रिटिश इमीग्रेशनक ठप्पा लागल। इमीग्रेशनक पछाति प्लेटफार्म पर अयलहुँ। ट्रेन बुझू, नीक क्वालिटीक मेट्रो ट्रेन आ चेयर-कार। ट्रेन नीक गतिसँ चलैत छैक। आस-पासक परिदृश्यपर नजरि गड़ौने रही। बीच-बीचमे स्टेशन सब एलैक। मोन लागल छल, देखियैक, कोना, कतय ट्रेन समुद्रक तर पहुँचैत छैक। किन्तु, से कतहु नजरि नहि पड़ल। ट्रेन जखन सुरंगमे पैसलैक से बुझलियैक। ट्रेन जखन भूमिगत मार्गसँ बहरयलैक,

तँ, हमरालोकनि UK क भूमि पर रही। हमरालोकनिक टिकट सेंट पान्क्रास अन्तर्राष्ट्रीय स्टेशनक छल, ओत्तहि उतरलहुँ। सब गोटे अपन-अपन सामान उतारल आ आगू बढ़लहुँ।

आब किछु नव अनुभव। वैश्वीकरणक एहि युगमे सम्पूर्ण विश्व एकीकृत भेल जा रहल छैक। सबठाम एके रंग, एके ढंग। भारतकेर स्तर पर देखी, तँ, छोला-भटूरा आ इडली-दोसा कश्मीरसँ कन्याकुमारी तक भेटत। आ विश्वस्तर पर देखी सब ठाम वएह मैक-बर्गर आ के एफ सि फ्राइड चिकन, पेप्सी, आ कोका-कोला। पहिरनामे जीन्स आ जूतामे वएह रीबोक, प्यूमा आ अडिडास। शहर सबमे प्यासे मरि जायब कतहु सड़कपर पीबाक पानि नहि। न्यूयॉर्क एयरपोर्ट पर पानि पीबाक स्थान देखलिएक तँ पानि बहरयबाक टोंटी नदारद। पानि कोना पीयब। आब दिल्लीअहु एयरपोर्ट पर वएह तमाशा। अस्तु, देखिएक UK मे की नव भेटैत अछि। एतय रेलवे स्टेशनहि पर एकटा नव चीज देखलियैक। समानक ट्राली लेब तँ एक पाउंडक सिक्का ओहि सिकड़ीक छेदमे दियउ जाहिसँ ट्राली सब एक-दोसरासँ बान्हल छैक। मुदा, अजगुत गप्प ई लागल जे अपन सामान उतारलापर, जँ, ट्रालीकें नियत स्थान पर राखि आउ आ ट्रालीकें ओतय राखल आओर ट्राली सबहक जंजीरमे जोड़ि दियौक, तँ, ट्रालीक जाहि छेदमे जंजीर फिट होइत छैक तकर दोसर भागसँ एक पाउंडक सिक्का वापस भेटि जायत। ई भेलैक ने गप्प। ई हमरा अद्‌भुत लागल। आखिर केओ तँ एहिमे बुद्धि लगौने हेतैक। हँ, ब्रिटिश सरकार जँ ब्रिटिश एक पाउंडक सिक्काक आकार एकाएक बदलि दैक तँ ई पद्धति भरिए रातिमे बेकार भ' जेतैक। मुदा, ब्रिटेनमे चमड़ाक सिक्का चलयबाक ई पद्धति एखनि बांकी छैक। आखिर, ब्रिटेन अनेरे विश्वविजेता राष्ट्र बनल छल!

रेलवे स्टेशनसँ हमरालोकनि बससँ शहर दिस विदा भेलहुँ। दुपहरिया भ' गेल रहैक, पहिने भोजन तँ होइक। भोजन लेल जतय गेलहुँ, देखलासँ लागल, भीड़-भाड़सँ दूर, कोनो साफ सुथरा शहरक छोट इलाकामे छी। छोट-सन रेस्टोरेंट। भारतीय भोजन आ हमरे लोकनिक समूह। रेस्टोरेंटकेर देवालपर बॉलीवुड सिनेमाक पुरान पोस्टर सब। ताहिपर वैजयन्तीमाला, नर्गिस, दिलीप कुमार प्रभृतिक फिल्म स्टार लोकनिक फोटो। लोक चिन्हल जानल वस्तु, स्थान, आ परिदृश्यसँ अपरिचितो स्थानसँ एकाएक जुड़ावक अनुभव करैत अछि आ घर आंगनसँ दूरीक अनुभव नहि होइत छैक। भलहि अहाँ कतहु कनिए दिन सैर-सपाटा लेल किएक नहि जाइ, चिन्हल-जानल वस्तु, व्यक्ति आ भोजन-साजन केर खोज रहिते छैक। हमरा लेल ई रेस्टोरेंट आसानीसँ बंगलोरक कोनो शान्त इलाकाक छोट भोजनालय भ' सकैत

छल। भोजनक पछाति लोकल टूर केर प्रोग्राम छलैक। बेसी किछु तँ बाटे-बाट देखैत जाउ। जेना, लॉर्ड्स केर क्रिकेट केर मैदान आ इलाका। मैडम तुसाद आ विम्बेल्डन टेनिस क्लब। मैडम तुसाद तँ विश्वप्रसिद्ध व्यक्तित्व लोकनिक मोमक बनल मूर्ति सब लेल प्रसिद्ध अछि। किन्तु, आब अनेक ठाम किछु-किछु आओर चीज सब जोड़ल गेलैए। एतय म्यूजियमक भीतरे ब्रिटेनकेर इतिहासक एकटा झांकी देखाओल गेल। गाड़ीपर बैसू आ प्रागैतिहासिकसँ ल' कय औद्योगिक क्रांति, आ कोलोनियल इंगलैंड, सबकेर संक्षिप्त नजारा लियअ। एकर अलावा ओतय एकटा 4-D शो सेहो रहैक। की थिक ई 4-D शो? एहिमे सिनेमा-शो 3-D चश्मासँ देखू आ जीव-जन्तु-गोला-बारूदकें सोझे नाक दिस अबैत अनुभव करू आ रोमांचित होउ। मुदा, ई भेल 3-D। जँ, बरखा अबैक दृश्यमे पानिक फुहार देह पर पड़य, आ युद्धक दृश्यक संग योद्धाक मुक्का, भले हल्लुकेसँ, मुदा पीठ पर बजरय तँ ओ भेल 4-D। भेलै। इहो अनुभव कयल। तकर पछाति हमरालोकनि विम्बेल्डन स्टेडियम देखल आ विजेता लोकनि जाहि मंचपर बैसि प्रेसकें संबोधित करैत छथि ताहू पर बैसि फोटो खिचाओल। ई भेलैक व्यापार। ककरो ई मोनमे एलैये जे दरभंगा महाराजाक प्रासादक रखरखाव लेल टिकट बेची आ हुनक ड्राविंग रूममे बैसिकय फोटो झिकयबा लेल फूट टिकट बेची। ई बुद्धि गोरा लोकनिकें छैक। ओसब महलकेर अलावा महलकेर भीतरक भूत-प्रेतकें सेहो टूरिस्ट सर्किटमे सम्मिलित केने अछि। फेकू पैसा, आ देखू तमाशा! हमरालोकनिकें एहिमे बहुत दिन लागत आ ताधरि हमरालोकनिक विरासत ध्वस्त भ' जायत। दरभंगा राजक परिसरक अवनति तँ आँखिक सोझाँ अछिए। तथापि, पहिने हमरालोकनि अपन विरासतकें तँ चीन्ही, ओकरा प्रति गौरव बोध होअय, ओकर संरक्षण करी, पर्यटन केर सुविधा बढ़ाबी, तखन ने विदेशी सब गाम-घरमे आओत, एतुका अजगुत वस्तु सबकें देखत आ गाम-घरक रोजगार बढ़तैक, आमदनी बढ़तैक। मुदा, एहि सबमे एखन बहुत बाधा छैक, जाहिमे पहिल थिक आधारभूत संरचनाक अभाव, शिक्षा आ व्यावसायिक बुद्धि, आ ताहूसँ ऊपर अनुशासन आ ईमानदारीक अभाव। मुदा, पर्यटनसँ जहिना आर्थिक लाभ केर सम्भावना छैक, तहिना गाम-घरपर पर्यटनसँ हमरालोकनिसँ विपरीत, आयातित सामजिक-सांस्कृतिक दुष्प्रभावक खतरा सेहो छैक। मुदा, हमरालोकनि अपना शहर-नगरक विशिष्टतासँ कोना लाभ उठाबी से समाजकें सोचि उचित कदम उठाबहि पड़तैक। आब आगूक गप्प।

भोजनकेर पछाति लंदनकेर भ्रमण शुरू भेलैक। स्वतंत्रताक पूर्वक, वा हमरालोकनि-सन स्वतंत्रताक तुरत पछातिक भारतीय पीढ़ी पढबा लेल भले इंगलैंड

नहि गेल हो, मुदा, इंगलैंडक दू चारि टा शहर, इंगलैंडक कवि-साहित्यकार, राजनेताक नाम, दर्शनीय स्थलक नामसँ परिचित अवश्य हयत। ताहिमे हमरालोकनि मेडिकल कॉलेजमे पढ़ने छी। सत्तरिक दशकमे मेडिकल शिक्षाक अधिकतर पुस्तक इंगलैंडहिसँ छपि कय अबैत रहैक। किछु अमेरिकासँ सेहो। तहिया सस्ता थोक उत्पादकक रूपमे चीन केर उदय नहि भेल रहैक। तें, हमरालोकनि भले प्रसिद्ध भारतीय अस्पताल सबहक नाम नहि सुनने रही, लंदनक सेंट थॉमस, मूरफील्ड, रॉयल इनफर्मरी-सन अस्पतालक नाम अवश्य सुनने रही। अस्तु, लंदनकें अपने आँखिए देखबाक मनोरथ पूर भेल। यद्यपि, हमरालोकनिक युगक डाक्टर लेल लंदनमे काज करब वा पढ़ब बड़का गप्प नहि रहैक। किन्तु, हम ने तकर सपना देखने रही, आ ने साकार केलहुँ। अतः आइ आम पर्यटक-जकाँ बससँ लंदनमे भ्रमण होइ। गाइड बाटे-बाट देखबैत गेलाह, लंदन ब्रिज, वेस्टमिन्स्टर, नोट्टिंग हिल, ऑक्सफोर्ड स्ट्रीट, टाटा हाउस, स्क्वायर माइल इत्यादि, इत्यादि। मुदा, पहिल ठहराव भेलैक 'लंदन आइ' लग। 'लंदन आइ' एकटा विशाल फेरिस-व्हील-उड़नखटोला थिक जाहिपर बैसि सम्पूर्ण लंदन केर विहंगम दृश्य देखि सकैत छी। थेम्स नदीक एक कछेर पर वेस्टमिन्स्टर-पार्लियामेंट हाउस छैक आ दोसर दिस लंदन-आइ। अतः, एहि जायंट-व्हील परसँ पार्लियामेंट बिल्डिंग, टावर म्यूजियम, लंदन ब्रिज सब किछु देखबामे अबैत छैक। एहि जायंट व्हील पर गोड़ बीसेक कैप्सूल-नुमा केबिन छैक। व्हीलकेर संगे-संग सब किछु तेना घूमैछ जे यात्री-सवारीकें चढ़बा-उतरबा लेल व्हीलकें रोकय नहि पड़ैत छैक। लंदन-आइकेर भ्रमणकेर पछाति हमरालोकनि होटल आपस गेलहुँ : रैडिसन-ब्लू-एड्वरडियन, हीथ्रो। एहिठाम थॉमस-कुक केर यात्री लेल अलग निर्धारित स्थान पर रतुका भोजनक व्यवस्था छलैक। रातुक भोजन भेलैक आ विश्राम केलहुँ।

लंदनमे दोसर दिन

अजुका भ्रमण लंदन-टावर म्यूजियमसँ आरम्भ भेलैक। टावर म्यूजियम पार्लियामेंट बिल्डिंग केर समीपहि संग्रहालय थिक। एतय ब्रिटिश महारानीकेर कोहिनूर हीरा जड़ल राजमुकुट राखल छनि। टावर म्यूजियमक किलाक अपन इतिहास छैक। एखन ई किला सेनाक अधीन अछि। समय-समयपर एहि किलामे राज-निवास, कारागार, चिड़ियाघर, खजाना, आ अपराधी लोकनिकें सूली-फांसी देबाक स्थान, सब किछु छलैक। किन्तु, एखन टावर-म्यूजियम मात्र पर्यटन-स्थल आ सेनाक छोट-सन कार्यालय थिक। म्यूजियमक बाहर लोहाक तारसँ बनल जंगली जीव-जन्तु, जेना, बाघ-सिंह-भालु, सबहक आकृति भेटत, जे एतुका पहिलुका चिड़िया-खानाक संकेत थिक। सैनिक साज-सामानक नाम पर किछु पुरान तोपखाना। अर्थात आब देखबाक वस्तुमे एतय केवल राष्ट्राध्यक्षक बेशकीमती मुकुट सब छनि जे ओ लोकनि विभिन्न अवसर पर पहिरैत आयल छथि, पहिरैत छथि। कड़ा सुरक्षाक बीच सबटा मुकुट सब स्लो-मूविंग कोन्वेयर बेल्टपर चलैत अछि। प्रदर्शित बहुमूल्य रत्न-जटित राजमुकुट सबकें केओ पर्यटक लोकनि आश्चर्यसँ, केओ ईर्ष्यासँ, तँ, केओ घृणासँ देखैत छथि। कारण, राजा-रानीक जीवन आ ऐश्वर्य आ गाथा जतबे मायावी लगैछ, ओकर पाछू प्रायः ततबे छल-छद्म-ईर्ष्या-हिंसा आ मानवीय अधिकारक हननकेर इतिहास होइछ। तें, दूरक चानकें वा राजा-रानीकें जाहि कोनो मनोभावसँ देखी, सबहक पक्षमे किछु ने किछु तर्क अवश्य भेटत। अस्तु, हमरोलोकनि टावर म्यूजियम देखल आ बाहर अयलहुँ। टावर म्यूजियम देखलाक बाद हमरालोकनि दूरहिसँ ऐतिहासिक लंदन ब्रिज सेहो देखल। काल्हि टूर समाप्त भ' जेतैक। हमरालोकनि सब गोटे अपन-अपन बाट धरब। तें, टावर म्यूजियम आ लंदन ब्रिज केर पृष्ठभूमिमे ग्रुप फोटोग्राफी भेलैक, हँसी मजाक भेलैक, गप्प-सप्प भेलैक। मुदा, एखन धरि हमरालोकनिकें ब्रिटिश समाजक अनुशासनसँ सोझ-सोझ भेंट नहि भेल छल। टावर म्यूजियम भ्रमण केर पछाति पता लागल जे आइ टूर आरम्भ हयबामे करीब पाँच मिनटकेर विलम्ब भ' गेल रहैक। भारतमे तँ 5 मिनट किछु नहि

थिकैक। किन्तु, गोरा समाजमे समयक बड़ महत्व छैक। 5 मिनट वा घंटाभरि, विलम्ब, विलम्ब थिकैक। तें, अस्वीकार्य। अस्तु, हमरालोकनिक स्थानीय गाइड, एकटा वयसाहु महिला, एहि विलम्बसँ असंतुष्ट छलीह। अपन समयकें बचेबा लेल हुनक प्रस्ताव रहनि जे ट्रफलगर स्क्वायरक भ्रमणकें छोड़ि देल जाय। हमरालोकनि लग पन्द्रह दिनक यात्रामे लंदन लेल केवल दू दिन छल। टूर ऑपरेटर पसोपेशमे पड़ि गेलाह। कहय लगलखिन, 'भारतसँ आयल लोककें ट्राफलगर स्क्वायरे नहि देखेबैक, तँ, की देखेबैक!' मुदा, महिला-गाइड टूर-ऑपरेटरक गप्पकें सोझे मानबा लेल तैयार नहि। विलम्ब भ' गेलैक से बेस। किन्तु, ओ समय पर वापस गेले ताकथि। खैर, बहुत मोहेजरोक पछाति गाइड तैयार भेलीह आ हमरालोकनिकें ट्रफलगर स्क्वायरक दर्शन भेल। ओना ट्रफलगर स्क्वायर वा आन कोनो स्क्वायर थिकैक की? एकटा चौक-चौराहा। छोट वा पैघ। तखन स्थानसँ जुड़ल इतिहास, स्थानकें आभामंडित करैछ। तहिना ट्रफलगर स्क्वायरक सेहो इतिहास छैक, यशोगाथा छैक, युद्धमे विजय-पराजयक इतिहास छैक। रुचि हो तँ सुनू, आओर रुचि हो, तँ, पढ़ू-गुनू। चकित होउ। एखन तँ एहि चौराहापर एकटा विजय स्तंभ छैक आ सेनानायक एडमिरल नेल्सनक मूर्ति। मुदा, एहि सबहक बीच दालि-भातमे मूसलचंद, एक कात, नील रंगक बड़का टा मुर्गा (रूस्टर) सेहो पीठासीन अछि। ई मूर्ति कोनो जर्मन मूर्तिकारक कृति थिक। सुनैत छी, रूस्टर, फ्रान्सक राष्ट्रीय पक्षी थिकैक, आ नील रंग सेहो फ्रांसहिक प्रतीक थिक। ताहिपर इंगलैंड आ फ्रान्समे सब दिनसँ छत्तीसकेर आंकड़ा। तें, ने कहल, दालि-भातमे मूसलचंद। किन्तु, समय बदलैत छैक, समाज बदलैत छैक, सामजिक मान्यता, सहिष्णुता-असहिष्णुता, आ सौन्दर्यबोध बदलैत छैक। हमरा नहि लगैत अछि, विंस्टन चर्चिलकेर युगक साम्राज्यवादी ब्रिटेन ट्रफलगर स्क्वायरमे सेनानायक लोकनिक एहि वीथीमे फ्रांसक प्रतीक, एहि रंगीन मुर्गाकें बर्दाश्त करैत। किन्तु, आब ने साम्राज्य छैक आ ने साम्राज्यवादी प्रशासन। नव साम्राज्यवादी विश्व व्यापारी लोकनि प्रायः आब सांकेतिकताकें ओतेक महत्त्व नहि दैत छथिन। अस्तु, हे मुर्गा, योद्धा सबहक आभामंडित चतुस्पाटी-चौकक एक कात तोंहों कुक-डू-कू करैत रहह! एतय अयनिहार पर्यटक सबहक बीच जर्मन कलाकारक यशोगाथा पसरतनि आ नेना-भुटकाकें कौतूहल हेतैक।

लंदनकेर यात्रामे शहरक बीच बसमे जाइत बहुत किछु आकृष्ट कयलक। किन्तु, लंदन ब्रिज, पार्लियामेंट हाउस केर अलावा कोनो छवि चिन्हल नहि छल। सुनल नाम सब बहुत छल। ताहिमे हेरोड्स नामक डिपार्टमेंट स्टोर्स, सेल्फ्रिद्ज

स्टोर्स, रॉयल अल्बर्ट हॉलक ऑडिटोरियम आदि छलैक। एहि सबमे सँ टूर ऑपरेटर हमरा सबकें सेल्फ्रिद्ज-स्टोर्सक भीतर ल' गेलाह। मुदा, स्टोर्सकेर बाहर पहिने हमरालोकनिकें ताजा फलमे लाल-लाल चेरी पर लोभ भ' गेल। अस्तु, एक पाव चेरी कीनल आ दुनू गोटे लंदनमे बाटे-बाट मटरगस्ती करैत चेरी खयलहुँ। दरभंगा-पटना-दिल्ली-कलकत्ताक सड़क पर चना-जोर-गरम आ झाल मुरही सेहो खेने छी। मुदा, दुनूमे सँ ककर स्वाद बेसी नीक, से सोचू। हमरा तँ लगइए, खूब भुखायल मनमे जे सबसँ पहिने आगू पड़ैत छैक, तकर स्वाद सबसँ विशिष्ट होइछ। तें, फुटबॉल खेलाकय वापस अयलापर वा कॉलेजसँ वापस अबिते भेटल चूड़ा-मुरही-चाउर-बादामकेर कड़ू तेल-नोन आ अचारक मशालामे सानल झंसिगर भूजाक सेहो कोनो बराबरी नहि छैक! जे किछु। सेल्फ्रिद्ज स्टोर्समे कीनबाक वस्तुक कमी नहि। मुदा, हमरा सब तँ देखबा लेल गेल रही। क्रिस्टलकेर जे ग्लास पसिन्न पड़ल प्रति गिलास 55 यूरो। बड़ महग लागल। अस्तु, देखल आ समय पूरा भेलैक, तँ, आ बहार आबि गेलहुँ।

लंदन शहरमे जतय-ततय विभिन्न प्रकारक मूर्तिकला, जीव-जन्तुक प्रतिमा चौक-चौराहाक सजावट नीक लागल। सजावट आ मूर्ति कला यूरोपकेर प्रत्येक शहरमे आकृष्ट करत। किन्तु, लंदनकेर चौक-चौराहा सब आकारमे अमेरिकाक वाशिंगटन वा न्यूयॉर्क केर चौक-चौराहाक बनिस्वत छोट-छोट।

अजुका दुपहरियाक भोजनक स्थानपर एकटा अलग उत्साह छल। हमर माम स्वर्गीय काशीनाथ झा(प्रसिद्ध बलदेवजी), मैथिली साहित्यक एकटा आरंभिक साहित्यकारक पौत्र, हमर भातिज बब्बू-कौतुक रामन-आ हुनक परिवारसँ भेंट। लंदन आब, कोनो, दिल्ली दूर नहि। तथापि, अपन सम्बन्धीसँ भेंट नीक लागल। दिन भरिक पर्यटन केर पछाति होटल पहुँचलहुँ। होटल नीक छैक। रातिमे रूपम केर भातिज, सुयश-बनी, अयलाह। बनी पहिला क्लासमे एडमिशन ल' कय बरेलीमे हमरा सबहक संग रहैत छलाह। पुनः, बंगलोरमे पढ़ैत रहथि, तँ, किछु दिन हमरालोकनिक डेरा पर रहथि। आब लंदनमे नौकरी करैत छथि। बहुत दिन भ' गेलैक। किन्तु, कतबो दिन भ' जाइक अपन लोक, अपन धिया-पुतासँ भेंट भेला पर जे आनन्द होइत छैक, से भेल। बनी हमरा सबहक संग भोजन केलनि आ आपस रेडिंग गेलाह। अजुका रातुक भोजन एहि पर्यटनक पक्षक अंतिम प्रीति-भोज रहैक। तें, विशिष्ट भोजन, गप्प-सप्प, स्पीच-भाषण, फोटोग्राफी आ बिजनेस-फीडबैक, टेलीफोन नंबर आ ईमेल आइ डी, सब कथुक आदान-प्रदान भेलैक। काल्हि भोरे जलखइ-पनिपियाइ हेतैक आ हमरालोकनि अपन-अपन बाट

पकड़ब। हमरालोकनि एडिनबरा, स्कॉटलैंड जायब। बांकी गोटे भारत जयताह।

किन्तु, एहि एक हप्तामे हमरालोकनिकें किछु समय डाक्टर मिथिलेशजी (हमर पत्नीक जेठ भाइ) एवं हुनक परिवारक संग सेहो बितयबाक छल। किन्तु, हुनका ओतय जेबासँ पूर्व हमरालोकनिकें स्कॉटलैंड जयबाक छल, एकर व्यवस्था मिथिलेशजी पहिनहिसँ केने छलाह। अस्तु, हमरालोकनि लंदनसँ ट्रेन पकड़ि सोझे एडिनबरा पहुँचलहुँ। यूके (यूनाइटेड किंगडम ब्रिटेन) मे ट्रेनक यात्रा भारतसँ महग छैक। सुविधा आ सफाइ भारतक शताब्दी मेल-जकाँ। केवल एहि ट्रेनमे नाश्ता परसबाक परिपाटी नहि छैक। सप्ताहक पहिल दिन रहैक। ट्रेनमे भीड़ नहि। दिनक समय आ साफ मौसम। ट्रेनसँ बाहर, देशक परिदृश्य देखैत गेलहुँ, देशे दुनिया देखय तँ आयल छी। एतय ट्रेनमे सहयात्रीसँ गप्प-सड़क्काक परिपाटी नहि देखलिऐक। हम तँ अपनहुँ तीन-तीन दिनुक यात्रा चुप मुँहें समाप्त करबाक आदी छी। एहि बेर तँ पत्नी संग छथि, तें दोसरातिक कमी नहि।

एडिनबरा, स्कॉटलैंड

हमरालोकनि एडिनबरा जखन पहुँचल रही तँ दिनक करीब एक बजैत रहैक। एडिनबरा स्कॉटलैंडक राजधानी थिक। एडिनबरा वेवरली स्टेशन छैक तँ विशाल, किन्तु, ककरोसँ किछु पूछय नहि पड़ल। साइन-पोस्ट देखैत-देखैत स्टेशनसँ बाहर आबि गेलहुँ। सामान ततबे छल जे सूटकेसक पहिया आ अपन झिकबाक अतिरिक्त ककरो सहायताक आवश्यकता नहि। यात्रामे थोड़ सामान सुभितगर तँ होइते छैक। ओहुना विकसित देश सबमे कुली पोर्टरक परिपाटी नहि छैक। स्टेशनसँ बहराइते होटल 'जुरिज इन' नजरि पड़ल। अस्तु, ककरोसँ किछु पुछबाक काज नहि। ओना लंदन धरि टूर-गाइड संग रहथि। तें, इटली-फ्रांस-स्विटजरलैंड-ऑस्ट्रिया-जर्मनी-हॉलैंड कतहु भाषाक समस्या नहि भेल। आब तँ सहजहि UKमे छी। अस्तु, होटलक रूममे सामान राखल आ भोजन लेल रेस्तौराँ धरि गेलहुँ आ भोजनक पछाति कोठलीमे आबि गेलहुँ। एक भोरसँ जागल छी। एहिठाम होटल 'जुरिज इन' नामक होटलक कोठलीमे हमरालोकनिक हेतु पर्याप्त जगह अछि। विशाल खिड़कीसँ वेवरली स्टेशन आ आसपासक इलाकाक विहंगम दृश्य देखि सकैत छी। ई एकटा बोनस भेल।

हमरालोकनि देश दुनिया देखबा लेल बहरायल छी। पछिला पंद्रह दिनमे निरंतर यात्राक बावजूद कोनो थकानक अनुभव नहि भेल। अस्तु, थोड़ेक काल विश्रामक पछाति चाह-पानि भेलैक आ होटलक पछुऐत बाटे सीढ़ी चढ़इत लगक बाजार, किंग्स माइल, धरि टहलैत पहुँचि गेलहुँ। एहि शहरक भूमि पहाड़ी इलाकाक तराइ-जकाँ कतहु ऊँच, कतहु नीच। होटलक पछुऐतक सड़क धरिक सीढ़ी हमरा शिमलाक स्मरण करओलक। मुख्य सड़कसँ दूर सीमित आवागमनबला एहि गलीक एक कोनमे कोनो पुरान चर्चक भग्नावशेषक ढेपा-चेपा स्मारकक रूपमे देखबामे आयल। शहरक कोन-सानिमे पुरान ढेपा-चेपाकें जोगयबाक पाछू प्रायः अपन विरासतक प्रति मोह आ अपन शहरकें सजाकय रखबाक प्रवृत्ति छैक। अपना लोकनि तँ होटलक पाछू, कोनमे कचराक ढेर लगा दितिऐक। जनसंख्या,

समृद्धि आ साफ-सफाइ रखबाक प्रवृत्तिमे अंतरे विकसित देश आ भारतक बीच प्रमुख अंतर थिक। एकर अतिरिक्त अधिकारक प्रति सजगता, कानूनक अनुपालन, आ नव-नव वस्तुक आविष्कारक प्रति आग्रह विकसित देशक अर्थव्यवस्थाकें विश्वमे सबसँ ऊपर रखने अछि।

किंग्स माइल कोनो व्यस्त सड़क नहि। एहिठाम एतुका उद्योगमे उत्पादित वस्तु सब, जेना, स्कॉच, गर्म कपड़ा, छोट-छोट लटकेना सामानक दोकान, टूरिस्ट ऑफिस, रेस्तौराँ आ आओर विभिन्न व्यापारिक प्रतिष्ठान छैक। सड़कक एक कात सिनेमाक शूटिंग चलैत रहैक। दू टा युवक, आ लेडीज साइकिल गुड़कबैत एकटा नारि, सहज रूपें अभिनयक एके एक्टकें बेर-बेर करैत रहथि। भारतीय शहर सबहक विपरीत एतय, ने फिल्म स्टारकें देखबाक हेतु लोकक हुजूम आ ने लठिधर पुलिस। एकबेर शिमलाक माल रोडपरक फिल्म शूटिंग मन पड़ि आयल। बाट चलैत दर्शकक भीड़सँ माल पर लोककें चलब मुश्किल। हँ, जनशून्य लेहमे अमिताभ बच्चनकें सेहो एसगर सड़कपर टहलैत देखने छियनि। किन्तु, से पटना, लखनऊ, दिल्ली, दरभंगामे सम्भव नहि। हमरालोकनिकें काल्हि भरि दिनुक हेतु स्कॉटिश हाईलैंडक टिकट कटाओल अछि। सड़कक कातहि टूर ऑपरेटरकेर दोकानमे पूछताछ कयल आ आगू बढ़लहुँ। आगू किछु बेच-बिकिनमे सूर्यास्त समकाल भ' गेलैक। योरपमे रतुका भोजन लोक साँझे राति खाइछ। तें, हमरो लोकनि लगक 'पित्‌जा-हट'मे पैसलहुँ। अपन अनुभव अछि, योरप-अमेरिकामे भोजन बेसी क' कय परसबाक परिपाटी छैक। कीनल भोजन दूरि करब अभीष्ट नहि। अस्तु, कनेक पूछताछ कयल। स्टेवर्ड पुछलनि, 'नीक-जकाँ भूख लागल अछि?' जखन हमरालोकनि कहलियनि, 'बेसी नहि' तँ, ओ हमरा दू गोटेक बीच छोट साइजक पित्‌जा किनबाक सलाह देलनि। एतय पित्‌जाक संग, जतेक-खाइ ततेक, सलाद अलगसँ भेटैत छैक। अस्तु, हमरालोकनिक किनलो भोजन नहि सधल। भोजनक पछाति वापस अबैत रही, तँ, बेस अन्हार भ' गेल रहैक। ओहि समयमे रोडसँ कनेक दूरक रेस्तौराँक बेयरा लोकनि ट्रेमे गरम-गरम पकौड़ा नेने रोडक कातहिमे ठाढ़ छलाह। अर्थ ई जे पकौड़ा चीखू, नीक लागय तँ हमरा संग रेस्तौराँमे आउ। ई भेलै ने, पकौड़ाक मार्केटिंग। एहन मार्केटिंग आन ठाम कतहु नहि देखल अछि।

स्कॉटिश हाईलैंड आ लेक नेस (Loch Ness)

सुरेबगर संतोलाक भीतर सेहो कतेक फांक होइत छैक! किन्तु, खीरा अनेरे बदनाम अछि। हमरो लोकनिक देशमे धर्म, भाषा, प्रान्त, आ जाति ल' कय कतेक विभेद

अछि। किन्तु, 200 वर्ष धरि ब्रिटेनक नाम पर भारतपर शासन कयनिहार (यूनाइटेड किंगडम) राष्ट्रमे जँ कोनो विभाजक तत्व छैक, तँ, हमरा केवल उत्तरी आयरलैंडक नाम बूझल छल। किन्तु, अजुका स्कॉटलैंडक टूर हमर धारणा बदलि देलक। किन्तु, तकर गप्प कनेक पछाति।

आइ भोरहि होटलक रेस्तौरांमे नाश्ता केलहुँ आ किंग्स माइल पर आबि निर्धारित स्थानपर बसमे बैसि गेलहुँ। टूर गाइड हृष्ट-पुष्ट आ नमछर, स्वभावसँ हंसमुख, मध्यवयसाहु स्कॉट्समैन रहथि। स्कॉटलैंड प्राकृतिक सम्पदासँ परिपूर्ण अछि। किन्तु, उच्च शिक्षा, टूरिज्म आ स्कॉचक व्यापार एतुका कमाइक महत्वपूर्ण स्रोत थिक। स्वतंत्रता पूर्व पीढ़ीक डाक्टर लोकनि पढ़बा लेल एडिनबरा, ग्लासगो, आ स्कॉटलैंडक आन शहर आबथि। उत्तमताक कारण, विकसित देश सबमे उच्च शिक्षा सदासँ आमदनीक महत्वपूर्ण स्रोत रहल अछि। टूरिज्म केर दृष्टिसँ समय आ खर्चक अनुसारे अनेक टूरिज्म पैकेज आ अनेक स्तरक टूरिज्म पैकेज भेटत। हमरालोकनिक पैकेजमे हाईलैंड एवं लेक नेस टूरक समावेश अछि। एहिमे करीब बारह घंटाक सर्कुलर टूर हेतैक आ हमरालोकनि साँझ आठ बजे धरि एडिनबरा वापस आयब। ज्ञातव्य थिक, स्कॉटलैंड, यूनाइटेड किंगडम (यू के) क पश्चिम उत्तर भागक इलाका थिक जाहिमे अनेक झील आ नदी छैक। जँ स्कॉटलैंडकें पश्चिम-दक्षिणसँ उत्तर-पूब दिशामे एकटा सोझ रेखासँ विभक्त करी तँ उतरबरिया इलाका हाईलैंड आ आइलैंड कहबैछ, बीचक इलाका मिडलैंड उपत्यका, आ विभाजक रेखाक दक्षिणक इलाका दक्षिणी अपलैंड कहल जाइछ। हाइलैंडक इलाका मूलतः पहाड़ी भूमि थिक, किन्तु, हिमालय-सन ऊँच नहि। स्कॉटलैंडक सबसँ ऊँच पहाड़क ऊँचाइ चारि हजार फुटसँ कनिए बेसी, माने काठमांडू बुझू। भूगर्भशास्त्री लोकनि एहि हाइलैंडकें भौगोलिक संक्रमण रेखा great Glen सँ विभाजित करैत छथि। विभाजनक ई इलाका, ग्रेट ग्लेन, अनेक झील आ नदीकें जोड़ैत स्कॉटलैंडक पूब आ पश्चिम धरिक समुद्र धरि पसरल अछि। झील आ नदी सबहक एहि शृंखलामे नेस झील (Loch Ness) क्षेत्रफलमे दोसर नम्बरपर, किन्तु, पर्यटनक दृष्टिएँ प्रथम थिक।

आब यात्राक गप्प करी। करीब डेढ़ दू घंटाक यात्राक पछाति बस एकटा चाकर चौरस देहाती इलकामे ठाढ़ भेल। चारू कात हरियरी, कोनिफर गाछ-वृक्ष। लगहिमे स्वच्छ जलक छोट-छोट नाला। माने, पिकनिक लेल एकदम अनुकूल। बससँ उतरि हमरालोकनि रोड साइडक प्रतिष्ठानमे गेलहुँ। एतय बिक्रीक सब वस्तु स्थानीय उत्पाद : ऊनी कपड़ा (स्वेटर-मफलर), छड़ी, स्कॉच, किल्ट (स्कॉटलैंडक

ट्रेडमार्क चारखाना ऊनी कपड़ाक, स्कर्ट-सन पुरुषक परिधान), बैग-पाइपक आकारक चाबीक रिंग आदि देखल। एतय जकरा जे पसिन्न भेलनि, कीनलनि।

स्कॉटिश-हाइलैंड : किछु कालक पछाति बसकेर स्कॉटिश-हाइलैंडमे पैसिते परिदृश्य बदलय लगलैक। समतल भूमि क्रमशः जंगल, पहाड़ आ चमकैत झीलमे परिवर्तित होमय लगलैक। कात-करोटमे रेल-लाइन सेहो। किन्तु, जंगल ट्रोपिकल फारेस्ट वा हिमालयक जंगल-जकाँ सघन नहि। ज्ञातव्य थिक, 19म शताब्दीसँ पूर्व स्कॉटलैंडक अधिकांश आबादी हाइलैंडहिमे बसैत छल। किन्तु, अनेक सामाजिक, राजनैतिक आ ऐतिहासिक कारणसँ एतुका जनसमूहकें, चाहे तँ देश छोड़ि विदेशक बाट धरय पड़लैक, वा ब्रिटेनक तत्कालीन प्रशासनक आदेशसँ अनेक इलाकाकें खाली कराओल गेल। ततबे नहि, औद्योगिक क्रांतिक दबावसँ बहुतो लोक स्वतः एतुका घर आँगन छोड़ि विश्वक दूर-दूर इलाकामे जा कय बसि गेल। अस्तु, जनसंख्याक सघनताक दृष्टिसँ सम्पूर्ण योरपमे स्कॉटिश-हाइलैंडमे आबादी सबसँ कम। आरम्भमे कहने छलहुँ, सुरेबगर संतोलाक अनेक फांक। स्कॉटलैंडमे आबि पहिलबेर हमरा यूनाइटेड किंगडम-सन संतोलामे स्कॉटलैंड एकटा फूट फांक-जकाँ लागल। हमरालोकनिक टूर गाइड शिक्षित तँ छथिए, जानकार सेहो। यात्राक दौरान स्थानीय गीत सबहक बीच स्कॉटलैंडक इतिहास आ ब्रिटेन द्वारा समय-समय पर स्कॉटलैंडपर कयल अत्याचारक गाथा प्रवचनक मूल तत्व छल। सुनैत छी, आरम्भमे ब्रिटेन आ स्कॉटलैंड पर भिन्न-भिन्न राजा राज केलनि। ओकर अतिरिक्त छोट-छोट इलाकाक आधिपत्य स्थानीय सामन्त लोकनिक अधीन रहनि। इसाई रहितो दुनू देशक चर्च सेहो भिन्न रहैक। मतभेदमे वर्चस्व आ धार्मिक विभेद, दुनूक योगदान होइते छैक। दक्षिण भारतमे वैष्णव आ शैवमे केहन द्वंद्व रहैक। परिणामतः ब्रिटेन आ स्कॉटलैंडक बीच अनेक बेर शत्रुता आ युद्ध सेहो भेलैक। स्पष्ट छैक, जीतय केओ, युद्धमे विनाश आ नरसंहार होइते छैक। ततबे नहि, युद्धक एकटा आओर परिणाम होइछ : पीढ़ी-दर-पीढ़ीक रोष आ विद्वेष। बुझबाक थिक, जखन युद्धकेर आगि मिझा जाइछ, गोला-बारूदक धुआँ वायुमे विलीन भ' जाइछ, तखन विद्वेषक विष पीढ़ी-दर-पीढ़ीक शोणितक अनुवांशिकीय गुणमे घर क' लैछ। स्कॉटलैंडमे हमरा एहि विद्वेषक गंधक अनुभव भेल। दिन भरि जखन जतय कोनो पुरान युद्ध भूमिक लगसँ बस पार भेलैक, बस केर म्यूजिक सिस्टम पर बजैत कारुणिक गीत सबमे आ टूर ऑपरेटरकेर स्वरमे सबतरि पीड़ा आ आक्रोश परिलक्षित छल। आ से आश्चर्यजनक नहि। अगिले मास स्कॉटलैंडके यूकेसँ फूट हयबाक हेतु जनमत संग्रह आहूत छैक। ओहीमे ई निश्चित भ' जायत स्कॉटलैंड यूके केर संग रहत वा

यूकेसँ फूट। इतिहास कहैत अछि, यूकेसँ फूट हेबाक ई अभियान पहिल नहि थिक। एतय ई सोचबाक थिक जे ऐतिहासिक अन्याय एकटा एहन अनुभव थिक जकर ताप भुक्तभोगिए टा बूझैत अछि। अपना देशमे जम्मू-कश्मीर, नागालैंड, वा मणिपुरक जनताक, भले किछुए अंश, भारत-सरकारक नीतिसँ सहमत नहि अछि। अस्तु, ओतहु सरकारी कार्रवाइकें किछु लोक नरसंहार, दमन वा अन्यायक संज्ञा अवश्य दैत छैक। अस्तु, नीक की, वा की बेजाय, तकर निर्धारण अहाँ कोन पक्षक समर्थक छी, से निर्धारित करत। तथापि, भले अहाँ कोनो दिस होइ, हृदयमे सुनगइत आक्रोश दमनसँ नहि मिझाइत छैक। सर्वविदित अछि, रोष आ शत्रुता हृदयक हेतु अनुकूल नहि। अस्तु, मनुष्य अन्ततः रोषकें बिसरि समन्वय आ सहमतिक बाट धरैत अछि। नीको सएह।

जेना कहलहुँ, स्कॉटिश हाइलैंड, हरियर मखमली घास, छोट-छोट जंगल, झील, आ नदीक भूमि थिक। सड़कसँ दूर उपत्यका (ग्रेट ग्लेन) केर ओहिपार छोट-छोट पहाड़ीक शिखर। भूमि हरियर, किन्तु, गाछ-वृक्षसँ शून्य। एतुका उपत्यका-ग्रेट ग्लेन-पृथ्वीक ऊपरका परतमे आयल दराड़िक परिणाम थिक। दराड़िकक दू भागक दू फांकक बीच भसाठी माटिक नतोदर आधार, उपत्यका, स्कॉटिश भाषामे 'ग्लेन' थिक। स्कॉटिश भाषा आम परिचित अंग्रेजीसँ भिन्न अछि से भेल बुझले बात, किन्तु, बाहरी लोककें तकर भान नहि होइछ। बाहरी लोक केवल अंग्रेजीकें यूनाइटेड किंगडम एकमात्र भाषा बूझैत छथि। तकर कारणो छैक। छोट जनसंख्याक इलाकामे लोकभाषा राष्ट्र-भाषाक नीचा दबि जाइछ। ततबे नहि, भूमंडलीकरण आ इन्टरनेट सुपर हाईवेक ट्रैफिक नित्तह कतेको भाषाकें धूरा बनाकय उड़ौने जा रहल अछि।

लेक-नेस (Loch Ness)

नेस-झील स्कॉटलैंडक एकटा प्रमुख आकर्षण थिक। झीलक क्षेत्रफल आ पानिक विशाल भंडारक अतिरिक्त ई झील हिमालयक यति-सन एकटा विशाल काल्पनिक जंतु, नेसीक कारण प्रसिद्ध अछि। तें, एहि झीलकें लॉक (लेक) नेस कहैत छैक। नेसी नामक ई मायावी जीव अनेक फिल्म आ लोकगाथाक पात्र थिक। झीलकेर अथाह, गाढ़, नील वर्ण पानि एहि रहस्य आ पर्यटन दुनूक हेतु लाभकारी। अस्तु, झीलक कछेर पर नेसीक काल्पनिक मूर्ति, दोकान सबमे फोटो, नेसीक मिनीएचर आकृतियुक्त की-रिंग सब किछुमे नेसी भेटत। किएक नहि। ब्रिटेनमे तँ भूत-प्रेतहु पर्यटन उद्योगक सहभागी अछि! करीब 56 कि.मी. लम्बा, 3 कि.मी. चौड़ा एहि

झीलक कछेर पर अनेक किला आ भवन छैक, जाहिमे सँ अनेको किलामे हैरी पॉटर-सन सिनेमाक शूटिंग सेहो भेल अछि। एहि झीलमे अनेक पर्यटन कम्पनी मोटर-लांच सेहो चलबैछ। किछु यात्री नौका विहार लेल बससँ उतरि झीलमे गेलाह। हमरालोकनि एकटा दोकानमे बैसि चाह कॉफी पियल, वस्तु-जात देखल। दोकानमे लिखल चेतावनी आकृष्ट केलक : किछु चोरि केलहुँ, तँ, पुलिसकें एबामे देरी नहि लगतैक। मोन पड़ल, सत्तरिक दशकमे भारतीय क्रिकेट टीमक एक खिलाड़ी एकटा डिपार्टमेन्ट स्टोरमे चोरिक आरोपमे गिरफ्तार भेल रहथि। तहिया भारतमे दोकान-दौड़ीक सुरक्षाले CCTV कैमराक प्रचलन नहि भेल रहैक, आ खिलाड़ी बुझलनि जखन दोकानमे केओ छैहे नहि, तँ, पकड़त के! पौ बारह!!

किछुकाल बाद हमरालोकनि बसमे बैसलहुँ आ मोटर-लांचक यात्री उतारबाक स्थानपर पहुँचि सबहक संग भेलहुँ। घुरतीमे टूर गाइड प्रत्येक स्थानक महत्व, इतिहास आ गौरवगाथा सुनबैत एलाह। रास्तामे इंवेरनेस, फोर्थ, आ अबरडीन शहर अयलैक। अंततः रातिक करीब आठ बजे बस हमरासबकें एडिनबराक किंग्स माइल पर उतारलक आ स्कॉटिश हाइलैंड आ लेक नेस केर भरि दिनक टूर समाप्त भेल।

एडिनबरामे तेसर दिन

आइ सोचल एडिनबरा शहरे देखल जाय। अस्तु, होटलसँ कनिए दूर बाहर आबि वेवरली स्टेशन लग कंडक्टेड सिटी टूर केर दू टा टिकट किनल। बस लगहिमे ठाढ़ छलैक। दोसर तल्ला खुला रहैक, ओही पर जा कय मनपसंद सीट पर बैसि जाइत गेलहुँ। स्कॉटलैंडमे एखन जुलाइ मासमे ततेक गर्मी नहि। आसमान साफ। कतेको पर्यटक आ स्थानीय नागरिक-माउगि-पुरुष-पार्कमे रौद तपैत ओंघरायल छलाह। ई तँ सर्वविदित अछि गोरा लोकनिमे रौद तापि सन-टैनसँ देहक चामकें तामा-जकाँ गाढ़ रंग देब ततेक प्रचलित छैक जे योरोपीय आ अमेरिकन सब भारतक गोवा-दामन-दिउ सहित एशियाक अनेक समुद्रतट पर आबि, तेज रौदमे देहक रंग बदलैत छथि। खूजल देह, नंग-धरंग फिरंगी एशियाक समुद्र तटीय प्रदेशमे तेहन कौतूहल जगबैछ जे ओकर एकटा खिसा कहैत छी। एकबेर हमरालोकनि सोमनाथक इलाकाक समीप दिउ गेल रही। टैक्सीमे प्रायः सबठाम देखब-सुनब समाप्त भ' गेल छल। किन्तु, होटल दिस घुमबाक बदला ड्राइवर समुद्रक एकटा जनशून्य इलाका दिस गाड़ी मोड़लक। पुछलियैक, 'आब कतय?'

'उधर जाना है।'

हम पुछिलयैक, 'ओम्हर की छैक?

'फोरेनर को देखने के लिए!'

हम बात बूझि गेलहुँ। कहलिएक, 'एहि ठाम कोनो दर्शनीय मन्दिर-मस्जिद-गुरुद्वारा-स्मारक-म्यूजियम बंचल छैक तँ ल' चलह, नहि, तँ, सोझे होटल जायब।' ओ बात बूझि गेल आ गाड़ी वापस घुमा लेलक।

एहि ठाम एडिनबरामे पार्कसँ सटले, स्टेशन रोड-प्रिंसेज स्ट्रीटक कोन पर एकटा भव्य मंडपमे ऊँच आधारपर साहित्यकार-राजनेता सर वाल्टर स्कॉट केर मूर्ति छनि। सड़कक दुनू कात चौड़ा फुटपाथ। आब भारतक शहर सबमे फुटपाथ कतय पाबी। अपना ओतय सड़ककें ट्रैफिक आ पार्किंग गीड़ि गेल आ फुटपाथकें रेड़ी आ फुटपाथक दोकान। ककरो पुछबैक, तँ जबाव भेटत ई संवेदनशील राजनैतिक

मामला थिक। जाहि देशमे नियम कानूनक नित्तह अवहेलनाकें संवेदनशील राजनैतिक मामला बूझि लोक कानूनक उल्लंघनकें उचित ठहरबैत अछि, ओतय कानूनक पालन कयनिहार निस्सहाय अछि। अस्तु, खाली सरकारी जमीन नेता लोकनि हड़पलनि। चौक-चौराहाकें मन्दिर आओर मज़ार हड़पलक। सड़ककें गाड़ीक पार्किंग आ चलता-फिरता दोकान। पब्लिक चलत, तँ, कतय! कखन गाड़ी पीचि देत, वा धक्कम-धुक्कीमे कखन जेबकतरा जेब कतरि लेत, कोन ठेकान। फलतः, कोनो शहरमे आरामसँ टहलैत-फिरैत बाजारमे सैर-सपाटा सपना भ' गेल अछि। हमरा पांडिचेरीमे सात वर्ष भ' गेल किन्तु, एतय पंद्रह वर्ष पूर्व जे भरिपोख बाजारमे बौआयल रही तकर मनोरथ पुनः पूर नहि भेल।

एतय एडिनबरामे सड़कक काते-कात ठाम-ठाम नागरिक लोकनिक द्वारा अपन प्रिय परिवारजनक स्मरणमे दान कयल कतेक रास बेंच सब देखलियैक। मोन होअय, तँ, टहलू। मोन हो, तँ, सड़कक कातमे बेंचपर बैसि निर्मल वायुक सेवन करू। सड़कक दोसर भाग एकठाम एकटा सैंड-आर्टिस्ट बालुसँ एकटा लेब्राडोर कुकुरक भव्य आकृति बनाकय रखने रहथि। एहि सड़क पर किछुए दूर आगू सड़कक कातहि एकटा ऊँच बैसकपर प्रसिद्ध प्रसूति चिकित्सक सर जेम्स यंग सिम्पसन केर मूर्ति छनि। मनुष्यकें शल्य-चिकित्साक हेतु बेहोस करबाक हेतु क्लोरोफोर्मक प्रयोगक आविष्कारक सिम्पसने थिकाह। ज्ञातव्य थिक, आब रोगीकें बेहोश करबाक हेतु इथर आ क्लोरोफॉर्मक उपयोग नहि होइछ। किन्तु, निश्चेतन (Anaesthesia) मे गैसक प्रयोग नित्ये होइछ।

एहि कंडक्टेड सिटी टूर लिस्टमे आओर कतेको दर्शनीय स्थान छैक, जाहिमे प्रमुख थिक, रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियन, स्कॉटिश पार्लियामेंट, एडिनबरामे रानी एलिजाबेथक आवास। ई सब किछु बाहरेसँ देखल। एहि सबमे सँ रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियनक भवन आकृष्ट केलक। एडिनबरा शहरक एहि भागमे अधिकतर भवन एके रंगक मटमैल सैंड-स्टोनसँ बनाओल अछि। एके रंगक सब भवन सबमे कोनो भवन एकाएक विशिष्ट वा भिन्न नहि लागत। फौजी भाषामे एकरा यूनिफार्म कहैत छैक। एतुका रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियनक ने आडम्बरपूर्ण बोर्ड, आ ने कोनो गहमा गहमीः रॉयल कॉलेजक भवनक सड़कक दिसक छोट-सन सीढ़ीक एक भागमे केवल करीब डेढ़ फुट लम्बा आ एक फुट चौड़ा पितड़ियाक बोर्ड। हम भीतर गेलहुँ। प्रेसिडेंटक सहायक महिलाकें अपन परिचय देलिअनि। पुछलिअनि-'अहाँक परिसर देखि सकैत छी?'

'अहाँ रॉयल कॉलेज ऑफ फिजिशियनक मेम्बर छी?'

'नहि।' 'तखन परिसरमे जायब सम्भव नहि।' हम आगू बढ़लहुँ। सत्यतः, रॉयल कॉलेजमे पढ़ाइ तँ होइत नहि छैक। ई तँ केवल प्रमाणित करबाक एकटा मानक एजेंसी थिक।

बाटक कातक एकटा मदिरालयक (पब) दोसर रोचक अनुभव छल। टूर-गाइड कहलनि, ई मदिरालय पहिने चर्च रहैक। हमरा हँसी लागि गेल। किन्तु, हमरा रानीखेत मिलिटरी एरिया मोन पड़ि आयल। ओतहु एकटा पुरान चर्चमे सैनिक लोकनिक विधवा लोकनि द्वारा संचालित बुनाइक केंद्र देखने रहियैक। ज्ञातव्य थिक, भारतमे ब्रिटिश राज्यक अवधिमे अनेको कान्टोंनमेंटमे इसाईक विभिन्न मतक अनुयायी लोकनि अपन-अपन मान्यताक अनुकूल चर्च बनौने छलाह। एहिमे सँ कतेको विशाल चर्च आ ओकर सबहक ओतबे विशाल परिसर सब आइ जंगल-झाड़सँ भरल अछि। सत्यतः, भगवान-भगवती जँ छथि, तँ, हुनका लोकनिकें मनुष्यसँ प्रेम हेतनि, भूमि आ भवनसँ कोनो आसक्ति नहि। जतय बजयबनि, आबि जेताह। पुनः 'पूजितोशि स्वस्थानं गच्छताम!

किछु दूर आगू स्कॉटिश पार्लियामेंटक बिल्डिंगक बाहरी देबालपर सांसद लोकनिक हेतु बनाओल छोट-छोट कक्ष-थिंकिंग-पोड (Thinking pod)-तेसर रोचक अनुभव छल। तिब्बत आ लद्दाख़मे तपस्वी लामा-साधक लोकनि जनशून्य पहाड़क खोहमे दीर्घ अवधि धरि एकांत वास करैत मनन चिंतन करैत छलाह। गुफाक छोट-छोट द्वारि बाटें शिष्य आ सेवकलोकनि समय-समयपर भोजन पानि द' अबैत छलनि। किन्तु, एखनुक युगमे थिंकिंग-पोड (thinking pod)! जँ, एतय समाजकें राजनेता लोकनि लेल मनन-चिंतनक हेतु एकांत स्थानक उपयोगिता बूझि पड़लनि, तँ, अवश्ये एतुका जनता राजनेताक सोचकें नीक दृष्टिसँ देखैत छथि। हमरालोकनिक ओतय नेतालोकनिक चिंतनमे चुनाव आ सत्ता ततेक ने हाबी छनि जे राजनेता लोकनि न्यू यॉर्ककेर सेट्रल पार्क आ दावोसमे सेहो अपन प्रशंसा आ विपक्षी दलक भर्त्सनासँ बाज नहि अबैत छथि आ एक चुनावमे जे प्रचार आरम्भ होइछ, अगिला चुनाव धरि निरंतर चलैत चल जाइछ। अस्तु, नेता जाधरि सत्तामे छथि तावत निष्पाप आ निष्कलंक। किन्तु, जहाँ सत्ताच्युत भेलाह, आरोपी भ' जाइत जेताह। तथापि, जँ वकील-कोर्ट-कचहरी-जजक कृपा रहलनि, तँ आजीवन आरोप साबित नहि हेतनि। जँ अपराधी साबित भेलाह, आ जयललिता जकाँ प्रारब्ध भेलनि, तँ, मृत्यु प्रतिष्ठाकें बचा लेतनि। जँ, नारायण दत्त तिवारी, लालू, चौटाला-सन दीर्घायु भेलाह, तँ, अनका ककरा दोष देथिन।

एडिनबराक सिटी टूर करीब घंटा भरिमे समाप्त भ' गेल। अर्थात ई बस

एकटा नियत रूट पर प्रदक्षिणा केलक आ विधि पुरओलक। आब शहरकें विस्तारसँ देखबाक हो, तँ, हफ्ता भरि रहू, गली-कूचा- पार्क-पब-चर्च-विश्वविद्यालय-म्यूजियम, जाहिमे रुचि हो, नीक-जकाँ देखू। सत्यतः, एतेक सूक्ष्म दृष्टिसँ तँ स्थानीय बासिन्दा सेहो अपन शहर-नगर कहाँ देखि पबैत छथि। अस्तु, आइ हमरालोकनिक स्कॉटिश हाइलैंड आ एडिनबराक टूर समाप्त भेल।

बोस्टन, विलियम शेक्सपियरक शहर आ सर आइस्साक न्यूटनक हवेली

बोस्टन (लिंकनशायर)

बोस्टन इंग्लैंडक पूर्वी तटपर एकटा छोट, किन्तु ऐतिहासिक शहर थिक। हमर पत्नीक जेठ भाइ, मिथिलेशजी, बहुत दिनसँ एत्तहि रहैत छथि। अस्तु, एतय हमरालोकनि हुनके ओहिठाम पहुनाइमे आयल छी। आइ वृहस्पति थिकैक। रवि दिन भोरे लन्दन-हीथ्रोसँ हमरालोकनिक चेन्नईक वापसीक फ्लाइट अछि। आइ हमरालोकनि भोरे ट्रेनसँ एडिनबरासँ विदा भेलहुँ। यॉर्कमे ट्रेन बदलि लिंकनशायरमे, ग्रैन्थम स्टेशन अयलहुँ। भय छल, छोट स्टेशनपर उतरबासँ पहिनहि ने ट्रेन खुजि जाय। टी टी ई आश्वस्त कयलनि, 'विश्वास राखू, यावत् अहाँलोकनि नहि उतरब, ट्रेन नहि खुजतैक।' सएह भेल। ग्रैन्थम स्टेशन तँ बुझू अपन लोहना रोड। तथापि समानतासँ बेसी भिन्नता छैक। स्टेशनपर मिथिलेशजी स्वयं आयल छलाह। हुनकर ठेहुन एखन कज्जी छनि, हाथमे छड़ी ल' कय चलैत छथि। तथापि, अपने गाड़ी चलाकय आयल छथि, ताहिसँ द्रवित तँ भेबे केलहुँ, हुनक सौजन्यसँ अभिभूत हयब उचिते। भारतमे हमरालोकनि आगंतुककें स्टेशनपरसँ ल' अबैत छियनि आ पुनः पहुँचाइओ दैत छियनि। से नव नहि। किन्तु, ई बिलैंत थिक। एहिठाम ऑफिसमे टोपी खूटी पर टांगि भरि नगर घूरि एबाक संस्कृति नहि।

ग्रैन्थमसँ बोस्टन, करीब तीस मीलक दूरीमे करीब एक घंटाक समय लागल। दिनक समय, साफ मौसम। इलाका देखैत, गप्प-सप्पमे कखन बोस्टन आबि गेलहुँ, बुझबो नहि केलिएक। प्रसन्न मन आ प्रियजनक संगति जतबे नीक होइछ, ओ ततबे द्रुत गतिएँ बीति जाइछ। मिथिलेशजीक आवास अपने भवनमे एतुका गार्डनर-वाक इलाकामे छनि। इलाका शान्त आ हरियर छैक। आब दू दिन एतय विश्राम, गप्प-सप्प आ भ्रमण हेतैक।

मिथिलेशजी एवं हुनक पत्नी, श्रीमती सीमा, हमरालोकनि स्वागत-सत्कारमे पूरा तत्पर छथि। श्रीमती सीमा गृहणीक अतिरिक्त लेखिका सेहो छथि। हमरा हुनकर रचनाकारक व्यक्तित्व आकृष्ट करैत अछि। कारण, 'स्वान्तः सुखाय' रचनाक हेतु मनुष्यकें जेहन स्वप्न-द्रष्टा हेबाक चाहियैक, सीमा से छथि। अपन दंभमे हुनका हम समान-धर्मा कहि सकैत छियनि। किन्तु, लेखक हेबाक हमर अपन अनुभूति एखन धरि हमर चेतनामे नहि पहुँचल अछि। सीमा निरंतर लिखैत छथि। श्रीमती सीमा पछिला दस वर्षमे करीब दर्जन भरि अंग्रेजी उपन्यास लिखि चुकल छथि। ई कोनो छोट उपलब्धि नहि। वस्तुतः, हम कोनो आओर एहन मैथिल आप्रवासी नारिसँ परिचित नहि छी जे एतेक निरन्तरतासँ लिखबामे लागल होथि। सीमा कहलनि, ओ प्रतिदिन दू-चारि पृष्ठ अवश्य लिखैत छथि। हमरा लगइए, प्रत्येक लेखक जँ प्रतिदिन किछु-ने-किछु अवश्य लिखय तँ अल्प जीवनकालहुमे बहुत उपलब्धि सम्भव छैक। किन्तु, बहुत गोटे जे हमरा-जकाँ मूलतः साहित्य लिखबाक व्ययसायमे नहि छथि, अनियमित लेखनक कारण किछु कीर्तिमान नहि बना पबैत छथि। मिथिलेशजी सेहो प्रायः ताही कोटिक सुषुप्त, सुनगैत कवि छथि, जनिक साहित्यकारक छवि मित्र आ परिवारजनकें छोड़ि अनका बीच अपरिचिते छनि। तें, एखन मिथिलेशजी आ सीमाक बीच केवल सीमा अपन प्रकाशित कृतिकबलें साहित्यकारक मंचक अधिकारी छथि।

बोस्टनमे दोसर दिन

आइ मिथिलेशजी हमरालोकनिकें बोस्टनक लोकल मार्केट, वा हाट कहू, देखबय ल' गेलाह। एत्तहि लगेमे ऐतिहासिक चर्च 'द बोस्टन स्टंप' देखल। एतेक पुरान पूजा-स्थल इतिहासकार लोकनिक हेतु अनुसन्धानक विपुल सामग्री द' सकैछ। तथापि, हमरा-सन जनसामान्य लेल सेहो अनेक जगजियार ऐतिहासिक तथ्य आकृष्ट केलक। एहिमे प्रमुख अछि, ओहि बोस्टन निवासी लोकनिक सूची, जे एतयसँ अमेरिका जाकय ओतुका अनेक राज्य आ शहरमे महत्वपूर्ण पदकें सुशोभित करैत गेलाह वा ओतय जीवनक अनेक क्षेत्रमे कीर्ति पताका फहरौलनि। ज्ञातव्य थिक, 17-18 हम शताब्दीमे सम्पूर्ण योरपसँ हजारोक संख्यामे उद्यमी लोकनि अमेरिका तटपर पहुँचैत गेलाह। बुझबाक थिक, ओहि युगमे योरप विश्व लेल एहन बैमान पड़ोसी नहि छल जे खेतक आरिकें सहे-सहे थोड़-थोड़ क' घुसकबैत छल। बल्कि, योरोपीय आप्रवासी लोकनि ओहि युगक एहन लैंड-शार्क सब रहथि, जे, सम्पूर्ण विश्वमे जतय जे भूमि खाली भेटलनि हथियबैत चल गेलाह। तथापि,

अजुका लैंड-शार्क लोकनिक विपरीत, जे एकड़-दू एकड़, बीघा-दस बीघा भूमि हथियबैत छथि, योरोपीय उपनिवेशवादी लोकनि देशक-देश, महासागरक द्वीप, सागर-समुद्र, आ पहाड़ किछु नहि छोड़लनि। एहिमे वाणिज्य-व्यापार, अस्त्र-शस्त्रक बल, छल-छद्म, साम, दाम, दण्ड, भेद सब किछुक प्रयोग भेल। किन्तु, साम्राज्यक निर्माण सुलभ तँ छैक नहि। हँ, विश्वक बन्दरबाँटमे हिनका अपना लोकनिक बीच द्वन्द्व-युद्ध, शत्रुता सेहो भेलनि। किन्तु, से तँ सबल-सामंत लोकनिमे सब दिन होइते एलैए। विश्वभरिक हथिअयबाक एहि अभियानक फलस्वरूप 18-19 म शताब्दीमे उपनिवेशवादी लोकनि विश्वक लगभग 96% भागपर आधिपत्य स्थापित क' लेने रहथि। फलतः, विश्वभरिमे नव-नव सीमा, नव-नव राष्ट्र आ नव-नव गुट बनल। नव-नव अधिपतिक उदय भेल। विश्वभरि मे नव-नव आ अपरिचित नामक शहर-नगर सब बसल। ब्रिटेनसँ दूर अमेरिकामे, यॉर्कसँ न्यूयॉर्क, इंगलैंडसँ न्यू इंगलैंड, जर्सीसँ न्यू जर्सी, बोस्टन, प्लायमाउथ, बरमिंघम आ रानी-राजकुमारीक नाम पर नार्थ आ साउथ कैरोलिना राज्यक संग चार्लोट्सविले आदि शहर स्थापित भेल। बोस्टनक एहि चर्चक सम्मान-सारणीपर ओही अप्रवासी लोकनिक नाम अंकित अछि जे अमेरिकाक विभिन्न शहर-नगरक मेयर, राज्यक गवर्नर, वा सेना-नायकक पद समय-समय पर सुशोभित कयलनि।

एहिठाम हाटक आस-पास एकटा आओर नव वस्तु देखबामे आयल। स्वस्थ सँ ल' कय बूढ़-ठेढ़ धरि, अनेक वयसक आ अनेक जातिक कएक टा कुकुर एडॉप्शन लेल स्वामीक संग, नव स्वामीक आशामे प्रतीक्षारत छल। कुकुरसँ प्रेम अछि, ल' जाउ। किन्तु, कुकुर पोसब सुलभ नहि। ई बड़का दायित्व थिक। कुकुर अहाँक रक्षा करत। किन्तु, ओकरो आंग-स्वांग हेतैक। अहूँकें कुकुरक सेवा करय पड़त। हमरा एकर नीक अनुभव अछि। बुझबाक थिक, खासकय आइ-काल्हुक फ्लैट धरि सीमित जीवनमे गाम-गमाइत, यात्रा-टूरक समय कुकूर गराक घेघ साबित भ' सकैत अछि। ताहि पर विकसित देशमे पशु-पक्षीक अधिकारकें नहिए बिसरी। मानवाधिकार? भारतमे मानवाधिकारक परिभाषा अहाँ कतेक सबल छी, ताहि पर निर्भर अछि!

शेक्सपियरक नगर, स्टेटफोर्ड-ऑन-एवन

आइ हमरालोकनि मिथिलेशजी संग प्रसिद्ध नाटककार-कवि विलियम शेक्सपियरक नगर स्टेटफोर्ड-ऑन-एवन (अर्थात एवन नदीक कछेर पर बसल स्टेटफोर्ड नगर) जायब। ई नगर शेक्सपियरक जन्मभूमिक रूपें प्रसिद्ध अछि, जेना, बिस्फी विद्यापतिक

जन्मभूमि थिक। किन्तु, दुनूमे महान अंतर छैक। स्टेटफोर्ड-ऑन-एवनमे विश्वभरिसँ वर्षमे लाखो पर्यटक अबैत छथि, किन्तु, बिस्फी बहुत मैथिलोकें बुझलो ने हेतनि। स्टेटफोर्ड-ऑन-एवनमे 'शेक्सपियर बर्थप्लेस ट्रस्ट' नामक संस्था शेक्सपियरक जन्मस्थानकें राष्ट्रीय स्मारकक रूपमे चलबैत अछि। ई संस्था शेक्सपियरक जन्मस्थान, हुनक कृति, पाण्डुलिपि, एतुका संग्रहालय, आ शेक्सपियरसँ सम्बन्धित अभिलेख, फोटो, सब किछुक संरक्षण आ प्रदर्शनक भार उठौने अछि। बाहरसँ अयनिहार आगंतुक-पर्यटक पहिने संग्रहालयक प्रदर्शन कक्ष होइत जन्म-स्थानक परिसरमे अबैत छथि। एहि परिसरमे अनेक भवन छैक। एहि सबमे सँ शेक्सपियरक जन्मस्थान बला भवनमे उपलब्ध सामग्री, आ शेक्सपियरेक युगक परिधानमे उपस्थित कार्मिक लोकनि, विगत युगक एकटा रोचक परिदृश्य प्रस्तुत करैत छथि, जे पर्यटककें सोझे ओहि बीतल युगमे ल' चलैछ जहिया ई प्रसिद्ध विभूति एहि भूमि पर जनमानस आ प्रशासकक मनोरंजन करैत रहथि। एहि परिसरक फुलवारीमे एककात कविकुल गुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुरक बस्ट हमरालोकनिक हेतु गौरव थिक। दू विभिन्न युगक दू टा समानधर्मा कीर्तिपुरुषक एकठाम दर्शनसँ गौरव बोध भेल। सुनैत छी, एहिठाम एहि शहरक दोसर भागमे शेक्सपियरसँ सम्बन्धित आओर अनेक स्थल छैक। किन्तु, हमरालोकनि आइ स्टेटफोर्ड-ऑन-एवनक एहि महत्वपूर्ण यात्रासँ संतुष्ट भ' एत्तहि यात्रा समाप्त कयल, आ बोस्टन वापस भेलहुँ।

सर आइस्साक न्यूटन केर हवेली : वूल्सथोर्प मैनर

आइ बोस्टनमे तेसर दिन थिक। आइ पुनः आस पासक इलाका देखबाक योजना छैक। प्रसन्नताक विषय जे आइ हमरालोकनिक गाइडमे मिथिलेशजीक बालक, सुयश, सेहो हमरालोकनिक संग छथि। एहिसँ पूर्व हमरालोकनिक लन्दन प्रवासक बीच सेहो सुयश हमरालोकनिक भेंट करय आयल छलाह। नीक लगैत अछि। सुयश नेनासँ युवक भ' गेल छथि। लन्दनकेर रेडिंग इलाकामे कार्यरत छथि। आइ सप्ताहान्तमे माता-पिताक संग छथि, तें, ओहो आइ हमरालोकनिक संग पूरि रहल छथि। एहिसँ नीक की चाही। अजुका यात्रा लगेक ग्रैन्थम शहर लग, प्रसिद्ध गणितज्ञ, वैज्ञानिक आ दार्शनिक सर आइस्साक न्यूटन केर आवास वूल्सथोर्प मैनर धरि हेतैक। ई कृषि प्रधान इलाका थिक। एतय न्यूटनक गाओंमे आब हुनक वंशधर प्रायः केओ नहि छथिन। अस्तु, राष्ट्र एवं विश्व स्वयं हुनक कीर्तिक आभामे अपनाकें सम्मानित बूझैत अछि, आ हुनक विरासतकें भविष्य लेल जोगाकय रखने अछि।

वूल्सथोर्प मैनर, आवासीय भवन सबहक ओ समूह थिक जतय सर आइस्साक न्यूटन अपन आरंभिक जीवन बितओने छलाह। कहल जाइछ, हुनकर केम्ब्रिज प्रवासक अवधिमे ओतय एकबेर प्लेगक प्रकोप भेल रहैक। अस्तु, न्यूटन ओहि समयमे केम्ब्रिजसँ पुनः अपन पैत्रिक आवासमे आबि गेल रहथि। एतय ओ अनेक महत्वपूर्ण वैज्ञानिक प्रयोग आ आविष्कार केलनि जाहिमे गुरुत्वाकर्षणक सिद्धांत आ सम्यक् गतिक सिद्धान्तक प्रतिपादन कालजयी अछि। गणितक क्षेत्रमे कैलकुलसक गणितीय विधि सेहो गणितमे न्यूटनक मौलिक योगदान थिक। आब भारतमे नवराष्ट्रवादी लोकनि दावा करैत छथि, गुरुत्वाकर्षणक सिद्धान्तक मूल सेहो वेदे थिक! अहोभाग्य!!

वूल्सथोर्प मैनर परिसरमे देखबाक तीन टा प्रमुख आकर्षण अछि; न्यूटनक पैत्रिक आवासक भवन, न्यूटनक आविष्कार सबहक वर्किंग मॉडलक संग्रहालय, आ सेब फलक ओ ऐतिहासिक गाछ जाहिसँ फलक भूमि पर खसब, कहल जाइछ, गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्तक बीआ न्यूटनक मस्तिष्कमे रोपने छल। सत्य जे होइक, किन्तु सेबकेर भूमिपर खसलासँ मस्तिष्कमे नव चेतनाक उदयक कथा एकटा गंभीर संकेत थिक। कारण, घटना, छोट वा पैघ, घटिते रहैछ। घटना प्रमुख नहि थिक। घटनाक संज्ञान लेब, आ घटनाक पाछूक रहस्यक प्रति जिज्ञासा आ ओकर कारणक वस्तुनिष्ठ अनुसन्धाने नव तथ्यक रहस्योद्घाटन आ आविष्कारक जननी थिक। हमरालोकनिक देशक तर्क शास्त्र आ मीमांसाक परम्परा एही श्रेणीक जिज्ञासाक पृष्ठपोषक छल जे आब विलुप्तप्राय भ' चुकल अछि। कहितो छैक, 'वादे-वादे जायते तत्व बोधः' एकर चर्चा प्रसिद्ध अर्थशास्त्री अमर्त्य सेनक पुस्तक 'The Argumentative Indian' मे भेटत। हमरालोकनिक एखनुक शिक्षा प्रणालीमे जिज्ञासा आ नव अनुसन्धानक स्थानपर केवल अंक हंसोथबाक प्रवृत्तिकें बढ़ाबा देल जाइछ। ई परिपाटी ज्ञान-विज्ञानक प्रगतिक बाधक थिक। शिक्षा पद्धतिक इएह अन्तर विकसित आ विकासशील देश सबहक बीचक शिक्षा पद्धतिक मौलिक अंतर थिक। एखनुक समयमे जँ तर्क करबैक, प्रश्न पुछबैक, तँ स्कूल-कालेज तँ छोड़ू, विधान-सभा, लोक-सभा धरिमे कपार फोड़ि देत! इएह थिक एखनुक नया भारत! किन्तु, वर्तमान शिक्षा पद्धति, जिज्ञासाक कमी आ वाद-विवादक अभावे, हमरा जनैत, भारतकें knowledge economy बनबाक बाटमे प्रमुख बाधक थिक।

वूल्सथोर्प मैनर परिसरक थोड़बे ऊँच, किन्तु, बेस चतरल ई ऐतिहासिक वृक्ष (सेबक गाछ) सम्पूर्ण विश्वसँ अबैत पर्यटक आ शोधार्थी लोकनिक आकर्षण केंद्र

थिक। एहि गाछक अनेक ब'ह अनेको गोटे दूर-दूर धरि ल' गेल छथि। फलतः, एखन केम्ब्रिजक ट्रिनिटी कालेजसँ ल' कय अमेरिकाक एम आइ टी एवं चीनकेर टिनजियान विश्वविद्यालय धरिक फुलवारीमे एहि सेबक गाछक सन्तति रोपल अछि, जेना, अपना लोकनिक बोधगयाक बोधि-वृक्षक ब'ह श्रीलंका, जापान आ कतय-कतय ने गेल अछि। ततबे नहि, एतुका सेबक बगीचामे अनेको गाछ ऐतिहासिक सेबक ब'हे थिक। हमरोलोकनि एहि गाछक पृष्ठभूमिमे फोटो झिकाओल आ आपस भ' गेलहुँ।

लेह उपत्यका गर्मीक ऋतुमे, पृष्ठभूमिमे सिन्धु नदी आ पर्वतमाला

माथो गाम, लेहकेर बौद्ध विहारमे वार्षिक महोत्सवक एक दृश्य

रजांग्ला शहीद स्मारक, चुसूल, पूर्वी लद्दाख

ओ पी बाबा सर्वधर्म मन्दिर, सियाचिन बेस कैंप, लद्दाख

भोरुका रौदमे जान्सकार उपत्यका, लद्दाख

नवांग त्सेरिंगकेर घर-अजायब घर, जान्सकार। पृष्ठभूमिमे, बीचमे
लटकैत बकरीक अमाशयक मक्खनक झोरा आ
बामा दिस गृह-उद्योगमे उपयुक्त ऊनक पोला

नर्मदा नदी, आ ओंकारेश्वर मन्दिर (पुलकेर ठीक नीचा चित्रकेर बामा भाग ऊपर दिस)

रोमकेर एकटा सड़क पर लाल मरचाइक सजावट

कोलोसियम, रोम केर भीतरी खाका

वेनिसक प्रसिद्ध घड़ी-घंटा

इन्सब्रूक शहर, ऑस्ट्रियाक एक सड़कपर कलाकारलोकनिक शोभा-यात्राक एक दृश्य

स्विट्जरलैंडमे टोबोगैनक आनन्द लैत लेखक

युंगफ्राउ, स्विट्जरलैंडमे बर्फसँ निर्मित कलाकृति

आहत सिंह, लुसिन शहर, स्विट्जरलैंड

एफिल टावर, रतुका इजोतमे

नेसीक संग हमर पत्नी श्रीमती रूपम झा, नेस झीलक तट, स्कॉटलैंड

विलियम शेक्सपियरकेर पुस्तैनी घर आ परिसरमे कविकुलगुरु रवीन्द्रनाथ ठाकुरक मूर्ति

लेकवूड, क्लीवलैंड, अमेरिकामे स्थानीय निवासीक घरक परिसरक बाहर काठकेर बनल 'टोटम'पर भेड़िया, लुक्खी, भालु आ बाजक आकर्षक कलाकृति

समुद्र मंथनक भव्य दृश्य, बैंकाक एयरपोर्ट, थाईलैंड

मुक्तिनाथ, नेपालक द्वारिपर भक्त लोकनि

त्रिसूली नदी, नेपालमे पुत्र अमिय (बामसँ पहिल) केर
संग नौकायन करैत लेखक (बामासँ दोसर)

हमरालोकनिक जमाय, डाक्टर सिद्धार्थ श्रीवास्तव, कन्या, डाक्टर सुष्मिता आ हमर दौहित्र,
आयुष्मान तन्मय (चित्रमे बामासँ दहिना)

हमरालोकनिक पुत्र, आयुष्मान अमिय, पुत्रवधू श्रीमती अदिति
आ पौत्र आयुष्मान अग्निव

लेखक पत्नीक संग

अमेरिका

मनोरथक पाँखि पर उड़इत : अमेरिकाक पहिल यात्रा

जीवनमे जाधरि दायित्वक बोझ बेसी रहैत छैक, अपन मनोरंजन लेल किछु करबाक सुरता नहि अबैछ; सीमित आमदनीक भीतर आवश्यकताकें प्राथमिकताक तराजू पर जोखय पड़ैत छैक। एहि जोख-तौलमे कतेक बेर अपन मनोरथ तराजू पर चढ़िओ नहि पबैछ! तें, जखन सेनासँ रिटायरमेंट लेल ताधरि धिया-पूतापर खर्च घटि गेल छल, नव नौकरीसँ आमदनी सेहो बढ़ि गेल छल ई उलटा भेल। हेबाक तँ ई चाहियैक जे जखन खर्च बेसी होइछ, आमदनीओ तखने बेसी होइक। किन्तु, से होइत कहाँ छैक। सत्यतः, बढ़इत वयसमे जहिना भूख कम होमय लगैत छैक, तहिना शारीरिक क्षमता सेहो। एहिसँ घुमबा-फिरबाक क्षमता कम भ' जाइछ। संयोगसँ हम स्वस्थ छी। मनोरथ तँ छले। एतावता, बढ़ल आमदनी आ घटैत खर्च सूतल मनोरथकें जगौलक। हमरालोकनिक अमेरिका यात्रा एहने सूतल मनोरथक फल छल, जकरा हमर बेटी जमायक अमेरिका प्रवास सहयोग देलक। तहिया हमर कन्या, सुष्मिता अमेरिकाक नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालयमे सेल मॉलिक्यूलर फिजियोलॉजीक पांच वर्षीय पीएचडीक छात्रा रहथि। 2009 मे हुनक पीएचडी प्रोग्राम समाप्त हेबापर रहनि। अमेरिका अयबाक निमन्त्रण तँ रहबे करय। अस्तु, हमरालोकनिकें ओ समय उपयुक्त बुझना गेल। सन्तानक दीक्षांत समारोहमे सम्मिलित हयब वीसाक हेतु युक्तिसंगत आधार मानल जाइत छैक। तें, सएह सही।

लोक मनोरथेक बलें जिबैये, आ अपूर मनोरथेक तापें लोक मरइ-ए। मनोरथे नहि हो, तँ, मनुक्खे की? आस-पासक समाज आ पड़ोसिया लोकनिक समृद्धि सेहो मनुक्खक मनोरथ जगबैत छैक, आ इर्ष्याक कारण बनैछ। हमरालोकनिक अमेरिका जायब एकटा एहने मनोरथ छल। अस्तु, अमेरिकन वीसा लेल जयबाक तैयारी आरम्भ भेल। अंततः, जुलाइ 2009 मे दिल्ली होइत अमेरिकाक पहिल यात्रा कयल।

सेना-सेवा छोड़लाक बादक स्वतंत्रता, मणिपाल मेडिकल कॉलेजमे काजक नव पद्धति, मनोहारी परिसर, पूर्वपरिचित सहकर्मी सैनिक ऑफिसर लोकनिक संग, सुधरल आर्थिक स्थितिक संग-संग अमेरिका यात्राक संतुष्टि। सब मिला कय मोन अत्यंत प्रसन्न छल।

आब विदेश जायब दरभंगा-दिल्ली जकाँ सुलभ भ' गेलैए। आधुनिक युगक अनेक आविष्कार एतहु जनसाधारणक प्रतिदिनक उपयोगक वस्तु भ' गेलैए। सब ठाम लोक पित्‌जा-पास्ता खाइत अछि, बाबा रामदेवक मनाहीक बावजूद नित्तह पेप्सी आ कोक पिबैत अछि। तें, आब विदेश यात्रा अद्‌भुत नहि। पहिल बेर, जखन हम आठम वर्गमे रही, तँ कोनो लेखक, भुवनेश्वरी प्रसाद 'भुवन', केर 'आँखों देखा योरप' पढ़ने रही। तहिया ओ अत्यंत अद्‌भुत लागल छल, कारण, ओहि पुस्तकमे जाहि अनेक वस्तुक वर्णन रहैक, से देखल तँ नहिये छल, बहुत सुनलो नहि छल। किन्तु, आजुक युगमे अमेरिका यात्राक अनुभव अद्‌भुत की हेतैक? तथापि, अनकर वर्णन आ अपन अनुभवमे जे अंतर होइत छैक तकर अनुभव कोना नहि होइत! सत्यतः, हमरा लेल बहुतो वस्तु नव छल। सएह एहि वृतांतक विषय थिक।

एयर इंडियाक दिल्ली न्यूयॉर्क उड़ान AI-101 मध्यरात्रिक बीच दिल्लीसँ उड़ल रहैक। पछिला किछु समयमे निन्नक किछु कमी रहय। हवाई जहाज उड़लैक आ सोझे सूति रहलहुँ। निन्न खूब पूरा भेलापर प्लेनक वातावरणमे यात्री लोकनिक अचानक चहलकदमीसँ निन्न खूजल। उठलहुँ तँ बहुतो गोटेकें लगक खिड़कीसँ बाहर आँखि गड़ौने देखलियनि। प्रकाश एतेक रहैक जे अचानक आँखिमे चकचोन्हीक अनुभव भेल। कौतूहल भेल। सीटसँ उठि खिड़कीसँ बाहर देखबाक प्रयास केलहु तँ मुग्ध भ' गेलहुँ। अद्‌भुत दृश्य रहैक दूर-दूर धरि उज्जर सपेत बर्फकेर चादरि। कतहु-कतहु दूर-दूर पर नग्न पहाड़। हवाई जहाज ग्रीनलैंडक इलाकाक ऊपर छल। ग्रीनलैंडक इलाकाक अधिकांश भाग सालोभरि बर्फसँ तोपल रहैत छैक। जे किछु आबादी छैक, तटीय इलाकामे रहैत अछि। आर्कटिक सर्किलक समीपक ई प्रदेश एहि मासमे (गर्मीमे) मिडनाइट-सन (रतुका रौद) लेल प्रसिद्ध अछि। एहि मध्य रातिक अचानक इजोतक कारण इएह 'मिडनाइट सन' थिक। हम लेहमे अढ़ाइ वर्ष बितौने छी। कम-सँ-कम बीसो बेर हिमाचल-जम्मू-कश्मीरक पर्वतमालाक ऊपर देने गेल हयब। किन्तु, ओहि पर्वतमालासँ ग्रीनलैंडक कोनो तुलना नहि। लद्दाख़, उबड़-खाबड़ आ ऊँच-नीच, कतहु-कतहु आरिक धार-सन, बीच-बीचमे नदी आ झील। ग्रीनलैंड, समतल, सपाट, दूधकेर समुद्र। एहन प्रदेशकें लगसँ

देखबाक सेहन्ता ककरा ने हेतैक। किन्तु, मोन राखी कतेको वस्तु जे दूरसँ सोहाओन लगैत छैक, समीपसँ ओ ओतबे मारुख! ग्रीनलैंडक जलवायु सेहो अतिशय ठंढा।

थोड़बे कालक पछाति दृश्य बदललै, आ चारूकात राति-सन अन्हार। अमेरिकाक पुबारितटक समय ग्रीनलैंडसँ दू घंटा पाछू छैक। अर्थात जखन ग्रीनलैंडमे सूर्योदय होइत छैक न्यूयॉर्कमे अन्हारे रहैत छैक। सर्वविदित अछि, ऋतु परिवर्तन आ दिन-रातिक खेलक कारण पृथ्वी आ सूर्यक गति आ एक दोसराक सापेक्ष स्थान थिक। सूर्ये आ पृथ्वीक गतिक ई खेल हमरालोकनिक जूड़ि शीतल आ तिलासंक्रांतिक दिन निर्धारित करैछ।

आखिर करीब सोलह घंटाक उड़ानक पछाति जखन न्यूयॉर्ककेर जे एफ के हवाईअड्डापर प्लेन लैंड भेलैक, तँ, ओतय करीब भोरक छौ बजैत रहैक। रनवे समुद्रक कछेरमे। पानिक रंग गाढ़, मटमैल। एशियाई समुद्रक हरियरी एकदम नहि। ओना, समुद्रक रंग तँ सूर्यक किरण आ पानिमहक जैविक जीवन, तटीय इलाकाक माटि, बालु, ज्वार, आ प्रदूषणक परिणाम थिक। तें, समुद्र कतहु नील, कतहु हरियर, कतहु लाल, तँ, कतहु श्वेत देखबामे अबैछ।

इमीग्रेशनमे हमर पत्नीसँ कनेक पूछताछ भेलनि। हमरासँ कोनो पूछताछ नहि। यथार्थमे वीसा केवल अमुक देशक एअरपोर्ट धरि जेबाक अनुमति थिक। इमीग्रेशन अधिकारी जँ संतुष्ट नहि भेलाह, तँ, अहाँकें एयरपोर्टसँ सेहो बैरंग वापस होमय पड़ि सकैत अछि! आ से होइतो छैक। तें, कनेक धुक-धुकी तँ स्वाभाविक।

एयरपोर्टपर ककरोसँ किछु पुछबाक काज नहि। सब किछु साफ-साफ लिखल, जेना आन सब एयरपोर्ट पर होइत छैक। हमरा सबकें नार्थ कैरोलिना जेबाक छल। अगिला फ्लाइटमे काफी विलम्ब रहैक। अस्तु, सुष्मिताकें फोन केलियनि आ पहुँचनामा देलियनि आ कॉफी कीनि समय बितबय लगलहुँ। एतय खयबाक वस्तु-सामग्री ओतेक महग नहि। किन्तु, कॉफीक ग्लास आ पितृजाक साइज आवश्यकतासँ बहुत बेसी पैघ। एक ग्लास काफी दू गोटे सधा नहि सकलहुँ! सत्यतः, एतय देशक क्षेत्रफलहि-जकाँ रोड-सड़क, एअरपोर्ट, मनुक्ख, आ परसल भोजनक मात्रा धरि, सब किछु पैघ-पैघ। आने सब अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट-जकाँ एतहु सौवेनिर, लटकेना सामान, पत्रिका-पोथी, खाद्यपदार्थक बहुतो दोकान। हमरालोकनि केरा कीनल आ खायल। एहि सब दोकानक कतबहिमे एकटा सज्जन बूट-पोलिशकेर दोकान लगौने रहथि। लग जाकय देखलहुँ। गहिंकी सीढ़ीनुमा ऊँच मंचपर बैसथु, जाहिसँ जूता, श्रमिकक छातीक बराबरपर अबनि। श्रममे मनुक्खक प्रतिष्ठा आ

सुविधाक ध्यान राखब विकसित देश सबहक दस्तूर थिकैक। हमरालोकनि एखन ओहिमे एखन बहुत पाछू छी। विश्वकेर अनेक आन भागक विपरीत अमेरिकामे शुरूएसँ मनुक्खक श्रमकें थोड़ करबाक आविष्कारपर जोर रहलैए। एकरे परिणाम थिक जे 19म शताब्दीक उत्तरार्धहिमे अमेरिकामे एहन नव-नव यंत्र आ साधनक आविष्कार भेल जे मानव श्रमकें उत्तरोत्तर कम करैत गेलैक। तखन विश्वक अनेको भागमे औद्योगीकरण आ मशीनीकरणक नामहु नहि रहैक। मानल जाइछ, मात्र बांग (कपास) मे सँ बीया निकालबाक मशीनक आविष्कारसँ अमेरिकामे लाखो श्रमिककें एहि कठिन काजसँ मुक्ति तँ भेटबे केलनि, तूरकेर उत्पादन कतेक गुणा बढ़ि गेलैक से फूटे। जे किछु। एतय एक जोड़ जूता पोलिशकेर पारिश्रमिक 5 डॉलर माने, दू सौ सँ बेसी भारतीय टाका : बाहरसँ अमेरिका गेनिहार भारतीय पर्यटकक ई रोग वा बाध्यता बुझू, जे, जे किछु किनब तुरत ओहि वस्तुक मूल्यकें भारतीय टाकामे बदलिकय भजारी वा ओहि वस्तु वा सेवाक अपना ओहिठामक दामसँ मिलान करी। किन्तु, एहि मीमांसामे जायब बेकार। अस्तु, अगिला उड़ानक हेतु आगाँ बढ़लहुँ।

न्यूयॉर्कसँ रॉली-डरहमक उड़ानमे हमरालोकनिकें करीब डेढ़ घंटा लागल। छोट हवाई जहाज। सत्कारमे एक गिलास क्रेन-बेरी जूस आ ठंढा पानि। मुदा, पानि पीयब मुश्किल। एतुका पानिक ग्लासमे बर्फ बेसी आ पानि कम देखलियैक! आइ मौसम कनेक मेघाओन छैक। बाहर अन्हार-जकाँ। नीचा सघन जंगल, नदी आ समुद्र। हमरालोकनि रॉली-डरहम पहुँचलहुँ। सुष्मिता आ सिद्धार्थ गाड़ी ल' कय तत्पर रहथि। अमृतं प्रिय दर्शनम्! सामान उठबैत गेलहुँ, आ हमरालोकनि चैपेल-हिल विदा भेलहुँ।

चैपल-हिल

चैपल-हिल शहरकें नार्थ कैरोलिना राज्यक ग्रामीण इलाका कहि सकैत छियैक। शहरक चारूकात खेती-बारी आ पशुपालन। दूर-दूर धरि पसरल हरियरी। समुद्रक तरंग-जकाँ ऊपर नीचा होइत मैदान, मकइक पैघ-पैघ खेत, सघन जंगल, सर्पाकार सड़क, आ बीच-बीच कतहु-कतहु दूर-दूर पर आवास। आवास आ खेतीक अलग-अलग इकाइ बहुत पैघ-पैघ। गाछ-वृक्षपर भांति-भांतिक चिड़ै। खेत आ आवासीय परिसरमे हरिणक झुण्ड। सम्पूर्ण इलाका एकटा पैघ अभयारण्य-जकाँ प्रतीत भेल। साबिकमे नार्थ कैरोलिना राज्य कपास आ तमाकूक खेती लेल प्रसिद्ध छल। अमेरिकाक आन दक्षिणी इलाका-जकाँ, खेतीमे अश्वेत दास लोकनिक बेगारी

साबिकमे एतुका समृद्धिक मूल रहैक। एखनहुँ एहि इलाकामे अश्वेत लोकनिक संख्या काफी। अमरीकी गृहयुद्धक समयमे नार्थ करोलिना दासता उन्मूलनक विरुद्ध संगठित कॉनफेडरेट राज्य सबहक सहभागी छल। तें, युद्धक पछातियो एम्हर रंग-भेदक प्रथाकें उकन्नन हयबामे बहुत समय लगलैक। चैपल-हिलमे विश्वविद्यालय परिसरमे कनफेडरेट सैनिक, साइलेंट सैम, केर मूर्ति गृहयुद्धमे राष्ट्रीय सरकारक विरुद्ध नार्थ कैरोलिना राज्यक सहभागिताक साक्षी थिक। स्पष्ट अछि, बेगार-प्रथाक उन्मूलनसँ, अमेरिकाक दक्षिणी इलाकाक एहि दास-श्रमिक पर निर्भर कृषि-प्रधान राज्य सबहक आर्थिक हानि होइतैक। तें, ओहि युगमे (1861-1865) राष्ट्रीय-सेना (Union) क विरुद्ध अपन युद्धकें एतुका सामंत लोकनि गौरवक दृष्टिसँ देखैत रहथि। किन्तु, आब बदलैत समयक संग ओहि रक्त-रंजित अभियानक स्मारकक विरोध प्रखर भेलैए, आ बहुतो बेर विश्वविद्यालयक मुख्यद्वारपर स्थापित एहि मूर्तिकें हँटयबाक स्वर सेहो मुखर भेलैए। आगूक समयमे की हयत, के कहत? कोनो मूर्ति स्थायी नहि होइछ : सोमनाथ, बामियान बुद्ध, जॉन सेसिल रोड्स, मार्क्स-लेनिन, सद्दाम हुसैन सबहक मूर्ति ध्वस्त भेलै। अबैत समयमे साइलेंट साम कतय जेताह, मात्र समय कहि सकैत अछि।

अमेरिकामे दास-प्रथाक अंत भेना एक शताब्दीसँ बेसी भ' गेल छैक, किन्तु, श्वेत आ अश्वेत लोकनिक सामाजिक आ आर्थिक परिस्थितिमे एखनहुँ अन्तर छैक से कतहु-कतहु प्रतीत हयत। कवि किरणजी भले कहथु,

की थिक भाग्य, विधाता के अछि?
सबसँ पौरुष हमर प्रबल अछि!

किन्तु, अनुभव कहैत अछि, पीढ़ी-दर-पीढ़ीक दासताक पछाति, लोककें समानताक अधिकार भले भेटि जाउक, किन्तु, समान अवसर भेटलहुसँ मनमे एकाएक आत्मविश्वास नहि जगैत छैक! मरल आत्मसम्मानकें पुनः पनुगी देबामे अनेक पीढ़ी बीति जाइत छैक। अमेरिकाक अश्वेत आ भारतक दलित एकर अपवाद नहि।

चैपल-हिल मूलतः यूनिवर्सिटी ऑफ नार्थ कैरोलिना, चैपल हिल (यू एन सी एट चैपल हिल)क टाउनशिप थिक। नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय अमेरिकाक पहिल पब्लिक यूनिवर्सिटी थिक जकरा पब्लिक आइवी लीग यूनिवर्सिटीक प्रतिष्ठा छैक। दू शताब्दीसँ बेसी पुरान आ शिक्षाक क्षेत्रमे विश्वप्रसिद्ध एतुका विश्वविद्यालय एहि शहरक नाक थिकैक। अमेरिकाक पुबारि कछेरक लगक बसल एहि स्थानक जलवायु मृदु छैक। राज्यक पश्चिमी भागमे अप्पलाचियन माउंटेन, नार्थ करोलिना

आ टेनेस्सी राज्यक बीच टूरिस्टक आकर्षण थिक। किन्तु, चैपल हिल केवल यूनिवर्सिटीए लेल प्रसिद्ध अछि। प्रायः, यूनिवर्सिटीक स्थापनाक पूर्व एहि स्थानक परिचय केवल ओहि हिल वा पहाड़ीसँ होइत छलैक जतय चैपल(वा पूजा-स्थल) रहैक। तें, ई शहर भेल चैपल-हिल। विश्वविद्यालयक स्थापनाक पछाति क्रमशः यूनिवर्सिटीक बाहरक परिसर टाउनशिपमे परिवर्तित होइत गेल। मुदा, एखनो शहरक आकार ततबे टा छैक जे यूनिवर्सिटीक छात्र, शिक्षक आ ओहिसँ जुड़ल समुदायक हेतु आवश्यक। चैपल-हिलकेर समीपक रॉली आ ड्यूक शहर अवस्थित दू टा आओर यूनिवर्सिटी टाउनशिप (ड्यूक आ डरहम यूनिवर्सिटी) मिलाकय नार्थ करोलिनाक ई इलाका अमेरिकाक 'रिसर्च ट्रायंगल' नामसँ प्रसिद्ध अछि। चैपल हिल केर संस्कृति छोट शहरक संस्कृतिक अनुकूल, मंद मंथर गतिएँ चलैत जिनगी। कतहु भीड़-भड़क्का नहि। पैदल चलैत नागरिक अनचिन्हारहुकें देखिकय अभिवादनमे मुसुकी अवश्य देताह। सड़क पार करबा काल गाड़ी सब अचानक ठमकि जायत। पैदल यात्रीक सुरक्षा सभ्यता थिकैक। जनसंख्या मूलतः विद्यार्थीक आ शिक्षा आ स्वास्थ्यसँ जुड़ल प्रोफेशनल लोकनिक। तें, ई नगर अध्ययन-अध्यापन लेल सर्वथा उपयुक्त। फ्रेंक्लिन स्ट्रीट यूनिवर्सिटी परिसरक दक्षिण एकटा सोझ लम्बा सड़क आ एहि शहरक जान थिक। पैदल टहलिकय आसानीसँ आधा घंटासँ कममे फ्रेंक्लिन स्ट्रीटक एक चक्कर लगा सकैत छी। तें, चैपल हिल हमरा आओर नीक लागल। सरकारी कार्यालय, दोकान, होटल, रेस्टोरेंट, लीगल फर्म, हेयर कटिंग सैलूनसँ ल' कय चर्च आ फ्यूनरल-होम धरि सब किछु फ्रेंक्लिन स्ट्रीटमे भेटि जायत। फ्रेंक्लिन स्ट्रीटक एक छोरपर एकटा पुरान रेल लाइन सेहो एहि रोडकें पार करैछ। आब एहि रेल लाइनक प्रयोग केवल स्थानीय थर्मल पॉवर प्लांट धरि कोयला उघबाक हेतु मालगाड़ीक आबाजाही लेल होइत छैक। एहि लाइन पर कदाचित दिनमे एकटा मालगाड़ी जाइत हो। चालू रेल लाइनक बगलमे दोसर पुरान लाइन पर ठाढ़ एक टा ट्रेनक डब्बामे रेस्टोरेंट सेहो चलैत छैक। ई एक प्रकारक नवीनता भेल।

अमेरिका एबाकाल हमरा एतुका रेल एमट्रैक आ बस सेवा 'ग्रे हाउंड' पर सेहो यात्रा करबाक कौतूहल छल। ज्ञातव्य थिक, अमेरिकामे प्राइवेट कार, यातायातक सबसँ सामान्य साधन थिक। पब्लिक ट्रांसपोर्ट लेल बसक उपयोग बहुत सीमित। बस संख्यामे कम आ आवागमन थोड़। बेसी बस शहरक भीतरे चलैछ। सबठाम शहर सबहक बीच बस आ ट्रेनक सेवा छैको नहि। दूरस्थ स्थानक यात्रा लेल जतय बस वा ट्रेन छैको, सुरक्षा लेल लोक सशंकित रहैए। हमरो धियापुता शहरसँ

बाहर ट्रेन आ बस यात्रासँ मना केलनि। हम प्रवृत्तिए निर्भीक छी। किन्तु, अपरिचित देशमे जानकारक सलाह मानबे उचित। एतय चैपल-हिलमे चौबीसो घंटा सर्कुलर रूटपर फ्री बस चलैत छैक। देशी छी, कि विदेशी, छात्र छी वा श्रमिक, केओ पूछत नहि। निर्धारित स्थान आ समय पर बस अओतैक, बैसू, जतेक बेर जतय जेबाक हो, जाउ। हम एहि बस सेवाक प्रचुर उपयोग कयल। सत्यतः, जँ समयक कमी नहि हो, तँ, एतय बहुतोठाम पैदल जा सकैत छी। सुष्मिता-सिद्धार्थ बेसीकाल दिनमे यूनिवर्सिटीसँ पैदल अबैत जाइत रहथि। लोक साइकिल सेहो चढ़ैत अछि। साइकिलकें बसक आगू सेहो लादि सकैत छी। एतय फ्रेंक्लिन स्ट्रीटमे रेल लाइनक समीपहिमे एकटा छोट-सन डिपार्टमेंट स्टोर छैक जकर आगाँ, सड़कक कातमे विशाल छायादार गाछक नीचा बेंचपर यदा-कदा विश्वविद्यालयक छात्रलोकनि दिनक समयमे आबि कय बैसैत छथि। धियापुता गाछ तर खेलायल, दौड़ल-भागल, खेलक पीलक आ छात्र-शोधकर्ता लोकनि वाई-फाई परिसरमे कंप्यूटर पर लिखबा-पढ़बाक काज केलनि। समीपक डिपार्टमेंट स्टोरमे ब्रेड, बिस्कुट, केक, पेस्ट्री, वाइन आ अन्य ग्रोसरी सामान, आ बनल भोजन भेटैत छैक। भूख लागल, जे पसिन्न पड़य प्लेटपर राखू, वजन कराउ, आ पाबि लियअ। बगलमे फार्मेसी। पछुआड़मे स्थानीय विभर स्ट्रीट मार्केटमे हफ्तामे प्रायः दू बेर आसपासक खेतिहर सब अपन हाट लगबैत छथि। बीवर स्ट्रीट मार्केटमे स्थानीय तरकारी आ फल-फलहरीसँ ल’ कय पोर्क-बीफ, फूल-पत्तीक गाछ, बरहीक बनाओल लकड़ीक सामान, चर्म-शिल्पक उत्पाद, सब किछु भेटि जायत। सुष्मिता आ सिद्धार्थक आवास एतयसँ लगे छनि। अस्तु, हम लगभग नित्य व्यायामक हेतु दौड़इत फ्रेंक्लिन स्ट्रीट धरि एतय अबैत रही आ गाछ तर बेंचपर बैसि ओहि शान्त आ स्वच्छ वातावरणक आनन्द लैत रही जे आब भारतमे छोटहु शहरमे संभव नहि। फ्रेंक्लिन स्ट्रीटसँ दक्षिणकेर इलाका यूनिवर्सिटी परिसर आ नार्थ कैरोलिना जनरल हॉस्पिटलक इलाका थिकैक। विशाल छायादार परिसर। सैकड़ो वर्ष पुरान, विभिन्न प्रकारक विशाल गाछसब। गलीचा-जकाँ घासक बीच-बीच कंक्रीटक फुटपाथ। अनेक सुन्दर फुलवारी, पैघ-पैघ चर्च, बड़का-बड़का पुस्तकालय, आ ऐतिहासिक भवन सहजे आकृष्ट केलक। किन्तु, एतुका सबसँ लोकप्रिय स्थल जतय विद्यार्थी आ हमरा-सन पर्यटक, दुनू, फोटो खिचबैत अछि ओ थिक कैरोलिना वेल-साविक इनारक ऐतिहासिक स्थानक मण्डप। विकिपीडियाक अनुसार आरम्भमे एतुका इनार एहि परिसरक एकमात्र पानिक स्रोत रहैक। पछाति, एकरा ऐतिहासिक स्वरूप दैत एहि स्थलकें एहि विश्वविद्यालयक सबसँ सुपरिचित स्मृति-चिह्नक रूपमे प्रचारित कयल गेल अछि। सुनैत छी,

एतुका छात्र समुदायमे ई मान्यता छैक जे एहि विश्वविद्यालयमे नामांकनक पहिल दिन जँ एहि स्रोतसँ पानि पीबी, तँ, 'A' ग्रेड रखले अछि! सत्यतः, एहि मण्डपमे आब केवल एकटा नल छैक। किन्तु, ई स्थान फोटोग्राफीक हेतु लोकप्रिय आ नार्थ करोलिना विश्वविद्यालयक सुपरिचित स्मृति-चिह्न थिक। कहैत छैक, 'हमको मालूम है जन्नत की हकीकत लेकिन, दिल खुश रखने को 'ग़ालिब' ये ख़्याल अच्छा है'! किन्तु, हमरा जतबा धरि बूझल अछि, विदेशी छात्र लेल एहि विश्वविद्यालयमे प्रवेश अपने आपमे एकटा उपलब्धि थिक। हमरा लेल हमर कन्याक नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालयमे स्कॉलर हयब हमरा लेल कतेक गौरवक विषय थिक, से हमरासँ बेसी के बूझत। जे किछु। हम चैपल हिलमे करीब छौ हफ्ता रही। यूनिवर्सिटी परिसरमे घूमब फिरब हमर समय बितेबाक प्रिय अनमना छल। अस्तु, कतेक बेर एहि पुरान इनार लग अयलहुँ। गार्डेनमे घुमलहुँ, चर्चमे गेलहुँ। फोटो सेहो खिचाओल। एहि सबहक अतिरिक्त एहि परिसरक अनेक विशाल लाइब्रेरी हमरा अवश्य आकृष्ट केलक। एहि लाइब्रेरी सबमे हम कतेक बेर जा कय बैसलहुँ आ पढ़लहुँ। सुष्मिताक कार्डपर पोथी सेहो भेटिए जाइत छल। लाइब्रेरी सबमे बे-रोक-टोक प्रवेश आ किताब आपस करबाक व्यवस्था आकृष्ट केलक। किताब आपस करबाक हो, आनू, भवन केर बाहर राखल डब्बामे राखि दियौक। एतुका एकटा लाइब्रेरीमे एक विशाल फ्लोर पर दास लोकनिक उतेढ़ (Geneology of slaves) केर संकलन देखलियैक। ज्ञातव्य थिक, सत्रहमसँ उनैसम शताब्दीक अवधिमे जखन अफीकासँ बलपूर्वक आनल गेल अश्वेत नागरिकक बेच-बिकिनक दारुण व्यापार आरम्भ भेलैक, तँ, यूरोप आ उत्तर अमेरिकाक सामंत एहि अमानवीय व्यापारक मुख्य खरीदार रहथि। समुद्रमार्गसँ होइत एहि व्यापारमे कोन देशक लोक कतय-कतय गेल, तकर कोन ठेकान। अपरिचित, माल-जालसँ बदतर मनुक्ख, अनजान देशमे अपरिचयक अन्हारमे ओहिना विलीन भ' जाइत छल जेना मडुआक ढेरमे धूल। जे जतय गेल नव स्वामीक खेत-खरिहानमे नव जंतु भ' गेल, नव नाम आ उपनाम भेटि गेलैक। स्वामीकें दुर्दिन आबि गेलनि आ दासेकें बेचबाक खगता भ' गेलनि, तँ दास बिका गेल। बिकायल दास आब जाहि खोंता वा खेतीक जाहि कामतपर बैसल, ओतय ओकर नाम पुनः बदलि गेलैक। जँ, दू पुरुष-नारि दासकें संग रहबाक अवसर भेलैक, तँ, कदाचित स्त्रीए टा बिका जाय आ पति पुराने स्वामी लग रहि जाय। जँ सन्तान भेलैक, तँ, ओकरो बिक्री हेतैक। छागर-पाठी लोक बेचैए, किने? तें, एक मनुक्ख कतेक बेर बेचल जायत, कतय जायत, ओकर नाम की हेतैक, जियत वा मरत, देवो न जानाति कुतो

मनुष्यः! तथापि, अमरीकी सामंत लोकनिक प्लांटेशन (खेती वा कामत) क पुरान रिकॉर्डक आधारपर क्रीत-दास (slave) लोकनिक उतेढ़ (Geneology of slaves) केर जहाँ-तहाँ संकलन भेल छैक, आ ओहीमे सँ अपन पूर्वजक इतिहास, आ पूर्वजक यातनाक इतिहास लोक तकैत आयल अछि। अंतर्राष्ट्रीय दास-व्यापार आ ओकर मार्मिक कथा, 1976 मे प्रकाशित अलेक्स हैलीक प्रसिद्ध पोथी Roots ('जड़ि') मे भेटत। एहि पोथीमे लेखक अफ्रीकासँ बझाकय आनल अपन पूर्वज 'कुंटा किन्टे' नामक व्यक्तिक पीढ़ी-दर-पीढ़ीक यातनाक दारुण कथाक एहन ताना बना बुनने छथि जे पढ़िकय पाथरो पिघलि जायत। लेखक एहि कथाकें अपन ओहि पूर्वजक, जे युवकेक वयसमे अफ्रीकाक गाम्बिया देशसँ अपहरणक पछाति आनल गेल छलाह, तनिका सहित अगिला सात पीढ़ीक सन्ततिक यातनाक इतिहास मानैत छथि। कतेको अन्वेषककें एहि कथाक ऐतिहासिकतापर संदेह छनि, किन्तु, ई कृति कालजयी छैक, से के नहि मानत। मानल जाइछ, एहि पोथीकें पढ़िकय बहुतो पाठक विचलित भ' गेल रहथि! दास प्रथापर आधारित दोसर पोथी जकरा एक अर्थमे अमरीकी गृह-युद्धक जनक मानल जाइछ ओ थिक, Uncle Tom's Cabin । मानव त्रासदीक ई दुनू कथा पढ़बा योग्य थिक। एहि पुस्तकालय सबमे अनेको व्यक्तिक व्यक्तिगत पुस्तकक संकलनक छोट-पैघ खण्ड सेहो छैक, जकर स्वरूप दाताक प्रति आदरस्वरूप यथावत राखल गेल छैक। चैपल-हिलमे रहैत हमरा जतेक संभव भेल एतुका पुस्तकालयक लाभ उठौलहुँ।

लौरेल रिज अपार्टमेंट्स, रॉले, आ केरी

नेपाल आ भारत देश दू थिक। किन्तु, नेपाल वा भारत यात्रा एहि दुनू देशक नागरिक लेल विदेश यात्राक कोटिमे नहि गनल जाइछ। अस्तु, अमेरिकाक ई यात्रा हमरालोकनिक प्रथमे विदेश यात्रा थिक। सत्यतः, हम इतिहास आ भूगोलमे बड़ कमजोर छी। छठम-सातम वर्गक आगू ई विषय सब पढ़बाक अवसर कहियो नहि भेल। तें, ई कहब अतिशयोक्ति नहि हयत जे अमेरिकाक सम्बन्धमे हमर ज्ञान सर्वथा सीमित अछि। आब एखन अमेरिकामे छी। अस्तु, जतेक भ' सकय जानि बूझि ली।

हम भारतीय सेनामे करीब पच्चीस वर्ष सेवा केने छी। सेनामे छुट्टीक बाध्यता रहैत छैक। किन्तु, कमी नहि। किन्तु, हमरा जनैत छुट्टी आ 'परफेक्ट हॉलिडे' मे अन्तर छैक। 'परफेक्ट हॉलिडे' माने, एहन समय, जखन किछु सोचय नहि पड़य। मैथिलीमे एकटा लोकोक्ति छैक, 'बैसल ठाम खाइ छी, पानि-जकाँ दिन बितइए।'

एहि लोकोक्तिक उपयोग तँ काहिल आ बैसल मनुक्ख लेल होइत छैक। मुदा, हमरा जनैत ई 'परफेक्ट हॉलिडे'क उदाहरण सेहो थिक। चैपल-हिल केर हमर यात्रा एहने 'परफेक्ट हॉलिडे' छल। हमर बेटी-जमाय एतय 'लौरेल रिज अपार्टमेंट' नामक एहि छोट-सन हाउसिंग काम्प्लेक्समे रहैत छथि। लौरेल रिज अपार्टमेंट आसानीसँ शिमला-दार्जिलिंग वा मसूरीक रिसोर्ट-जकाँ कहि सकैत छियैक। किन्तु, इलाका ने ओहन पहाड़ी आ ने प्रायः ओहन ठंढा। किन्तु, चीड़-देवदारुक गाछक मृदुल छाया, सुखद रौद, रंग-बिरंगक पक्षी आ एकदम शांत वातावरण। विद्यार्थी वा लेखक-कवि लेल ई स्थान एकदम उपयुक्त, पुरान देहरादून आ चकरातासँ कनिएक भिन्न। अस्तु, हम प्रतिदिन, भोरे उठि चाहक बड़का मग ल' कय बाहरक बरामदा, जे लगक भूमिसँ चारिए छौ इंच ऊँच छैक, बैसैत छी, आ कोनो पोथी, पत्रिका वा कंप्यूटरपर अपन रुचिक वस्तुक पारायण करैत छी। सुष्मिता-सिद्धार्थक गमलाक फुलवारी, लगक जंगल आ आसपासक चिड़ै चुनमुनी ताधरि हमर संगबे रहैत अछि, जाधरि आओर सब गोटे अपन-अपन चाह ल' कय नहि बहराइत छथि। एतय घरे-घर राष्ट्रीय समाचार पत्र बेचबाक संस्कृति नहि छैक। लोकल समाचारपत्र स्थानीय डिपार्टमेंट स्टोरमे भेटि जायत। किन्तु, ओकर अधिकांश भागमे स्थानीय व्यापारिक प्रतिष्ठानक प्रचार, स्थानीय खेल कूद वा सांस्कृतिक गतिविधिक समाचार, आ विज्ञापन छपैछ। जकरा हम सब समाचार कहैत छियैक, से थोड़। अस्तु, भोरे भोर चाह संगे समाचार पत्र जँ चाही, तँ, इन्टरनेट पर पढ़ि लियअ। एहि ठाम लुक्खी सब खूब छैक। सेहो मुस्तण्ड, निर्भीक आ दोसर रंगक। जँ डरयबैक नहि, तँ, टेबुल परसँ बिस्कुट लूझिकय ल' जायत! चिड़ै चुन-मुनी छोट-छोट। जल्दी लग नहि आओत। ई छोट-छोट चिड़ै, जेना, कार्डिनल वा बगड़ाक रुचि कीड़ा-मकोड़ा वा छोट-छोट दाना बिछबामे रहैछ। पैघ चिड़ै प्रायः तटीय इलाकामे होइक। तटीय इलाका एतयसँ दूर छैक। एहि कॉलोनीमे गोड़ बीसेक छोट-छोट दू मंजिला कॉटेज। लगहिमे स्विमिंग पूल, खेलेबाक इलाका। धिया-पुताक हेतु झूला, स्लाइड, घास। बेसी घरवासी, विद्यार्थी लोकनि। सामने नार्थ कैरोलिना बाईपास पर बस स्टैंड। लोकल बाजार जयबा लेल गाछ-वृक्षक बीचे-बीच बाट पकड़ू आ चल जाउ। पड़ोसिया लोकनिक ओतय अयबाक-जयबाक व्यवहार नहि। भारतीय मूलक विद्यार्थी लोकनि समय-समय पर अबैत छथि। कखनो-कखनो हमर बेटी-जमायकेर स्थानीय सहकर्मीलोकनि सेहो अबैत गेलाह। एक दिन सुष्मिताक संगी विद्यार्थी, अमेरिकन लडकीसब, डेरा आबिकय हमर पत्नी, रूपमसँ मसाला चिकन बनायब सिखइत गेलीह, खेलनि, आ बचल भोजन संग ल' जाइत गेलीह। सिद्धार्थक मित्र लोकनि

यदा-कदा क्रिकेट वा टेनिस लेल अबैत छथि। किछु गोटे दिल्लीओक छथि। एकटा मैथिल परिवारक ओतय सेहो गेलहुँ। विदेशमे रहिकय सामाजिकता बनौने रहब मानसिक स्वास्थ्यक संजीवनी थिकैक। अन्यथा, मनुष्य मात्र मशीनक पुर्जा भ' कय रहि जायत।

हमर जमाय डाक्टर सिद्धार्थ श्रीवास्तवकें अपन शास्त्रक अतिरिक्त साहित्य, ललित कला, आ समाजशास्त्रमे सेहो रुचि छनि। अस्तु, हमरा एतय पढ़बाक पोथीक कमी नहि होइत अछि। एतय नन्दन नीलकेनीक पोथी Imagining India, थॉमस फ्रेडमैन केर The World is flat, एरिक स्लोस्सर केर Fast Food Nation: The Darkside of the All American Meal -सन विचारोत्तेजक पोथीक अलावा अमेरिकी इतिहास पर अनेक पुस्तक पढ़बाक अवसर आ समय भेटल। संगहि, इहो गप्प लगसँ बुझबा योग्य भेल जे विश्वक विभिन्न भागसँ आयल, आ विभिन्न जाति, धर्म, इलाका, आ संस्कृतिक लोक कोना एतुका कार्यपद्धतिक एकरूप हिस्सा बनि एहि देशक सामूहिक वैज्ञानिक, आर्थिक, आ सामजिक उत्थानक लक्ष्यमे योगदान करैत अछि। किन्तु, हमरालोकनि जखन अपना अपना ओतय रहैत छी, तखन परिवर्तनक विरोध आ यथास्थितिकें जोंक-जकाँ पकड़ि रहबाक आग्रह हमरालोकनिकें कोल्हुक बड़द-जकाँ जक-थक बन्हने रहैछ। आवश्यकता छैक, हमरालोकनि यथास्थितिक एहि मोहकें लतियाकय दूर करी आ आगू बढ़ी। सुष्मिता आ सिद्धार्थक कार्य-प्रणाली नियमबद्ध छनि। किन्तु, अपना समय आ तरीकासँ काज करबाक काफी स्वतंत्रता सेहो छनि। खाली समयमे सिद्धार्थ हमरालोकनिकें एतयसँ मीलो दूर खेती-बारीक इलाकामे सेहो ल' गेलाह। दूर-दूर धरि पसरल मकइक खेत, अनाजक रखबाक ऊँच-ऊँच साइलो (बखारी)। बीच-बीचमे सघन जंगल बाटे जाइत सर्पाकार, छायादार, मनोरम बाट। कतहु-कतहु संकीर्ण जलधार, छोट-पैघ झील। जॉर्डन लेक एतुका पैघ झील थिक, सेहो एक दिन देखय गेलहुँ। खेती-बारीक एकटा इलाकामे एकटा फार्मपर हमरालोकनि प्रायः प्रत्येक हफ्ता दूध-दही किनय जाइत रही। एहिठाम पितृजा-पास्ता-सन भोजनकेर अलावा आओर कथूक होम-डिलेवरीक सुविधा नहि छैक। फार्मिंग इलाकाक गाओं सब खूब साफ। गंदगी फैलयबाक कठोर दण्ड : 1000 डॉलर, से कतेक ठाम सड़कक काते कात लिखल देखलियैक। चैपल-हिलकेर समीप, अमेरिकामे दस-बीस माइल समीपे बूझल जाइछ, अनेक बाजार सब छैक। बेरा-बेरी हमरालोकनि अनेको ठाम गेलहुँ। विभिन्न प्रकारक रेस्टोरेंट आ भोजन चिखबाक अवसर भेल। ई तँ बूझल अछि अमेरिका अप्रवासी लोकनिक देश थिक। तथापि, अनेक पुस्त बितलाक

बाद अप्रवासी अमेरिकनक सन्तति लोकनि मोटा-मोटी एके रंग भ' गेल छथि। गहिंकी नजरिसँ देखलापर, भाषा वा व्यवहारक कारण नागरिक लोकनिक पूर्वजक राष्ट्रीयताकें चीन्हि सकैत छियनि। हँ, अफ्रीकी मूलक अमेरिकीकें चिन्हब कोनो कठिन नहि। संयोगसँ, हमरा अपन बेटी-जमायक एकटा मित्र-दम्पति, आ एतुका विश्वविद्यालयक मानविकीक शोधार्थी, श्री सेबेस्टियन आ हुनक पत्नी मेरी बेलसँ सेहो परिचय भेल। दुनू परिवारक बीचक मित्रताक कारण सेबेस्टियन आ मेरी बेलकेर ओतय एक दिन अप्रवासी पारिवारिक परिवेशमे स्पेनिश भोजनक अवसर सेहो भेल। डाक्टर सेबेस्टियन प्रायः पोलिटिकल इकॉनमीक छात्र छलाह। छात्र आ विदेशी हेबाक कारण हुनकासँ अमेरिकी फास्ट-फूड व्यवस्थापर खुलिकय गप्प भेल। ज्ञातव्य थिक, अमेरिकी लोकनिकें अपना देशक निंदा सुनबाक ने हिस्सक छनि, आ ने ओ लोकनि अमेरिकी जीवन पद्धतिक आलोचना सुनय चाहैत छथि। ई गप्प अहाँकें अमेरिका यात्राक हेतु प्रकाशित टूरिस्ट गाइड-बुकमे सेहो भेटत। कारण, सोझ छैक : आम अमेरिकीकें अपना देशक बाहरक विषयमे अत्यन्त सीमित ज्ञान, आ अमेरिकाक समृद्धि। दोसर, सम्पूर्ण विश्वक लोकक अमेरिका अयबाक आफन तोड़ब।

चैपल-हिल प्रवासमे एक दिन सिद्धार्थ एतयसँ समीपक केरी नामक शहर ल' गेलाह। ओतय अभिनेता शाहिद कपूरक सिनेमा 'कमीने' देखल। समीपहिक पाकिस्तानी रेस्टोरेंटमे भोजन भेलैक। हम सबठामक भोजन चिखैत छी। इंदिरा गाँधी नहरसँ ल' कय ब्रह्मपुत्र-लोहित-सियांग-सिन्धु आ सयोक धरिक पानि पीने छी। किन्तु, हमरा भारतीय भोजन जतेक पसिन्न पड़ैत अछि ओतेक आओर कोनो नहि। भारतीय आ पाकिस्तानी तंदूरी भोजनक स्वादमे बहुत भिन्नता नहि। तें, एतुका भोजन नीक लागल। दुर्भाग्यवश मैथिल लोकनि अपन भोजनकें बाहर प्रचारित नहि करैत छथि। अन्यथा, रामरूच आ इड़हर, राजस्थान आ गुजरातक गट्टे की सब्जीसँ कोन कम! मिथिलाक भांटा-अदौरी, सरिसबक मशाला देल रामझिंगुनीक झोर, बिना प्याज-लहसुनक हींग बला मासु, आ सरिसबबला माछक झोरक परतर कोन तन्दूरी भोजन करत! मड़ुआ सस्त भेल, तें, लोक दूसि देलकैक। गरीब खेलक, तँ, अपवित्र भ' गेल। मुदा, कड़गर मड़ुआक रोटी, गेन्हारीक साग-नोन-सरिसबक तेल, हरियर सूर्यमुखी मरिचाइ, आ कुच्चा अचार खाक' देखियौ। जँ, भरिपेट बिनु खेने उठि जाइ, तँ, कहब। किन्तु, ई सब जँ फाइव स्टार होटल होइत मिथिलामे आबय तँ पंजाबक 'मक्की दी रोटी, ते सरसों दा साग' सँ कम लोकप्रिय नहि होयत! दुर्भाग्यवश शहरमे रहनिहारि मैथिलानी लोकनिकें

'एक्सक्लूसिव' मैथिल पाककला पर लिखबाक प्रेरणा एखन योरपसँ आयब बांकिए छनि। जखन अनरसा प्रॉक्टर गैम्बल, पेप्सी वा कैडबरी पेटेंट क' लेत तखन ई लोकनि छाती अवश्य पिटतीह!!

विलमिन्टन आ कुरे बीच (समुद्र तट)

हमरालोकनि कमला कातमे जन्म लेने छी। किन्तु, पहिल बेर समुद्र देखैत सैंतालिस साल वयस भ' गेल छल। सेहो कतय : मद्रासक मरीना बीच। गहींर आ मारुख। बंगालक खाड़ी बड्ड तमसाह, हुहुआइत, आ नहि जानि कखन की क' बैसताह। माने, भल' चाही, तँ, दूरे रहू। दोसर बेर समुद्र देखबाक अवसर रामेश्वरम्मे भेल। संगमे माता, भाइजी, एवं रूपम सेहो रहथि। ओहि बेर समुद्रमे स्नान भेलैक। मुदा, ई यात्रा रूपम केर संकल्पक परिणाम, आ मूलतः हमर माताक तीर्थाटनक यात्रा छलनि। ओ तहिया प्रायः नब्बे वर्षक भ' गेल रहथि। जेना माताकें हमर स्वास्थ्यक प्रति शंका रहनि, तहिना हमरो हुनक सामर्थ्यपर संदेह होइत छल। किन्तु, ओहि बेर रूपम अपन संकल्पसँ हुनका रामेश्वरम् ल' गेलखिन। तथापि जँ सत्य कही तँ हमरा समुद्र-स्नानक कोनो आनंदक अनुभव नहि भेल छल। रामेश्वरम्मे समुद्र घोर-मट्ठा, आ उत्थर। ताहिपर अजस्र लोकक भीड़। किन्तु, समुद्र-स्नानक आनन्दक अनुभव एहि बेरुक अमेरिका यात्रामे भेल। हमरालोकनि चैपल हिलसँ करीब पौने दू सौ माइल दक्षिण पूब दिस जायब। चालक सिद्धार्थ। यात्री बांकी तीन गोटे। करीब अढ़ाइ घंटाक यात्रा। नार्थ कैरोलिना राज्यमे कुरे बीच (समुद्र तट) लोकप्रिय टूरिस्ट स्पॉट थिकैक। एतय अमेरिकामे छुट्टीक दिन घरमे आराम करबाक परिपाटी नहि छैक। बेसी लोक शुक्रदिन साँझहि बाहर निकलि गेल। शनि-रवि मौज-मस्ती केलक। सोम दिन काज पर मुस्तैद। हमरालोकनि कुरे तट जाइत रही, तँ, लगैत छल आधासँ बेसी सैलानी-ए। कतेक गोटे पिक-अप वैनमे 'डर्ट-बाईक' लदने। ककरो गाड़ीपर छोट-छोट मोटर-बोट। हमरालोकनि बीच एरियासँ पहिने एतुका प्रसिद्ध एक्वेरियम देखय गेलहुँ। एक्वेरियमक आरम्भ फ्रेश-वाटर जंतु सबसँ होइत छैक, जाहिमे एतुका माछ, काछु, सांप, आ आन जंतुक संकलन छैक। एकर अतिरिक्त तटीय जलजीवन आ समुद्री जीवनक खण्ड एतुका दोसर प्रमुख संकलन थिकैक। जलीय जन्तु सबमे अमेरिकन अलिगेटर, टर्टल, ऑक्टोपस, कैट फिश, आ साँप सबहक प्रजाति प्रमुख छैक। पूर्णतः एयर कंडिशंड एहि एक्वेरियमक भ्रमणक पछाति हमरालोकनि प्रचुर फोटोग्राफी कयल आ 'जेलो' खाकय तृप्त आ ठंढा भेलहुँ। आब समुद्र-स्नानक हेतु तैयारी पूरा रहैक।

कुरे बीच इलाकाक पूरा अर्थव्यवस्था प्रायः पर्यटने पर आधारित छैक। समुद्रक कछेरहि पर, सड़केक काते-कात अजस्र कॉटेज। लगेमे खुला इलाकामे अनेक शावर। तैराकीक ड्रेसमे जाउ, पहिने कलक पानिमे नीकसँ देह भिजा लियअ आ तखन समुद्रमे स्नान करू। किन्तु, पीबाक जलक कल नहि भेटत! पानि पीबाक हो तँ रेस्टोरेंटमे जाउ। अमेरिकामे हैण्ड-पम्प तँ उनैसमे शताब्दीमे विलुप्त भ' गेलैक। समुद्र तटपर सत्यतः चानन छिलकैत। कतहु एकोटा खढ़ सेहो नहि। हिदायत वएह : गंदगी फैलयबाक दण्ड : 1000 डॉलर। एतेक टाका ककरो लेल कम नहि। तें, समुद्रक कछेरपर ने ककरो सिगरेटो पिबैत देखबैक, ने केओ ओतय पिकनिक करत। पोलीथिन, कागज आ बोतलक तँ चर्चा नहि। नील, पारदर्शी आ शीतल जल। पैसलहुँ तँ निकलबाक मोन किएक हयत। समुद्र शांत। किन्तु जँ-जँ आगू जायब, गहराइ बढ़इत जाइछ, किन्तु, अचानक नहि। तें, अपन ऊँचाइक अनुसार जतेक दूर जेबाक हो जाउ, हेलू। पानिमे बैसू। मदिरापान आ खाद्य पदार्थ, बीच पर वर्जित। समुद्रमे गहींर वर्जित इलाकामे नीकसँ नारंगी रंगक डोरी आ बैलून सबसँ निशानदेही। कोस्टल पुलिसक मोटर-बोटपर निरंतर गश्त। आइ हमरालोकनि एतय समुद्र-स्नानक परिपूर्ण आनन्द लेल। स्नानक पछाति संगे आनल वस्तुक किछु-किछु भोजन भेलैक आ आपस चैपल-हिल। आगू बढ़ि सड़कक कातमे एकटा पार्कमे बैसि सरि भ' कय जलखइ-पनिपियाइ भेलै। अमेरिकामे ई व्यवस्था सड़कक कात आ शहरमे बहुतो ठाम भेटत। पार्क सबमे बैसबाक स्थान, पानि, आ बार्बेक्यूक व्यवस्था। अपन कोयला आनू। मासु-माछ लाउ। बार्बेक्यूक पर जे मन हो पकाउ, खाउ-पीबू, मौज करू। किन्तु, से फेर कहिओ, दोसर बेर।

यु एन सि मेडिकल स्कूल आ जनरल हॉस्पिटल

चैपल हिलमे विश्वविद्यालय परिसरहिमे मेडिकल स्कूल आ नार्थ कैरोलिना जनरल हॉस्पिटल सेहो छैक। सोचल एतुका आँखिक विभाग देखि आबी। अपना विदेशमे पढ़बाक कहियो सेहन्ता नहि भेल, से नहि कहि सकैत छी। मुदा, कहियो प्रयासो केलिएक सेहो नहि। कारण जे किछु होइक। अस्तु, भारतसँ बाहर पढ़बाक अवसर नहि भेटल अछि। इहो सत्य जे हमरालोकनिक समय अबैत-अबैत भारतमे उपलब्ध चिकित्सा शास्त्रक पढ़ाइ आ ट्रेनिंग केर अवसरमे ततबा विकास भ' चुकल रहैक, जे भारतक नीक मेडिकल कॉलेज आ यूनिवर्सिटीक पढ़ाइक सुविधा यूरोप आ अमेरिकाक पढ़ाइ ट्रेनिंगक समकक्ष मानल जा सकैछ। मेडिकल सर्विसेजकेर प्रणालीमे अन्तर छैक से भिन्न बात भेल। एतावता, इन्टरनेटपर एहि विश्वविद्यालयक आँखि

विभाग आ फैकल्टी लोकनिक लिस्ट देखलहुँ। कैटरेक्ट(मोतियाविन्दु) आ रेफ्राक्टिव सर्जरी विभागक प्रोफेसर डाक्टर कोहेन हमर सामानधर्मा थिकाह। अस्तु, प्रोफेसर कोहेनकें ईमेल कयल। जबाव तुरत आबि गेल। हमरा लग समयक कोनो कमी नहि छल। अस्तु, अगिले हफ्ताक आरम्भमे कोहेनक संग दू दिन बितयबाक प्रोग्राम बनल, जाहिमे अमेरिकाक एहि अस्पतालक कार्य-प्रणालीकें लगसँ देखबाक अवसर भेटल। पहिल दिन भोरहि अस्पतालसँ कनेक हँटिकय डाक्टर कोहेनक ऑफिसमे गेलहुँ। हुनक सेक्रेटरी (नाम बिसरि गेले) पहिने अपन डेस्क लग ल' गेलीह आ कंप्यूटर खोलि हेल्थ इंस्योरेन्स प्रोटेक्शन एक्ट (HIPPA) केर डेक्लेरेशन फॉर्म खोलि आगू द' देलनि। गप्प ई जे एहि अस्पताल वा एतुका रोगीसँ सम्बन्धित जे किछु गोपनीय जानकारी देखबैक तकरा बाहर प्रकाशित केला पर 250000 डॉलर धरिक दण्ड देब स्वीकार करैत छी। हम फॉर्म पढ़ल, प्रिंट कयल, आ हस्ताक्षर क' कय सेक्रेटरीकें थम्हा देलियनि। सोचलहुँ, ई भेल 'रूल-ऑफ-लॉ'। हमरालोकनिक ओतय बाहर विदेशसँ कतेक डाक्टर आ ऑब्जरवेशनक हेतु कतेको विद्यार्थी अबैत छथि। रोगीकें देखलनि, ऑपरेशन केलनि, आ चल गेलाह। आइ धरि ककरो कोनो कागजपर दस्तखत करैत भारत आ नेपालमे नहि देखने छियैक। कानूनक किताबमे लिखल रोगीक प्राइवेसीक गप्प ककरो मोनहुमे नहि अबैत छैक। भारतमे आम सरकारी अस्पतालमे तँ रोगी मूर-भाटा अछि, आ डाक्टर देवता। से उचित नहि। कानूनक प्रति प्रतिबद्धता विकसित समाजक लक्षण थिकैक। तें, अमेरिका वा यूरोपमे पैघ वा छोट ककरो ई कहबामे संकोच नहि होइत छैक, जे अमुक विषय कानूनक विरुद्ध छैक, वा ई नहि भ' सकत। अपना ओतय पैघ छी वा छोट कानूनक गप्प करब तँ थापड़ो पड़ि सकैत अछि। कानून हँसी-विनोदक गप्प तँ सबतरिए अछि। आब अजुका कार्यक्रम :

आइ कोहेन ऑपरेशनमे छथि। अस्तु, निर्देशानुसार हुनक सेक्रेटरी हमर संग भेलीह आ ओ पी डी ब्लाकसँ करीब सौ-दू सौ मीटर दूर 'डे-केयर' ब्लॉकमे ऑपरेशन थिएटर धरि हमरा पहुँचा देलनि। एहि अस्पतालक ऑपरेशन थिएटरक कार्य पद्धति आ हमरालोकनिक कार्य पद्धतिमे समानता आ असमानता दुनू छैक। काज एके रंग। मॉडर्न मेडिकल साइंस सम्पूर्ण विश्वमे एके रंग छैक। हमरोलोकनि अमेरिकने टेक्स्ट-बुक पढ़ैत आ पढ़बैत छी। चिकित्साक प्रणाली एके छैक। तखन अमेरिकामे सिस्टम 'अप-टू-डेट' छैक, से आब प्राइवेट सेक्टरमे भारतीय अस्पतालमे सेहो भेटत। किन्तु, अमेरिकामे चिकित्सा अपेक्षाकृत अत्यन्त महग छैक। हमरालोकनि थोड़ समयमे अधिक रोगीक उपचार करैत छी। एतय सिस्टम धीमा छैक। तुलना

करिएक तँ ओहि दिन, दिन भरिमे डाक्टर कोहेन छौ टा कैटरेक्टक ऑपरेशन केलनि। हमरालोकनि नौ बजेसँ एक बजेक बीच दस टा कय लैत छी! केओ बेसिओ करैए। तखन, अन्तर ई छैक जे एतय किछुओ निर्धारित रीतिसँ एको रत्ती भिन्न नहि होइत छैक, जकरा protocol-based सिस्टम कहल जाइत छैक। ताहिपर एतय कोनो वस्तु आ व्यवस्थाक कमीओ नहि छैक। तथापि, स्टाफक संख्या कम करबाक कारणे एतुका सिस्टममे वस्तुक बरबादी बेसी होइत छैक। एकरा wasteful system कहबैक। उदाहरणार्थ, एतय प्रत्येक ऑपरेशन लेल 'पैक्ड' उपकरणक डब्बा बाहरसँ अबैत छैक। जे उपयोग भेल से भेल, बाकी डस्ट-बिनमे। एहिसँ बायोमेडिकल कचरा तँ बढ़िते छैक, मूल्य सेहो। ई स्पष्ट जे अमेरिकामे मैनेजमेंटक क्षेत्रमे जतेक शोध होइत छैक ताहिसँ बेसी प्रायहे कतहु आन ठाम होइत होइक। तें, ई सब हुनका लोकनिक दृष्टिपर नहि पड़ैत हेतनि, से असम्भव। किन्तु, एहि सबमे केवल मूल्य एके टा विन्दु भेलैक ने। सब किछुमे सम्पूर्ण व्यवसाय आ अनेक उद्योगक स्वार्थ निहित छैक, जकरा सब समाज भिन्न-भिन्न दृष्टिएँ देखैत अछि। जेना, भारतमे उत्पादित, जेनेरिक औषधिक मूल्य विकसित देश सबमे उत्पादित ओही सब औषधिक ब्रांडेड प्रतिरूपसँ कतेको गुणा सस्त, किन्तु, गुणमे समान छैक। किन्तु, विकसित देशक उद्योगकें एहिसँ हानि होइत छैक। तें, ओ लोकनि स्थानीय लोकमतक विरुद्ध अनेक-अनेक बहानासँ जेनेरिक औषधिक आयातक विरोध करैत रहैत छथि।

डाक्टर कोहेनक संग जे दू दिन बीतल ताहि दुनू दिन कोहेन आ हुनक विद्यार्थी मीलि क' छौ-छौ टा कैटरेक्टक ऑपरेशन कय लेंस लगौलनि। ऑपरेशन वएह जे हमरालोकनि करैत छी। किन्तु, एतय डॉक्यूमेंटेशन पूर्णतः इलेक्ट्रोनिक छैक। डाक्टर ऑपरेशन केलनि आ डिक्टाफोनपर जा कय सब किछु रिकॉर्ड क' अयलाह। कोन ठेकान बंगलोर, हनोई वा क्वालालंपुरमे बैसल 15 डॉलर प्रतिदिनक वेतन पर खटनिहार केओ मेडिकल ट्रांसक्रिप्शनक क्लर्क ओकरा रातिमे बैसल टाइप करैत होथि! एतय तँ मोटर गराज धरिमे आधा घंटा लगाकय कारकें केवल चेक करबाक न्यूनतम रेट साढ़े सैंतीस डॉलर लिखल देखलियैक!

अस्पतालमे दोसर दिन डाक्टर कोहेन ऑपरेशनक पछाति हमरा अपना संग वार्ड-राउंड पर ल' गेलाह। वार्ड जेबासँ पूर्व हमरालोकनि ओ पी डी ब्लॉक गेलहुँ। ओतय एकटा नव उपकरण (anterior segment OCT) देखबैत, डाक्टर कोहेन कहलनि, 'This is our new toy' (ई हमरालोकनिक नवीनतम उपकरण थिक) हम कहलियनि, 'ई तँ हम भारतमे 2006 मे देखने छियैक'। ओ कनेक चकित

भेलाह। असलमे आब विदेशमे जहिना उपकरण सबहक इजाद होइत छैक, किनबाक सामर्थ्य अछि, तँ, भारतहुमे तुरत आबि जाइत छैक। केवल टाका चाही। आर्थिक उदारीकरणक युगसँ पूर्व अनेक बाधा रहैक, से आब नहि छैक।

ओ पी डी ब्लॉकक संक्षिप्त राउंडक बाद इनडोर राउंडक हेतु डाक्टर कोहेन एकटा पारामेडिककें हमरा संग लगा देलनि। ई बालक बससँ हमरा जनरल हॉस्पिटलक 'इनडोर' धरि ल' गेलाह। वार्डमे डाक्टर कोहेनक स्नातकोत्तर छात्र, डाक्टर लेस्ली, हमर प्रतीक्षामे तत्पर रहथि। राउंड आरम्भ हेबासँ पूर्व कोहेन सेहो पहुँचलाह। कोहेनक संग हमरालोकनि रूमे-रूम रोगी सबकें देखैत गेलहुँ। एतुका वार्ड आ उच्च श्रेणीक होटल-रूममे कोनो अन्तर नहि। आब भारतोमे प्राइवेट अस्पताल सब ओहने लागत, भले उपचारक स्तरमे भिन्नता होइक। राउंडक क्रममे रोगी देखैत आगू जाइत आगू बढ़लहुँ। अपन सीनियर प्रोफेसर संग हमर मित्रता आ सौजन्य देखि डाक्टर लेस्ली अपन हाथक एकटा यंत्र हमरा दिस बढ़बैत, हमरो रोगीकें देखबाक आग्रह केलनि। किन्तु, डाक्टर कोहेन तुरत इशारासँ हुनका रोकि देलखिन। रोगीकें हमर देखब कानूनक विरुद्ध होइतैक आ अमेरिका 'रूल ऑफ लॉ' केर देश थिक!

हॉस्पिटलसँ छुटलाक पछाति हमरा डाक्टर कोहेन संग डिनरकेर निमंत्रण छल। बाहरसँ आयल सर्वथा अपरिचित व्यक्तिक प्रति ई सौजन्य आ मित्रभावसँ हम प्रभावित भेलहुँ। ओहुना डाक्टर कोहेन स्वभावमे मृदु आ व्यवहारमे सौजन्यशील प्रतीत भेलाह। अमेरिकन सब ओहुना मित्रतापूर्ण मानल जाइछ, तकर प्रत्यक्ष अनुभव हमरा लेहमे भेल छल। हमरालोकनिक लेह जनरल हॉस्पिटलमे अमेरिकाक हवाई राज्यक, अमेरिकी सेनाक ट्रिपलर मेडिकल सेंटरसँ तीन टा अमेरिकन स्पेशलिस्ट दू-तीन दिन लेल हमरालोकनिक ओतय लेह आयल छलाह। जे किछु।

भोजन लेल डाक्टर कोहेन हमरालोकनिकें एतुका फ्रेंक्लिन स्ट्रीटक एकटा नीक रेस्टोरेंटमे ल' गेलाह। संगमे ईरानी मूलक हुनक पोस्टग्रेजुएट छात्र डाक्टर श्रीमती इस्माइली सेहो रहथि। डाक्टर कोहेन हमरा पुछलनि, 'भारतमे लोक भोजनक संग कोन पेय पिबैत अछि, व्हिस्की?'

हम कहलियनि, 'भोजनक संग भारतमे पेय केर कोनो नियत परिपाटी नहि छैक.' तथापि, कोहेन रेड वाइन मंगओलनि। दिव्य इटालियन भोजन, रेड वाइन, नीक कम्पनी, आ चैपल हिलक मृदु मौसम केर साँझ नीक लागल। हमरालोकनि भोजन समाप्त कयल। आ We called it a (fine) day। वापसीमे डाक्टर कोहेन हमरा ल' कय हमर डेरा विदा भेलाह। बाटमे हमहीं बस स्टैंड लग उतरि गेलहुँ।

सोचल आब सबटा रेहल खेहल अछि। कोहेन 65 वर्षक छथि। दिन भरिक काजक पछाति जएह दस मिनट बचि जेतनि। किन्तु, हमरा बस भेटबामे कनेक विलम्ब भ' गेल। फलतः हमरा देरी होइत देखि हमर खोजमे हमर जमाय सिद्धार्थ हमरा तकबा लेल विदा भ' गेलाह। 2009 मे अमेरिकामे हमरालग मोबाइल छल नहि। विदेशमे धिया-पुताकें बाहरसँ आयल परिवारजन लेल चिंता भ' जाइत छैक। यद्यपि, जँ अंग्रेजी बजैत होइ, आ विदेशमे सुरक्षा आ असुरक्षाक तथ्यसँ परिचित होइ, तँ, शंकाक कोनो कारण नहि। हमरा चैपल हिल रेहल खेहल बूझि पड़ैत छल। हमरा धियापुताक चिन्ताक अनुमान किएक हयत। एखनो हमर सोच तेहने अछि। अस्तु, जखन हम डेरा पहुँचलहुँ सिद्धार्थ हमर खोजमे चैपल हिलकेर दू चक्कर लगा, थाकि कय हमर प्रतीक्षामे डेरे पर बैसल रहथि। सुष्मिताक चिन्ताक निदानमे हमरा एको क्षण किएक लागत। पत्नी? हमर विचार ई, जे, जखन अपन गलती नहिओ हो, पत्नीकें सफाइ देबाक प्रयास नहिए करी। ई गप्प तिरुवल्लुवर वा चाणक्य नहि कहने छथिन, मुदा, तैयो, भल जे, हमर गप्प मानि ली। अस्तु, हम चेहरा पर मुसुकी दैत कहलियनि, चलू, ई अध्याय एहि यात्राक चटनी-अचार भेल! सैनिक आ ताहिपर पाराट्रूपर, हमरा लेल चिन्ता जुनी करी। हम कतहु हेड़यबा योग्य नहि छी!!

अमेरिकाक सिंहद्वार-न्यूयॉर्क सिटी

शहर आ नगरकें परिभाषित करब आसान नहि। आ जँ आसान छैक तँ, शहर नगर जकरा जेहन लगैत छैक, ओ ओकर नाम ओहने राखि देलक। किन्तु, एखनुक नाम बदलबाक उदाहरणसँ ई बूझब कठिन नहि जे कोनो नाम याजुगी नहि। तथापि, पहिने बहुतो जनशून्य, अनामा स्थानमे जखन लोक पहुँचैत छल, तँ, जे फुरलैक, वा जे किछु सबसँ बेसी आकृष्ट केलकैक ओही अनुसारे नाम राखि देलक। तें, ने पुरान पूर्णिया जिलामे चोरकट्टा, शिरकट्टा, गरदनिकट्टा, कौआउड़ा, हाथीडूबा, आ दहीभात-सन गाम रहैक। तहिना आरम्भमे जखन यूरोपसँ अप्रवासी लोकनि अमेरिकामे पयर देलनि, तँ, बहुतो ठामक नाम ने बूझल छलनि आ ने छलैक। तें, मासो भरि महासागरक यात्रा कय जहाज कतय घाट लगलैक, के कहत। तखन स्थानक नामकरणक समस्या हयब उचिते। जे इलाका जनशून्य रहैक, तकर नाम के कहितनि। जाहि स्थानमे आबादी छलैको, आगंतुक लोकनिकें स्थानीय लोकक भाषा, के बुझबितनि। अतः, कतेको इलाकाक नागरिक जतयसँ आयल रहथि, अपन शहर-नगरक नाममे न्यू लगा देलखिन। अस्तु, यॉर्कसँ न्यूयॉर्क, इंग्लैंडसँ न्यू इंग्लैंड, हैम्पशायरसँ न्यू, हैम्पशायर प्रभृत्तिक सैकड़ो स्थानक नाम अमेरिकामे सुनबैक। स्थानक नामकरणक आविष्कारक सैकड़ो भिन्न तरीकामे सँ ई मात्र एकटा नमूना भेल। अमेरिकाक शहर आ नगरक नामकरणक इतिहास लेल तँ एकटा स्वतंत्र पोथी चाही। अस्तु, एखन विषयपर आबी।

सर्वविदित अछि, अमेरिका देशक हेतु एकटा आओर विशेषण उपयुक्त होइछः Melting Pot। माने, विभिन्न, देश, धर्म, भाषा, रंग, आ स्वरूपक लोकक खदकैत कड़ाह महाकुम्भ जाहिमे आबिकय विभिन्न ठामक लोकक संयुक्त संस्कृति एहन खिच्चड़ि भ' गेल जकर नाम अमेरिका थिक। असलमे Melting Pot क विशेषण सर्वप्रथम न्यूयॉर्क शहरे लेल भेल छलैक। न्यूयॉर्कक बंदरगाह यूरोपीय आप्रवासक मुख्य द्वार छल। किन्तु, खिच्चड़िक कथा पछाति। एखन न्यूयॉर्कक गप्प करी। न्यूयॉर्क कतेक अर्थमे भारतक मुंबई-सन अछि : तटीय इलाका, पर्यटन,

शिक्षा, संस्कृति, स्वास्थ्य-सेवा, कला, पत्रकारिता, विश्वव्यापार, आ अपराधमे संलग्न विभिन्न प्रकारक जनसमूहक विशाल नगर। हमरालोकनि सितम्बर 2009 मे बेटी-जमायक संग न्यूयॉर्क पहुँचल रही। ओहि समयमे हमर जमाय, सिद्धार्थजीक मित्र कल्पित देसाई न्यूजर्सीमे रहथिन। अस्तु, हमरालोकनि हुनके आवासपर डेरा जमाओल। न्यू जर्सी आ न्यूयॉर्क सिटीमे बेसी दूरी नहि, केवल बीचमे समुद्र आ नदी छैक। दुनू स्थान रेल, सड़क आ हवाईमार्गसँ नीक-जकाँ जुड़ल अछि। अस्तु, न्यूयॉर्कमे काज केनिहार बहुतो गोटे न्यूजर्सीमे रहैत छथि आ प्रतिदिन न्यूजर्सी आ न्यूयॉर्कक बीच अबैत जाइत छथि। हमरो लोकनि दू दिनक अवधिमे चारि बेर न्यू जर्सी ट्रांजिट ट्रेनसँ न्यूयॉर्क आ न्यूजर्सीक बीच यात्रा कयल। हमरा लेल अमेरिकामे ट्रेन यात्राक ई पहिले अवसर छल। ट्रेन दिल्ली मेट्रोक जेठ भाइ। स्वरूपमे दिल्ली मेट्रो नीक। सेहो सहजहि। डेढ़ सौ वर्षक वयोवृद्ध आ 25 वर्षक युवकमे अंतर कोना ने हेतैक।

हमरालोकनि जहिया चैपल हिलसँ न्यूयॉर्क आयल रही, सप्ताहांत रहैक। कल्पित अपने हमरालोकनिकें एयरपोर्टसँ अनबा लेल फिलेडैल्फिया शहर आयल छलाह आ घुरती बेर पुनः ओत्तहि पहुँचा गेलाह। कल्पित गुजराती मूलक भारतीय आ हमर जमायक सहपाठी थिकाह। ई किछुए वर्ष पूर्व नार्थ कैरोलिना विश्वविद्यालय चैपल हिलमे पीएचडी समाप्त कय न्यूजर्सीमे काज करैत छथि। पत्नीकें कल्याणक योग्यता छनि। किन्तु, एतय ई दूइए गोटे रहैत छथि। हिनका ओतय अयलासँ सिद्धार्थ-सुष्मिताकें पुरान मित्रक संग रहबाक अवसर तँ भेटिए गेलनि, हमरालोकनिकें होटलक हुज्जतिक आलावा दू दिन न्यूयॉर्क घुमबामे दू गोटे आओर संगबे भ' गेलाह। दुनू दिन हमरालोकनि प्रिन्सटन स्टेशन जंक्शनसँ न्यूजर्सी ट्रांजिटक ट्रेन पकड़ि न्यूयॉर्कक पेन स्टेशन धरि आबि भूमिगत तहखानासँ सोझे न्यूयॉर्कक मैनहाटेन धरि आबि जाइ।

अमेरिका हो वा न्यूयॉर्क, बाहरी जनसमुदायकें जे एकटा छवि अमेरिकाक नाम लितहि दृष्टिपर अबैत छैक ओ थिक 'स्टेचू ऑफ लिबर्टी'। अस्तु, हमरालोकनि सोझे लिबर्टीए देखबाक हेतु विदा भेलहुँ। बहुत दिन पहिनहि जखन दरभंगामे विद्यार्थीए रही, 'रीडर्स डाइजेस्ट'क एक अंकक 'संक्षेपित पुस्तकक' खण्डमे लिबर्टीक मूर्ति कथा पढ़ने रही। बूझल छल, फ्रांसमे निर्मित ई मूर्ति जहाजपर अमेरिका आनल गेल छल। मूर्तिक आकार ततबे टा छैक जे एकर हाथक एक-एकटा आंगुरक नमती 1-1 मीटर छैक। लेकिन, से गप्प अहम नहि। एखनि भारतमे 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी'क स्थापनाक पछाति व्यक्तित्व, मूर्तिक विराटताक समक्ष बौन

प्रतीत होइत अछि। किन्तु, अमेरिकाक प्रसिद्धिक कारण लिबर्टीक आकार नहि थिक बल्कि, लिबर्टीक मूर्ति एहि तथ्यक द्योतक थिक जे अमेरिका मनुक्खक विचार आ व्यवहारक स्वतंत्रताक भूमि थिक। एहि बीचमे 'दक्कन क्रोनिकिल' नामक समाचार-पत्रक स्तम्भकार फारूख धोंडीक विचार पढ़लहुँ। हुनकर कहब, जे प्रसिद्धिक कारण जँ आकार होइतैक तँ माइकलएंजेलोक प्रसिद्ध वास्तु डेविड केर मूर्तिक गणना एहन कालजयी कृतिमे किन्नहुँ नहि होइतैक। विचार हमरा संगत लागल। तें, हमरा जनैत, लिबर्टीक ऊँचाइ एकर वास्तविक ऊँचाइसँ बहुत बेसी। लिबर्टी केवल एकटा विचारकेर मूर्त प्रतीक थिक। ततबे।

अहम बात ई थिक, जे, अमेरिकामे विचार आ व्यवहारमे स्वतंत्रताक आबोहवा अठारहमे शताब्दीमे बहब शुरू भ' गेल छल। तखनहि एतय स्वतंत्रताक उद्घोष भ' गेल छल। ई सत्य जे सभ्यताक रूपमे हमरालोकनि बहुत प्राचीन छी आ भारतक सोच एहिसँ बहुत आगू छल। तथापि, जाहि युगमे हमरालोकनि अपनहिमे लड़िकय अपने घरमे विदेशी शासकलोकनिक पयरकें दृढ़ करैत रही, तखन अमेरिकाक नागरिकलोकनि अपन पिता-पितामहक भूमि ब्रिटेनक प्रति विद्रोहक विगुले टा नहि बजौलनि, बल्कि, ब्रिटिश शासनकें 1776 ए ई. मे पराजित कय स्वतंत्र राष्ट्रक निर्माण कयनि। दुर्भाग्यवश अमेरिकामे हारल ब्रिटेन तहिया भारतमे पयर पसारि रहल छल। अस्तु, सत्यकेर दुनू पक्षक अवलोकन एहि ऐतिहासिक तथ्यक यथार्थकें सबहक सोझाँ रखैछ। तथापि, अमरीकी जीवनक दोसरो पक्ष छैक। लिबर्टीक प्रतिमा भले देशक परिचय भ' जाथु, जाधरि अमेरिकाक प्रत्येक नागरिककें स्वतंत्र जीवन जीबाक स्वतंत्रताक अनुभूतिक बोध नहि हेतैक ताधरि लिबर्टीकेर मूर्ति, मूर्ति मात्रे रहतीह। हमरोलोकनिक शास्त्र-पुराणमे मनुष्यक समानता आ समान अधिकारक चर्चा छैके। किन्तु, शास्त्रक भीतरक चर्चा, ने समाजक रीतिक द्योतक थिक, आ ने कोनो रीति सब ठाम आ सब युगमे लागूए होइछ।

अस्तु, हमरालोकनि टैक्सी लेल आ लोअर मानहाटन आबि 'स्टेटेन आइलैंड फेरी' क टिकट कीनल आ लिबर्टीक प्रतिमाक दर्शन लेल विदा भेलहुँ। सर्वविदित अछि, न्यूयॉर्क बंदरगाह स्थित लिबर्टी आइलैंड, लिबर्टीक भूमि थिक। समीपहिक एलिस आइलैंड पर अमेरिकामे प्रवेशसँ पूर्व अप्रवासी लोकनि आबिकय जमा होइत छलाह। एलिस आइलैंडक ओ भवन जाहिमे अप्रवासी लोकनिक जाँच-पड़ताल होइत छल, आब एतुका संग्रहालय आ दोसर प्रमुख आकर्षण थिक। आइ हमरालोकनिक फेरी (नाओ) ने लिबर्टी आइलैंड जायत आ ने एलिस आइलैंड। स्टेटेन आइलैंड नामक ई फेरी थोड़बे दूर आगू स्टेटेन आइलैंड धरि जायत आ

जाइत-अबैत हमरालोकनि लिबर्टीकें नीकसँ निहारैत जायब। सत्य पूछी तँ द्वीप पर जाकय भ्रमण, आ द्वीपकें दूरसँ देखब, दुनूक मजा अलग छैक। जखन जतेक समय, बजट, आ जेहन रुचि होअय प्रोग्राम बनाउ। हमरो लोकनि सएह कयल। ज्ञातव्य थिक, आरम्भमे न्यूयॉर्क हार्बर आ आसपासक अनेक द्वीप आ भूमिक बीच यातायातक साधन केवल नाहे टा रहैक। जेना, सिमरियाघाटमे राजेंद्र-पुलक निर्माणसँ पहिने जहाज चलैत रहैक, वा पहलेजघाट आ महेंद्रूघाटक बीच महात्मागांधी-सेतु बनबासँ पूर्व जहाज चलैत छल। किन्तु, क्रमशः मैनहाटेनसँ जेना-जेना न्यू जर्सी, ब्रूकलिन, ब्रोंक्स, आ क्वीन्स आइलैंडक हेतु पुल आ भूमिगत रेल बनैत गेलैक, फेरी सेवा बंद होइत गेल। पर्यटनक कारण स्टेटेन आइलैंड फेरी एखनो जीवित अछि। किन्तु, कहिया ई इतिहास भ' जायत, के कहत।

करीब एक घंटाक एहि समुद्र-यात्रासँ लिबर्टीक प्रतिमाक अनेक फलक खूब नीकसँ देखबाक मौका भेटल। संगहि, एहि यात्रामे एहि निर्मल समुद्री वायु आ बेरू पहरक रौदक सेवन सेहो कयल। समुद्रक तरंग, ऊपर उड़इत सीगल पक्षीक स्वर, पर्यटक लोकनिक सामूहिक कोलाहल, आ तेज बसातक संयुक्त प्रभावक आनंद अद्‌भुत लागल। डिजिटल फोटोग्राफीक कमाल : जतेक मोन हो, फोटो घीचू। लिबर्टीक प्रतिमाक आ समुद्रक सैर आ जलहवाक सेवनक पछाति हमरालोकनि मैनहाटेनक सड़क सब पर किछु काल एहिना तफरी मारल। एहि तफरीक बीच अकस्मात एकटा मैथिल दम्पति आ हुनक नेनासँ भेंट भ' गेल। हमरालोकनिक अपनामे मैथिली बाजब परिचयक सूत्र बनल। हमरालोकनिक बोली सूनि ओ लोकनि आकृष्ट भेल छलाह। दम्पति मधुबनीक रहथि। ओ लोकनि अपने तँ मैथिली बजिते रहथि, दस वर्षसँ छोट नेना सेहो मैथिलीमे गप्प करैत रहथिन से नीक लागल। हमरा गौरव अछि हमरोलोकनि मैथिलीकें परिवारमे जोगाकय रखने छी। तथापि, जोगाओल वस्तु कतेक दिन धरि सुरक्षित अछि, के कहत! आब आगू बढ़ी।

एहिठाम न्यूयॉर्कमे जे किछु छैक, सब विश्वप्रसिद्ध। कारण, एक, विश्वभरिक लोक एतय अबैये, जे किछु देखि कय जाइत अछि, गप्प-सप्पमे, लेखमे, ब्लॉगमे, सिनेमामे, संस्मरणमे एतुका सब किछु नीक-बेजायक चर्चा करैत अछि, तँ, सब किछु चर्चित आ प्रसिद्ध कोना ने होयत। दोसर, प्रसिद्ध स्थानक अदनो वस्तु आ स्थानक प्रशंसा होइत छैक। औपनिवेशिक युगमे ओ सब वस्तु जे ब्रिटेनसँ अबैत छल तकर चारूकात तेहन आभामंडल (halo) होइत छलैक आ तकर ततेक प्रशंसा होइत छलैक जे भारतक बनल नीको वस्तु अनेरे लाजे काठ भेल रहैत छल। जे

किछु। आगू विश्व व्यापारक केंद्र, वाल-स्ट्रीट, आ वाल-स्ट्रीटक प्रसिद्ध 'बुल' (सांढ़) देखल। चलैत-चलैत वियतनाम वार मेमोरियल सेहो देखल। वियतनाम युद्ध अमेरिकी आ एशियाइ इतिहासक एहन अध्याय थिक जाहिपर कतहु एकमत नहि। अमेरिकामे तँ नहिए टा। किन्तु, देशक छातीपर युद्धक अखाड़ा बनलाक पीड़ा केहन होइत छैक से वियतनामसँ पुछियौक! इराकसँ पुछियौक!! सिरिया-लेबनान सँ पुछियौक, आ यमनकेर गरीबसँ पुछियौक!!!

आगू चलैत-चलैत आन कतेको स्थान पर नजरि पड़ल जकरा फूटसँ देखब ने आवश्यक आ ने हमरालोकनिकें तकर समय अछि। बीचमे भोजनक बेर भेलैक। छुट्टीक दिन। तकैत-तकैत हमरालोकनिकें समीपहिमे एकटा रेस्टोरेंट भेटल। कोनो अफगानी मूलक व्यक्ति एहि होटलकें चलबैत छथि। संयोगसँ, होटलमे शाकाहारी भोजन उपलब्ध छलैक। तें, कल्पित आ हुनक पत्नी आ सिद्धार्थ-सुष्मिता सेहो एतय खा सकैत छथि। जैन निष्ठामे आलू-मूर खायब धरि वर्जित छैक। जैन लोकनि भूमिसँ नीचा उपजाओल कोनो तर-तरकारी धरि नहि खाइत छथि। अस्तु, भोजन भेलैक आ फेर घूमब। किन्तु, छौ गोटेक दल एतय दू भागमे विभक्त भेल। हम आ सिद्धार्थ डाक्टर कोहेन केर कहलापर ऐतिहासिक ब्रूकलिन ब्रिजपर टहलबाक इच्छुक रही। अस्तु, सुष्मिता, रूपम, कल्पित आ हुनक पत्नीकें बाजारमे छोड़ि हमरा दुनू गोटे ब्रूकलिन ब्रिजपर चढ़बाक सीढ़ीक खोजमे पयरे विदा भेलहुँ। लगैत अछि, पन्द्रह बीस मिनट चललो हयब। किन्तु, ने नीचासँ पुलपर चढ़बाक सीढ़ीक भाँज लागल, आ ने पुलकेर ढलाने देखा पड़ल। साँझ होइत जाइत रहैक। ब्रूकलिनकेर इलाका अपराध लेल विश्वविख्यात अछि। आब ओ युगो नहि रहलैक जे लोक केवल पुल देखबा लेल पुल पर पैदल चलत। हमरालोकनिकें वापस न्यूजर्सी जेबाक अछि, से अलग। कल्पित केर पत्नी असक्क छथिन, सेहो नहि बिसरबाक छल। अस्तु, हमरालोकनि वाल-स्ट्रीट लग घूरि अयलहुँ। किन्तु, ब्रूकलिन ब्रिजपर सैर केने बिना न्यूयॉर्कसँ आपस भ' जाइ से मनःपूत नहि भेल। अस्तु, पुलपर होइत ब्रूकलिन रेल स्टेशन धरि जेबाक हेतु टैक्सी ठीक कयल। टैक्सी ड्राइवर पाकिस्तानी आ उर्दूभाषी रहथि। अतः, हुनकासँ कनेक-मनेक गप्पो भेल। एहि ऐतिहासिक पुलपरसँ पार होइत पुलक दुनू भागक ईस्ट रिवरक धार, साँझमे शहरक स्वरूप आ हार्बरमे लंगर खसौने छोट-पैघ जहाज सब सेहो देखल। भारतक विपरीत एतय जहाज सब सड़कक कातमे ओहिना लागल अछि जेना सड़क पर गाड़ी पार्क रहैत छैक। ने कतहु कोनो घेरा, ने कोनो बेढ़ आ ने कोनो सुरक्षा-दल। पैदल यात्री आ ट्रैफिक सेहो चलैत अछि आ जहाज सब सेहो अपन स्थानपर लागल अछि।

एतय दू टप्पी गप्प। ब्रूकलिन ब्रिज 1883 मे बनल। बिहारमे कोइलवर पुल 1862 मे बनल। ई दुनू पुल एखनो स्वस्थ अछि। ब्रूकलिन ब्रिजपर मोटर-कार दौड़इत अछि आ कोइलवर पुल पर रेल आ बस ट्रक चलैत अछि। किन्तु, कोइलवर पुलक करीब सवा सौ वर्ष पछाति (1982 मे) बनल पटनाक महात्मा गाँधी सेतु बीसो वर्ष नहि टिकल। ततबे नहि पछिला बीस वर्षसँ निरंतर मरम्मतिक पछातियो ई कतेक क्षतिग्रस्त अछि से चाहे तँ हवाई जहाजसँ देखियौक वा एहि पुलपरहक ट्रैफिक जामसँ अनुमान करू। ततबे नहि, जतेक दिनसँ एहि पुलक मरम्मति चलि रहल अछि आ जतेक टाका एहिमे लागल अछि ओतेक खर्च आ समयमे एतय दोसर पुल कहिया ने बनि गेल रहैत। किन्तु, से नहि चाही। कारण, जँ एक बेर सौ सालक हेतु पुल बनि गेल तँ Plunder Without Danger (PWD)क विभागे बन्न भ' जायत। अस्तु, हमरालोकनिकें चाही रोगी पुल, जाहिपर प्रत्येक वर्ष रूपैया तहिना खर्च हो जेना गंगामे पानि बहैए। आ एहि दुनूक हिसाब के राखत! जय जगन्नाथ!!

थोड़ समय आ बहुत पैघ नगर। कतहु जायब, चाहे अपने घुमैत होइ वा कंडक्टेड टूर हो, सब स्थान आ सब चीजकें देखब असंभव। हमरालोकनि वर्षो दिल्ली, लखनऊ, चण्डीगढ़, आ बंगलोरमे बिताओल। किन्तु, ओतहु कतेको स्थान देखब एखनो बांकीए अछि। तखन न्यूयॉर्कमे की की देखब? एकर उत्तर एके टा। किछु देखू, आ किछु हवामे अनुभव करू। तकर अनुभव एतहु भेल। दोसर दिन हमरालोकनि शहरमे आबि बाहरसँ फिफ्थ एवेन्यू, एम्पायर स्टेट बिल्डिंग, ब्रॉडवे, टाइम्स स्क्वायर आदि देखल। सेंट्रल पार्क जयबाक ने समय छल आ ने आसानीसँ एतबा कालमे ओतय घुमिए सकैत छलहुँ। तें, निर्णय भेल रॉकफेलर बिल्डिंगपर चढ़ी। 69 तल्ला। फास्ट लिफ्ट। आ बीस डॉलर टिकट। दिनमे हजारो पर्यटक। बूझि पड़ैत अछि, सालो भरि, प्रतिदिन हजारो पर्यटकक आमद-रफ्तसँ एहि ऑब्जरवेशन-डेककें आमदनीक कमी नहि। ज्ञातव्य थिक, ऑब्जरवेशन-डेक एतुका मात्र एकटा आकर्षण थिक। रॉकफेलेर सेंटरक इलाकाक भीतरक सैकड़ो उत्कृष्ट कला प्रदर्शित छैक आ एतुका परिसरमे अनेको व्यवसायक केंद्र छैक। किन्तु, आम पर्यटक लेल ऑब्जरवेशन-डेक मुख्य थिक। तकर कारणो छैक। ऑब्जरवेशन-डेकसँ सम्पूर्ण न्यूयॉर्ककेर विहंगम दृश्य ओहिना देखि सकैत छी, जेना, एफिल टावरसँ पेरिसक। एतयसँ सम्पूर्ण शहर, हार्बर, सेंट्रल पार्क सहित, एतुका सबसँ ऊँच भवन एम्पायर स्टेट बिल्डिंग सेहो देखि सकैत छी। हमरो लोकनि एहि ऑब्जरवेशन-डेकसँ सम्पूर्ण शहरकें नीक जकाँ देखल। एहि हेतु प्रति व्यक्ति 20 डॉलरकेर टिकट बेसी

नहि। संयोगसँ रॉकफेलर भवन केर छत पर ने बेसी भीड़, ने कोनो समयक पाबंदी। तें हमरोलोकनि चारूकात शहरक दृश्य देखल, फोटो खींचल, आ आनन्द केलहुँ। नीचा अयलापर रॉकफेलर सेंटरकेर बाहर पर्यटकक भीड़मे एतुका समाजक किछु एहन झांकी भेटल जे आब भारतीय संविधानक धारा 377क निरस्त भेलाक बाद भारतहुमे प्रायः देखबामे आबय। किन्तु, मोन रखबाक थिक, भारतमे समलैंगिक दम्पति आ युगललोकनि एखन जागरण-मंच लोकनिसँ बचिए कय रहथि तँ भल। कोन ठेकान, स्वतंत्रताक उपभोगक लोभमे कहीं गौरी लंकेश आ नरेंद्र दाभोलकरक परि नहि होइनि! न्यूयार्कमे तकर भय नहि। तें, लोक खुलि कय इच्छाक अनुरूप जीवन यापन करैछ।

दिन भरि भ्रमणक पछाति हमरालोकनि ग्रैंड सेंट्रल रेलवे स्टेशनक बाट धयल। ई स्टेशन कोनो साफ सुथरा मॉल वा पाँच सितारा होटलक लॉबीसँ कम नहि। किन्तु, पाँच सितारा होटलक पछुआड़मे जहिना बम्बईमे धारावीक झुग्गी-झोपड़ीक समुद्र छैक, तहिना एतहु साफ सुथरा भोजनालयमे शुभ्र-शाभ्र पुरुषकें कचरामे सँ भोजन आ पेप्सीक बोतल निकालि झोरामे पैक करैत देखलियनि तँ एके टा धारण दृढ़ भेल : भारत हो वा अमेरिका, कचड़ामे सँ भोजन निकालि पेट भरनिहार निरुपाय मनुक्ख सबठाम छैक, जे, कतहु शहरक अन्हारमे आ कतहु नियोन लाइटक चमकमे नगर आ शहरक नागरिकक चेतनामे नहि आबि पबैछ!

वाशिंगटन डी सी

16म सँ उनैसम शताब्दीक बीच पश्चिमी यूरोपसँ अमेरिका अयनिहार अप्रवासी लोकनिक मुख्य पड़ाव अमेरिकाक पूर्वीए तट छल, जेना, ब्रिटिश, फ्रेंच आ डच व्यापारी सब भारतक कलकत्ता-बम्बई-मद्रास, पांडिचेरी-चन्दननगर, आ कडलूर आ ट्रंकेबारमे आयल छलाह। अमेरिकाक पूर्वीए तट ब्रिटेनकेर विरुद्ध अमेरिकी विद्रोह आ अमेरिकी गृहयुद्धक केंद्र सेहो छल। अस्तु, अमेरिकाक पूर्वी तट पर्यटक प्रमुख पड़ाव सेहो थिक। ज्ञातव्य थिक, अमेरिकाक पूर्वीए तट अमेरिकाक औद्योगीकरण केंद्र छल। एखनहुँ इएह इलाका अमेरिकाक विज्ञान, शिक्षा, आ राजनीतिक प्रशासनक केंद्र अछि। हमरालोकनि चैपल-हिल नार्थ कैरोलिनासँ सड़कमार्गसँ वाशिंगटन डी सी जायब। एहि बाटमे हमरा अमेरिकाक सड़क यात्राक प्रथम अनुभव होयत। हमर जमाय, सिद्धार्थजी आ कन्या, सुष्मिता, ड्राइव करतीह। हमरा दुनू गोटे विदेशमे धिया-पुताक संग पर्यटनकेर आनन्द लेब। दुनू स्थानक बीच दूरी करीब पौने तीन सौ माइल। अनुमानतः छौ घंटा समय लागत। रास्तामे कतहु चाह-पानि हेतैक, तँ, किछु अओर समय। नार्थ कैरोलिना राज्यक आगू बाटमे वर्जिनिया राज्य आओत आ तकर बाद वाशिंगटन डी सी आ मेरीलैंड। नार्थ कैरोलिना आ वर्जिनिया तहियाक कृषि-प्रधान, कपास आ तमाकू उत्पादक, राज्य छल। एहि ठामक भूमिमे दासप्रथाक जड़िए टा नहि रहैक, ई दुनू राज्य अमरीकी गृह युद्धमे दासप्रथाक संरक्षण लेल लड़ल छल। अस्तु, नार्थ कैरोलिना, वर्जिनिया, आ मेरीलैंड गृहयुद्धक भूमि सेहो रहल अछि। एहि सब इलाकामे एखनहुँ अमेरिकाक अनेक प्रतिष्ठित सैन्य-प्रतिष्ठान छैक। किन्तु, हमरालोकनिकें ऐतिहासिक भूमि सबहक भ्रमणकेर समय नहि अछि। अस्तु, सोझे वाशिंगटन जायब।

एतय कनेक गप्प सप्प : हम सैनिक छी, किन्तु, प्रवृत्तिए शान्तिप्रिय। हमर विचार अछि, युद्धसँ विवादक फड़िछठ तखने हो, जखन आन सब विकल्प शेष भ' गेल हो। किन्तु, युद्ध वर्चस्वकें स्थापित करबाक सामूहिक अभियान सेहो थिक : मनुष्यक मनुष्यपर, मनुष्यक राज्यपर आ राष्ट्रक राष्ट्रपर। मुदा, सबठाम आग्रह

एके-वर्चस्व। कखनो काल युद्ध सत्यकेर स्थापना लेल सेहो होइत छैक। मुदा, युद्ध सत्यक रक्षा लेल होइक वा वर्चस्व लेल, हारि मनुष्येक होइछ। ततबे नहि, सत्य समय सापेक्ष होइछ आ अधिकार शक्ति सापेक्ष। संगहि, सत्य विश्वासक विषय थिक आ विश्वास धारणाक। मुदा, युद्धकेर असली सत्य विजय आ पराजय थिक। विजय पराजय केर सरोकार शक्तिसँ छैक, सत्यसँ नहि। तें, विजय ककरो होइक, पराजय तँ मानवतेक होइछ। सेनापति पयर पुजबैत छथि, मुदा, प्राण तँ अदना मनुक्खे गमबैत अछि, अकालमे वएह काल कवलित होइछ। इएह थिकैक युद्धकेर सार-तत्व, अंतिम सत्य। तथापि, जँ युद्धसँ सत्यकेर विजय होइ तँ युद्ध सार्थक थिक। एहि अर्थमे अमरीकी गृह-युद्ध एक अर्थमे विरल छल। ई युद्ध सिद्धांतक लेल-दासताक विरुद्ध-आ शोषितक (अफ्रीकी मूलक बेगारक) उद्धार, दुनू लेल भेल छल। एहि युद्धक तेसर विशेषता ई रहैक जे एहिमे ब्रिटिश आ आयरिशे मूलक नागरिक लोकनि अश्वेतक अधिकार लेल, अपनेमे युद्ध लड़ल रहथि। बहुत दिन पहिने भीष्म साहनीक, भारतकेर विभाजनपर लिखल उपन्यास 'तमस', पर ओही नामक फिल्म देखने रही। ओहिमे एकटा गीत रहै :

'सूरा सो पहचानिए जो लड़े दीन के हेत'

वीर ओकरे बूझी जे दुर्बलक हेतु लड़य। अमरीकी गृह-युद्ध निश्चय दुर्बलक हेतु युद्ध रहैक! आ दास-प्रथाक उन्मूलनमे गृह-युद्ध सफल भेल। अमेरिकी गृह-युद्धक ई सर्वोपरि सार्थकता थिकैक। आब पुनः बाट पर आबी।

चैपल-हिलसँ सड़क राले शहर होइत उत्तर दिस बढ़इत छैक। सोझ, अनेक लेनबला इंटरस्टेट सड़क। अपन बाट पकड़ने, निर्धारित गतिसँ गाड़ी चलबैत रहू। बाटक काते-कात माइलक संख्याक नम्बरपर एग्जिट वा सड़क छोड़ि मोटेल, पेट्रोल-बंक पर जयबाक मार्ग। एहि ठाम सड़कपर हॉर्न बजेबाक आ ओवरटेक केर संस्कृति नहि छैक। जाहि प्रकारक गति तेहने लेन ध' लियअ। फास्ट लेनमे 'स्लो' चलायब दंडनीय छैक। सब किछु कैमरा द्वारा देखल जाइछ। सड़कसब एकदम जनशून्य। दुनू कात बेढ़ल। ने पैदल चलैत मनुक्ख भेटत, ने अनेरुआ माल-मवेशी। सड़कपर सूचना सब तेना लिखल, जेना, आब अपनो सबहक ओतय 4-लेन, 6-लेन सड़क पर होइछ, ककरोसँ किछु पुछबाक कोनो प्रयोजन नहि।

नार्थ कैरोलिना राज्यसँ वर्जिनियामे प्रवेशक पछाति कतहु-कतहु, सड़कक कातमे बोर्डपर वर्जिनिया राज्यक पक्षी कार्डिनलक छवि बाट देखबामे आओत।

हमरालोकनि पीटर्सबर्ग, फ्रेड्रिक्सबर्ग, आ रिचमंड शहर पार कयल। फ्रेड्रिक्सबर्ग गृह-युद्धक दौरान एकटा घनघोर संघर्षक भूमि छल। तें, आब पर्यटन स्थल सेहो। किन्तु, हमरालोकनि आगू बढ़इत गेलहुँ। हमरालोकनि वाशिंगटनसँ करीब 15 माइल दक्षिण रहल हयब, रातिक करीब 9 बाजल हेतैक, तखने देखायल-होटल बेस्ट वेस्टर्न, स्प्रिंगफील्ड, वर्जिनिया। आइ रात्रि विश्राम एत्तहि।

एहि यात्राक दोसर दिन, रविक भोर। छुट्टीक दिन आ पर्यटन। सब गोटे आरामसँ उठलहुँ। रेस्टोरेंटमे आइ नव व्यंजनसँ परिचय भेलः 'वाफ्ल'। नीक एहू हेतु लागल, जे, सामग्री राखल छैक, अपने बनाउ, अपने खाउ। आब हमरासँ ई जुनि पूछी 'वाफ्ल' बनतैक कोना? गूगल बाबा मोबाइल फोनमे सुतले छथि। पुछियनु, बनाउ, आ गरमा-गरम खाउ। हँ, सांचा जरूर चाही। बनेबाक विधि बुझू मालपूआक कनेक कठगर डोरी बनाउ। अंडा खाइत छी, तँ, सेहो देबय पडत, नहि, तँ बिनु अंडेकेर बनाउ आ खाउ। गर्म 'वाफ्ल' पर आइस-क्रीम। अहा-हा!! 'वाफ्ल' आ आइसक्रीम, जुनि पूछू। आइए बनाउ, झट सँ खाउ।

जलखैक पछाति सिद्धार्थ आ सुष्मिता संग भेलीह। गाड़ीमे बैसलहुँ आ फैनकोनिया-स्प्रिंगफील्ड स्टेशन पर वाशिंगटन मेट्रो ट्रेन पकड़ल आ सोझे वाशिंगटनक राजधानी इलाकाक फेडरल ट्रायंगल स्टेशनक भूमिगत रेल स्टेशनपर उतरि टहलैत एतुका नेशनल मॉल दिस विदा भेलहुँ। एहि ट्रेन यात्रामे अनेक सुपरिचित नाम सबहक स्टेशन अयलैक। एहि सबमे विश्वभरिक आतंक आ आदर (भय बिनु होंहि न प्रीति) क स्रोत पेंटागन, ककरा ने सुनल हेतैक, सेहो देखल।

नेशनल मॉल, अमेरिकाक राजपथ

एक दिनक समय आ पूरा दिल्ली देखबाक हो, तँ, कतेक देखबैक। पूरा राजपथ पर पयरे टहलि सकब? पार्लियामेंट हाउस? म्यूजियम? भ' सकैत अछि एक दू टा देखि ली। इंडिया गेट? अवश्य। पिकनिक हेतैक? वाह, धियापुता संगमे, वाशिंगटन शहर, बड़का मैदान, आ अनुकूल मौसम। किएक ने? हमरोलोकनि वाशिंगटन एहिना देखलहुँ। अपूर्व आनन्द। किन्तु, पहिने कनेक पानि तँ पीबि ली, तखन तँ गप्प हेबे करतैक।

दिल्ली हो वा वाशिंगटन, पर्यटक छी, तँ, किछु अनट तँ खर्च करहि पड़त। एतहु बेरोजगार वा अनधिकृत अप्रवासी, नेशनल मॉल पर कतहु-कतहु छाहरिमे पाइंट-साइज पानिक बोतलक क्रेट लेने सड़कक कातमे भेटलाह। एक बोतल जल एक डॉलर। जल पियल आ घुमब फिरब शुरू भेल।

ई वाशिंगटन नेशनल मॉल मोटामोटी एक दिस पश्चिममे लिंकन मेमोरियल आ पूबमे कैपिटोल-अमेरिकी केन्द्रीय प्रशासनक मुख्यालयक बीचक मैदान थिक, जकर दुनू भागक सड़कक काते-कात एतुका अनेक संग्रहालय आ केंद्र सरकारक अनेक विभागक भवन छैक। एहि सबहक बीच वाशिंगटन मेमोरियलक उन्नत स्तम्भ। कैपिटोल देखब हमरालोकनिक प्रोग्राममे नहि अछि।

स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशन

एतुका अनेक संग्रहालय देश भरिमे पसरल स्मिथसोनियन इंस्टीट्यूशनक हिस्सा थिक। ई सब संग्रहालय जेम्स स्मिथसन नामक एक ब्रिटिश वैज्ञानिक आ दाताक दानक परिणाम थिक, जे अपन मृत्युसँ पूर्व अपन सब सम्पत्तिकें 'विज्ञानक समृद्धि आ प्रसार' क नामे लिखि गेल छलाह। हमरालोकनि एहि अनेको म्यूजियम सबमे सँ आइ केवल नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री आ नेशनल एयर एंड स्पेस म्यूजियम देखब। एकर अलावा माल पर तफरी हेतैक। हमर जमाय सिद्धार्थजीक प्रस्ताव छनि जे वाशिंगटन मेमोरियल स्तम्भ हमरालोकनि रातिमे आबि कय रतुका इजोतमे देखी। एवमस्तु। गाड़ी हुनकहि चलबय पड़तनि। हमरालोकनि फेर कहिया वाशिंगटन आयब!

जल पिलाक पछाति हमरालोकनि सोझे नेशनल म्यूजियम ऑफ नेचुरल हिस्ट्री गेलहुँ। आन बहुतो ठामक विपरीत एहि सब संग्रहालयमे प्रवेश निःशुल्क छैक। एहि संग्रहालयमे की छैक तकर वर्णन दू कारणसँ बेकार। एक, एकर वर्णन असम्भव। दोसर, आब पेरिसकेर लुव्रे म्यूजियम हो वा एतुका स्मिथसोनियन, सब म्यूजियमकेर वर्चुअल टूर आब अहाँ अपने मोबाइलपर क' सकैत छी। सूचना प्रोद्योगिकीक आब एतबे शक्ति छैक जे, अहाँ चाही तँ कीड़ा-मकोड़ाक आँत वा अपन आँतकेर भीतर बाटे चलबाक तहिना अनुभव क' सकैत छी, जेना, अहाँ कोनो तहखाना बाटें जाइत होइ। तखन संक्षेपमे ई बात, जे, एहि म्यूजियमक संग्रहमे जीवमात्रकेर विकासकेर प्रागैतिहासिकसँ ल' कय भविष्य धरिक झांकी प्रदर्शित छैक। किछु जीवित, बांकी मृत आ जीवाष्म। जीव सबमे मृत हाथी आ डायनासोरसँ ल' कय अपन प्राकृतिक परिवेशमे पलैत-बढ़इत कीड़ा-मकोड़ा धरि संकलित अछि। ततबे नहि, ई संस्था सब अपन निरंतर खोज आ शोधसँ जैव विविधता आ पर्यावरणक रक्षाक हेतु सेहो सतत प्रयत्नशील अछि। अस्तु, विज्ञान आ शिक्षाक क्षेत्रमे सेहो स्मिथसोनियन संस्था सबहक योगदान महत्वपूर्ण छैक। करीब घंटा-दू घंटाक भ्रमणकेर पछाति म्यूजियमसँ बहार भेलहुँ। किछु पेट पूजा हो।

चॉकलेट, आइसक्रीम, पानि सब ठाम भेटत। किन्तु, शाकाहारी भोजन सब ठाम भेटब कठिन छैक। मूल्यक अन्तर तँ छैके। अमेरिकामे एकर सामाजिक असर सेहो देखबामे आओत : भयानक मोटापा। तेल-स्टार्च आ माँस-वसासँ लदल मांसाहारी भोजन सुलभ आ सस्त छैक। अस्तु, समाजक नीचा तबकाकें इएह सब खयबाक बाध्यता छैक। फलतः, डायबिटीज, ब्लडप्रेशर, आ मोटापा-सन 'लाइफ स्टाइल' रोगक अधिकता ओही वर्गमे सबसँ बेसी छैक। जे किछु। हमरालोकनि सड़कक कातमे एकटा शाकाहारी बर्गर केर ठेला ताकल। हमरा भेल चटनीमे मरचाइ तेज ने क' दैक। कहलियैक, लेस चिली (मरचाइ कम)। दोकानदारिन चिकरि उठलीह, नो चिली, नो चिली, वेज (चिली नहि, शाकाहारी)! हमरा बुझबामे नहि आयल। हमर जमाय लगेमे रहथि। कहलनि, 'ओ गलत बूझि गेल। चिली एतय गोमांसक एकटा व्यंजन थिकैक! मरचाइ, रेड-पेप्पर थिकैक'। मारे मुँह! स्वाइत अमेरिकन सब कहैत अछि, 'हम सब अंग्रेजी नहि बजैत छी!!' हम युवके वयससँ अंग्रेजी उपन्यास पढ़इत छी, अमेरिकन सिनेमा देखैत आयल छी। किन्तु, अमेरिकन अंग्रेजी सीखब एखनो बांकीए अछि!

जलथंभन भेलैक आ नेशनल मालपर अजस्र गाछक छाहरिमे सुष्मिता, हुनक माता, आ सिद्धार्थक संग बेंचपर बैसलहुँ, तँ, मोन पड़य लागल कोना सुष्मिताकें एहिना गरमीक मासमे कोरामे ल' कय दिल्लीमे लालकिला, चिड़ियाघर, आ इंडिया गेट घुमल रही। हिनका सब किछु अद्‌भुत लगनि। सब वस्तुकें छूबय चाहथि। अपना भय आ कौतूहल दुनू होइनि। किन्तु, निवारणक व्यवस्था संगे रहनि। अस्तु, किछु छूबासँ पहिने हरदम एके टा प्रश्न : जेना, दादा, बाघकें जँ छूबैक, तँ, काटत'? 'नहि, कटतह'। 'दुलाल करत'? आ हमर स्वीकृतिसँ हुनक मोन प्रसन्न भ' जाइनि।

हमर बालक अमियक केर प्रकृति एकदम दोसर। ओ हमरा हरदम नव-नव कला सिखाबथि : जेना, सांप कोना पकड़ब। हम छोट नेना आ अनुशासित विद्यार्थी भ' जाइ।

'अच्छा'?

'हँ'। अमियक ट्रेनिंग शुरू : 'एकटा बोतल ल' लियअ। बोतल खोलिकय गाछ तर राखि दियौक। गाछपर चढ़ि जाउ। सांप अओतैक, बोतलमे चल जेतैक। बोतल बंद क' लियअ आ चल आउ'। अपन नेना सबहक संग बिताओल हमर समय हमर स्मरणक सबसँ मधुर धरोहर थिक। तें, जखन कखनो आनंदक क्षण अबैछ हमर मधुर-स्मृतिक पौती खुजि जाइछ। जखन कखनो मोनमे विषाद भरि

अबैछ, 'साउंड ऑफ म्यूजिक' सिनेमाक नायिका-जकाँ अपन मधुर स्मृतिकें मोन पाड़ि अवसादक धोनकें फाड़ैत छी। ओहि फिल्मक अमर गीत 'My favourite things'* क शब्द सुनू :

When the dog bites
When the bee stings
When I'm feeling sad
I simply remember my favorite things
And then I don't feel so bad

देखू, गप्पे सप्पमे दुपहरिया बीति रहल अछि। आब नेशनल मालक दोसर भाग चली। हमरालोकनि नेशनल एयर आ स्पेस म्यूजियम जायब। संभव छैक, एयर आ स्पेस म्यूजियम आनो देशमे होइक। किन्तु, एहिठामक एहि म्यूजियम केर विशेष अर्थ छैक : जँ पुरुषोत्तम नागेश्वर ओक-सन इतिहासकारकें जनिका ताजमहल सेहो 'हिन्दू राजभवन' बूझि पड़ैत छनि-छोड़ि दी, तँ, सर्वविदित अछि, अमेरिकाए हवाई जहाजक आविष्कारक देश थिक। एतहि नार्थ कैरोलिनाक समुद्र तटपर 'किटी हॉक' नामक स्थानमे विल्बर आ ओर्विल राइट बन्धु 17 दिसम्बर 1903 क हवाई जहाजमे प्रथम उड़ानमे सफल भेल छलाह। फलतः, राइट ब्रदर्स एतुका एहि म्यूजियमे टा नहि विश्वइतिहासमे अपन अद्वितीय स्थान बना चुकल छथि।

एहि म्यूजियममे राइट ब्रदर्सकेर साइकिल कम्पनीएटाक वस्तु सब नहि, हुनक पहिल हवाई जहाजक मॉडल अतिरिक्त एयर आ स्पेस ट्रेवलक हजारो ऐतिहासिक सामग्री राखल अछि। एहिमे सँ अमेरिकाक एप्पल अंतरिक्ष यानक भीतर भ्रमण अवश्य स्मरणीय मानैत छी। ततबे नहि, एतय अंतरिक्ष खोजक सम्पूर्ण इतिहास प्रदर्शित अछि। एतेक सब देखबाक हेतु मासो भरि बेसी नहि। तथापि जे देखल, से कम नहि।

एहि म्यूजियमकें देखि केओ अनुमान क' सकैछ, विज्ञानक क्षेत्रमे अमेरिका विश्वमे अग्रणी अछि। एहि संग ईहो बुझबाक थिक जे अमेरिका नव-नव वस्तुक आविष्कारक लोकनिक आ सफल उद्यमी सबहक देश थिक। एतुका इतिहास

---

* जखन कुकुर काटि लैछ, वा मधुमाछी बीन्हि लैछ, वा मोन दुखी रहैछ,
तखन, सुदुक अपन प्रिय वस्तु सबहक स्मरण क' लैत छी
आ तखन, हमरा ओतेक अधलाह नहि लगैछ!

देखबैक, तँ, लागत एतुका लोक, जे जाहि क्षेत्रमे अछि, सतत किछु ने किछु नव करबाक उद्योगमे लागल रहैत अछि। संग-संग नव-नव वस्तुक निर्माणमे सक्षम प्रतिभाकें विश्वभरिसँ ताकि आनब, ओकरा सबकें काज करबाक उचित वातावरण आ साधन द' सफल आविष्कारकें अपना देशक संपत्ति बनयबाक प्रवृत्ति एहि देशक महत्वपूर्ण सम्पदा थिकैक। इएह कारण थिक, अमेरिका विज्ञान आ तकनीकी क्षेत्रमे विश्वमे सर्वोपरि अछि।

नेशनल एयर आ स्पेस म्यूजियम भ्रमणकेर पछाति हमरालोकनि ट्रेनसँ स्प्रिंगफील्ड आबि होटल आपस भ' गेलहुँ।

रातिमे पुनः सिद्धार्थ अपने वाहनमे नेशनल मॉल धरि अनलनि। रातुक समयमे अमेरिकाक राजधानी दिस जाइत एतुका ट्रैफिक एकटा मायावी परिदृश्य-सन प्रतीत भेल। दूर-दूर धरि कार केर रेड 'टेल लाइट'क लम्बा-लम्बा पाँतिक अनायास बहाव। कतहु कोनो रोक नहि। बाट देखयबाले गर्मिन कम्पनीक जीपीएस (ग्लोबल पोजिशनिंग सिस्टम) यंत्र, टॉम-टॉम, एतय पहिले पहिल देखल, जे, आगूए-आगू रास्ता देखबैत आ कहैत जायत। आब तँ ई जीपीएस भारतहुमे प्रत्येक मोबाइल फोनमे भेटत। किन्तु, 2009 मे तँ दिल्ली आ बंगलोरहुमे ई सुविधा नहि रहैक। जीपीएसकेर सहायतासँ वाशिंगटनक नेशनल मॉल धरि पहुँचलहुँ। रातुक समयमे सम्पूर्ण इलाका अपने गाड़ीमे चलैत देखैत गेलहुँ। दिन आ वर्किंग डे मे ई संभव नहि। अन्ततः, वाशिंगटन मेमोरियल स्तम्भ लग सिद्धार्थ गाड़ी रोकलनि। हमरालोकनि आसपास घूमि-टहलि इलाका देखल। आस-पास किछु सुरक्षा कर्मी सब तैनात रहथि। रातिक' एहि स्तम्भपर चढ़बाक सुविधा नहि छैक। तथापि, रोशनीमे एतयसँ पूब आ पश्चिम दिस जतय धरि नजरि जायत, देखि सकैत छी, आ देखलहुँ। विभिन्न प्रकारक पाथरसँ 19म शताब्दीमे निर्मित ई स्तम्भ एतुका प्रथम राष्ट्रपति जॉर्ज वाशिंगटनक स्मारक थिकनि। एकरा पेरिस केर कांकोर्ड स्क्वायरक ओबिलिस्क वा दिल्लीक राष्ट्रपति भवनक प्रांगणक जयपुर स्तम्भक समकक्ष बूझि सकैत छी। किन्तु, ऊँचाइमे ओहिसँ बहुत बेसी।

वाशिंगटन मेमोरियलक भ्रमणकेर पछाति हमरालोकनि वापस होटल अयलहुँ आ सफल यात्राक संतुष्टिमे भरिपोख विश्राम कयल। दोसर दिन भोरे पुनः चैपल-हिल।

लास वेगस (Las Vegas)

स्वर्ग की थिक? प्रायः एहन काल्पनिक परिवेश जकर सेहन्ता सम्भव अछि, सदेह अनुभूति असम्भव। ई सत्य जे सबहक सेहन्ता एक नहि। तें, भिन्न-भिन्न व्यक्तिक हेतु स्वर्ग सेहो भिन्न-भिन्न काल्पनिक परिवेश थिक। ककरो हेतु स्वर्ग कुबेरक राज्य थिक, तँ ककरो लेल वैकुंठ, स्वर्ग थिक। ककरो लेल स्वर्ग इन्द्रक सभा थिक, तँ, ककरो हेतु स्वर्ग असीमित भोगक सोपान। अमेरिकाक लास वेगस शहर जुआरी लोकनिक स्वर्ग तँ थिके, ई मायावी नगर विश्वभरिक पर्यटक लेल सेहो अद्‌भुत चुम्बक थिक। लास वेगस आ ओतुका कैशिनो (जुआघर) सबहक नाम तँ हमरा सुनल छल, किन्तु, एकर अतिरिक्त हमरा वेगसक सम्बन्धमे बेसी किछु बूझल नहि छल। सब प्रकारक पोथी पढ़बाक रुचि हमर पत्नी, रूपमक विशेषता छनि। पढ़बाक निशाँ आ नीक स्मरण अनायास शिक्षाक अपूर्व सोपान थिक। विश्वभरिक प्रसिद्ध शहर-नगरसँ परिचय आ रुचि, सेहन्ताक हेतु अद्‌भुत खाद थिकै। अस्तु, 2009 मे अमेरिका जेबाकाल जखन हम रूपमसँ पुछलियनि, अमेरिकामे कोन-कोन शहर देखबाक नेयार अछि, तँ, अनायास ओ लास वेगस देखबाक इच्छा व्यक्त केलनि। हमरालोकनिकें पहिने नार्थ कैरोलिना राज्यमे चैपल हिल जेबाक छल, आ पछाति अमेरिकाक पूर्वी तट (eastern seaboard) देखबाक छल। ओतयसँ लास वेगस छौ घंटाक फ्लाइट। माने, बहुत दूर। हमरा कनेक आसकति अवश्य भेल। किन्तु, भारतसँ अमेरिका जाउ आ देखबाक मनोरथ जकथक ल' कय आपस आबि जाउ से नीक नहि। अस्तु, हमरालोकनि लास वेगस केर ट्रिप बनाओल। ज्ञातव्य थिक, अमेरिका-सन विशाल देशमे अनेक टाइम जोन छैक। लास वेगस पश्चिमी समय क्षेत्रमे अबैछ। नार्थ कैरोलिनाक चैपल हिल केर नजदीकी हवाई अड्डा रॉली-डरहमसँ लास वेगस छौ घंटाक हवाई यात्रा। तथापि, हर्ष आ उत्साहक कमी नहि। ई हमरालोकनिक पहिल विदेश यात्रा जे छल। सर्वविदित अछि, अमेरिकामे बहुतो ठाम शाकाहारी भोजन ताकब कठिन होइछ।

मांसाहारीओ लेल सबकें ओतुका निरामिष भोजन ग्राह्य नहि। अस्तु, अपन रुचिक आ तुरत खयबाजोग भोजन संगमे राखब नीक। हमरोलोकनि सएह कयल। लास वेगस यात्रासँ पहिने संगमे किछु बिस्कुट-निमकी-भूजा, आ एक डब्बा पनीरक बनल मधुर, राजभोग, राखल। हमरालोकनिक सूटकेसमे ओएह राजभोग एहि यात्रामे चार्लोट्सविल एयरपोर्टपर सुरक्षाक घंटी बजा देलकै। ई हमरालोकनि लेल नव अनुभव छल। समस्या छलैक, टिनकेर डब्बा। ताहिमे चासनी-जेली। आ चासनीमे गोल-गोल पदार्थ। तें, हमरालोकनिक राजभोगक स्वरूप एक्स-रे मशीनमे विस्फोटक-बम जकाँ प्रतीत भेलैक! अस्तु, हमरालोकनिक बैग तुरत अलग राखल गेल। सुरक्षाकर्मी लोकनि तुरत बजाकय पुछलनि, 'बैगमे की अछि?' हम कहलिअनि, 'मधुर छैक, बैग खोलि कय देखा दैत छी'। आ से कहैत सूटकेस दिस बढ़लहुँ, तँ, एके स्वरमे सब गोटे, 'हाँ, हाँ' करैत बाट छेकि लेलनि। पछाति एकटा दोसर सुरक्षाकर्मी, जे प्रायः विस्फोटक वस्तु सबहक जाँच-पड़तालक विशेषज्ञ छलीह, अयलीह। बैग दूरमे एक कात राखल छल। हम गेलहुँ। सुरक्षाकर्मी लोकनिक जखन अनुमति भेल, सब गप्प बुझाकय लेबुल सहित राजभोगक डब्बा देखौलियनि। सुरक्षाकर्मी लोकनि आश्वस्त भेलाह, आ अंततः मधुरक डब्बा भेटि गेल। किन्तु, आगू लेल कान पकड़ल। आब, अमेरिकामे कहियो रसगुल्ला आ राजभोग बैगमे ल' कय यात्रा नहि करब!

मुदा, आगूक यात्रा सुखद रहल। जुलाइक मास अमेरिकाक पूर्वी तटीय इलाकामे मौसम खूब सुखद। ने रौद तिक्ख, आ ने वायुमे कोनो सर्दी। हवाई जहाजमे विण्डो-सीट नेने रही। भरि बाट आस-पासक इलाका देखैत गेलहुँ। कहनहि छी, अमेरिकाक कुल क्षेत्रफलक थोड़े इलाकामे आबादी छैक। ताहि परसँ बाटमे तटीय इलाका सबमे, जेना, टेनेस्सी, नार्थ कैरोलिना आ साउथ कैरोलिनामे बहुत ठाम खूब सघन जंगल। नेवादा राज्य, जाहि इलाकामे लास वेगस अछि, मूलतः मरुभूमि छैक। किन्तु, व्यवसायी प्रवृत्ति आ टेक्नोलॉजी जंगलमे मंगल, अर्थात मरुभूमिकें स्वर्ग बना देने अछि। ततबे नहि, 1930 क दशकमे पड़ोसी राज्य एरिजोना आ नेवादाक बीच कोलोराडो नदी पर निर्मित हुवर-डैम पानि आ बिजलीक समस्याक समाधान सेहो क' देलकैक। संगहि, हूवर-डैम आ कोलोराडो नदीक विशाल बीहड़ ग्रैंड-कैनियन एतुका अतिरिक्त आकर्षण थिक जकरा देखबा लेल लाखो पर्यटक लास-वेगस आ बौल्डर सिटी अबैत छथि। एतावता, हमरालोकनि वेगस पहुँचबासँ पूर्वहि आकाशसँ हूवर डैम आ ग्रैंड-कैनियन देखि लेल। ज्ञातव्य थिक, लास वेगससँ एहि दुनू स्थानक हेतु नित्य हेलीकाप्टर आ रोड ट्रिप जाइछ। टाका तँ

अपने, आ सेहो यु एस डॉलरमे, लागत। एहि यात्रामे हमरालोकनि तकर प्रावधान नहि केने छी। अर्थात् बुड़बकक खेती अगिला साल।

माने, हूवर डैम आ ग्रैंड-कैनियनक यात्रा अगिला बेर हेतैक। मुदा, हूवर डैम आ ग्रैंड-कैनियनसँ बेसी रोमांचक हमरा तेसरे वस्तु आकाशसँ देखा गेल : नेवादा टेस्ट साइट। भारत-जकाँ अमेरिकाक नेवादा परमाणु परीक्षण इलाका (नेवादा टेस्ट साइट) ने घेरल-बेढ़ल छैक आ ने ओहि इलाकाक ऊपरसँ हवाई-जहाजक यातायाते पर कोनो रोक छैक। तें, भूमिगत परमाणु परीक्षणक कारण भेल बालुक टिपिकल ढेर हमरा सहजहि आकृष्ट केलक। परमाणु परीक्षण रेंजकें आकाशसँ देखब हमरा लेल एकटा नव अनुभव छल। कहल जाइछ, साठिक दशकमे एतुका लोक परमाणु बम परीक्षणक कारण भूमिसँ आकाश दिस उठैत धूल आ बालुक गोबरछत्ता सद्यः देखने छल। स्पष्ट छैक, परमाणु विकिरणक दुष्प्रभाव तँ ओहि धुआँक संगबहिना थिकैक। तखन ओकरा के रोकत! किन्तु, शीतयुद्धक युगमे महाशक्ति सबकें तकर कोन परबाहि छलैक!

लास-वेगस अमेरिकाक नेवादा राज्यक शहर थिक। पहिलुका युगमे ई इलाका विशाल मरुभूमि आ घासक क्षेत्र छलैक जकर वर्णन 19 म शताब्दीक पूर्वार्द्धमे स्पेनिश यात्रीलोकनि केलनि। एहि मरुभूमिमे घास आ पानिक अनेक स्रोत देशक यात्री लेल तहिया वरदान छलैक। पछाति एतय शहर कोना बसल आ गेमिंग (जुआ कें एतय गेमिंग वा खेल कहैत छैक) क व्यवसाय कोना ठाढ़ भेल, से तँ सर्वविदित अछि। सारांशमे, ई शहर बसल 20 म सदीक प्रथम दशकमे। किन्तु, शहरक प्रसार भेलैक 20 म सदीक चारिम दशकमे जखन हुवर-डैम बनब आरम्भ भेल। किन्तु, लास वेगसकेर एखनुक स्वरूपक उदय तखन भेलैक जखन विगत शताब्दीक 30 ई. क बाद जुआ वा गैंबलिंग (gambling) शब्दमे सँ अंग्रेजीक 'बी' आ 'एल' अक्षरकें निकालि जुआक नाम 'गेमिंग' (gaming) क' देल गेल। आब भांगकें भांग कहियौक वा विजया, खायब तँ नशा तँ लगबे करत। गैंबलिंग (जुआ) कें गेमिंग (खेल) क नाम द' देलासँ जुआ कानूनी व्यवसाय भ' गेल। फलस्वरूप, गेमिंग वा जुआ एतय एकटा उद्योगक रूप ल' लेलक। फलतः, सम्पूर्ण विश्वक धनाढ्य वा जुआसँ धन कमाकय रातिए-राति धनाढ्य बनबाक इच्छुक उद्यमी लोकनिकें लास वेगस तहिना आकर्षित करय लागल जेना चुम्बक लौहकें करैत अछि। स्पष्ट छैक, जखन एतेक समृद्ध लोक एतय अओतैक तँ रहबाक आ भोग-विलासक सब सुविधा आ उपकरण तँ चाहबे करी। अस्तु, लास वेगसमे होटल, कैसिनो (जुआ-घर), बैंक, अपार्टमेंट ब्लाक, अस्पताल, मनोरंजनक हेतु शो,

सबहक विकास भेल आ लास वेगस वा वेगस विलासिताक स्वर्ग भ' गेल। पछाति लास वेगसमे हॉलीवुड शो, विभिन्न प्रकारक खेल, म्यूजिक अकादेमी, शिक्षाक सुविधा, सब किछु विकसित होइत गेलैक। इएह सब विकास वेगसक वर्तमान स्वरूपक इतिहास थिक।

रॉली-डरहमसँ यात्रा आरम्भ केने रही तँ प्रायः भोर केर सात बाजल रहैक। छौ घंटा यात्राक पछाति लास वेगस पहुँचलापर दिन केर साढ़े नौ बाजल रहैक। सब किछु टाइम-जोनक कमाल। भोरुका समय। चारू तरफ इजोत। नव जगहमे दिन-देखार पहुँचब हरदम नीक होइत छैक। एयरपोर्टकेर आगमन लाउन्जमे 'स्लॉट-मशीन'* केर पतियानी। डॉलर खसाउ आ भाग्य अजमाउ। संयोग एहन, जे हमरा ने भाग्य पर भरोस अछि, आ ने भगवान पर। तखन अपन कमायल टाकाकें सोझे खाधि (स्लॉट-मशीन) मे फेकि दियौक। ई कोन बुधियारी भेल! पत्नीकें पुछालियनि, की विचार? हुनका भाग्य आ भगवान दुनू पर भरोस छनि, तें, प्रायः गाड़ी चलल जा रहल अछि। किन्तु, ओहो कमायल टाकाकें स्लॉट-मशीनमे फेकबाक पक्षमे नहि छलीह। अस्तु, मुफ्तमे डॉलर कमयबाक इहो अवसर हाथसँ चल गेल! अस्तु, आगू बढ़लहुँ। एग्जिट गेट पर टैक्सीक काउंटर छलैक। टैक्सी काउंटरपर जेबाक आ वापसीक टैक्सी बुकिंग सेहो भ' गेल। लागल, वेगसमे यात्रा दिल्लीसँ आसान छैक। छोट-सन टूरिस्ट इलाका, कनिए कालमे अपन होटल मार्डी ग्रा बेस्ट वेस्टर्नमे पहुँचि गेलहुँ। ओतहु सबसँ सामने स्लॉट-मशीन। होटलमे चेक-इन भेल, सामान राखल। किछु हल्का-फुल्का जलपान भेलैक। आ सोझे 'द स्ट्रिप' केर यात्राक नियार भेल।

एतय 'द स्ट्रिप' सँ कने परिचय आवश्यक। करीब 7 कि.मी. लम्बा सोझ सड़क, 'द स्ट्रिप', वेगसमे शैलानी-पर्यटकक हेतु मक्का आ वेगस केर पर्याय थिक। वेगस केर सबटा पैघ-पैघ होटल, रेस्तौराँ, दोकान-दौड़ी, कैसिनो आ टूरिस्ट आकर्षण, होटल बलाजियोक नचैत फब्बारा, एही सड़क द' स्ट्रिपक दुनूकात भेटत। अस्तु, एतय अहाँ डेरा कतहु दी, शहरक चहल-पहल देखय चाहैत छी, प्रसिद्ध सात सितारा होटल सबहक मीलो लम्बा गद्देदार, शीतल सुखद वीथीमे मटरगस्ती करय चाहैत छी, स्लॉट मशीन वा 'कार्ड टेबुल' पर भाग्य अजमाबय चाहैत छी, तँ' द स्ट्रिप' सँ नीक अओर कोन जगह भेटत! हमरालोकनि ताही लेल एतेक दूर आयल छी। अस्तु, स्ट्रिप दिस चली।

---

* जुआक स्वचालित मशीन

एहि ठाम वेगसमे सब बाट स्ट्रिपहि दिस जाइछ। अस्तु, जे होटल स्ट्रिप पर अछि तकर तँ गप्पे नहि। आन सब होटलमे चौबीसो घंटा फ्री शटल बस उपलब्ध रहैछ जे होटलसँ ल' कय स्ट्रिप पर निर्धारित स्थान पर अहाँकें पहुँचा आओत। फेर वापस अयबाक हो तँ होटलक गाड़ी स्ट्रिपहि पर भेटि जायत। होटल आबि जाउ। ओना शहरमे यातायात लेल मोनोरेल (कंक्रीट केर पिलर केर ऊपर लाइन) सेहो छैक। ज्ञातव्य थिक, वेगस-सन शहरमे दिन-रातिक कोनो अंतर नहि : 'या निशा सर्वभूतानां, तस्यां जागर्ति 'वेगस'! तें, जखन मोन हो होटलमे रहू, वा होटलसँ निकलू, तफरी मारू। वेगस जगले भेटत।

हमरालोकनि तँ दिन दुपहरिया वेगस पहुँचल रही। तखन कोन समस्या। दुनू गोटे शटलमे बैसलहुँ आ स्ट्रिप धरि पहुँचि गेलहुँ। मुदा, नव जगहमे जँ आँखि खोलने रही, तँ, बहुत किछु नव देखबामे आओत। एतय एहि मिनी बस केर ड्राइवर अपन डैश-बोर्ड पर एकटा शीशाक गिलास रखने छलाह। ओहिमे किछु डॉलरकेर नोट, किछु खुदरा कैंचा। गिलासक कातमे एकटा 1 फुट लम्बा 4 इंच चौड़ा सूचना पट : 'ड्राइवरक आधासँ बेसी आमदनी केवल टिप वा खुदरा बख़्शीशसँ होइत छैक'। तें, जतबे हो, बख़्शीश द' ड्राइवरकें प्रोत्साहित करी।' बख़्शीश मंगबाक ई अनुपम परिपाटी भारतमे तँ देखल नहि छल। पछाति अमेरिकामे आन ठाम एअरपोर्टहु पर देखलियैक, बाथरूम (अमेरिकन भाषामे रेस्ट रूम) मे बख़्शीशक हेतु शीशाक गिलास आ गुलदस्तामे फूल, एक कात राखल। माने, रेस्ट-रूमक सफाइसँ सन्तुष्ट छी, तँ, सफाइ कर्मचारीकें प्रोत्साहित करियनु। बात बेजाय नहि लागल। होटल सबमे सेहो बिल सबहक नीचा टिप केर अलग प्रावधान। सेवासँ संतुष्ट छी, तँ, द्रव्य दिऔक!

एकटा गप्प आओर : जँ वेगस केर शहर केर स्वादय चाहैत छी, तँ, स्ट्रिप पर एकटा टहलान चाही। टहलबासँ अशक्त छी, वा टहलब पसिन्न नहि अछि, तँ, सिटी बस पकड़ू। एकटा टिकटमे भरि दिन, जतेक बेर जतय जेबाक हो स्ट्रिप पर फेरी लगा सकैत छी। हमरालोकनिक स्ट्रिप केर यात्रा होटल बलाजियो लगसँ शुरू भेल। होटल बलाजियोक आगूक अंगनैमे पानिक अद्‌भुत फब्बाराक समूह छैक, जे, सुनने छलहुँ पूर्व नियोजित संगीतक धुन पर क्रमशः बदलैत पानिक फुहारक नृत्यक दृश्य प्रस्तुत करैछ। तें, ई बूझब कठिन नहि जे साँझुक पहर एहि म्यूजिकल आ डांसिंग फाउंटेनक अद्‌भुत दृश्य देखबा लेल फब्बाराक चारूकात पर्यटक लोकनिक मेला किएक लागि जाइछ। आइ साँझमे हमरो लोकनि एहि फब्बाराक नजारा देखब, आइसक्रीम खायब आ वेगस ट्रिपक उत्सव मनायब।

होटल बलाजियोक सामनेक फुट ओवेरब्रिज पार करैत हमरालोकनि होटल सीजरर्स पैलेस जयबा लेल विदा भेलहुँ तँ ओवेरब्रिजहि पर आसन जमौने एकटा सत्यवादी पर नजरि गेल। गोर चमड़ी, अधवयसाहु व्यक्ति, दढ़ियल स्वरूप। सज्जनक सामने दाहिना कात कार्ड बोर्डक सूचनापट्ट आ आगूमे शीशाक एकटा खाली बियर-मग। बोर्ड पर सविनय निवेदन : 'हम फूसि नहि बजैत छी, हमरा बियर लेल टाका चाही!' माने, जतेक टाका वा भजोखाक श्रद्धा हो एहि सत्यवादी भिखारिकें बियरकेर हेतु द' दियनि। ज्ञातव्य थिक, यूरोप-अमेरिकामे मदिरा पान पाप नहि, जीवन पद्धति बूझल जाइछ। आ जेना ई व्यक्ति शहरक मुख्यमार्ग पर बियरक हेतु दिन-देखार याचना करैत छलाह ताहिसँ प्रतीत भेल, वेगसमे एहि प्रकारक याचना सेहो गैर कानूनी नहि। अओर एकटा गप : एतय टाकाक ततबे मोल छैक जे दोकान दौरीमे वस्तुक दाम देलाक बाद जँ अहाँक हिस्साक एकहु सेंट (एक पैसा) बचि गेल, तँ, दोकानदार 1 सेंट अवश्य वापस करताह। गहिंकी सेहो अपन शेष पैसाक अपेक्षा करैत छथि। एतय अक्सर सुनबैक, 'money is money' अर्थात टाका, धन थिकैक।

रोड ओवेरब्रिज पार करैत हमरालोकनि होटल सीजरर्स पैलेसमे दाखिल भेलहुँ। भारतक विपरीत वेगसमे होटल सब पब्लिक प्लेस थिकैक। तें, कतहु कोनो वर्जना नहि, जतय मोन हो बेरोक प्रवेश करू। एहि सब होटलक व्यापारे पर्यटक पर निर्भर छैक। वेगस आबि एहि बड़का-बड़का होटलमे रहनिहार पर्यटकक हेतु आवासक हेतु प्राइवेट भाग एहि होटल सबमे अवश्य फूट छैक। आवासीय इलाका दिन भरिक घुमैत पर्यटकक हेतु अवश्य वर्जित होइत छैक। होटल सीजरर्स पैलेस अद्‌भुत अछि। एक बेर पैसि गेलहुँ, तँ, लागत जे कोनो नगरमे आबि गेल छी। मीलो लम्बा वीथी। सैकड़ो मूर्ति, पेंटिंग, कलाकृति, रेस्तौराँ, बार, स्लॉट-मशीन, गेमिंग टेबुल। रेस्तौराँ सबहक सजावट देखि कय चकबिदोर लागि जायत। एतय एकटा रेस्तौराँमे बैसबाक जगह केर आगूक सजावट एकटा नाहक आकारक। नाहक निचला दिस ऐतिहासिक सुंदरी आ सम्राज्ञी क्लेओपेट्राक कमनीय छवि। छविमे दर्जनो वर्ण, सैकड़ो सजावट।

आस-पासमे खोमचामे सिगरेट-सलाइ आ चॉकलेट बेचैत सुंदरी लोकनि। सत्यतः, साफ-सफाइक अलावा एतुका खोमचा आ सकरी-निर्मली रेल मार्गक खोमचामे कोनो अंतर नहि। दहिना-बामा, जे किछु आकृष्ट करय, देखू, कीनू, बेसाहू। बैसि जाउ, वेगस केर आनंद लियअ। आगू बढ़इत जाउ। एकाएक लागत जे होटलसँ निकलि दिनुका नीलाकाशक नीचा आबि गेल छी। किन्तु, से

सत्य नहि। ई एतुका टेक्नोलॉजीक कमाल थिक। एहिठाम एक होटलक वीथी, दोसर होटल धरि तेना पसरल अछि जे कखन एकटा होटलक सीमा समाप्त भेल आ कखन दोसर होटलमे प्रवेश क' लेलहुँ, कतेक बेर बुझबामे नहि आओत। एहि होटल सबहक भीतर अनेक प्रकारक खेल-तमाशाक हॉल, रंगशाला, म्यूजियम आ भोजनालय भेटत। कतेकोमे एंट्री फी लगैत छैक। चाही तँ अनेक होटल, आ अनेक दर्शनीय स्थलकेर एके टा संयुक्त कार्ड यात्रासँ पूर्व अमेरिकाक कोनो शहरमे कीनि लिअय। एहिसँ टाकाक काफी बचत आ अनेक ठाम टिकट किनबाक हुज्जतिसँ सेहो बचि जायब।

वेगस आयल छी। जुआमे टाका कमेबाक लोभ नहि। किन्तु, कौतूहल नहि, से कोना कहब। अस्तु, स्लॉट मशीन लेल दस-दस डॉलरक टिकट कीनल। दुनू गोटे भाग्य अजमायब आरम्भ कयल। स्लॉट मशीन आदतन टाका गिड़इत चल गेल। पढ़ल अछि, जेना सिनेमाक हीरो सब अद्‌भुत चमत्कारसँ वा अलौकिक भाग्यक बलें सिनेमा सबमे लाखो टाका बैसल-बैसल जीति जाइत छथि, सामान्य जीवनमे स्लॉट-मशीन पर तकर सम्भावना नगण्य। अर्थात स्लॉट-मशीन पर विरले व्यक्ति 'जैकपॉट' पबैत छथि। तखन हमर भाग्यक भूत कोन एहन बलवान अछि, जे हम 'जैकपॉट' जीतब। अस्तु, हमर लगभग 19.99 डॉलर बूड़ि गेल। किन्तु, 1 सेंट शेष छल। स्लॉट मशीन तकर टिकट बाहर फेकि देलक। हम टिकट उठाओल आ कौतूहलमे अपन 1 सेंट नगदी लेबा लेल कार्डकें लगेक कैश-मशीनमे द' देलियैक। हमरा तँ छगुन्ता लागि गेल। मशीन तुरत 1 सेंट केर सिक्का उगीलि देलक। वाह रे, वेगस! वाह रे अमेरिका!! सत्यतः, हमरा विश्वास भ' गेल जुआमे सेहो इमानदारी होइत छैक!

आइ भोरेसँ जागल छी। काफी घूमब फिरब भ' गेलैक। आब किछु भोजन आ विश्राम होइक। साँझुक पहर फेर 'द स्ट्रिप' पर।

वेगस साँझमे

आइ साँझमे होटलसँ विदा भेलहुँ, तँ, ड्राइवर प्रायः बेल्जियमक निवासी छलाह। पुछलनि, अहाँ लोकनि यु के सँ आयल छी? प्रायः भारतीय अंग्रेजी अमेरिकामे ब्रिटिश इंग्लिश-जकाँ प्रतीत होइत छैक। अमेरिकहुमे जतेक इलाका, जतेक प्रकारक मूल निवासक नागरिक, तेहने भाषा। एतय तँ सत्यतः केओ चीनसँ आयल अछि, तँ, केओ फिलिपीनसँ। केओ आयरिश थिक, तँ, केओ स्पैनिश, अफ्रीकी, वा डच।

माने, अमेरिका विभिन्न मूल, विभिन्न संप्रदाय, विभिन्न राष्ट्रक नागरिक लोकनिक घोर-मट्ठा थिक। एतुका असली आदिवासी, जकरा ई लोकनि अमेरिकन इंडियन कहैत छथिन ओ तँ आब बुझू म्यूजियम पीस भ' गेल, जकरा शिक्षा आ नौकरीमे प्राथमिकताक अवश्यकता पड़ैत छैक। नहि, तँ, शीघ्रे ओ सब तेना उकन्नन भ' जायत जेना एतुका आदिवासी लोकनिक पूर्वजलोकनि अमेरिकाक मानचित्रपरसँ विलीन भ' गेल छलाह।

आइ साँझुक पहर हमरालोकनिकें होटल बलाजियोक कोरिओग्राफ्ड फब्बारा देखबाक छल, से देखल। चकित भेलहुँ आ आनंद लेल।

साँझुक पहर एतुका रंग-रभस केर बाजार गर्म भ' जाइछ। सुन्दर नारि लोकनिक पोस्टकार्ड साइजक फोटोक थाककें गफियौने, नारि आ पुरुष लोकनिक झुण्ड गहिंकीक अन्वेषणमे रोडक काते-कात सबठाम भेटि जेताह। एहि ठाम वेश्यावृत्ति लाजक गप्प नहि, व्यवसाय थिकैक। रुचि अछि, अपन मोनकें संतुष्ट करू। रुचि नहि अछि, सोझे बाट देने चलैत चल जाउ। केओ परेशान नहि करत। सत्य पूछी, तँ, हमरा तँ वेगस अत्यंत 'टूरिस्ट-फ्रेंडली' लागल। कतहु कोनो खतरा नहि। सम्पूर्ण शहर आगंतुक लोकनिक स्वागतमे तत्पर। एहना स्थितिमे जखन सुनैत छियैक जे भारतक अमुक शहर वा नगरमे विदेशी नागरिकक संग एहन वा एहन अपराध वा बलजोरी भेलैक, तँ, आत्मा कानि उठैत अछि आ मोन ग्लानिसँ भरि जाइछ। जँ, भारतकें विश्वमे पर्यटनक केंद्र बनेबाक अछि, तँ, भारतक प्रत्येक नागरिककें ई सुनिश्चित करय पड़तनि जे विदेशक वा स्वदेशक, एसगर वा ग्रुपमे, पुरुष वा नारि ककरोसँ बलजोरी नहि होइक। ककरो संग अपराध नहि होइक। अन्यथा 'अतिथि देवो भव' क नारा मात्र नारा रहि जायत आ व्यक्ति विशेषक व्यक्तिगत पराभवकेर गाथा इन्टरनेट पर एतेक दूरधरि क्षणहिमे विश्वभरिमे पसरि जायत जे भारत वा भारतक कोनो राज्य वा नगर टूरिस्टक लिस्ट परसँ क्षणहिमे बिला जायत।

हँ, वेगसमे दोसर दिन आओर बहुत किछु देखबाक नेयार छल। किन्तु, भोरे-भोर कतय जायब। तें, आइ बेरुका पहरक प्रोग्राम बनलैक। एहिठाम 'स्ट्रिप'हिं पर घुमबाक अछि। फ्रेमोंट स्ट्रीट नहि जायब। जिनगी जान-बचलैक, तँ, दोसर बेर। फ्रेमोंट स्ट्रीट एतुका पुरान इलाका थिकैक। स्ट्रिप पर देखबाक आकर्षण बलाजियो आ सीजर्स पैलेस तँ काल्हि देखल। आब एतुका एफिल टावर, पिरामिड, वेनेशियन, मैडम तुसाद म्यूजियम आदि देखब बांकी अछि। विश्व केर एतेक रास विभिन्न भवन, वास्तुक संकलन कारण हम वेगसकें मायानगरी कहैत छियैक।

माया, अर्थात भ्रम। अर्थात जे देखि रहल छी ओ असली नहि छियैक। तें, नकली एफिल टावर, पिरामिड, वेनेशियन, मैडम तुसाद म्यूजियम देखू आ यूरोप भ्रमणक मनोरथ पूर्ण करू। ई भेलैक ने माया। अस्तु, दस-दस डॉलर केर टिकट कीनल आ हमरोलोकनि एफिल टावर पर चढ़ि वेगसकेर विहंगम दृश्य देखल। आब फ्रांस जहिया जेबाक अवसर अओतैक असली एफिल टावर पर सेहो चढ़ब। टहलैत-टहलैत हमरालोकनि वेनीशियन होटलमे सेहो गेलहुँ। वेनिसक तर्ज पर छोट केनाल, अनेक गोंडोला, नाविक, वेनेशियन म्यूजिक, आ पोशाक-पहिनावा। मुदा, एतय हमरालोकनि गोंडोला राइड दूरेसँ देखल। म्यूजिक तँ कतहु रहब कानमे अयबे करत। होटल पालाजोमे मैडम तुसाद केर म्यूजियममे विश्व-प्रसिद्ध हस्ती सबहक आदमकद आ सजीव-सन मूर्ति सब देखल। टिकट भरिगर : 28 डॉलर प्रति व्यक्ति। एतय बराक ओबामा, माइकेल जॉर्डन, क्वीन एलिजाबेथ, इंदिरा गाँधीक संग फोटो घिचाओल।

रूपम हॉलीवुड कलाकार, निकोलस केज आ अभिनेता एल्विस प्रिस्तलेक संग सेहो फोटो घिचओलनि। म्यूजियमक एक कातमे कोनो भुतही डरावना रास्ता सेहो रहैक। विचित्र रोशनी, भयानक चित्र आ अकस्मात अबैत ध्वनि आ स्वरूपसँ लोककें भय आ रोमांचक अनुभव होइत छैक। हमरा तँ भयक अनुभव नहि भेल। रूपम ओहि गुफामे जयबासँ मना क' देलनि। बड़ बेस।

रातुक भोजन लेल हमरालोकनि एकटा भारतीय शाकाहारी होटल ताकल। होइत छल वेगसमे भारतीय भोजन भेटत, कि नहि। किन्तु, तकलासँ भगवानो भेटैत छथिन। घुरतीमे स्ट्रिपपर फुटपाथ पर चलैत एकटा भारतीय सीनियर सिटीजन दम्पति भेटलाह। पतिदेव केर हाथमे एक दर्जन पानिक बोतलक भरिगर पैक। दम्पति एतुका प्रसिद्ध होटल सीजरर्स पैलेसमे डेरा देने छथि। किन्तु, सात सितारा होटलमे पानि अमोल भ' जाइछ। तें, एतबा तरद्दुदमे कोन हर्ज। हमरोलोकनि दू दिनसँ वेगसमे तफरी मारि रहल छी। आब काफी भेलैक। आब होटल चली। होटलक शटल लगहिमे भेटि गेल। आब आराम हेतैक आ काल्हि चैपल-हिल आपस।

क्लीवलैंड डायरी

करीब 29 घंटाक यात्राक पछाति जखन हवाई जहाज क्लीवलैंड होपकिन्स अंतर्राष्ट्रीय एयरपोर्ट पर उतरलैक तँ रातिक 12 बाजि गेल रहैक। हवाई जहाज रनवेपर लैंडिंग-रन क' कय ठाढ़ भ' गेल। किन्तु, द्वारि खुजबाक कोनो सूर-सार नहि। सुनल छल, कलकत्तामे जँ रतिगर क' लैंड भेलहुँ, आ ग्राउंड-स्टाफक ड्यूटी चेंजक समय भ' गेलैक, तँ, हवाई जहाजसँ उतरि बाहर हेबा लेल प्रतीक्षा करय पड़ि सकैत अछि। मुदा, एतय करीब 45 मिनट भ' गेलैक। तखन उड़ानकर्मी लोकनि कहलनि, 'मार्शलिंग ले ग्राउंड-स्टाफ जखन उपलब्ध हेताह तखने एयरप्लेन पार्किंग-बे दिस चलत'। बड़ बेस। सेहो समय अयलैक। किन्तु, जखन हवाई जहाजक द्वार खुजलैक आ एहि छोटका जहाजक संकीर्ण रास्तासँ बाहर होमय लगलहुँ, तँ, भेल जेना क्षणे भरिमे देहक सब कपड़ा एकाएक बर्फ-सन पानिमे सनगिद भ' गेल हो। निशाभाग राति, बर्फवारी आ बिहाड़ि। मौसमसँ आओर की अपेक्षा क' सकैत छी! अमिय, हमर पुत्र, एयरपोर्ट पर आयल छलाह। सामान लेल। किन्तु, कोन गेटसँ निकली जे भेंट हयत। संयोगसँ, एकटा स्थानीय नागरिकसँ हमर पत्नीकें गप्प होमय लगलनि। ओ पुछलखिन, अहाँक बालककें कोना बुझबामे अओतनि जे अहाँलोकनि कोन गेटसँ बहरायब। तें, ओही सज्जनक फोनसँ गप्प केलहुँ आ अमिय क्षण भरिमे पहुँचि गेलाह। करीब 12 माइलक यात्रा आ अपन डेरा धरि पहुँचि गेलहुँ।

क्लीवलैंडक इलाका अमेरिकाक मध्यपश्चिम इलाकामे अबैछ। एतयसँ पृथ्वीक उत्तरी ध्रुव प्रदेश चारि हजार किलोमीटरसँ कम छैक। अस्तु, एहि इलाकामे लगभग अगस्तसँ मार्च धरि भीषण जाड़क प्रकोप रहैत छैक। एखन बसन्तक ऋतु आबि तँ चुकल अछि, किन्तु, बसन्त अछि कतहु नुकायल। बसन्तक कोनो लक्षण देखबामे नहि अबैछ। चारूदिस 'पत्रहीन नग्न गाछ-वृक्ष', उत्तरमे लेक (झील) इरीक पारसँ अबैत हाड़ हिलबैबला बसात। कखनो रौद, कखनो मेघ आ धुंद, कखनो बरखा आ बर्फ। मौसम कोन समय केहन मोड़ लेत, केवल मौसम विभागे कहि सकैत अछि!

हम अढ़ाइ वर्षसँ बेसी समय लेहमे बितौने छी। ओतहु वर्षमे करीब नौ मास जाड़क ऋतु रहैत छैक। किन्तु, क्लीवलैंड आ लद्दाख़क जलवायु आ मौसममे अनेक मौलिक अन्तर छैक। लद्दाख़ कम आबादीबला शीत मरुभूमि थिक, क्लीवलैंड फलैत-फूलैत महानगर। सुनैत छी, बसन्तक ऋतुमे ई उपत्यका रंग-बिरंगक फूल पत्तीसँ भरि जाइछ। एक दिन एतय बर्फवारीमे टैक्सीसँ अस्पताल जाइत रही। टैक्सीचालक अफ्रीकी-अमेरिकी युवतीसँ गप्प होमय लागल। खराब मौसम, बर्फवारी आ जाड़। स्वतः गप्प मौसमपर आबि गेलैक। हम कहलियैक, आब तँ बसन्त आबि गेलैक। आब जाड़ आ बर्फक अंत हेबे करत। ताहि पर ओ युवती कहलनि, बसन्त एखन कतय! हम कहलियनि, समय तँ भइए गेलैक। ओ कहलनि, बसन्त एतय तखन ओतेक जखन चारूकात फूले-फूले हेतैक, हरियरी पूरा इलाकाकें झाँपि देतैक आ तरह-तरहकेर चिड़ै-चुनमुनी चारूकात देखबै! खैर, हमरालोकनि ताधरि तँ आपस भ' जायब।

दू-तीन दिन धरि बेस ठंढा रहैक। किन्तु, हमरा बिनु टहलने-बुलने चैन नहि। मुदा, एतुका मौसममे मोटगर ऊनी कपड़ाक अनेक परत, टोपी, गरम मौजा आ दस्ताना चाही। नहि तँ, क्षणहिमे गाल-कान-हाथ गुलाबी आ सर्द भ' जायत। हमरा सब किछु स्वीकार्य अछि, मुदा, टहलब-बूलब नहि छोड़ि सकैत छी। बाट भुतिअयबाक कोनो भय नहि। सब सड़क समानान्तर। प्रत्येक स्थान पर साइन-पोस्टिंग। टहलबाक फुटपाथ। रोड पार करबाक स्थान आ सिगनल। आओर चाही की!

ई यात्रा अमेरिकाक हमर दोसर यात्रा थिक। बहुतो वस्तु, रीति-रिवाजसँ परिचित छी। किन्तु, देश भारतसँ जतबे दूर छैक, ततबे भिन्न। तें, एहिबेर हम अमेरिका आ भारतमे समानता ताकि रहल छी।

इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी मनुक्खक जीवनमे भारतहुमे ओहिना हाबी भ' गेल छैक जेना एतय। एतहु लोककें मोबाइल फोन पर टेक्स्ट करैत बाट चलैत, आ गाड़ी हँकैत देखबे करबैक। दोकान आ मॉलमे पोलीथिनक प्रयोग एतहु छैक। काल्हि सी वि एस स्टोरमे आठ गोट, छोटका टॉर्च-सेल केर छोट-सन पैक जखन एक बीतक पोलीथिन बैगमे सेल्स-वूमन देलनि, तँ, बैटरीक पैक हाथमे लेल आ पोलीथिन आपस क' देलियनि! एकटा वस्तु एतय नीक लागल चिड़ै-चुनमुनी खूब छैक। अपना ओहिठाम आब बगड़ा निपत्ता भ' गेलै। एतय हाँज-क-हाँज बगड़ा देखबैक।

किन्तु, बगड़ाक आकार पैघ। मैना सेहो दोसर रंगक। लुक्खी अजस्र। आकारमे

पैघ-मस्त, वर्णमे सामान्य आ कोइली-सन कारी सेहो। टहलबा काल एक दिन एकटा परिसरमे गोड़ चारिएक हरिण सेहो देखलिऐक। एकटा पार्कमे कोयोटी भेड़िया-सन जन्तु-सँ बचावक अनुदेशपर सेहो नजरि पड़ल। एतावता, जैविक विविधता छैक, आ तकर संरक्षण लेल प्रशासन आ नागरिक तत्पर छथि।

एतय हमरा एकटा आओर नीक वस्तु नजरि पड़ल जे पचास वर्ष पूर्व बिहारक देहातहुमे रहैक। किन्तु, आब विलुप्त भ' गेलै। ओ थिक : लेटरबौक्स। एतय ठाम-ठाम US Post केर नील रंगक चौखुट लेटर-बौक्स, नील युनिफार्म पहिरने डाकिया आ डेलिवरी-वैन देखि सकैत छी। भारतमे कोरियरक व्यवसाय आ सरकारक उदासीनता मृत डाक व्यवस्थाक कपाल-क्रियामे लागल अछि। किन्तु, ई समाज लेल नीक नहि।

भारतक विपरीत एतय घरक आगू, व्यापारिक प्रतिष्ठान, स्कूल-कालेज, आ बहुमंजिली आवासीय भवनक परिसरमे राष्ट्रीय ध्वज फहरयबाक परिपाटी छैक। तें, जहाँ-तहाँ फहराइत ध्वज राष्ट्रीय पर्वक आभास दैछ। भारतमे तँ पहिने फ्लैग-कोडक वर्जना रहैक। आब जखन कोनो कानूनी अड़चन नहि छैक, तखनो झंडा फहरायब 15 अगस्त आ 26 जनवरीए धरि सीमित अछि। ओना सब देशमे राष्ट्रीय ध्वज फहरयबाक अपन-अपन नीति आ रीति छैक। जर्मनीमे लोक राष्ट्रीय ध्वज फहरयबा सँ ततेक परहेज करैछ जे 2014 मे जहिया जर्मनी फुटबॉलक विश्वकप जीतल छल तहियो ओतय कमेठाम राष्ट्रीय-ध्वज फहराइत नजरि पड़ल छल; ओहि दिन हमरालोकनि फ्रैन्कफुर्तमे रही। जर्मनीक एहि विचित्र राष्ट्रीय परम्पराक सम्बन्ध प्रायः द्वितीय विश्वयद्धमे जर्मन अतिराष्ट्रवादक कारण भेल ऐतिहासिक कुकृत्यक कारण भेल राष्ट्रीय अप्रतिष्ठासँ छैक।

एखन इन्टरनेट सम्पूर्ण विश्वकें एकाकार क' देने अछि। किन्तु, सम्पूर्ण विश्वमे विदेशी सबहक प्रति लोकक मनमे संदेह जनमि रहल छैक। राष्ट्रसब अपन सीमाकें सुदृढ़ करबाक हेतु सचेत भ' रहल अछि। ई कोनो अनुचित नहि। अपन राष्ट्रक सीमाकें सुदृढ़ करब राष्ट्रक अधिकार थिकैक। किन्तु, राष्ट्रीय सुरक्षाक अभियानमे जखन असहिष्णुताक गंध आबय लगैछ, तँ, अभियान कतेक बेर मानवाधिकारक सीमा रेखाक अतिक्रमणपर अमादा भ' जाइछ। राष्ट्रक सीमा रक्षाक नामे अमेरिकामे विगत मतदानक समय बहुतो अप्रवासी निंदाक निशाना बनलाह। कतेकोकें मानसिक आ शारीरिक आघात सेहो सहय पड़लनि। एहिसँ उदारमना अमरीकी लोकनिकें मनहि-मन वा व्यक्त रूपें ग्लानिक अनुभव भेलनि-ए। तकर अनुभव हमरा एतुका टहलानमे सेहो भेल। किछु गोटेक हातामे एहि आशयक बोर्ड

देखबामे आयल। बोर्डपर लिखल, 'अहाँ कतहुसँ आयल होइ, अहाँ कोनो भाषा बजैत होइ, जँ, अहाँ हमर पड़ोसी छी, तँ, हमरा कोनो आपत्ति नहि'। उदारमना लोकनिक ई उक्ति, संकीर्ण विचारक लोक सबहक गाल पर चमेटा-जकाँ थिक। भारतमे सेहो एखन सामाजिक उथल-पुथलक दौर अछि। अस्तु, हमरो लोकनि एहि विषय पर आत्ममंथन करी, से वांछनीय।

अमेरिकामे जनसंख्या कम छैक। सड़कपर भारत-जकाँ भीड़ नहि भेटत। किन्तु, स्वास्थ्यक प्रति लोक जागरूक अछि। मेडिकल व्यवस्था बड़ महग छैक। तें, वाकिंग, साइकिलिंग, जिमिंग केर परिपाटी छैक। लोक टहलबा काल अपना संग कुकुर बिलाड़िकें सेहो ल' कय निकलैत अछि। मुदा, पहिले बेर लडओना गाड़ीमे पोसा बिलाड़िकें जाइत देखि कौतूहल अवश्य भेल!

क्लीवलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट

म्यूजियम वा अजायबघर की थिक? अजूबा वस्तुक संकलन। मुदा, अजूबा वा आश्चर्यनक की थिक? चलू, किछु गप्प करी। अहाँ शहर-नगरमे जनमल पढ़ल-बढ़ल छी। शहर-नगर देखने छी। जैविक उद्यान, अजायब घर देखने छी। अवश्य। तँ, कहू तँ, ढेकी-उक्खरि-समाठ, जांत-चकरी, डिबिया-लाबन, ढकना-सरबा, घैल-चपइ, टेंगाड़ी-कुरहड़ि, सीक-पटैक, बहिंगा, मौनी-धुथरी, तामा-नपना देखने छियैक? नहि ने? मुदा, पचास वर्ष पूर्व जँ मिथिलांचलमे रहितहुँ, तँ, एहि सब वस्तुक काज होइत। आब ई सब वस्तु जँ संग्रहालयमे नहि राखल जाय, तँ, एहि वस्तु सबकें देखब तँ दूर, परिभाषित धरि करब असम्भव भ' जायत। एत्तहि, संग्रहालय मानव सभ्यताक विरासतकें जोगाकय रखबामे अपन भूमिकाक निर्वाह करैछ।

सत्यतः, पहिल बेर चंद्रधारी मिथिला संग्रहालयमे पांचजन्य शंख आ पानिमे हेलैत पाथर (pumice stone) देखि कय जतेक रोमांच भेल छल, पेरिसक लूव्रेमे मोनालिसा आ वाशिंगटनक नेशनल एयरोस्पेस म्यूजियममे अंतरिक्षयान देखिकय सेहो नहि भेल। मुदा, ई तँ गप्पक गप्प भेल। हमरा म्यूजियम सब नीक लगैत अछि। तें, आब क्लीवलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट केर गप्प करी।

विकिपीडिया कहैछ, क्लीवलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट आकारमे अमेरिकाक चारिम सबसँ पैघ संग्रहालय थिक। एकटा नीक गप्प ई जे एहि संग्रहालयमे प्रवेश निःशुल्क छैक। हमरालोकनि दू गोटे। मंथरगति आ जाहिमे रुचि सएह पहिने देखी। संग्रहालयक प्रवेशसँ पहिने दहिना कात स्वागत-कक्ष। पछाति, क्युरियो-गिफ्ट शॉप। तकर आगाँ अंगनै, फूल पत्ती, आगंतुक लोकनिक हेतु बैसबाक स्थान आ

कैफेटेरिया। हमरालोकनि पहिने कैफेटेरियाक शरण लेल। पश्चिमी देश आ अमेरिकामे शाकाहारी भोजनमे विकल्पक कमी आम थिकैक। किन्तु, पित्‌जा, फ्राइज-चिप्स (मोटा-मोटी आलू भुजिया) सब ठाम भेटत। मदिरा तँ पानिए थिकैक। रुचय तँ मधुपर्क करू। अस्तु, पेट पूजा भेलैक आ संग्रहालयक प्रथम तलसँ भ्रमण आरम्भ कयल।

सबसँ पहिने चीनी चित्रकला, वास्तु, वस्त्र, पात्र, ध्वज, मुद्रा, रेशमी कपड़ापर आलेख, आ मूर्तिक संकलन देखल। इतिहासक हमर ज्ञान सीमित अछि। अस्तु, देखलहुँ आ आगू बढ़लहुँ। किन्तु, अगिला कक्षमे प्रवेश करिते पीड़ा बेसी, आ थोड़ गौरवक बोध भेल।

माटि-धातु आ पाथरक जे भव्य मूर्ति सब बिहार-विंध्य-मथुरा वा तमिलनाडुक मन्दिरक शोभा होइत, आइ लुब्रे, लंदन, वाशिंगटन, न्यूयॉर्क आ क्लीवलैंडक म्यूजियमक शोभा बनल अछि। नाकक सोझमे नटराजक धातुक मूर्ति, एनमेन ओहने जेहन चिदंबरम्‌मे छैक। चारि हजार वर्ष पुरान, सिन्धु-घाटी सभ्यताक अभिज्ञान मुद्रा, जीव जन्तुक आकृतिक सील मोहर-ठप्पा। बीचमे, मथुरासँ प्राप्त बोधिसत्वक टेरा-कोटा मस्तक (दोसर शताब्दी)। क्षत्रपकालीन प्रकृति-देवी। प्रथम शताब्दीक गांधारक वंश-वृद्धिक देवी। राजस्थानकेर तीर्थंकर। दक्षिण भारतीय योगनरसिम्हा। आंध्रक सातवाहन-कालीन बोधि-वृक्ष। गुप्तकालीन मुद्रा। ई सबटा हमरा आकृष्ट केलक। किन्तु, प्रदर्शित वस्तु सभक सूची आ स्रोत एतेक विविध अछि जे सबहक विस्तृत अवलोकन असम्भव। हँ, ई सब देखि कय अंतर्राष्ट्रीय तस्कर सुभाष कपूरक स्मरण भ' आयल। एहि व्यक्तिक गिरफ्तारीसँ भारतसँ चोराओल, विश्वक अनेक संग्रहालयमे प्रदर्शित अनेक मूर्तिसब भारत वापस आयल। दोषी के? हमरालोकनि, जे अपन विरासतक संरक्षणमे असमर्थ छी, वा तस्कर, जे अपन समृद्धि लेल जहाँ-तहाँसँ मूर्ति-चित्रकला आ वस्तुकें चोरा सबटा देश-विदेशक संग्रहालय धरि पहुँचबैत अछि। हमर पुत्र अमिय कहैत छथि, 'चोरि वा तस्करी, विश्व समुदायक विरासत कतहु तँ सुरक्षित अछि। नहि, तँ, की पता, बामियान-बुद्ध वा बाबरी मस्जिदे-जकाँ धर्माधिकारीलोकनि कहिया ने संग्रहालयमे संकलित इतिहासकें, राजनीतिक यज्ञ-कुण्डमे आहूति द' देने रहितथि!'

संग्रहालयक दोसर खण्ड जे हमरा आकृष्ट केलक ओ थिक भूमि-तल पर प्रदर्शित प्राचीन मिस्रकालीन सभ्यता आ इसाई सभ्यताक प्रदर्शित वस्तु सब।

इजिप्सियन-अनुभागक प्रदर्शन सबमे सबसँ सोझाँमे राखल, सम्राट बेकनमुत केर ताबूत हमरा सबसँ पहिने आकृष्ट केलक। करीब तीन हजार वर्ष पुरान एहि

ताबूतक बाहर आ भीतर बनल पेंटिंग एतेक सतरंगी आ जगजियार छैक जे लागत जे ई हाले-सालमे बनल हो। एहि अनुभागमे एकर अतिरिक्त अजस्र मूर्ति, कलाकृति, आभूषण, शिलालेख, वंशावली आ धार्मिक प्रतीक चिह्न छैक, जकरा देखबामे अनेक दिन आ बुझबामे अनेक जीवन लागि सकैछ। अस्तु, आगू बढ़ी।

उपरोक्त संकलनक अतिरिक्त अमेरिकी सभ्यता-सम्बन्धी संकलन सेहो एहि संग्रहालयक विशेषता थिक। हमरा नहि लगैछ, प्रागैतिहासिक अमेरिकासँ सम्बन्धित एतेक वस्तुक संकलन हम कोनो आन संग्रहालयमे एकठाम देखने छी। संग्रहालयक एहि खण्डमे मध्य आओर पश्चिमी अमेरिकापर यूरोपीय प्रभावसँ पूर्वक (Pre Columbian history) इतिहाससँ सम्बन्धित अजस्र मूर्ति, स्वर्ण आभूषण आ पात्र, वस्त्र, पेंटिंग, अस्त्र-शस्त्र देखबामे आओत। सत्यतः, मध्य आ पश्चिमी अमेरिकाक देश-मेक्सिको, ग्वाटेमाला, बेलीज, पेरू-क सभ्यता कतेक समृद्ध आ प्राचीन छैक, से एहि संग्रहालयकें देखि स्वतः सिद्ध भ' जाइछ। मुदा, वृहत् विश्व एहिसँ अभिज्ञ अछि। एतुका संकलनमे प्रमुख अछि पाथर, चीनी मिट्टी आ समुद्री शंख-सीपसँ बनल मूर्तिकला। एहि सबहक अतिरिक्त उत्तरी अमेरिकाक आदिवासी रेड-इंडियनसँ सम्बन्धित कलाकृतिक संकलन सेहो एतय देखबैक।

संग्रहालयक दोसर भाग सबमे आधुनिक यूरोपीय, अमेरिकी, आ कोरियन कलाक संग्रह सेहो भेटत। किन्तु, सब किछु देखबा बुझबा लेल समय, रुचि आ कला-पारखीक दृष्टि चाही।

एहि कला संग्रहालयक भूमिगत तलमे इंटरैक्टिव स्क्रीनसँ युक्त एकटा विशेष खण्ड सेहो छैक जाहिमे लाखो मिनीयेचर छविकें छूबिकय ओकरा सबहक डिटेल्ड स्वरूपक अवलोकन बड़का विडियो स्क्रीनपर क' सकैत छी। संग्रहालयक इएहटा खण्ड देखबा लेल टिकट लगैछ।

आब एतुका Natural history museum क भ्रमण दोसर दिन वा दोसर बेर।

क्लीवलैंड : धधकैत नदी आ भूमिगत रेलरोड

अमेरिकाक ओहायो राज्यक क्लीवलैंड शहर। नाम पहिनो सुनल छल। करीब दस वर्ष पूर्व एतुका क्लीवलैंड क्लिनिकक प्रचार भारतीय पत्रिका सबमे खूब छपइत रहैक। मेडिकल व्यवसायमे अपन योगदानक कारण क्लीवलैंड क्लिनिक चिकित्सा क्षेत्रमे करीब सौ वर्षसँ परिचित अछि। किन्तु, ततबे। आब एतय आयल छी, तँ, जिज्ञासा हयब स्वाभाविक। सुनैत छी, पार्क-अभयारण्य, एडवेंचर-स्पोर्ट, रंगकर्म,

कला, चिकित्साक सुविधा, शिक्षा संस्थानक कारण क्लीवलैंड सम्पूर्ण अमेरिकामे प्रसिद्ध अछि। हमरालोकनि एतेक दूर आयल छी, आ बिनु देखने-सुनने चल जाइ से भ' नहि सकैछ। अस्तु, क्लीवलैंडक सम्बन्धमे जानकारी एकत्र करब आरम्भ कयल।

क्लीवलैंडक इलाका सर्द छैक। उत्तरमे सागर-सन अथाह झील-लेक एरी। प्रचुर गाछ-वृक्ष, नदी-नाला, तरंगित-उत्थर उपत्यका, चिड़ै-चुन-मुनी, आ अजस्र वन्य जीव-जन्तु। आकाश कखनो मेघाच्छन्न, तँ, कखनो नील-निर्मल। बर्फवारी तँ एतुका सोहाग भाग थिकैकः सितम्बरसँ अप्रील धरिक अवधि जाड़क ऋतुमे बीति जाइछ। एतुका सब उत्सव, खेल-कूद, वर्षक बांकी चारि मास धरि सीमित।

अमेरिका अप्रवासी लोकनिक देश थिक आ आधुनिक अमेरिकाक इतिहास सेहो अप्रवासी लोकनिक इतिहास थिक। किन्तु, बस चारि सौ वर्ष पुरान। किन्तु, पृथ्वीक इतिहास तँ अनन्त-जकाँ छैक। पृथ्वीपर मनुष्यक आगमन 2-3 लाख वर्ष पूर्व भेलैक। मानल जाइछ, अमेरिका महादेशपर मनुष्यक पदार्पण आन सब महादेशक पछाति भेल रहैक। तथापि, जहिया आधुनिक अप्रवासी लोकनि अमेरिका आयल रहथि, अमेरिका जनशून्य-बियावान तँ नहिए छल। फल-मूल संग्रह करैत, शिकारी-यायावर-आदिवासी एतहु रहथि। अस्तु, रेड इण्डियन वा इण्डियन लोकनिक विभिन्न संकुल सभ्यता, सामजिक संरचना, वेश-भूषा आ जीवन पद्धतिक वर्णन तँ मानविकीमे अवश्ये छैक। किन्तु, रेड-इण्डियन लोकनिक इतिहास अमरीकी इतिहासक मुख्यधाराक सहायको नदी नहि थिक, से आश्चर्य नहि। देशक इतिहास तँ अधिकांशतः विजेताएक इतिहास होइछ। अमेरिकाक श्वेत समुदाय सेहो एतुका विजेता नस्ल थिक। आ एतुको इतिहास योरोपीय अप्रवासीए लोकनिक इतिहास थिक। इतिहास कहैछ, ओहायो राज्यक एहि क्षेत्रमे आधुनिक अमरीकी अप्रवासी लोकनिक आगमनक अग्रदूत आ सर्वेयर मोजेज क्लीवलैंड जे कायहोगे नदी-घाटी (Cuyahoga river-valley) क सर्वे कयलनि, 18म शताब्दीक अंतमे एतय आयल छलाह। सत्य पुछू तँ एतय कायहोगे नदीक तट पर मोजेज क्लीवलैंडक आयबे क्लीवलैंड नगरक शिलान्यास छल। फलतः, परवर्ती लोकनि एहि नगरक नामकरण एहि सर्वेयरक नाम पर कयलनि।

नदी-नाला जल केर संवाहक थिक, पोखरि-इनार-झील जलक संग्राहक थिक। पर्वतमालाक बर्फ आ झरना पानिक स्रोत थिक। मनुष्य जलक उपयोग आ दुरुपयोग दुनू करैछ। उपयोगसँ जल जीवन थिकैक। दुरुपयोगसँ गंगा-गोदावरी धरि प्रदूषित भ' गेलै। सुनैत छियैक, प्रदूषणक कारण अनेक बेर क्लीवलैंडक कायहोगे

नदीमे सेहो आगि लागि चुकल छैक। चौंकलहुँ ने? नदीमे आगि? हँ, नदीमे आगि। आ किएक नहि? जखन बंगलोरक बैलान्दुर झीलमे बेर-बेर आगि लागिए सकैत अछि, तँ, कायहोगे नदीमे आगि लागि गेल तँ कोन अजगुत! दुनू ठाम कारण एके : प्रदूषण।

ज्ञातव्य थिक, पछिला एक शताब्दीसँ बेसी अवधिमे क्लीवलैंड कोयला आ लौह-अयस्कक आवागमन आ प्रशोधन-संशोधनक केंद्र छल। लोहा-लक्कड़क कारखाना, जल-जहाजक आवागमन, खनिज तेलक आमद-रफ्तसँ नदी ततेक प्रदूषित भ' गेल छलैक जे क्लीवलैंड द' बहैत कायहोगे नदीक खंडक सतहपर अनेको इंच मोट तेल-गादि आ गर्दाक परत जमि गेल छलैक। एहिसँ नदीसँ जीव-जंतु तँ उकन्नन भइए गेल छल, कहबी छलैकः जँ, भूल-चूकसँ मनुक्ख कायहोगे नदीमे खसैत, तँ, ओकर मृत्यु पानिमे डूबलासँ भले नहि होइतैक, मुदा, नदीक प्रदूषित पानिक स्पर्शसँ शरीर अवश्य गलि जइतैक। सुनबामे ई गप्प भले हास्यास्पद लागय, आइ चेन्नईक अडयार, मुंबईक मिथि, आ दिल्लीक यमुना सहित महानगर द' बहैत भारतक अनेक नदीक हालत एहिसँ कनेको भिन्न नहि! किन्तु, प्रदूषण जाधरि मनुष्यक अस्तित्वपर सोझे प्रहार नहि करैछ, मनुक्ख गबदी मारने सूतल रहैछ। तें, लंदन-दिल्ली-क्लीवलैंड आ आओर अनेक महानगर समय-समय पर प्रदूषणक दानवसँ मुँहामुँही होइत आयल अछि। अस्तु, जखन कायहोगे नदी धधकय लागल छल, शहरक संपत्तिक नाश तँ भेबे केलैक, सूतल प्रशासक लोकनिक निन्न सेहो टुटलनि, आ प्रदूषित नदीक पर्यावरणक सुरक्षाक मुहिम आरम्भ भेल। एहिसँ पर्यावरणमे सुधार तँ भेलैक, किन्तु, समस्याक पूर्ण समाधान एखनो बांकिए अछि, से तखन बुझबामे आयल जखन एतुका ग्रेटर क्लीवलैंड म्यूजियम गेलहुँ। म्यूजियममे एकटा सूचना-पटपर पढ़ल जे स्थानीय उद्योग-धंधाक कारण एतुका एरी झीलक तट एक समयमे अमेरिकाक सबसँ बेसी प्रदूषित झील सबमे सँ दोसर नम्बरपर आबि गेल छल। झीलक तटक प्रदूषित हयबाक दोसर प्रमाण सँझुका टहलानक दौरान चेतावनीक बोर्डसँ सेहो भेटल। बोर्डमे लोककें लेक एरीक तटकेर प्रदूषित खण्डमे नहयबासँ मना कयल गेल छैक।

क्लीवलैंडक इतिहासक एकटा आओर पक्ष हमरा अनायास आकृष्ट केलक। एतुका लेकवूड पार्कमे घुमैत, झीलकेर कछेर लग एकटा प्लाक (सूचना-पट) देखबामे आयल। समान्यतः 'प्लाक' सब भवन, स्तम्भ वा मंच लग देखबैक। भूमिपर प्लाक! साकांक्ष भेलहुँ। एकर सम्बन्ध विगत युगक दास-प्रथासँ पलायनसँ छैक।

16म आ 17म शताब्दीमे अमेरिका पश्चिमी देशमे प्रचलित दास व्यापारक प्रमुख गाहकि छल। ओहि युगमे हजारो संख्यामे अपहृत, स्वस्थ अश्वेत पुरुष आ नारि समुद्रपार अफ्रीका आ कैरबियनसँ बेच-बिकिन लेल अमेरिकाक विभिन्न तटपर आनल जाइत छल। अमेरिकाक दक्षिणी राज्यसब, जतय तमाकू आ कपासक खेती लेल बेगारक मांग बेसी छलैक, एहि दास व्यापारक केंद्र छल। विभिन देशसँ उजड़ल-उपटल असहाय दासक बेच-बिकिनक पछाति आरम्भ होइत छलैक दासताक दारुण जीवन, जाहिमे दास पुरुष-नारि आ नेना, सामंतक संपत्ति, नारिक गर्भ, सामंतक खेत, आ ओकर पेटसँ जनमल नेना सामंतक उपजा छल। श्रम तँ मुफ्त छलैके। हाल-सालक फिल्म Twelve Year a Slave मे अमेरिकामे प्रचलित दास व्यवस्थाक झलक भेटत। एकर चर्चा पहिनहुँ भेल अछि। मुदा, एकरा ओहायो-क्लीवलैंड सँ कोन मतलब? हँ, सएह तँ कहैत छी। पहिल, 18म शताब्दीक उत्तरार्ध आ 19म शताब्दीमे ई दास-व्यवस्था केवल अमेरिकाक दक्षिणी राज्यधरि सीमित रहि गेल छल। अमेरिकाक पूर्वोत्तर राज्यसब आ कनाडा दास-प्रथाक कोढ़सँ मुक्त छल। ओहायो नदी अमेरिकाक एहि दुनू क्षेत्रक वृहत्तरसीमा छल। ओहायो राज्यमे अमेरिका-कनाडाक सीमा एरी झीलक बीचोबीच पड़ैछ। अस्तु, मुक्तिक हेतु कनाडा दिस नुका-छिपाकय भगैत दास-लोकनिक हेतु क्लीवलैंड एकटा आखरी पड़ाव छल। संयोगसँ एतुका राजनैतिक परिवेशमे किछु पक्ष सेहो दास-मुक्तिक पक्षधर छल। सम्पूर्ण पश्चिमोत्तर अमेरिकामे पसरल, अश्वेत लोकनिक मुक्तिक हेतु भूमिगत संगठन इतिहासमे भूमिगत रेल Underground Railroad क नामसँ जानल जाइछ जकरा स्थान-स्थानपर पीड़ित अश्वेत, उदारवादी श्वेत, चर्च-पादरी, गृहस्थ आ नाविकक गुप्त सहयोग भेटैत छलैक। सुनैत छी, पलायनक एहि अभियानक जेहने भूमिगत जाल रहैक, तेहने शब्द-कोष। सुनैत छी, भारतमे ठग लोकनिक सेहो अपन छद्म शब्दावली रहनि जकर संकलन ब्रिटिश सेनाक ले. कर्नल स्लीमनक पुस्तक The Thugs or Phansigars of India (1839) मे भेटत। ई विषयांतर भेल। ज्ञातव्य थिक, दास-प्रथा जेहने दारुण रहैक, पलायन ततबे कठिन आ भयानक। परिणाम ओतबे अनिश्चित। कतेको मरैत छल। पकड़यलापर कतेको दासक हाथ-पयर तेना पांगल जाइत छलैक, जे कतेक जान गमा बैसैत छल आ कतेको जीवन भरि लेल अपंग भ' जाइत छल। किन्तु, मुक्तिक बिना ओ सब जीवने की भोगैत छल! कम्युनिस्ट मनिफेस्टोमे कहलो गेल छैक, 'The proletarians have nothing to lose but their chains.' ई कहबी दास पर आओर बेसी सटीक बैसैत छलैक। अस्तु, भगबामे सफल होइ वा जान

गमाबी कोनो स्थितिमे दासतासँ मुक्ति श्रेयस्कर रहैक। क्लीवलैंड दास-मुक्ति मार्गपर एक प्रमुख पड़ाव छल। एकर चर्चा पुनः यथास्थान आओत। अमेरिकाक दासतासँ कनाडा पलायनक ई संदर्भ Uncle Tom's Cabin मे सेहो भेटत। मानल जाइछ, दास-प्रथाक पक्षधर खेतिहर आ दास-प्रथाक उन्मूलनक आन्दोलनक सूत्रधार लोकनिक बीच मतभेदक कारण भेल अमेरिकी गृहयुद्धक आगि सुनगबैमे Uncle Tom's Cabin सुखायल पोआरपर आगिक चिनगीक काज केने छल से तँ सुननहि छी।

ग्रेटर क्लीवलैंड एक्वेरियम आ लौली द ट्राली

क्लीवलैंडमे दर्शनीय स्थल, आ मनोरंजनक अवसरक कमी नहि। चिड़ियाखाना, म्यूजियम, एक्वेरियम आ पार्क तँ बच्चासँ बूढ़ धरिकें आकृष्ट करैछ। हमरो लोकनि एक दिन टैक्सी लेल आ एक्वेरियमक द्वारि पर पहुँचि गेलहुँ। ई एक्वेरियम एकटा पुरान पॉवर हाउसक बिल्डिंगमे अछि। संयोगसँ एक्वेरियमक द्वारि दाहिना दिस चारि-छओ सीढ़ी नीचा छैक। सामने सोझे नगर भ्रमणक हेतु कन्डक्टेड टूरक बस 'लौली द ट्राली'क काउंटर देखबामे आयल। टिकट कीनि लेल। टिकट 23 डॉलर। पहिल बेर सीनियर हेबाक लाभ भेल। सीनियरक टिकट 21 डॉलरः जत लब्धम्, तत लब्धम्। यद्यपि, आब एतहु 2 डॉलरमे किछु भेटत, से असंभव। पर्यटन-स्थल पर पेय जलक छोटका बोतल सेहो अढ़ाइ डॉलरसँ बेसी! पछिला दस वर्षमे भले डॉलरकेर मूल्य नहि घटल होइक, मंहगाइ एतहु बढ़लैक-ए, से अनुभव भेल। जे किछु। पछिला ग्रुप एक घंटाक टूर लेल निकलि चुकल छल। अगिला अढ़ाइ घंटाक टूर, 2 बजे दिनमे छलैक। बहुत नीक। आब एक्वेरियम देखिए लेब आ नगर-भ्रमणसँ पहिने भोजनक हेतु समय सेहो भेटि जायत।

ग्रेटर क्लीवलैंड एक्वेरियम आकारमे छोट आ विविधतामे सीमित अछि। बैंकाककेर एक्वेरियम प्रायः एहिसँ पैघ लागल छल। जापान आ सिंगापुरमे तँ सुनैत छी, अद्‌भुत एक्वेरियम सब छैक।

एक्वेरियम मूलतः तीन-चारि खण्डमे विभाजित अछि : शार्क गैलरी, कोरल रीफ, कोस्टल बायोस्फेयर, विश्वकेर नदी आ झील, ऑहियो राज्यक नदी आ झील। तथापि स्टिंग-रे माछ आ अनेक प्रजातिक काछु, धिया-पुताक हेतु एतय विशेष आकर्षण अछि। एकर अतिरिक्त एतय नेना लोकनिक हेतु एक्टिविटी दीर्घा आ एक्सप्लोरेशन स्टेशनमे बेस भीड़ देखलियैक।

जाड़क ऋतु मोटामोटी समाप्त भ' गेल छैक। किन्तु, तेज हवा आ सघन

मेघक कारण आइ एतय हाड़ हिलबै बला जाड़ छैक। गर्मीक मासमे नगर केर ई इलाका आओर अनेक गतिविधि केंद्र भ' जाइछ, जाहिमे एक्वेरियमक भीतर घूमब आ नगर भ्रमणक अलावा कोयहागे नदीपर विहार प्रमुख अछि। एक्वेरियमकेर बाहर लगहिमे जहाज देखलियैक। एहिपर केवल टूर आ टूरक संग भोजन आ मदिरापानक पैकेज सेहो उपलब्ध छैक। कइएक जहाज लेक इरी पर नौका विहार लेल सेहो जाइछ। किन्तु, ई सब मइ मासमे आरम्भ हेतैक।

एक्वेरियमक भवनक दोसर तलपर, भारतक फर्स्ट फ्लोर, नौटिका नामक रेस्तौराँ छैक। ओत्तहि भोजन भेलैक आ सिटी टूर लेल प्रतीक्षा करैत समय बिताओल।

समयसँ पहिनहि एक्वेरियमसँ बाहर आबि 'लौली द ट्राली'क प्रतीक्षामे ठाढ़ भेलहुँ। जाड़ बहुत। किन्तु, बस छुटबाक भय छल। लाल रंगक बस समयसँ अयलैक। बाहरसँ पैघ, किन्तु, भीतर सीमित लोकक बैसबाक व्यवस्था। पुरान ढर्राक, मजबूत काठक बनाबट। खुला खिड़की सब जाड़क कारण पारदर्शी प्लास्टिकक पर्दासँ बंद कयल।

शहरक एहि भागकें समतल भूमिक कारण फ्लैट्स कहैत छैक। ई शहरक औद्योगिक इलाका थिक जकर प्रसार नदीक पूब आ पश्चिम, दुनू तट पर छैक। किन्तु, बसक यात्रा नदीक पछबरिया तटसँ आरम्भ भ' रहल छैक। लेक इरीक लग, नदीक मुहानाक ई इलाका, नौवहनक केंद्र थिक। ज्ञातव्य थिक, अमेरिकाक मिडवेस्टर्न राज्यसब, देशक वृहत्तर झील सबहक माध्यमसँ देशक आन अनेक राज्य सबसँ माल-असबाबक यातायात लेल जुड़ल अछि। ई जलमार्ग लौह-अयस्क, पाथर, कोयला, चूना पत्थर, कृषि-उत्पाद, विशाल औद्योगिक माल-असबाब, जकरा सड़कसँ एक स्थानसँ दोसर ठाम पठायब कठिन छैक, केर यातायात लेल सुलभ, सस्त आ पर्यावरणक हेतु समुचित माध्यम मानल जाइछ। इरी केनालक द्वारा ई जलमार्ग अमेरिकाक पूर्वी तट आ कनाडासँ सेहो जुड़ल अछि। इरी केनाल अपन निर्माणक समय (1817-25) मानवीय संकल्पक द्योतक आ इंजीनियरिंगक आश्चर्य छल। एतय लगेक पुरान 'स्विंग ब्रिज' ओही नौवहन व्यवस्थाक प्रमाण थिक। एकर कारण क्लीवलैंड अमेरिकाक औद्योगिक उत्पादन व्यवस्थाक रूपें अंगीभूत भेल छल। आइ पाँच सौ पचीस माइल लम्बा Erie Canalway National Heritage Corridor क नामे सुपरिचित ई व्यवस्था अमेरिकी नागरिक लोकनिक दूरदर्शिता आ दृढ़ संकल्पक प्रमाण थिक। भारतमे नदीक माध्यमसँ माल असबाबक यातायातमे कोनो प्रगति नहि भेल अछि। देखी, पर्यावरण-संरक्षणक परिप्रेक्ष्यमे हितकर नौवहनक हमरालोकनि कतेक प्रयोग क' पबैत छी।

'लौली द ट्राली'क चालक-गाइड, ईवा, करीब सत्तरिसँ पचहत्तरि वर्षक श्वेत महिला, ड्राइविंग आ टूर-गाइड, दुनू दृष्टिएँ दक्ष छथि। ने गाड़ी हँकबामे कोनो जल्दी, ने कमेन्ट्री मे कोनो शॉर्ट-कट। एहि शहरमे पलल बढ़ल छथि, तें, एतुका इतिहासक चप्पा-चप्पासँ परिचित सेहो छथि। अपन काजमे रुचि छनि, आ ओहिमे ई कोनो बाधा नहि चाहैत छथि। तें, आरम्भहिमे कहि देलनि, 'अपनामे गप्प करैत जायब, तँ, हमर गप्प सुनबामे नहि आओत'। सत्ये। ओहुना, अमेरिकामे पब्लिक-प्लेसमे जोर-जोरसँ बाजब अशिष्टता बूझल जाइछ।

यात्रा आरम्भ भेल आ गाइडकेर पहिले वर्णनसँ सबकें हँसी लागि गेलैक। संदर्भ छलैक, एतुका मेन स्ट्रीट ब्रिज जे एतुका नागरिक सब अपने हाथें तोड़इत गेलाह। तोड़इत गेलाह? अजगुत बात। लोक नदी पर पुल बनबैत अछि। ताहिमे खर्च लगैत छैक, इतिहास बनैत छैक। किन्तु, पुल तोड़ल गेल? की कहू, द्वन्द्व-क्रोध आ रोष, जे ने कराबय। चलू, गप्पेमे लागल छी, तँ, सुनिए लियअः

क्लीवलैंड शहरक स्थापनाक पछाति एतय बसैत पहिल बस्ती छल, नदीक पछबारि तटपर बसल-ऑहायो सिटी। तहियाक समृद्ध लोकनिक आवास एम्हरे छलनि। पछाति जखन कोयेहागो नदीपर पैघ पुल बनल, तँ, शहरक पश्चिमसँ पूब दिसुक यातायात सुलभ भ' गेलैक। एहिसँ फल ई भेलैक जे, पुलक स्थानक कारण, शहरसँ दूर, पश्चिमसँ अबैत कृषि उत्पाद-अन्न, फल-फूल-सोझे नदीक पुबारि पार चलि जाइक। ओहायो सिटीक मुँहपुरुखकें से कोना पसिन्न पड़ितनि! मुदा, व्यापारिक लाभकें लोकमतसँ कोन सरोकार? तें, पुलक आर-पार यातायात चलैत रहल। अन्ततः, एतुका लोक सब पुल तोड़बाक संकल्प क' लेलक आ ताहिमे सफल सेहो भेल। किंतु, निर्माणहि-जकाँ विध्वंसमे सेहो अर्थ लगैत छैक। देखैत नहि छियैक, युद्धमे उपयुक्त विध्वसंक उपकरण विश्व आर्थिक संसाधनक कतेक अंशकें धुआँमे उड़ा दैछ। किन्तु, से विषयांतर भेल। ईवा कहलनि, मेन स्ट्रीट ब्रिजकें तोड़बाक समय अमेरिकामे आर्थिक मंदीक युग छल। तें, जहाँ बिचला भाग तोड़ल गेल, एहिसँ पुलक बाटें यातायातक विच्छेदसँ लोकक आक्रोशक समन सेहो भ' गेलैक आ थोड़ श्रमसँ इच्छा पूर्ति सेहो। मुदा, पुलक शेष भाग, ओहि युगक अजगुत लोकमत आ लोक-व्यवहारक साक्षी, आइओ एत्तहि ठाढ़ अछि।

मेन स्ट्रीट ब्रिजक पछाति बस शहरक पुरान बस्ती दिस चलल। एक पांतीसँ बनल एके प्रकारक आवास। सब ठाम सड़कपर गाड़ीक पतिआनी, ककरो स्वतंत्र पार्किंग नहि। ईवा कहलनि, ओहि युगमे, जहिया ई बस्ती बसल छल, मोटर कारक

इजाद कहाँ भेल रहैक। घर सबमे जंगला-खिड़कीकक बहुलता बिजुलीक अभावक द्योतक। रास्तामे पुरान स्कूल, ब्रीवरी, चर्च, बाजार अबैत गेल। जतेक प्रकारक धर्म-सम्प्रदाय, ततबे प्रकारक चर्च। भगवान तँ एक छथि, सुनैत छी। किन्तु, सबहक देवता अनेक। इसाई लोकनिमे सेहो ईसा सबहक मुक्तिदाता थिकाह, किन्तु, पूजक लोकनिक सब समूहकें हुनकर एक छवि स्वीकार नहि। ककरो हेतु क्राइस्ट नेना थिकाह, ककरो लेल गड़ेड़िया, आ ककरो लेल शहीद। ई मतभेद तँ हिन्दुओ धर्ममे छैक। एकर एकटा आश्चर्यजनक उदाहरण हमर सहकर्मी, डॉ श्रीकान्त देलनि। श्रीकान्त विश्वाससँ संत रामानुजमकेर अनुयायी वैष्णव थिकाह। ओ एकदिन कतहु काञ्चीपुरम् एक विष्णु मन्दिरमे गेल रहथि। ओहि मन्दिरमे विष्णुक प्रशस्तिक संकीर्तन चलैत रहैक। भक्त-जकाँ, श्रीकान्त संकीर्तनमे शामिल तँ भ' गेलाह। किन्तु, शीघ्रे ओतुका एकटा अर्चक कहलथिन, अहाँ गीत जुनि गाउ। कारण, श्री रामानुजमक अनुयायी लोकनिक दू शाखा-वडगलइ आ तेंकलइ-एक दोसराक पूजा पद्धतिसँ सहमत नहि! आ श्रीकान्त ओतुका पूजक तेंगलइसँ भिन्न, वडगलइ मतानुयायी थिकाह!

एतुका चर्च स्ट्रीटपर संत जॉन एपिस्कोपल चर्च हमरा विशेष रूपें आकृष्ट केलक। ईवा कहलनि, ई चर्च अमेरिकासँ कनाडा दिस भगैत अश्वेत दास लोकनिक पलायनक सहायक अंडरग्राउंड रेलरोड संगठनक हेतु अनेक अंतिम पड़ावमे सँ एक छल। सुनलहुँ, कोयाहोगे नदी आ लेक इरी दिस जाइत तहियाक भूमिगत सुरंगक किछु हिस्सा एखनो एहि चर्चकेर तहखानामे सुरक्षित अछि। रंगभेदक कारण सदासँ प्रताड़ित अश्वेत लोकनिक हेतु तँ ई अवशेष तीर्थसँ कम नहि।

शहरक एहि भागमे क्लीवलैंड क्लिनिकक संस्थापकक आदिनिवास सेहो देखल।

ऑहियो सिटीक ई भाग छोड़बासँ पूर्व, दूरहिसँ, एतुका ऐतिहासिक इनडोर-आउटडोर वेस्ट-साइड मार्केट सेहो देखल। एखन ई मार्केट व्यापारिक केंद्रक अतिरिक्त पर्यटकक आकर्षण सेहो थिक। मुदा, अजुका अढ़ाइ घंटाक टूरमे एकरा देखब संभव नहि।

वेस्ट-साइड मार्केटसँ आगू लौली 'होप मेमोरियल ब्रिज' बाटें कोयेहागे नदी पार कयलक। एहि पुलक आरम्भमे सड़कक दुनू कात, पुलक पहिल पायापर पुलक रक्षक देवताक विशाल मूर्ति सब रोम शहरक स्मरण दियौलक। आब, मूर्ति पुलक रक्षा करैत अछि वा केवल पुलक सजावट थिक, के कहत!

होप मेमोरियल ब्रिजकें पार करैत बस डाउनटाउन क्लीवलैंड पहुँचल। एतय

हमरा सड़कक कातमे जैक क्लीवलैंड कैसिनो आकृष्ट कयलक। एहि विशाल भवनक ऊपरका तल्लापर अमेरिकाक प्रसिद्ध 'की-बैंक' अछि। हमर पुत्र, अमिय, एही भवनमे अपन काज लेल प्रतिदिन अपन ऑफिसमे बैसैत छथि। मुदा, एहि बेर कैसिनो देखब हमर प्रोग्राममे नहि अछि। 2009 मे लॉस-वेगसक कैसिनोमे कौतूहलवश किछु डॉलर डुबौने रही। देखबा लेल एकटा अनुभव काफी अछि। सुनैत छी, कैसिनोमे जितल टाकापर असूलल 33% टैक्स, ई नगर सार्वजनिक कार्यमे लगबैछ! जुआक कमाइ आ धर्मार्थ! भेलैक!!

तिरुवल्लुवर कहैत छथि, हमरा शब्द मे* :

भने जीत, जुनि खेलक लोभ

जीत बोर थिक बंसिक नोक; कुरल, 931

मुदा, भौतिकवादी समाजमे एक गोटेक लुटायबसँ जँ दोसर धनक संग्रह करैछ, तँ कोनो अनुचित नहि। टैक्स देलियैक, तँ, नीक-बेजायक भेद कहाँ रहलैक!

कैसिनोक आगू बस, समीपेमे, पब्लिक स्क्वायर आयल। शहरक एहि मुख्य चौराहाक चारूकात एहि ठामक चारि टा प्रमुख गगनचुम्बी भवन सब अछि, जाहि सबहक अपन-अपन इतिहास छैक। मुदा, एहि चौराहा पर अमरीकी गृहयुद्धमे सहयोगी सैनिक आ नाविक लोकनिक स्मारक आ मोजेज क्लीवलैंडक मूर्ति एतुका प्रमुख आकर्षण थिक। ज्ञातव्य थिक, अमेरिकाक उद्‌भव आ विकासमे अमरीकी गृहयुद्धक स्थान केंद्र विन्दु पर छैक। तकर अनुभव सबठाम हयत।

सिटीसेंटर देखलाक पछाति बस एतुका प्ले-हाउस स्क्वायर दिस बढ़ल। प्ले-हाउस स्क्वायर एतुका रंगकर्मक केंद्र विन्दु थिक, जे न्यूयॉर्क शहरक बाद एहि देशक दोसर सर्वप्रसिद्ध कला क्षेत्र थिक। मुदा, एहि यात्रामे हमरालोकनि सिनेमा-नाटकक हेतु समय नहि निकालि सकलहुँ। तें, ई सब आब अमेरिकाक तेसर यात्रामे हेतैक। मुदा, एहि स्क्वायरमे सड़कक बीचक विशाल झाड़-फानूस देखल। संगहि, समीपहिमे भोजन आ पेयक हेतु प्रसिद्ध 'यूक्लिड एवेन्यू' पर 'फोर्थ स्ट्रीट'क भीड़ आ जीवंतता देखि बससँ उतरि भीड़मे हेड़ा जयबाक आकांक्षा जोर नहि मारलक, से कोना कहब। किन्तु, तेहि नो दिवसा गताः! ई फोर्थ स्ट्रीट तँ दिल्लीक चान्दनी चौककें मात करैत अछि। एहि सड़कपर जँ मधुपर्क नहि कयल आ एतुका व्यंजनक आस्वाद नहि कयल, तँ, दोसर बेर एतय आयब तँ उचिते!

एहि यात्राक दौरान इवा हमरालोकनिकें 19म आ बीसम शताब्दीक अरबपति

---

* कुरल मैथिली भावानुवाद, 2017

लोकनिक इलाका मिलियोनेयर-रो सेहो देखौलनि। ओहि युगमे एहि ठामक कतेको विशाल प्रासादमे तीन-तीन-चारि-चारि सौ सेवक सेवारत रहथि। मुदा, पुरान व्यवस्थाक अंत आ नव व्यवस्थाक आरम्भसँ कतेको पुरान घर खसि चुकल अछि आ पुरान अट्टालिका सबहक स्थान पर आधुनिक कबूतरखाना-कोन्डोज-क सैकड़ो अलग-अलग आवासक स्वामित्व एक व्यक्ति स्थान पर सैकड़ो नव-धनाढ्यक हाथमे चल गेल अछि।

आओर किछु दूर आगू क्लीवलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी आ क्लीवलैंड हॉस्पिटलक बड़का क्षेत्र देखल। क्लीवलैंड स्टेट यूनिवर्सिटी प्राइवेट यूनिवर्सिटी थिक। कीनबाक सामर्थ्य हो तँ नामांकन लेल प्राइवेट यूनिवर्सिटीसँ नीक कोन स्थान भेटत। मुदा, आब हमरालोकनि एकर निंदा की करबैक। आब तँ भारतहुमे सरकारी नीतिक बलें धनाढ्य उद्योगपति द्वारा संचालित प्राइवेट यूनिवर्सिटी, शिक्षा व्यवस्थाक केंद्र विन्दुमे आबि रहल अछि आ गरीब-गुरबाक अंतिम शरण सरकारी संस्थान क्रमशः, शिक्षा व्यवस्थाक परिधि दिस ससरि रहल अछि। प्राइवेट शिक्षा व्यवस्थाक क्षीर-सागरमे लक्ष्मीपुत्र लोकनि विष्णु-जकाँ जल-विहार करैत छथि आ आम लोक उगडूब क' रहल अछि। राजनेता आ सरकार एक हाथें लड्डू बंटइत छथि, आ दोसर हाथें मुंगबा हँसोथैत छथि। हमरा जनैत, ई एखन आओर बढ़त। सौ वर्षक पछाति की हेतैक, से के कहत!

लौली-ट्रालीक संग दू घंटा कोना बीति गेल बुझबो ने केलियैक। यूनिवर्सिटीक इलाकाक पछाति बस एतुका पुरान विश्वविद्यालय, केस वेस्टर्न यूनिवर्सिटी, आ क्लीवलैंड म्यूजियम ऑफ आर्ट, नेचुरल हिस्ट्री म्यूजियम, आ चिड़ियाखानाक इलाकासँ ड्राइव करैत गेल। एहि सबसँ आगू, ईस्ट बुलेवार्ड एवं डॉ. मार्टिन लूथर किंग जूनियर मार्ग पर रॉकफेलर पार्क अवस्थित क्लीवलैंड कल्चरल गार्डेन बाटे बस आगू बढ़ल। सैकड़ो एकड़ जंगलमे पसरल, ऊपर-नीचा तरंगित भूमिपर दर्जनो देशक भिन्न-भिन्न बगीचाक समूह ई इलाका क्लीवलैंड आ अमेरिकाक निर्माणमे अप्रवासी लोकनिक योगदानक प्रतीक थिक। एहि बगीचाक समूहमे भारतक खण्ड पर के छथि, से कहबा लेल कोनो पुरस्कार नहि। एतय हमरालोकनि राष्ट्रपिता गाँधी क्लीवलैंडक दारुण जाड़मे केवल अपन धोती, तौनी, आ लाठीक बलें भारतक प्रतिनिधित्व करैत छथि। मुदा, मदर टेरेसाक स्थान अल्बानियाक खण्डमे छनि। नहि कहि सकैत छी, गाँधी आ टेरेसा-सन विश्व मानवकें देश आ माटिसँ जोड़ब उचित कि नहि।

घुरतीमे बस लेक एरीक कछेर पर बर्क लेकफ्रंट एयरपोर्ट, पनिडुब्बी संग्रहालय

यु एस एस कॉड, स्टीम शिप विलियम जी माथेर, रॉक-एंड रोल हॉल ऑफ फेम, आ नासा ग्लेन विजिटर सेण्टर बाटे ड्राइव करैत पुनः फ्लैट्समे आबि विराम लेलक। लेक फ्रंट पर अवस्थित पूर्वोक्त सब दर्शनीय स्थल मइ मासमे खुजतैक। तें, आइ ई सब नहि देखि सकलहुँ। मुदा, हमरा तकर एकोरत्ती मलाल नहि। असलमे, एहिबेर क्लीवलैंडक सबसँ दर्शनीय वस्तु हमर नवजात पौत्र आयुष्मान् अग्निव थिकाह। तें, हम संतुष्ट-प्रसन्न छी। बांकी सबटा अगिला बेर।

थाईलैंड

राजा राम, बुद्ध आ गरुड़ केर देश थाईलैंडमे

हमरालोकनिक फ्लाइट जखन बैंकाकक सुवर्णभूमि एयरपोर्टपर उतरबापर छल, पौ फाटि चुकल रहैक। रातिक एक बजेक करीब चेन्नईसँ चलल रही आ साढ़े तीन घंटाक फ्लाइट। एतेक जल्दी भोर कोना भ' गेलैक, से बूझब कठिन नहि। सोझे पूब मुँहें सूर्येक दिस जे आगू बढ़ल रही। तखन सूर्य जल्दी अवश्ये भेटताह ने!

अगस्तक मास, मौनसूनक समय। किन्तु, मौसम साफ रहैक। बैंकाक दक्षिण-पूर्व एशियाक सुपरिचित आ लोकप्रिय पर्यटन स्थल थिक, से एयरपोर्टक आकार आ पर्यटक लोकनिक संख्यासँ स्वतः बुझबामे आबि गेल। भारतीय नागरिककें थाईलैंड अयबा लेल पहिनहि वीसा लेब आवश्यक नहि। एयरपोर्ट पर उतरू, फॉर्म भरू, पासपोर्ट दिऔक, वीसाक फीस भरू, आ स्वागत। किन्तु, व्यवस्था सरल रहितहुँ कर्मकांड बहुत। इमीग्रेशन केर 200 मीटर लम्बा पतिआनी। राति भरिक यात्रा। भोरुका नित्यक्रिया आ जलपानक बेरमे एतेक प्रतीक्षा हुज्जति-जकाँ लागल। एतुका इमीग्रेशनक बनिस्बत न्यूयॉर्क आ लन्दनकेर इमीग्रेशन प्रायः बेसी सरल। कारण प्रायः इहो जे थाईलैंड पर्यटक लोकनि लेल स्वागतक गलीचा बिछौने तत्पर अछि। दूरीक अलावा, अमेरिका आ ब्रिटेन प्रत्येक बाहरीकें संदेहक दृष्टिसँ देखैछ। एतय इमीग्रेशनमे करीब तीन घंटा लागि गेल। किन्तु, ई तीन घंटा अजुका यात्राक अंत नहि, आरम्भे छल। हमरालोकनिकें एतयसँ दूर दक्षिण फुकेत जयबाक अछि। फ्लाइटमे किछु घंटाक समय बांकी छैक। अतः, एयरपोर्टपर बैसबाक अतिरिक्त कोन उपाय। प्रतीक्षा आ दोसर फ्लाइटसँ लम्बा यात्राक पछाति जखन हमरालोकनिक फ्लाइट फुकेत पहुँचल छल, तँ, दिनान्त-जकाँ हेबा पर रहैक। माने, पर्यटनक एक दिन तँ यात्राएमे बीति गेल।

फुकेत

फुकेत थाईलैंडक दक्षिणी पश्चिमी तटपर एकटा द्वीप आ थाईलैंडक लोकप्रिय पर्यटन स्थल थिक। पहिलुक युगमे ई भारत आ चीनक बीचक नौवहनक बाट पर

पड़ैत छल। एकर अतिरिक्त एतय पुर्तगाली, ब्रिटिश, आ फ्रेंचलोकनि सेहो समय-समय पर आयल छलाह। भौगोलिक दृष्टिसँ तँ फुकेत अंडमान द्वीप समूहक सोझे पूब आ समीपे अछि। एतय एयरपोर्टपर टूर ऑपरेटरकेर गाड़ी तत्पर छल आ हमरालोकनि सोझे होटल गेलहुँ। स्थानीय होटल 'दीवाना पटोंग' एतुका लोकप्रिय समुद्र तट, पटोंग, इलाकाक सुपरिचित होटल थिक। सुविधामे 3-सितारा। एकरा बजट-होटल सेहो कहि सकैत छियैक। मुख्य भवनमे स्वागत-कक्षक पाछू पैघ-पैघ सूइटकेर मिलिट्री बरैक-जकाँ लम्बा पतियानी। परिसरमे गाछ-वृक्ष आ हरियरी। कनिएक दूर पाछू कम ऊँचाइक पहाड़।

मौनसूनक समय। भूमि तीतल छैक, किन्तु, थलाह नहि। आइ समय सेहो रुक्ख-सुख छैक, तें, कोनो असुविधा नहि। रेस्टोरेंट लगहि, आ रूम सर्विस सेहो। तें, कोनो असुविधा नहि। हमरा रेस्टोरेंटमे भोजन करब नीक लगैए। मनुक्खक दर्शन, दस प्रकारक लोक, विभिन्न प्रकारक गप्प सप्प। लोकसँ भेंट नहि भेल, तँ, भूमिक गंध कोना भेटत। बंद कमरामे केवल रूम-स्प्रे केर गंध, टीवीक स्वर आ छवि, आ चारू कात चारिटा देवाल! उन्मुक्त आकाशक नीचा मनुक्ख, जीव-जन्तु, ध्वनि, सुगंधि, हमरा सब किछु आकृष्ट करइए। भने तँ यात्री-नागार्जुन मोन पड़ैत छथिः

घूमो-फिरो बाहर निकलो, घर के अन्दर क्या रखा है?
खेतों में बंदूकें उगतीं हैं, टेक सेर तो बम मिलता है!

किन्तु, बहुतो पर्यटक एतय खेत-खरिहानक दृश्य देखबा लेल नहि अबैत छथि। मोटा-मोटी जेहन पर्यटक, तेहन उद्देश्य। हमरालोकनि एतय भारतसँ भिन्न किछु देखय आयल छी। ओना, थाईलैंडक नाम लेब तँ लोककें केवल सेक्स-टूरिज्म ध्यान पड़ैत छैक। ओना देखी, तँ, एतुका आ भारतक भूमिमे कोन अन्तर! भारतसँ पूब बांग्लादेश। ताहिसँ पूब आ दक्षिण म्यांमार (बर्मा)। बर्मासँ सटले थाईलैंड, जकर दक्षिणी भाग, विशाल अंडमान समुद्रमे उत्तरे दक्षिणे आरि-धूर-जकाँ लगैछ। जँ मानचित्रपर मद्रास-चेन्नईसँ सोझे पूब रेखा घिचबैक, तँ, बंगालक खाड़ीक ओहिपार सीधा थाईलैंडे पड़ैछ। अस्तु, थाईलैंड हमरालोकनिक समुद्रपार पड़ोसिया थिक। जेना, फ्रांस आ इंग्लैंड अछि। अंतर एतबे जे भारत आ थाईलैंडक बीचक दूरी फ्रांस इंग्लैंडक बीचक दूरीसँ बेसी छैक। तें, हम देखय चाहैत छी, हमरालोकनि पड़ोसिया, थाईलैंडसँ कोन रूपें समान वा भिन्न छी। हम पहिनहुँ लिखने छी, जँ कोनो राष्ट्रक प्राकृतिक स्वरूप देखबाक हो तँ महानगरसँ दूर जाउ। जँ देशमे गाओं बचल छैक

तँ ओतय जाउ। विकसित होइत आ विलुप्त होइत गामक कारण अपन व्यथाकें प्रदर्शित करैत हमर मित्र आ सहकर्मी डाक्टर राजकुमार पाटिल कहलनि,

मेरे गाँव की सड़क पक्की हो गई है, अच्छी बात है
मगर...वो...जो...गोधूलि बेला थी, उसका क्या हुआ?

तें, गाम कतय भेटत, कतय नहि, के कहत? विकसित देश सबमे गाओं आ शहरक अन्तर समाप्त भ' गेल छैक। तथापि, छोट शहर आ आ महानगरक संस्कृतिमे अन्तर तँ छैके। अपनो देशमे केरल-सन विकसित राज्यमे शहर आ गाओंक अंतर समाप्त भइए गेल छैक। प्रायः थाईलैंडमे एखन से परिस्थिति नहि आयल छैक। हमरालोकनिक कार्यक्रममे थाईलैंडक ग्रामीण इलाका देखब शामिल अछि। देखी ओम्हर की देखबामे अबैछ।

हम पर्यटन-स्थल सबकें तीन-चारि भागमे विभाजित करैत छी। दर्शनीय-स्थल, मनोरंजन आ खेल तमाशाक केंद्र, एडवेंचर स्पोर्ट (पर्वतारोहण- ट्रैकिंग- पैराग्लाइडिंग- स्कूबा डाइविंग)क केंद्र, पवित्र जलवायुक कारण विशुद्ध आरामक स्थान, खरीद-बिक्री-किनबाक-बेसाहबाक केंद्र, आ तीर्थस्थल। अधिकतर स्थानपर विभिन्न रुचिक पर्यटक लेल एहि सबमे सँ एकाधिक प्रकारक आकर्षण होइते छैक। जकरा जतय जे किछु आकर्षित केलकनि, करथु। तथापि, सामान्य रुचिक पर्यटक एडवेंचर वा विशुद्ध आराम लेल भले यात्रा नहि करथु, पारिवारिक पर्यटनमे दर्शनीय स्थलक भ्रमण, तीर्थाटन, मनोरंजन, किनब-बेसाहब तँ रहिते छैक। थाईलैंड मनोरंजन आ खरीद बिक्री लेल लोकप्रिय अछि। मनोरंजनक दृष्टिएँ एतुका सांस्कृतिक वा गैर-सांस्कृतिक नाच-गानक कार्यक्रम, कंचनबारी टाइगर रिजर्व आ अयुथ्या साम्राज्यसँ सम्बन्धित आ आन ऐतिहासिक स्थल सब लोकप्रिय मानल जाइछ। एकर अतिरिक्त थाईलैंड आ विशेषतः बैंकाक 'रेस्ट आ रिलैक्सेशन'क हेतु सेहो प्रसिद्ध अछि। एकर चर्चा कनेक रहि कय। आइ तँ विश्रामे करी।

फुकेतमे दोसर दिन

पटोंग बीच (समुद्र तट) एतुका लोकप्रिय 'बीच' थिक। हमरालोकनिक होटल एही इलाकामे अछि। समीपक बाजारक नाम बंगला-बाजार छैक। संभव अछि, जखन भारत-बांग्लादेश-बर्माक बीच कोनो सीमा नहि रहैक, बंगाली लोकनि एतय अबैत होथि। किन्तु, तकर प्रमाण ताकब ने हमर उद्देश्य अछि आ ने हमरा तकर समय भेटत। आइ हमरालोकनि बससँ फुकेतकेर टूर पर जायब। अजुको मौसम अनुकूल

छैक। विगत राति किछु बरखा भेलैए। सड़क तीतल छैक आ वायु शीतल एवं आर्द्र। जेना छुट्टीमे होइत छैक, भोर कनेक देरीएसँ भेलैए। मंथर गतिए नित्य-क्रियादि। होटलक रेस्टोरेंटमे जलपान। अनेक प्रकारक व्यंजन। तकर अतिरिक्त सामनेमे ऑमलेट बनेबा लेल आ सौसेज गर्म करबा लेल भनसिया तत्पर छथि। किन्तु, खायब तँ अपने भूखे। 'जुरत-रुचत आ पचत' केर संतुलन आवश्यक। बढ़इत वयस आ घटैत शारीरिक उद्यमक संग भूख सेहो कम होइत छैक। ई प्राकृतिक विधान शारीरिक संतुलनकें नियंत्रणमे रखबामे महत्त्वपूर्ण योगदान दैछ, से मोन रखबाक थिक। भोजन आ स्वास्थ्यक एहन निकट सम्बन्ध छैक जे तिरुवल्लुवर कुरलक चिकित्सा नामक अध्यायक दस टा कुरलमे सँ छौ टा भोजन आ मिताहारे पर समर्पित केने छथि। कुरलकेर अपन अनुवादक ओही अध्यायसँ एतय एकटा पद हम उद्धृत करैत छीः

अति आहार पचय नहि भोग
कष्ट अनेको नौ टा रोग; कुरल, 947

अस्तु, आइ जतबा रुचल आ समुचित बूझि पड़ल, खायल आ नगर-भ्रमण लेल बसमे बैसि गेलहुँ। नीक सड़क। चारूकात हरियरी। लचकदार, आ समुद्रक तरंग-जकाँ ऊपर आ नीचा होइत सड़क। किछु, किछु केरल-जकाँ। केरल तँ सेहो समुद्र-तटीय प्रदेश थिकै। किछुए दूर आगाँ एकटा बस सड़कक पक्खामे मूडी-घोसियओने भेटल। प्रायः, सड़कक अचानक मोड़क कारण ड्राइवर संतुलन नहि राखि सकलाह। अतएव, बस रिकवरी-वैनकेर प्रतीक्षामे जक-थक पड़ल छल। यात्री लोकनि प्रायः दोसर बसमे जाइत गेलाह।

थोड़बे कालमे, किछु किलोमीटर दूर समुद्र-तटक एकटा व्यू-पॉइंट पर बस रुकल। यात्री लोकनि उतरैत गेलाह। ऊँच स्थान। एतयसँ फुकेतक पश्चिमी तटक पैघ इलाका देखबामे अबैछ। संगहि एतयसँ फुकेतक बुद्धक बड़का श्वेतमूर्ति सेहो देखबामे अबैछ।

बुद्धक व्यक्तित्व विराट आ कालजयी छनि, से सर्वविदित अछि। विश्वकेर अनेको भागमे हुनक अनगणित प्रतिमा स्थापित भेल छनि। प्राकृतिक विपदा आ भूगर्भक आन्दोलनक कारण बुद्धक कतेको मूर्ति कालक गालमे समा गेल। बामियान बुद्ध-सन कतेको प्राचीन मूर्ति मूर्ति-भंजक लोकनिक राग-द्वेषक शिकार भ' गेल। मुदा, महात्मा बुद्ध जनसाधारणक चेतनामे ओहिना जीवित छथि जेहन हुनक आदि स्वरूप छनि। तथापि, मनुक्ख अपन आस्था, विभव, आ अहंकारक अनुरूप अपन

अधिष्ठाताक मूर्ति ठाढ़ करैछ। किन्तु, मूर्तिक आकार इतिहास-पुरुषक ने प्रतिविम्ब होइछ आ ने हुनका लोकनिक गौरवे बढ़बैत छनि। निर्माता अपन कल्पना, मनोरथ आ स्वार्थक अनुरूप मूर्तिक स्थापना करैछ। ई तथ्य बाटक कातक हनुमानजी आ राजनेता सबहक मूर्ति सब पर लागू अछि।

व्यू-पॉइंटसँ फुकेत तट आ बुद्धक प्रतिमाक दर्शनक पछाति 'वात चलोंग' नामक प्रसिद्ध बौद्ध विहारमे हमरालोकनिक बस रुकल। विशाल परिसर, भव्य विहार, परिसरमे पोखरि, विशाल पीपरक गाछ, बगीचा आ दर्शनार्थी लोकनिक समूह एहि विहारक सिंगार प्रतीत भेल। पछिला किछु वर्ष पूर्व स्थापित महात्मा बुद्धक अस्थिक अवशेष आब एहि विहारक प्रसिद्ध आकर्षण थिक। महात्मा बुद्धक ई अवशेष एहि मंदिरक शीर्षमे एकटा बंद पारदर्शी पात्रमे राखल अछि जकरा दर्शनार्थी लोकनि चारूकातसँ पड़ैत सूर्यक इजोतमे नीक-जकाँ देखैत छथि। सुनबामे आयल एहि विहारक चारूकात बनल अनेक सामाजिक आ धार्मिक चमत्कारक इतिहास एहि विहारक प्रसिद्धिक दोसर कारण थिक।

कहाँदन 19म शताब्दीक उत्तरार्द्धमे ई शहर चीनी मजदूर-उपद्रवीक दंगाक शिकार भ' गेल छल। तहिया एतुका टिनकेर खदान आ रबड़ उद्योगमे जीविका लेल चीनी नागरिक-लोकनि एतय श्रमिकक रूपें आबथि। बेकाबू दंगाक स्थितिमे स्थानीय नागरिककें स्थान छोड़ि भगबाक अतिरिक्त कोनो उपाय नहि। किन्तु, एतहि रहि उपद्रवी लोकनिक सामनाक करबाक बौद्ध भिक्षु लोकनिक निर्णय एहि शहर लेल निर्णायक तँ साबित भेबे कयल, ओहिसँ स्थानीय नागरिकक मनोबल सेहो बढ़लैक। अस्तु, एतुका भिक्षु लोकनि एहि नगरकेर अंतिम रक्षकेक रूपमे प्रतिष्ठिते नहि भेलाह, बल्कि, राजा द्वारा सम्मानित सेहो भेलाह। फलतः, एतय महात्मा बुद्धक संग आइ ओ भिक्षुलोकनि सेहो पूजित होइत छथि। एतय स्थापित तीन गोट प्रसिद्ध भिक्षु लोकनिक मूर्तिपर लोक सोनाक तबक चढ़ाकय आदर प्रदर्शित करैत अछि, कबुला रखैत अछि, आ कबुला पूरा भेला पर पुनः एतय आबि बुद्ध आ भिक्षु लोकनिक सम्मानमे पूजा अर्चना करैछ, फटाका फोड़इछ। फटाका फोड़बाक हेतु एतय 'बीहाइभ इन्सिनरेटर'-सन एकटा निर्धारित स्थान बनल छैक।

'वात चलोंग' केर भ्रमण केर पछाति टूर ऑपरेटर लोकनि हमरालोकनिकें एकटा गाओंमे ल' गेलाह। ओतुका हथिसारमे हाथी सब आ हाथीक बच्चा सब ओहिना देखल जेना नेपालक चितवन नेशनल पार्कमे अनेक वर्ष पूर्व देखने रही। चितवन नेशनल पार्क स्थित सौराहा गाओंमे हाथीक विशाल प्रजनन केंद्र छैक। एतय केवल आधा दर्जन हाथी हेतैक। एतुका हाथी भारतक हाथीसँ छोट। नेपालमे

हाथी पर चढ़ि जंगल भ्रमण नहि केने रही। एतय सुविधासँ हाथी पर चढ़बाक आनन्द लेल। किन्तु, हाथी पर चढ़ब एक थिक, हाथी पर यात्रा दोसर गप्प। हाथी अपन प्रकृतिए ऊँच, नीच, सब ठाम सहजतासँ चढ़इछ। किन्तु, ऊँच-नीचमे सवारकें असौकर्य आ भय दुनू संभव, से अनुभव भेल। हथिसारक ई इलाका एतुका देहाती इलाका थिक। अपने लोकनिक इलाका-जकाँ संकीर्ण, पक्की सड़क। खेत सबहक छोट-छोट कोला। जंगल-झाड़ आ गाछ-वृक्ष। माटियो अपने देशक लाल माटि-जकाँ।

हाथीक सवारी समाप्त भेल आ हमरालोकनि आगू बढ़लहुँ। घुरती बाटमे टूर ओपरेटर किछु दोकान-दौड़ी देखौलनि। एकठाम हमरालोकनि मोती आ मोतीसँ बनल आभूषणक शो-रूममे गेलहुँ। एहिठाम मोतीक अलावा सीप-सितुआक प्रजातिक बड़का-बड़का जंतु सबहक खोइआ आ जीवाश्म सेहो देखल। किछु खरीद बिक्री सेहो भेलैक। किन्तु, हम विद्यापतिक मतक लोक : 'मणि समान आओरो नहि दोसर, तनिकर पाथर नामे'। तें, हमरा अपना लेल मणि-माणिक्य, सोना-चानी, आभूषण आकृष्ट नहि करैछ। तथापि, एहि शोरूम लेल जतेक निर्धारित समय रहैक, बिताओल आ आगू बढ़लहुँ। आगू एकठाम कपड़ा-लता, फर्नीचर, धातुक बर्तन आ आन संग्रहणीय स्मारक सबहक दोकान लग पुनः बस ठमकल। दोसर ठाम cashew-nut (काजू) क खोइया निकालि ओकर पैकिंग केर व्यवसाय चलैत रहैक। किन्तु, ताहिमे हमरा रुचि नहि तमिलनाडुक पनरूटी (कडलूर जिला) आ गोआ-महाराष्ट्रमे तँ काजूएक व्यापार होइते छैक। तें, एहिमे हमरालोकनि लेल कोनो नवीनता नहि।

अन्ततः घूमि-फीरि जखन होटल अयलहुँ तँ दोसरे खबरि भेटल। एतुका बांग्ला-बाजार आ पटोंग समुद्र-तट सहित अनेको स्थान पर फुकेतमे आइ भोरे अनेक बम बिस्फोट भेलैए। एहिमे कतेक लोक घायल भेलै। किछु लोकक जानो गेलैए। हमरा सब एतय बाहरसँ आयल छी। तें, बाटमे पुलिसक चौकसी देखिओ कय किछु अप्रिय घटना भेलैए तकर अनुमान नहि भेल छल। किन्तु, एहि आतंकवादी घटनाक एतबा असर तँ भेबे कयल जे हमरालोकनि आइ सँझुका कोनो सांस्कृतिक कार्यक्रम देखबा लेल नहि गेलहुँ।

थाई मालिश

एशियाई चिकित्सा-पद्धतिमे मालिश-सेदब-मांडब केर जे स्थान अछि से सर्वविदित अछि। पहिलुका युगमे सब गाममे मालिश द्वारा टूटल हड्डीकें सही स्थानपर

बैसयबला केओ-ने-केओ भेटिए जैतथि। आब आधुनिक चिकित्साक प्रसारसँ एहि सबहक बाजार छोट भेलैए, किन्तु, समाप्त नहि भेलैए। थाईलैंडमे मालिशक ई व्यापार एकटा विज्ञानक रूप तँ नेनहि अछि, ई एतुका एकटा प्रमुख उद्योग सेहो थिक। मानल जाइछ, थाईलैंडमे मालिशक पुरान परम्परा ततेक विकसित आ पुरान छैक जे राजधानी बैंकाकक एकटा प्रमुख बौद्ध विहारमे मालिश-विज्ञानक विश्वविद्यालय सेहो छैक। फलतः, एतय सम्पूर्ण देशमे मालिशक विज्ञान आ कलामे प्रशिक्षित लाखो लाइसेंसधारी व्यक्ति मालिशक व्यापारसँ जीविकोपार्जन करैत छथि आ अपना अतिरिक्त राष्ट्रीय आमदनीमे सेहो योगदान करैत छथि। हँ, एतबा अवश्य जे एतय बहुतो ठाम मालिशक नाम पर अवैध व्यापार सेहो होइत छैक। किन्तु, से थाईलैंडहि टाक समस्या नहि थिकैक। ई समस्या तँ भारतक शहर आ नगरमे सेहो छैके। जे किछु। किन्तु, एतय अजुका बम-बिस्फोटक कारण बेरुक पहर जे समय बचल, ताहिमे सोचल मालिशे कराबी। मालिश करेबाक हमर ई योजना केवल अनुभवक हेतु छल। संयोगसँ हमर शरीर स्वस्थ अछि आ अनेरे निन्न खूब होइए। तथापि, टाका खरचि आ विश्वप्रसिद्ध थाई-मालिश अनुभवक लेल। हमरा एहि हेतु होटलक परिसरक स्पा समुचित बुझायल। अनचिन्हार इलाकामे चिन्हारे ठाम चुनी। तें, प्रति टिकट 1500 बाथ (थाई टाका) क दू टा टिकट लेल आ निर्धारित समय पर पहुँचि गेलहुँ। मसाज-केंद्र बुझू आयुर्वेद चिकित्सा केंद्र। सब किछु नीक-जकाँ बुझाओल। अहाँकें की चाही, की नहि, तकर विस्तृत आ लिखित लिस्ट। फॉर्म पहिने भरि दिऔक। मालिश सक्कत हाथें चाही वा हल्लुक हाथें, सेहो कहि दी। तकर पछाति सुखायल हाथें टीकसँ पयरक अंगूठा धरिक मालिश। केरलकेर मालिशमे तँ लगइए एक-एक व्यक्ति लेल आधा-आधा लीटर तेलक प्रयोग होइत छैक, एतय से नहि। संभव छैक एतहु मालिशक अनेक विधि होइक। किन्तु, आइ एतुका विधिमे हमरा किछु आपत्तिजनक नहि लागल। हमरा कोनो रोग नहि। किन्तु, मालिश नीक अवश्य लागल। चलू एकटा इहो अनुभव। आब आइ होटलसँ बाहरक ने कोनो प्रोग्राम आ ने तकर समय बचल अछि। अस्तु, भोजन आ विश्राम। किछुए कालमे पटना, दिल्ली, जोधपुर, आ अमेरिकामे एतुका बम बिस्फोटक खबरिसँ हड़कम्पक फलस्वरूप अनेक फोन आबय लागल। हमरालोकनि सुरक्षित छी से बूझि सब आश्वस्त भेलाह आ हमरोलोकनि संतुष्ट छी। आब आराम होइ।

थाईलैंडक राजधानी बैंकाक

सस्ता पर्यटन लेल बैंकाक प्रसिद्ध अछि। हमरालोकनि तँ कंडक्टेड टूर पर छी। पांडिचेरीमे हमर पड़ोसिया कहलनि, 'हम तँ बीस हजार टाकामे बैंकाकसँ घूरि अबैत छी। सस्ता होटलमे रहू, बस वा 'टुक-टुक' (एतुका ऑटो रिक्शा) पर चलू आ जतय घुमबाक-फिरबाक हो घुमू, देखू, मुरुगनक मन्दिरमे भोजन क' लियअ। शर्ट-पैंट-सोना जे किछु कीनि, पहिरि लियअ, आ आपस आबि जाउ।' इहो बढ़िया भेल शू-स्ट्रिंग बजट लेल। किन्तु, आराम चाही तँ अपने सब किछु बुक करू, नहि, तँ, टूर ओपरेटर तँ छथिए।

जेना कोनो राजधानीमे होइत छैक बैंकाकमे सेहो देखबाक बहुत किछु छैक। किन्तु, सब यात्री दर्शनीय स्थानक अपन-अपन लिस्ट बनबैत छथि। हमरालोकनिक लिस्टपर बैंकाककेर स्थानीय टूर, कंचनबाड़ी टाइगर रिजर्वकेर भ्रमण आ ओहि पुलकें देखबाक योजना छल जाहि पर प्रसिद्ध सिनेमा 'अ ब्रिज ओन रिवर कवाय'* बनल छल। संयोगसँ जीव-जंतुक शरीरक अवैध व्यापारक अभियोगमे कंचनबाड़ी रिजर्व बन्न भ' गेलैए। तें, ओतय जयबाक कोनो अर्थ नहि। प्रसिद्ध पुल सेहो ओही बाटमे रहैक। आब सेहो नहि देखि सकब। तखन बैंकाक भ्रमण हेतैक। हमरालोकनिक आवास एतुका नाना स्क्वायर स्थित होटल आइबिसमे अछि। होटलमे की नवीनता हेतैक। नाना-स्क्वायर प्रसिद्ध अवश्य छैक। किन्तु, तकर गप्प पछाति।

बौद्ध-विहारमे शिवलिंग : 'वात पो' बौद्ध-विहार

आइ हमरालोकनि सबसँ पहिने 'वात पो' नामक बौद्ध-विहार जायब। थाईलैंड मूलतः बौद्ध लोकनिक देश थिक। अस्तु, बौद्ध मंदिर सबठाम भेटत। किन्तु, शयन-मुद्रामे बुद्धकेर विशाल प्रतिमा लेल ई 'वात पो' विहार प्रसिद्ध अछि। विश्राम

* क्वाय नदीपर एकटा पुल

मुद्रामे, एकटा हाथकें माथ तर द' करोट नेने महात्मा बुद्ध केर विराट प्रतिमा एहि परिसरक सबसँ पैघ आकर्षण थिक। प्रतिमा पैघ छैको। किन्तु, प्रतिमा जँ सूक्ष्मो रहितैक तँ बुद्ध हमरा जहिना सब दिनसँ प्रभावित करैत आयल छथि, तहिना आइओ करितथि। हमरा गौरव अछि हमरालोकनि ओही भूमिक फसल छी जे बुद्धकेर पदचापसँ सर्वप्रथम पवित्र भेल छल। संयोगसँ हमरा लुम्बिनी, बोधगया, सारनाथ, वैशाली आ कुशीनगर, सबठाम जेबाक अवसर भेटल अछि, आ एहि सब ठाम बुद्धकेर शब्द हमर चेतनामे प्रवाहित होइत गेल अछि। तें, हमरा लेल बुद्ध मूर्त वा मूर्ति नहि हमर चेतनाक अवयव थिकाह। जेना होइत छैक, बौद्ध विहार, भिक्षु लोकनिक शिक्षा, दीक्षा, आवास, पूजा, सभा, आ श्मशान भूमि सब किछु थिक। अस्तु, अनेक शताब्दी धरि अनेक उद्देश्यसँ बनल अनेक भव्य भवन, मंदिर, चैत्य, द्वार, सभा-भवन, भिक्षु-लोकनिक समाधि-मूर्तिक संकलन एहि परिसरक शोभा आ विशेषता थिक।

किन्तु, एहि सबहक अतिरिक्त एहि परिसरक एकटा वस्तु जे हठात सबहक दृष्टि-पथ पर नहि अबैत छैक ओ थिक एतुका शिव-लिंग। एतय ई शिव-लिंग ने भग्न अछि, आने अपमानित, तकर अनुमान शिव-लिंगपर बान्हल रंगीन वस्त्रसँ भेल। ई शिव-लिंग एतय कतयसँ आ कहिया अयलाह, से के कहत। तथापि, एहिसँ एतबा तँ अवश्य प्रतीत होइत अछि, जे चाहे तँ एतुका कोनो बौद्ध भिक्षु अपन पुरान आस्थाक प्रतीक वा अपन परिवर्तित आस्थाक नव प्रतीककें आनि एतय स्थापित केने छथि। ओहुना भारतमे बौद्ध धर्मक ध्वंसमे शंकराचार्य-सन सनातनी शैवक केहन योगदान अछि, से सर्वविदिते अछि।

वात-पो विहारक भ्रमणक पछाति हमरालोकनि एतुका हीरा-उद्योगक एकटा केंद्रमे गेलहुँ। एतय मूलतः हीराकें तरासबाक आ ओकरा आभूषण सबमे जड़बाक काज होइत छैक। एहि उद्योग लेल तँ भारत अपनहि प्रसिद्ध अछि। मुदा, एखनधरि हमरा सूरतक हीरा उद्योग देखबाक अवसर नहि भेटल अछि। अतः अजुका टूर एकटा शिक्षा भेल।

एहि दू स्थानक भ्रमणक पछाति एकटा शौपिंग काम्प्लेक्समे मध्यम आकारक एकटा एक्वेरियम सेहो देखल। पहिल बेर देखबा लेल आ धीया-पुताक मनोरंजन लेल ई एक्वेरियम बहुत बढ़िया। किन्तु, एहि हेतु बेसीसँ बेसी एक घंटा काफी। लगहिक इंदिरा-बाजार कपड़ा-लता, सस्त चीनी खेलौना आ इलेक्ट्रोनिक सामानक पैघ बाजार थिक। बहुतो गोटेकें एहिमे रुचि हयब उचिते। एतय बोहनिएक बेरमे, हमरालोकनिक भेंट एकटा नेपाली महिला दोकानदारसँ भ' गेल। भाषा हमरालोकनिक

सौजन्यक सूत्र बनल, आ जे किछु किनबाक छल एके दोकानमे कीनि किनबाक इतिश्री कयल।

नाना स्क्वायर, बैंकाक

नाना स्क्वायर, बैंकाक एतुका रेड-लाइट डिस्ट्रिक्ट, शहरक चहल-पहल आ पर्यटनक प्रमुख केंद्र थिक। हमरा सबहक होटल स्क्वायरक लगहि अछि। मेन रोड, ओवरहेड अर्बन रेलवे लाइनक स्टेशन, पैघ बाजार, बार आ ब्रोथल, एतय सब किछु छैक। तें, जखन कखनो एतय पहुँचब चहल-पहल, चमक-दमक, मनुक्खक भीड़, आ कोलाहल भरल बार आ ब्रोथल चौबीसो घंटा आकृष्ट करबे करत। बहुतो पर्यटक बैंकाककें बार आ ब्रोथलकेर पर्याय बूझैत छथि। तें, बैंकाक कदाचित फॅमिली टूरिज्म लेल अनुपयुक्त बूझल जाइछ। किन्तु, ताहिसँ हम सहमत नहि। किन्तु, ढेर गोरा पर्यटक भोरे उठि एतय सोझे 'बार'मे आबि बैसि जाइछ, से देखि कौतूहल अवश्य भेल। संगहि, हजारोक संख्यामे पुरुष, नारि-जकाँ शृंगार-पेटार कय 'लेडी बॉयज'क बाजारी-वृत्तिमे शामिल हयब सेहो अद्‌भुते लागल। तखन, रोजगार, रोजगार थिकैक! सुनैत छी, एहि 'लेडी बॉयज' लोकनिक द्वारा प्रस्तुत नाच-गानक अनेको कार्यक्रम, जाहिमे बहुतो प्रदर्शन वीभत्स सेहो होइछ, एतय टूरिस्ट लोकनिक बीच काफी लोकप्रिय अछि। किन्तु, हमरालोकनिकें ताहिमे कोनो रुचि नहि। किन्तु, ई सब एतुका रेस्ट आ रिलैक्सेशनक उद्योगकेर हिस्सा थिक। आ रेस्ट आ रिलैक्सेशनकेर उद्योगक एहि देशक अर्थव्यवस्थामे महत्वपूर्ण योगदान छैक। तथापि, रेस्ट आ रिलैक्सेशनक व्यापारक भले देशक अर्थव्यवस्थामे महत्वपूर्ण भूमिका होइक, हमरा जनैत, ने ई प्रशंसनीय थिक आ ने देशक हेतु गौरवक विषय। कारण, एतुका राजा एखनहुँ राम कहबैत छथि, आ बौद्ध मतावलम्बी लोकनि एहि देशक सबसँ बड़का समुदाय थिकाह। तथापि, वेश्यावृतिकें थाईलैंडक पर्याय-जकाँ तँ बुझले जाइछ। ज्ञातव्य थिक, भारतक विपरीत, थाईलैंडकें, विदेशी शासनक जुआ कहिओ उठबय नहि पड़लैए। किन्तु, हमरा जनैत 20म शताब्दीक वियतनाम युद्धक दुष्प्रभाव सम्पूर्ण दक्षिण-पूर्व एशियापर पड़लैक। वियतनाम युद्ध एहि इलाकामे एहन कैंसर साबित भेल जकर दुष्प्रभावसँ वियतनामक अनेक पड़ोसी देश रोगाह भ' गेल। वियतनाम युद्धमे थाईलैंडक सहभागिता एतुका समाजक नैतिक विघटनक मूलमे अछि। यद्यपि थाईलैंडकें अमेरिकाक सहयोगी भेलाक लाभ सेहो भेलैक। किन्तु, प्रत्येक लाभक एकटा दोसरो पक्ष होइते छैक। ई बूझब असम्भव नहि जे, जखन अकल्पनीय समृद्धिशाली राज्य, कोनो परम्परागत समाज लग डेरा खसबैछ, तखन

धनिकक देखार ऐश्वर्यसँ पड़ोसीमे अनेक सेहन्ताक उदय होइछ। सेहन्तासँ श्रम-समृद्धि आ व्यभिचार दुनू पेंपी दैछ। हमरा जनैत, अमेरिकासँ थाईलैंडक सहयोगसँ बेसी, एतुका भूमिपर अमेरिकी सेनाक उपस्थितिक एतुका शहरी समाजक सामाजिक मूल्यक ह्रासमे बेसी योगदान छैक। यद्यपि, सुनैत छी, वेश्या-वृत्तिक जड़ि एतुका समाजमे ततेक पुरान छैक, जे, मानल जाइछ प्राचीन अयुथ्या (अयोध्या) साम्राज्यक युगमे सेहो वेश्या-वृत्तिकें कानूनी मान्यता रहैक, आ राज्य एहिसँ कर उगाही करैत छल। किन्तु, आब जखन देह व्यापार एतय गैर-कानूनी अछि, तखनो एहि व्यापारसँ देशकें प्रतिवर्ष करोड़ो डॉलरक आमदनी तँ छैक। तथापि, एहि सामाजिक व्याधिक मूल्य समाज कोना चुकबैत अछि, से कहब कठिन। भारतहुमे तमिलनाडु-सन राज्यमे राजस्वक लोभें मदिरा सरकारीए दोकानक माध्यमसँ बिकाइत अछि। किन्तु, नशाखोरीक मूल्य ओतुका जनता कतेक आ कोना चुकबैत अछि तकर ऑडिट सरकार कहाँ करैत अछि!

सियाम-निरामित शो

सियाम-निरामित शो नामक रंगारंग कार्यक्रम एतुका प्रसिद्ध सांस्कृतिक शो आ एकटा प्रमुख टूरिस्ट आकर्षण थिक। सियाम-निरामित नामक रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रममे गीत-नाद, वाद्य कलाक अनेक प्रस्तुतिक संग रामायणक अनेक आख्यान सेहो प्रस्तुत कयल जाइछ। करीब दू घंटाक ई 'शो' नीक लागल। एहि कार्यक्रमक लोकप्रियताक कारण बैंकाक अयनिहार प्रत्येक टूरिस्टक टूरमे सियाम-निरामित शो वा एहि प्रभृत्तिक आन अनेक 'शो' केर समावेश होइते छनि।

बैंकाकमे दोसर दिन

कंचनबाड़ीक यात्रा नहि क' सकलहुँ। तखन आओरे किछु देखी, ताहि उद्देश्यसँ दोसर दिन एतुका 'फ्लोटिंग वेजिटेबल मार्किट' देखबाक नेआर कयल। सुनैत छी, एतय तर-तरकारी, फल आ माछ-मासु नाहे पर अबैत अछि आ नाहे पर एहि सब किछुक पैघ मेला लगैत छैक। मेला शहरक परिधिसँ बाहर ग्रामीण इलाकामे छैक। अस्तु, कौहरि-किच्चा, गन्दगी, आ दुर्गन्ध सबकें नहि भबैत छैक। तथापि, सोचल समयक उपयोग हो, आ देखि आबी। देखियैक तँ केहन छैक फ्लोटिंग मार्किट। किन्तु, जा नहि सकलहुँ। बेरूपहर आपसे अयबाक छल। तें, दिन आरामेमे बिताओल। एहि यात्रामे, तें, थोड़ेक भ्रमण आ थोड़ेक आराम दुनू भेलैए। कंचनबाड़ी नहि जा सकलहुँ। ताहि कारण टूर ओपरेटर 'मेक माइ ट्रिप' पर कनेक असंतुष्ट

नहि छी, से कोना कहब। ई लोकनि एहि हेतु ने कोनो छूट देलनि, ने कोनो क्षतिपूर्तिए भेटल। किन्तु, conducted tour क एहू पक्षसँ परिचय तँ भेल। संयोगसँ होटलक लगेमे एकटा भारतीय रेस्टोरेंट ठेकना नेने रही। तें, अपन रुचिक भोजन भेटिए जाइत छल। भनसिया सेहो उत्तराखंडकेर। भाषाक समस्या सेहो नहि। लगमे सड़क पर अनेक फलक संग पैघ-पैघ, मधुर, मुलायम आ बेदाना लताम भेटैत छलैक, से खूब रुचल। एहन लताम एखन धरि भारतमे नहि भेटल छल।

घुरतीमे थाईलैंड एयरपोर्ट पर समुद्र मंथनक थीम पर बनल लम्बा चौड़ा आ भव्य स्थापत्य आकृष्ट कयलक। समुद्र मंथनक एहन मूर्त आ सजीव मूर्तिकला हमरा एखनतक कतहु देखबामे नहि आयल अछि। तें, ई मूर्ति एहि यात्राक बोनस भेल। ओहुना एहि देशक जीवनक ताना-बानामे रामायणक आख्यान ओहिना बुनल छैक जेना आन कोनो दक्षिण-पूर्व एशियाक देशक जीवनमे। स्मरणीय थिक, भारतक 'अशोक स्तम्भ'-जकाँ एहि देशक चिह्न तँ सेहो गरुड़े थिकाह। तें, एतुका बौद्ध जीवनकें हिन्दू देवी देवतासँ फुटकायब सहज नहि। ततबे नहि, थाईलैंडक भ्रमणसँ एतबा तँ अनुभव भेवे कयल जे देश भले भिन्न होइक, जेना पड़ोसिया लोकनिक बीच अनेको समानता होइत छैक, से भारत आ थाईलैंडक बीच सेहो अवश्य छैक।

नेपाल

लेते आ मार्फा गाओं, मुक्तिनाथ (मुस्ताङ् जिला, नेपाल)

नेपालक मुस्ताङ् जिला अनेक कारणसँ सुपरिचित छैक। धर्मप्राण लोक लेल मुस्ताङ्, मुक्तिनाथक इलाका थिकनि। पद-यात्राक लोभी पर्यटक लेल मुस्ताङ् अति मनोरम इलाका थिक। नग्न पहाड़, कल-कल बहैत नदी, हरियर खेत, दुर्गम बाट, आ रहस्य-रोमांच। की नहि छैक मुस्ताङ् मे!

हमरा नेपाल प्रवास केर अवधिमे दू बेर मुस्ताङ् जेबाक अवसर भेटल। पहिल बेर तँ यात्रा पूर्णतः धार्मिक छल। दोसर बेर मेडिकल कैंपमे गेल रही। दोसर यात्रामे मुक्तिनाथक अलावा दोसरो स्थान सब देखलहुँ। तें, दुनू यात्राक अनुभव हमर मुस्ताङ् यात्राकें पूर्ण केलक।

मुस्ताङ् जिलाक बाट नेपालक प्रमुख शहर, पोखरा, बाटे छैक। पोखरासँ सड़क मार्ग आ वायुमार्ग दुनूक विकल्प छैक। पोखरासँ हवाई जहाजसँ बीस मिनट लगैत छैक। बस आ कारसँ प्रायः 12 घंटा। पद-यात्रामे 11-12 दिन। जकरा जतेक समय आ जेहन रुचि। हम दुनू बेर हवाई जहाजसँ मुस्ताङ्क मुख्यालय, जोमसोम, धरि गेलहुँ। जोमसोमसँ आगू मुस्ताङ् जिलाक बाँकी यात्रा मोटरगाड़ीसँ भेलैक।

जोमसोम हवाई अड्डा लग छोट-सन बाजार छैक। बाजारमे बेसी होटल, किछु दोकान-दौड़ी, आ पर्यटन कार्यालय छैक। हवाई अड्डासँ बहरायब आ दाहिना दिस बिदा हयब तँ मुक्तिनाथक बाट छैक। बामा दिस, सड़क पहिने काली गण्डकी पार करैछ आ तखन मार्फा होइत लेते। आगू, गलेश्वर, बेनी, बाग्लुंग, कुसुमा होइत सड़क पोखरा धरि जाइछ। मेडिकल कैंप लेल हमरालोकनि लेते गेल रही। तें, लेते गाओंक चर्चा।

लेते गाओंक डायरी

जोमसोम पोखरा मार्ग पर लेते एकटा छोट-सन गाओं थिक। आजुक सर्वज्ञ पितामह 'गूगल' के पुछबनि (2010 मे) तँ लेतेक कोनो चर्चा नहि। तें, हम जखन गूगलसँ जिज्ञासा कयलियनि तँ 'गूगल' गुम्म भ' गेलाह। माने, अपने जाउ, देखि आउ।

जोमसोमसँ लेते धरिक यात्रामे बससँ करीब डेढ़ घंटा लागल छल। ऊँचाइ 2530 मीटर। लेतेमे हमरालोकनिक रहबाक व्यवस्था 'कालोपानी' नामक गेस्ट हाउसमे छल। लेतेमे छोट पैघ, गोड़ दसेक होटल-गेस्ट हाउस हेतैक। कालोपानी गेस्ट हाउसक समीप एकटा हाइ स्कूल-ज्ञानोदय माध्यमिक विद्यालय। हमरालोकनिक 'होस्ट' 'ग्रीन विलेज भेंचर्स'मे एही स्कूलमे हमरालोकनिक (मणिपाल मेडिकल कॉलेज, पोखराक डाक्टर लोकनिक) सहायतासँ मेडिकल कैंप लगौने छथि। स्कूलक लगहि एकटा बौद्ध मन्दिर-'सुल्टिम गुम्बा', प्रहरी पोस्ट, प्राथमिक चिकित्सा केंद्र, आ टेक्निकल ट्रेनिंग इंस्टिट्यूट छैक। (एहन छोट जनसंख्याक गाओंमे एकठाम एतेक रास सुविधा नेपालेमे देखबैक। बिहारमे तँ असंभव!)

गामक आबादी सड़कक काते कात बसल छैक। गाय-मालक गोठुला, मालक थरि, आ खेत पथार, जेना गाओंमे होइत छैक, एतहु छै। गाममे पाइप द्वारा पेय जलक आपूर्तिक व्यवस्था छैक। ऊपरसँ लोक अपन-अपन टंकी सेहो लगौने अछि। लोक स्वास्थ्य संरचनाक दृष्टिएँ, तें, हम नेपालकें भारतसँ आगू बूझैत छिऐक।

कालोपानी गेस्ट हाउसमे गोड़ बीसेक कोठली हेतैक। संगहिं खान-पान लेल रेस्तोराँ। रूम सब ऐल-फैल। अटैच्ड बाथरूम। टीवी, फोन नहि। नीके। रेस्तोराँमे दूध, आ बिनु दूधक चाह उपलब्ध हयत। जलखैमे ब्रेड, मधु, रूहार्बक जाम, मक्खन, अंडा, पूड़ी-सब्जी। भोजनमे दुनू साँझ भात-दालि, साग, आलू-बंदगोबी, बोड़ीक तरकारी, मासु चिकन, सलाद-पापड़-अचार, फिल्टर्ड पानि। पश्चिमी सैलानी लेल पित्‌जा, हैश-ब्राउन, आ केक सेहो भेटैत छैक। स्टाफ दुभाषिया, बहुभाषी आ विनम्र।

लेते गाओंमे मेडिकल कैंप

पहिल दिन मेडिकल कैंप करीब 11 बजे आरम्भ भेलैक। कैंप आरम्भ हेबासँ पूर्व गामक महिला लोकनिक सामुदायिक स्वागत : गीत-गान, लाली गुडांस केर माला आ अद्‌भुत स्नेह। स्वभावमे सरल आ सौजन्यमे बेजोड़। एतेक नीक स्वागत नेपाल

छोड़ि आनठाम असम्भव। पहिल दिन 59 टा रोगी देखैत-देखैत साँझुक पाँच बाजि गेलैक। हमर सहायक, श्री पशुपति बराल, जेहने मेहनतिया, स्वभावक तेहने नीक आ कार्यकुशल। रोगी देखलाक पछाति एसगरे टहलय चल गेलहुँ। साँझमे सहकर्मी डेंटिस्ट लोकनि शिकायत केलनि 'एसगरे किएक गेलहुँ? हमरोलोकनि जैतहुँ'। अस्तु, दोसर दिन डेंटिस्ट, स्मृति भंडारी, आ मेघा सेरचन सेहो संग भ' गेलीह। वरिष्ठ हृदयरोग विशेषज्ञ डाक्टर आलूरकर सेहो रहथि। हमरालोकनि एकटा खुड़पेरिया बाट पकड़ि चलि पड़लहुँ। छायादार जंगल आ पाइन-नीडलक गलीचापर गुज-गुज बाट। कनेक आगू जाकय फुलाइत लाली-गुडाँसक गाछ सेहो भेटल। एतुका ऊँचाइसँ उपत्यकाकेर तलहटी आ काली गण्डकीक धारक विहंगम दृश्य मनोहारी लागल। शीतल वायुक स्पर्श, बुन्नीक फुहार आ मनोरम दृश्य आओर आगू जयबा लेल लोभबैत छल। मुदा, झलफल साँझमे पहाड़ी बाट मोहक, आ जानलेवा, दुनू भ' सकैत अछि। तें, आपस होटल घूरि अयलहुँ। भोजन-भात, गप्प-सप्प भेलैक। मुदा, कैंप-फायर होइत ततेक राति भ' गेलैक जे सामूहिक आंनदक लोभ त्यागि बिछाओनक शरण धयल।

मार्फा गाओं

नेपालक बासिन्दा वा पर्यटक, ताजा, लाल आ रसगर मार्फा-एप्पल (सेब) सँ परिचित होथि, से सम्भव। मुदा, ई संभव जे मार्फा कतय छैक से बूझल नहि होइनि। मार्फा, पोखरा-जोमसोम सड़क पर, जोमसोमसँ किछु मील पहिने एकटा विशिष्ट गाओं थिक। ई गाओं मार्फा-सेब लेल प्रसिद्ध अछि, से भिन्न गप्प। मुदा, एहि गामक विशिष्टतामे सेब मात्र एके टा बिंदु थिक। भारतीय आ विकसित देशक पर्यटक आ विशेषतः पोखरासँ मुक्तिनाथ धरि वा ओहिसँ आगूक पैदल यात्री लोकनिक हेतु मार्फा एकटा मुख्य पड़ाव आ दर्शनीय गाओं थिक।

मार्फा मुख्य सड़कक कातमे बसल अवश्य अछि। मुदा, मार्फा धरि अहाँक गाड़ी नहि जायत। बुझलियैक? नहि ने? मार्फा मोटर गाड़ी विमुक्त गाओं थिक। तखन जायब कोना? चरैवेति! पहाड़ सबमे जेना होइत छैक, पूरा गाओं ऊँच पहाड़क एक पक्खापर बनल, सड़कक काते-काते पसरल छैक। पोखरा-जोमसोम सड़क गाओंकेर समानांतर छैक। मुदा, मार्फा जेबाक हो, तँ, मुख्य मार्ग छोड़ि गाओं दिस आउ, गाओंक बाहर गाड़ी ठाढ़ करू। गामक बाहरक विशाल प्रवेश-द्वार बाटे गाओंमे पैसू आ पैदल गाओं धरि जाउ। गामक दोसर छोर पर, दोसर द्वारि पर, गामसँ बहराउ आ मुख्य सड़कपर आबि गाड़ीपर बैसू आ जतय मोन हो चल जाउ।

जोमसोम दिससँ जखन मार्फामे प्रवेश करब तँ आरम्भेमे प्रागैतिहासिक वृक्षक एकटा बड़का जीवाश्म सड़कक कातहिमे देखबैक। आगू बस्तीपर पारंपरिक आवास, बौद्ध-मन्दिर (गोम्पा) आ अनेकानेक होटल छैक। खेतमे गहूम, आलू आ बगीचामे मौसम केर अनुसार सेबकेर फूल, कोंढ़ी, बतिया, वा खेबायोग्य फल भेटत। गाओंमे झरनाक शुद्ध जलक झाँपल नाला सड़कक काते-कात बहै छैक। प्लास्टिक केर प्रयोग, आ जहाँ-तहाँ कूड़ा फेकब वर्जित छै। गामक सफाइ लेल गौआँ लोकनि तत्पर रहैत छथि आ पार लगाक' गाओंक सफाइ करैत छथि

नागरिक लोकनि कहलनि, विगत 400 वर्षमे मार्फावासीक जीवन पद्धतिमे कोनो परिवर्तन नहि भेलैए। ई गप्प विश्वास करब असम्भव । सड़क आ वायुमार्गक विकास, विदेशी पर्यटक केर आवाजाही, शिक्षाक प्रसार, उच्च शिक्षित समुदायक समुद्रपारक नौकरी आ डॉलर केर आमदनीसँ जीवन-पद्धति अछूत रहत, से तँ सत्यकें फुसिआयब भेल। ताहि परसँ सर्वव्यापी एन जी ओ। नेपाली लोकनि, व्यंगसँ एन जी ओ लोकनिकें 'डलर किसान' कहैत छथिन। मुदा, एतबा अवश्य जे गामक खेती, पर्यावरण, सामाजिक व्यवस्था, सफाइ आ जलापूर्तिकें आधुनिकतासँ बचबै लेल गौआँ लोकनि अवश्य तत्पर छथि ।

हमरालोकनिक विद्यार्थी, डाक्टर विष्णु शेरचन, आ आओरो अनेक सहकर्मी डाक्टर लोकनिक घर आ होटल एतय छनि। मोटा-मोटी जतेक घर ततेक होटल वा 'होम-स्टेड'। हमरालोकनि डाक्टर विष्णुक ओतय भोजन-भात केलहुँ। बहुत सत्कार, बड़ आग्रह आ अपूर्व सौजन्य। भेल, जेना कोनो अपन कुटुम्बकेर ओतय आयल होइ। होटलक स्वामी भोजनक मूल्य लेबा लेल तैयार नहि। हमरालोकनि बहुत गोटे रही, संकोच भेल। अंततः, महिला लोकनि अपन वाकपटुतासँ बतौर 'टोकन' किछु टाका देबामे सफल भेलीह।

एहि गाओंसँ, ऊँच पहाड़ दिस, अनेक ट्रैकिंग रूट छैक। तें, बहुतो पर्यटक मार्फा देखैत आगू जाइत छथि वा मार्फा आबि पर्वतारोहणक अभियान आरम्भ करैत छथि। तें, मार्फा गाओंक समृद्धिमे पर्यटनक प्रमुख योगदान छै, से के नहि मानत।

मुक्तिनाथ

मुक्तिनाथ हिन्दू आओर बौद्ध, दुनूक, पवित्र तीर्थ थिक। तिब्बती भाषामे मुक्तिनाथ 'छुमी ग्यार्चा' कहबैत छथि। सुनैत छी, वैष्णव धर्मगुरु लोकनिमे प्रसिद्ध अड़वार सन्त प्रणीत 'दिव्य प्रबन्धम्' मे मुक्तिनाथक विवरण पाओल जाइछ। आजुक दिन

कोनो देश, तीर्थ, पर्यटन स्थल एहन नहि जकर विवरण विकिपीडियामे नहि भेटत। विकिपीडिया सब भाषामे उपलब्ध छैक। तें, मुक्तिनाथक ई वर्णन हमर अपन यात्रा पर आधारित अछि।

जेना पूर्वमे कहल, मुक्तिनाथ जेबा लेल बस वा वायुमार्गसँ जोमसोम, मुस्ताङ् पहुँची। हमरालोकनि फ्लाइटसँ जोमसोम गेल रही। जोमसोममे हमरालोकनि 'ओम होम' नामक होटलमे डेरा देल। होटलक लगहिमे पर्यटन केंद्र छैक जतय अपन परमिटक एंट्री करबय पड़ल। नदीसँ पहिनहि बाटमे नेपाली सेनाक पर्वतारोहण विद्यालय छैक। ओतयसँ मुक्तिनाथ दिस जेबा लेल करीब गोटेक किलोमीटर पैदल यात्रा करैत, काली गण्डकीक लकड़ीक पुल पार करैत, गाम बाटे टैक्सी स्टैंड धरि गेलहुँ। शेयर्ड जीप-टैक्सीमे प्रायः नेपाली रुपया 300 प्रति सीट (दुनू पीठक यात्रा भाड़ा) ल' कय मुक्तिनाथ लेल विदा भेलहुँ।

गाओंक आगू, बाट कालीगण्डकी नदीक धार आ जल बहाव क्षेत्रकें पार करैत आगू बढ़ैत छैक। बाटमे कागबेनी गाम अबैत छैक। श्रद्धालुलोकनि कागबेनीमे पितरलोकनिक प्रति पिंडदान सेहो करैत छथि। कागबेनीसँ आगू रास्ता दू दिस फुटैत छैक। पूब दिस जाइत सड़क मुक्तिनाथक बाट थिक। बामा दिसुक बाट तिब्बतधरिक दिसक दोसर ट्रैकिंग रूट थिकैक। बाम दिसक उपत्यकामे आबादी आ हरियरी छैक। मुक्तिनाथ दिसक परिदृश्य लद्दाख़क शीत-मरुभूमि सन : पाथर, बालु, रोड़ी, आ ऊपर चढ़इत घुमावदार सड़क। एहि बाटपर पांव-पैदल जाइत ट्रेकर-पर्यटक सब सेहो भेटताह। मोटर ट्रांसपोर्ट, पैदल यात्री लेल असुविधा थिकैक। पर्यावरणक प्रदूषण अलग। मुदा, इएह थिकैक विकासक मूल्य! करीब घंटा भरि यात्राक पछाति रानी पौवा गाओं। विलोकेर गाछ, लोकक आवास, टैक्सी स्टैंड, खेती, इत्यादि। गाओंमे छोटे-सन बाजार आ होटल सब छैक। पूजा-अर्चनाक सामग्री सेहो भेटत। विष्णुक प्रतीक शालिग्राम कालीगण्डकी नदीमे पाओल जाइछ। तें, एहि इलाकामे सर्वत्र दोकानदार सब असली शालिग्राम रखबाक दावा करथि, तँ, से स्वाभाविक।

टैक्सी स्टैंडसँ मुक्तिनाथक मंदिर करीब 2 किलोमीटर दूर आ ऊँच पहाड़ी पर। बूढ़, अस्वस्थ आ अशक्त भक्त लेल किरायाक मोटरसाइकिल उपलब्ध छैक। मोटरसाइकिलसँ यात्री मन्दिरक सीढ़ी धरि पहुँचि सकैत छथि। तथापि मंदिर पहुँचबा लेल पचास साठि सीढ़ी तँ चढ़हि पड़त। मुदा, सब दिन मोटरसाइकिल भेटत तकर कोनो ठेकान नहि। हम जहिया रानीपौआ पहुँचल रही, मोटरसाइकिलक हड़ताल रहैक। लोक की करैत। जकरो नहि सक्क, सेहो लगैत-लगैत मंदिर धरि गेलहुँ आ आपसो एलहुँ।

मंदिर छोट आ छोटे परिसर। मंदिरक पछुएतमे 108 टा जलधार। सद्यः पिघलैत ग्लेशियरक जलमे स्नानक कय भेल माथ दू फाँक भ' जायत। मुदा, स्नानक पछाति अपूर्व स्फूर्ति। बैसल मुद्रामे आदमकद विष्णुक भव्य मूर्ति। दर्शन कयल। जय मुक्तिनाथ! दक्षिण भारतक वैष्णव, दस-बीस युवक आ वृद्ध श्रद्धालु लोकनि भेटलाह। तथापि कुल मिलाकय, एकबेरमे मोसकिलसँ कुल पचासो-साठि भक्त, पर्यटक नहि। एहने तीर्थमे शान्तिसँ पूजा, मनन-ध्यान, आ आराधना संभव छैक। तिरुपति, श्रीरंगम, वा गुरुवायुरमे तँ तीर्थयात्री प्रतीक्षा आ पाँतीएमे थाकि जाइछ। तें, हमरा ई स्थान नीक लागल। एतय पंडा पुरोहितक झंझट नहि। मंदिरसँ थोड़बे दूर पर प्राकृतिक गैसक पुरातन ज्वाला, ज्वालामाइ। आस-पासमे अनेक बौद्ध स्मारक--छोरतेन। आसपासक छोरतेन एहि तथ्यक द्योतक थिक जे एतय पुरातन कालसँ बौद्ध श्रद्धालुलोकनि अबैत रहल छथि, पूजा अर्चना करैत छथि, आ समाधिस्थ भेल छथि। मंदिर परिसरमे विलोकेर अजस्र गाछ छैक। मुदा, एखन सब पत्रहीन नग्न गाछ! मुक्तिनाथमे हमरा अत्यंत शान्तिक बोध भेल। मुदा, ग्रुप-टूरमे कतहु बैसिकय शान्तिक अनुभवक कतय फुरसति। केवल देखू, आ चलू। तथापि, मंदिर परिसरसँ बहराइत, द्वारिसँ बाहर सीढ़ीसँ नीचा एलहुँ आ सड़कक कातमे, खुलामे बेंच पर बैसलहुँ। ऊँच हिमालय, अपूर्व शान्ति, निर्मल वायु, आ क्षितिजक निर्बाध प्रसार। शीतल हिमालयक पवित्र प्राकृतिक वातावरणमे प्रचुर शुद्ध हवासँ दुनू प्राणी फेफड़ा भरलहुँ। अहा! आनन्द! निर्मल नील आकाश आ दूर धरि पसरल क्षितिज देखिकय मोन कृत-कृत्य भ' गेल। जय मुक्तिनाथ! घुरतीमे रानी पौआ गाओंमे टटका, धीपल भात, रहड़िया-बोड़ीक दालि, आ स्थानीय सागकेर भोजनमे जे आनंद आयल, से फाइव स्टार होटलमे कतय? तावते कनेक हिमपात भेलैक आ हमरालोकनिक यात्राक आनन्द दूना भ' गेल।

त्रिशूली नदीमे राफ्टिंग (नौकायन)

नेपालक पहाड़ी इलाका अत्यंत मनोरम अछि। हरियर भूमि, श्वेत-धवल पर्वतमाला, आ कलकल बहैत अनेको नदी, जाहिसँ मिथिलाक भूमि पटितो अछि आ दहाइतो अछि। नेपालक इएह प्राकृतिक सौन्दर्य सम्पूर्ण विश्वक पर्यटककें चुम्बक-जकाँ घीचि अनैछ। विपुल प्राकृतिक सम्पदा संपन्न नेपालमे सब पर्यटक लेल किछु ने किछु आकर्षण छैके। जँ हिमालयक शिखर पर्वतारोहीकें नोतैछ, तँ, दोसर दिस पशुपतिनाथ-मुक्तिनाथक तीर्थ शैव आ वैष्णव लोकनिक हेतु दिव्य देश थिक। 1960-70 क बीच काठमांडू जँ हिप्पी लोकनिक हेतु निर्वाणक द्वार छल, तँ, आइओ काठमांडू शहरी आभिजात्यक हेतु प्रमुख पर्यटन केंद्र अछि। सत्यतः, प्राकृतिक सम्पदा हमरा सबतरि अपन सोदर-जकाँ बूझि पड़ैछ। संयोगवश, हम जीविकाक हेतु आधा दशकसँ बेसी समय नेपालमे बितौनहुँ छी। ओहि अवधिमे जखन कहियो कतहु गेलहुँ, जखन कखनो कोनो नदी, पहाड़, गुफा, कन्दरा, तीर्थस्थान, आ ऐतिहासिक स्थल देखबाक अवसर भेटल, मौकाक लाभ उठबैत गेलहुँ। त्रिशूली नदीमे राफ्टिंग सेहो एहने अवसर छल जकर योजना बनयबाक श्रेय हमर पत्नी श्रीमती रूपमकें छनि। हम पर्यटन-स्थलक खोज इन्टरनेटमे करैत छी, ओ अपन विपुल अध्ययनसँ विश्वभरिक पता-ठेकाना अपन मनमे सरियाकय रखैत छथि। हुनक मोनमे नुकायल सूचनाक अनुमान हमरा किएक रहत। किन्तु, समय भेला पर उपयोगी तँ होइते अछि। अतः हम टूर प्लानिंग हुनकहि पर छोड़ि दैत छियनि।

प्रायः 2010 ई। अक्टूबर मास छलैक। हमर बालक, अमिय, बंगलोरसँ पोखरा अयबा लेल छलाह। नेपाल-सन भूमि आ घरमे बैसि समय बिताबी! हमर पत्नी सुझाव देलनि जे हमरालोकनि त्रिशूलीमे राफ्टिंग करी। योजना सबकें पसिन्न भेलैक आ कार्यक्रम बनि गेलैक। आ से कोनो आश्चर्य नहि। भारतीय सेनामे प्रति तीन वर्ष पर पोस्टिंग आ भरि भारतमे, पूबसँ पश्चिम आ उत्तरसँ दक्षिण दिसक यात्राक कारण हमर यायावरी वृत्तिक लसेढ हमर नेना लोकनिकें सेहो पर्यटक बना देने छनि।

सर्वविदित अछि, नेपालक महाकालीसँ मेछी धरि सब नदीक पानि भारते दिस बहैत बिहार, उत्तराखंड, आ उत्तर प्रदेशमे आओर पैघ-पैघ नदीक रूप लैछ। घाघरा, गण्डक, कमला, कोसी-सन आन कतेको नदीक उद्‌गम, उत्तरमे तिब्बत वा नेपालेमे छैक। त्रिशूली नदी एहि सबमे सँ एक थिक। त्रिशूली नदीक उद्‌गम तिब्बतमे होइछ। अपन उद्‌गमसँ नेपालमे लम्बा दूरी पार करैत त्रिशूली चितवन जिलाक देवघाट लग नारायणी नदीमे मिलैत अछि। बिहारमे इएह नारायणी नदी गण्डक कहबैत अछि। काठमांडू घाटीक बाहरसँ आरम्भ भ' मुग्लिंग धरिक एहि त्रिशूली नदीक समतल खण्ड रिवर-राफ्टिंग लेल उपयुक्त मानल जाइछ। गहराइमे उत्थर, प्रकृतिमे चंचल, रंगमे स्वच्छ आ फेनिल, आ कतहु-कतहु मनोरम हरियर कचोर, त्रिशूलीमे अचानक बाढ़ि अयबाक भय सेहो नहि। भुतही बलानक धूरा उड़ैत पाटमे रुख-सुख मौसममे, अचानक बाढ़िसँ, बैल-गाड़ीसँ ल' कय हाथी धरि बहि जयबाक खीसा तँ कतेको गोटे सुननहि हयब। किन्तु, त्रिशूलीमे ताहि सबहक कोनो अंदेशा नहि। ततबे नहि, दूर-दूर धरि सोझ, समतल खण्ड, चौड़ा पाट, ठाम-ठाम शांत आ ठाम-ठाम उच्छल धार (placid section आ rapids)। अनुकूल तापमान, किनेर-कछेरपर बस्ती, पर्यटनस्थल, आ तीर्थस्थलक कारण त्रिशूलीकें राफ्टिंगक हेतु आदर्श अछियो।

सर्वविदित अछि, पहाड़, गुफा, नदी, आ मरुभूमि सब किछु भूगर्भक आन्दोलन, वातावरण, आ मौसमक संयोगक प्रतिफल थिक। किन्तु, मनुष्य अपन धारणा, आस्था, वा वैज्ञानिक बुद्धिसँ सब कथूक उद्‌गमक कथा अपने गढ़इत अछि। कखनो-कखनो विश्वास, आस्था आ रूढ़िमे सेहो परिवर्तित होइत जाइत छैक। त्रिशूली सेहो एकर अपवाद नहि। जनसाधारणक मान्यताक अनुसार त्रिशूली नदी, पृथ्वीपर शिवकेर त्रिशूलक प्रहारक परिणाम थिक। ई मान्यता कोनो आश्चर्यजनक नहि। एहि प्रकारक मान्यता अरुणाचलक परशुराम कुण्डसँ ल' कय गंगासागर द्वीपक गंगा धरिक सम्बन्धमे सुनबैक। किन्तु, जे किछु संगत-असंगत बूझि पड़य अपन बुद्धि आ मान्यताक अनुसार विश्वास वा अविश्वास करू! जे किछु।

निर्धारित कार्यक्रमक अनुसार हमर बालक पोखरा अयलाह आ एकदिन हमरालोकनि त्रिशूलीक कछेरपर राफ्टिंग लेल पोखरासँ दक्षिण, मुग्लिंग नामक स्थान अयलहुँ। काठमांडूसँ पश्चिम मुँहे अबैत पृथ्वी राजमार्ग मुग्लिंगमे दू दिस - दक्षिण दिस वीरगंज-भरतपुर-नारायणघाट, आ पश्चिममे पोखरा दिस - फुटैछ । तें, मुग्लिंग एहि बाटपर प्रमुख बस पड़ाव आ मुफस्सिल बाजार सेहो थिक। मुग्लिंगमे एहि तिनबटिया लग उत्तरसँ अबैत मर्स्यांग्दी नदी सेहो त्रिशूलीमे मिलैछ। अस्तु, तिनबटियासँ दक्षिण, त्रिशूली बेसी गहींर, पाटमे चौड़ा, आ वेगवती होइत चल जाइछ। तें, त्रिशूलीक

ओ भाग जे मुग्लिंगसँ दक्षिण पड़ैछ, ओ राफ्टिंग लेल ओतेक उपयुक्त नहि। मुग्लिंगकेर एहि हाईवेपर बसक मुख्य पड़ाव हेबाक कारणे एतय त्रिशूलीक किनेरहि पर अनेको होटल, चाह केर दोकान, ठहरबाक लॉज सेहो भेटत। नदीमे माछक प्रचुरताक प्रमाण एहि ठामक होटल सबमे माछ सबठाम भेटत। मन हो तँ माछ खाउ, सुंकठी कीनू, वा नाक झंपने आगू बढि जाउ। जाड़क मासमे, समीपक पहाड़ी गाओं सबमे संतोलाक अजस्र बगानक कारण, एतय दूर-दूर धरि सड़कक कातमे संतोलाक ढेर सहजहि आकृष्ट करत। एतुका संतोला देखबामे जेहने आकर्षक, खयबामे तेहने मीठ। तें, दिन देखार एहि बाटे काठमांडू वा पोखरा गेनिहार यात्री कदाचिते बिनु संतोला कीनने-खेने आगू बढ़थि। मुग्लिंगक समीपे त्रिशूलीक ठीक उत्तर, मनोकामना भगवतीक तीर्थक हेतु एतय लगहिसँ रोप-वे क स्टेशन छैक। तें, मुग्लिंग तीर्थाटनक केन्द्र सेहो थिक। किन्तु, हमरालोकनिकें आइ, राफ्टिंग आरम्भ करबाक हेतु, एतयसँ करीब बीस किलोमीटर पूब मलेखू गाओं जाय पड़त। किछु घंटाक संक्षिप्त राफ्टिंग मलेखूसँ आरम्भ होइत मुग्लिंगेमे आबि समाप्त होइत छैक। तें, एहि इलाकामे त्रिशूली नदीपर राफ्टिंगक आयोजक अनेक प्रतिष्ठान मलेखूएमे भेटत। ओत्तहि राफ्टिंगकेर उपकरण, ट्रेनर, गाइड इत्यादि सब कथुक व्यवस्था सेहो छैक। मलेखू पहुँचि नदीक कछेरहिपर हमरोलोकनि एक गोटेसँ सम्पर्क कयल। प्रायः प्रति व्यक्ति पन्द्रह सौ नेपाली रुपैया। साज सामानक दाम आ टूर-ऑपरेटरकेर श्रमकें देखैत ई मूल्य एकदम उचित लागल। टूर ऑपरेटर व्यवहारमे एकदम अनौपचारिक आ नीक। नेपालक पहाड़ी इलाकामे विचार-व्यवहारक सरलता आ सौजन्य अहाँकें सबठाम भेटत। हमरालोकनि जखन ओतय पहुँचल रही तावत अओरो किछु पर्यटक लोकनि जमा भेल रहथि। अस्तु, करीब दस गोटेक हमरालोकनिक दल बनल। आरंभिक परिचय पात आ टाकाक पेमेंटक पछाति टूर गाइड हमरालोकनिकें दस-पन्द्रह मिनटकेर ट्रेनिंग देलनि। ट्रेनिंगमे मुख्य गप्प जे सामूहिक रूपें पतवार कोना चलाबी। आखिर नौकायन सामूहिक एडवेंचर एक्टिविटी थिकैक। एडवेंचर एक्टिविटीमे मनोरंजन आ आनंदक संग चोट-पटककेर खतरा तँ रहिते छैक। खतरासँ कोना बची, तेज धार वा भंवर (रैपिड्स)क बाटें नाह कोना चलतैक, भंवरमे सामूहिक प्रयासें नाहकें कोना नियंत्रणमे राखी, सामानक कोना रक्षा करी, आदि-आदि संक्षिप्त ट्रेनिंगक मूल पाठ छल। एहि ट्रेनिंगक पछाति हमरालोकनि डाँड़ कसलहुँ, जीवन-रक्षा जैकेट आ हेलमेट पहिरल, पोखरासँ आनल बाँकी सामान कारमे सुरक्षित कयल, आ राफ्टिंग लेल तैयार भ' गेलहुँ। हमरालोकनि नदीक बाटे मुग्लिंग जायब। हमरालोकनिक कार सड़कसँ मुग्लिंग वापस हयत आ ओतहि हमरालोकनिक प्रतीक्षा करत। मुग्लिंगमे राफ्टिंग समाप्त कय

हमरालोकनि पुनः कारमे बैसब आ आइए पोखरा आपस भ' जायब। राफ्टिंग केर एहि पहिल अनुभवमे रोमांचक अनुभव सहजहि। हम तँ पाराट्रूपिंग सेहो केने छी। अमिय सेहो स्काई-डाइविंग क' चुकल छथि। मुदा, नदीमे राफ्टिंग आ हवामे तैरबाक अनुभवमे बहुत अंतर छैक। हमरालोकनि कमलाक कछेरक बासी छी। पहिने बाढ़ि-पानि जीवनक हिस्सा आ सोहाग-भाग छल। छोट वयसमे पोखरिमे उमकब तहिया हमरा सबहक हेतु दिनचर्याक सबसँ सुखद अंग होइत छल। किन्तु, हमरा एखन धरि रिवर-राफ्टिंगक कोनो अनुभव नहि, तें, कनेक शंका सेहो नहि छल, से कोना कहब। सत्यतः, हमरालोकनि एक बेर पहिनो लेहमे सिन्धुमे कारू गाओंसँ निम्मू धरि राफ्टिंग केर योजना बनौने रही। किन्तु, ओ योजना सैनिक अनुशासनक कर्मकांडमे ओझराकय विफल भ' गेल। आइ हमरालोकनिक राफ्टमे, आगू एकटा गाइड आ राफ्टक दहिना आ बामा भाग पाँच-पाँच टा पर्यटक रही। राफ्टिंगक अनुशासन आ तरीकाक पुनः एकबेर रिवीजन आ रिहर्सल भेलैक आ सब गोटे राफ्टमे बैसलहुँ। क्रमशः राफ्ट गति पकड़लक। पतवारक कनिए किछु सहयोग। नदीक अपने गति एतबा भार लेल पर्याप्त : 'आकाशात् पतितं तोयं यथा गच्छति सागरम् '- (आकाशसँ खसैत) पानि जेना (अपनहि प्रेरणासँ वा गुरुत्वाकर्षणक बलें) अधोमुख बहैत सागर दिस बढ़इत जाइछ चंचल धारमे आगू बढबा लेल नाहकें कोनो प्रेरणा वा आदेश नहि चाहिऐक! किन्तु, त्रिशूलीक वक्षपर एहि राफ्टमे बैसिते हमरा लागल हमर सूक्ष्म अस्तित्व ओहि विराट प्रकृतिक एहन नगण्य अवयव बनि गेल जकर प्रभावसँ हमर गति, श्वास, संज्ञा, आ आत्मा पंचभूतक अजस्र स्रोतसँ अनायास आप्लावित भ' रहल अछि। शरीरमे रोमांच, आ मनमे आनंद इएह तँ थिकैक एडवेंचर! सत्यतः, हिमालयक विरल वायु, त्रिशूलीक जल, कछेरक भूमि आ भैषज्यक दृश्य, नील निर्मल आकाश, आ नदीक ऊर्जासँ सम्पोषित गतिक आनन्द वर्णनक नहि, अनुभव करबाक थिक। आनंदक एहि क्षणमे दस टा नितान्त अपरिचित पर्यटकक समूहक बीचक अपरिचय क्षणहिमे तहिना बिला गेल जेना अचानक रौद उगने भोरका धोन्हि बिला जाइछ। द्रुत गतिमे बहैत नदीक जल, ठाम-ठाम अबैत अवरोध, अचानक तेज धार, नदीक धारक दिशामे अचानक परिवर्तन लेल सबकें सर्वदा साकांक्ष आ तत्पर रहबाक आवश्यकता। द्रुत गतिएँ सामूहिक रूपें पतवारकें चलबैत निरंतर नाह पर नियंत्रणक प्रयास। फलतः, सामूहिक उद्यमक त्वरित परिणाम आ नव सीखल कलाक सफलताक जयघोष आ नदीक हुंकार, आ रक्तमे एड्रेनलिनक स्वतः प्रवाहक हमरालोकनिकें किछुए कालमे त्रिशूलीक अधैर्य जलधारसँ एकाकार क' देने छल। लगैत छल, ई यात्रा अनन्त काल धरि समुद्र धरि होइतैक, समयक निरंतर प्रवाह ठमकि जइतैक आ त्रिशूलीक संग

हमरालोकनिक संग अंतहीन भ' जाइत। से ने यथार्थ, आ ने संभव। यद्यपि माउंट एवरेस्टक मस्तक पर ध्वजारोहण कयनिहार सर एडमंड हिलेरीक 1977 क From Ocean to Sky (सागरसँ आकाश धरि) अभियान एखनो मोने अछि। किन्तु, ताहि लेल शौर्य, योजना, अर्थ, आ समय, सब किछु चाही, जे ने सर्वसाधारण ले संभव, आ ने स्पृहणीय। अस्तु, हमरालोकनि अजुका एहि अवसरक खूब आनन्द लेल। बांकी पर्यटकलोकनि सेहो अत्यंत उत्साहमे रहथि। नदीक सोझ आ शांत भागमे केओ गीत गबैत, केओ हास्य विनोदमे, आ केओ फोटो झिकैत। किन्तु, सबहक संज्ञा राफ्टक गति आ अचानक अबैत अवरोध आ खतराक प्रति निरंतर सजग। तकर आवश्यकता सेहो छैक। बुझबाक थिक, खतरा एडवेंचर अभियानक संगबहिना थिक। तें, 'सावधानी हटी, दुर्घटना घटी' सर्वदा मोन रखबाक थिक। सशस्त्र सेनामे हमरालोकनिकें एकर अनेक दुखद अनुभव भेल अछि। किन्तु, आइ हमरालोकनि सब सजग छी। नदीक शान्त आ उच्छल दुनू भागमे सब गोटे सुरक्षित जा रहल छी। मौसम साफ छैक आ मार्ग सोझ। तें, नवसिखुआ आ दक्ष सब सुरक्षित। करीब पन्द्रह बीस मिनटकेर पछाति एकठाम पानि खूब गहींर भेलैक। रंग हरियर कचोर। गाइड कहलनि, जकरा हेलय अबैत हो, राफ्ट छोड़ि पानिमे कूदि जाउ। हेलू, मस्ती करू। किछु कालक बाद पुनः आगू बढ़ब। हमरालोकनि कमलाक कछेरक उपज, स्वभावहिसँ पानिक कीड़ा छी। हमर नेनालोकनि सेहो छोटे वयससँ हेलबामे सिद्धहस्त छथि। मिलिटरी स्टेशन सबमे ई सुविधा सबठाम रहिते छैक। अस्तु, हमरालोकनि कतेको वर्षसँ छूटल हेलबाक आनन्दक कमीकें खूब पूरा कयल आ पुनः राफ्टमे सवार भ' आगू बढलहुँ।

अन्ततः, थोड़बे कालक बाद एहि सफल सुरक्षित अभियानक पछाति मुग्लिंगमे राफ्ट घाट लागल आ हमरालोकनि तीतल-भीजल कपड़ालत्ता बदलल आ कारमे सवार भेलहुँ। किन्तु, मुग्लिंगक संतोला खेने बिना आगू कोना बढ़ब। अस्तु, किछु खायल आ पर्याप्त संतोला मोटरीमे बान्हल। एतबा अवश्य, नेपालसँ बाहर एहन मधुर संतोला कतहु भेटत से हठे विश्वास नहि होइए। अहूँलोकनि जँ कहियो मनोकामनाक दर्शन लेल मुग्लिंग आबी वा त्रिशूलीमे राफ्टिंग करी आ संतोला भेटय, तँ एतय संतोला खायब जुनि बिसरी। आ हँ, एतय अपन फेफड़ामे पर्याप्त स्वच्छ वायु सेहो अवश्य भरि लेब। एहन स्वच्छ वायु आब समतल भूमिमे कतय पाबी!

उपसंहार

लोहना रोडसँ लास वेगस

'लोहना रोड स्टेशन? जतय चौबीसो घंटा सिगनल डाउने रहैत छैक!'

धन-खेती सबहक बीच दू कोठलीक एक टा स्टेशन। कातहिमे मुसाफिरखाना। मात्र एकटा रेलवे लाइन। तहिया दरभंगा-निर्मली लाइनपर लोहना रोड स्टेशनक इएह परिचय छलैक। ई स्टेशन जहिया बनब आरम्भ भेल रहैक, से समय हमर माता स्व. विन्देश्वरी देवीकें मोन छलनि। एहि स्टेशन बनबामे हमर मातामह लोकनिसँ जमीन सेहो सरकार लेने रहनि, से सुनल अछि। लोहना रोड स्टेशन बहुत दिन धरि, हमर गामसँ उत्तर आ दक्षिण, दूर धरि अनेको गामक हेतु ट्रेनसँ आन ठाम जयबाक हेतु एकमात्र द्वारि छल। गामसँ बाहरक हमरो यात्रा लोहना रोडहिसँ आरम्भ भेल छल। तहिया एहि इलाकामे जे गाम सब रेल लाइनसँ दूर रहैक ओतय लोक पांव-पैदल जाइत छल। जकरा लग सुविधा रहैक, से साइकिल वा घोड़ासँ सेहो यात्रा करैत छल। महिला लोकनि लगक गाओं कहार-सवारीसँ, आ दूर धरि बैल-गाड़ीसँ जाइत छलीह। बंगालक विपरीत कमलाकातक गाओं सबमे नाहसँ यात्राक परिपाटी नहि रहैक। तहसीलदारीक अमलमे हमर पिता, स्व. तारानाथ झा, घोड़ा चढ़इत छलाह। सुनल अछि, हमर सबसँ जेठ भाइ श्री रघुनाथ झा प्रसिद्ध राघोजी सेहो घुड़सवारीमे नीक मानल जाइत रहथि। हमर पिता तँ, सुनैत छी, एक बेर पैटघाट लग घोड़ा सहित नाहसँ नदी पार करबाक क्रममे पानिमे डूबिओ गेल छलाह। मलाह सब पानिमे सँ छानि हमर पिताक जान तँ बचा लेलकनि, मुदा, घोड़ा मरि गेल रहनि। कहथि, 'ओही दिन हम कमलाकें श्राप द' देलिअनिः 'अहाँ एतय सुखा जायब!' आ ओ गौरवसँ कहथि– 'पैटघाटमे कमलाक धार सुखाइए गेल!'

मिथिलांचलमे यातायातक असुविधाक कारण बहुत दिन धरि लोक तीर्थाटनमे दूर-दूर धरि पैदल जाइत छल। तहिया हमर पिता आ हमर जेठ भाइ, श्री अभयनाथ झा प्रसिद्ध भरत जी, तँ अवामसँ कुशेश्वरस्थानक शिवालय धरि जा कय भरिए दिनमे घूरि अयबाक कीर्तिमान बनौने रहथि। ततबे नहि, हमर पिता आ हुनक

अनुज, स्व. घूरन झा, पांव-पैदल नेपालक बराह-क्षेत्र धरि गेल रहथि। भ' सकैत अछि पैदलो चलि कय देश-कोस देखबाक हमर पिताक इएह आग्रह हमरालोकनिक यायावरी-प्रवृत्तिक मूलमे हो। तथापि, हम अपनहुँ मैट्रिकक परीक्षामे सम्मिलित हेबासँ पूर्व समस्तीपुरसँ आगू नहि गेल रही। मैट्रिक परीक्षाक पछाति पहिल बेर पटना जेबाक अवसर भेटल। एम. बी., बी. एस. पास भेलाक बाद नौकरीक इंटरव्यू लेल पहिल बेर दिल्ली गेलहुँ। असलमे यातायातक असुविधा कारणहि हमरालोकनि तहिया अपनो इलाका सरि भ' कय नहि देखने रही। आइओ मिथिलांचलक अनेक इलाका देखल नहि अछि। असलमे हेबनि धरि मिथिलांचलमे सड़क यातायातक तँ तेहन दुर्दशा रहैक जे 2003 धरिमे हमर गाम अवामसँ दरभंगाक 40 कि. मी. सँ कम केर दूरी जीपसँ पूरा करबामे तीन घंटा लगैत छलैक! माने, अर्थाभावक अतिरिक्त, जर्जर यातायात मिथिलांचलक भीतर वा पर्यटन लेल मिथिलांचलसँ बाहर जयबामे प्रमुख बाधा छलैक। विकासक हेतु अनिवार्य एहि मूल आवश्यकताक प्रति राजनेता लोकनिक उदासीनता एहि समस्याक मूलमे छल, से तँ सर्वविदित अछिए।

05 जनवरी 1983 क हमर यात्राक परिधि एकाएक बदलि गेल। हमरा भारतीय सेनाक सेना चिकित्सा कोरमे कमीशन देल गेल आ हम दानापुरमे योगदानक पछाति लखनऊ होइत चकराता (उत्तराखंड) मे पदस्थापित भेलहुँ। तकर बाद सोझे असम। पछाति तँ यात्राक एहन सिलसिला चलल जे हम अपन पयरमे तिल ताकय लगलहुँ। गाममे सुनिऐक, 'जकरा पयरमे तिल होइनि, तिनका पड़ाइनि लगले रहतनि'। मुदा, से नहि । 1983 सँ 2007 धरिक सेनाक संग हमर यात्रामे असमसँ ओखा-द्वारिका, आ जम्मू-कश्मीरसँ कन्याकुमारी धरिक यात्रा पूर्ण भ' चुकल छल। संयोगसँ ताधरि हमर कन्या सुष्मिता आ जमाय, डाक्टर सिद्धार्थ श्रीवास्तव, अमेरिका प्रवासक आधा दशक पूरा क' चुकल रहथि, तँ ओतहु गेलहुँ। अमेरिकाक ओही यात्रामे लास वेगस, वाशिंगटन, आ न्यूयॉर्क देखबाक अवसर भेटल। पछाति हमर पुत्र अमिय आ पुत्रवधू, श्रीमती अदिति सेहो अमेरिका पहुँचलाह, तँ, दोसर बेर सेहो अमेरिका गेलहुँ। आब तँ हमर पौत्र, अग्निव, हमरा हेतु अमेरिकामे नव चुम्बक छथि। तें, संभव जे अमेरिका जयबाक सिलसिला आगुओ चलय।

आब दू टप्पी एहि पोथीक नामकरणक सम्बन्धमे। वस्तुतः, जखन हम अपन यात्रा-वृत्तांतक खण्ड-खण्डकें एकठाम सरिअयलहुँ तँ एकर नाम भेल, यात्रा : देश आ विदेश। मुदा, पछाति नाम बदलि गेलैक। असलमे, एक बेर कहियो हमर

पत्नी, श्रीमती रूपम, हमरालोकनिक संग-संग जीवन-यात्राक संस्मरण लिखबाक चर्चा केने रहथि। हम पुछने रहियनि, 'नाम की देबैक?'

संगे-संग रने-बने बौअयबाक एहि रोमांटिक सिलसिलाक नाम देबामे हुनका एको क्षण नहि लागल रहनि। कहलनि,

'लोहना रोडसँ लास वेगस!'

मुदा, आब लगैत अछि, हुनकर लिखल ओहि पोथीक हमरा एखन आओर प्रतीक्षा करय पड़त। तें, जखन हमर ई यात्रा-वृत्तांत पुस्तकाकार होमय लागल तँ हमर पत्नीए एहि पोथीक नाम 'लोहना रोडसँ लास वेगस' क सुझाव देलनि। अस्तु, नितांत नैतिक दृष्टिएँ एहि पोथीक नामकरणक श्रेय हम अपन पत्नी, श्रीमती रूपमेकें दैत छियनि।

• • •

डा. कीर्तिनाथ झा

कर्नल (सेवानिवृत्त), सेना चिकित्सा सेवा कोर

जन्म : 08 सितम्बर 1955

पिता : स्व. तारानाथ झा, माता : स्व. विन्देश्वरी देवी

शिक्षा : एम.बी.बी.एस. (ऑनर्स), एम.एस. (नेत्र चिकित्सा)

वर्तमान पता : महात्मा गाँधी मेडिकल कालेज एंड रिसर्च इंस्टिच्युट, पिलैयारकुप्पम, पाण्डिचेरी-607 403

संपर्क : फ़ोन-आवास 0413-2615568, मोबाइल : 9443655640

ईमेल : kirtinath.jha@gmail.com

कृति

जड़ि (कविता संग्रह), 2001

किछु पुरान गप्प, किछु नव गप्प (कथा संग्रह), 2005

टूटल पाँखि (खलील जिब्रानकेर अरबी उपन्यासक मैथिली अनुवाद), 2016

कुरल मैथिली भावानुवाद (संत कवि तिरुवल्लुवर केर तमिल ग्रन्थ 'कुरल' केर अनुवाद), 2017

रुचि : अध्ययन-अध्यापन, रोगीक चिकित्सा, लेखन आ भ्रमण

ISBN 978-93-5406-772-3

9 789354 067723

₹ 500/-